अथ बृहज्ज्योतिस्सारसटीकस्य सूचीपत्रम् ॥

बृहज्ज्योतिस्सार सटीकका सूचीपत्र।

बृहज्ज्योतिस्सार सटीकका सूचीपत्र ।

इति सूचीपत्रम् ॥

अथ बृहज्ज्योतिस्सार सटीक ॥

गणाधिपं नमस्कृत्य ज्योतिस्सारसुसंग्रहम् ।
सूर्यनारायणः कुर्वे लोकानां हितकाम्यया ॥ १ ॥

गणेशजी को नमस्कार करके मैं सूर्यनारायण लोकों की हितकामना के लिये ज्योतिश्शास्त्र के सारांश का संग्रह अच्छी रीति से करता हूं ॥ १ ॥

अथ संवत्सरोत्पत्तिर्व्याख्यायते ॥

शाककालःपृथक्संस्थो द्वाविंशत्या २२ हतस्त्वथ । भूनन्दाश्व्यब्धि ४२९१ युग्भक्तो बाणशैलगजेन्दुभिः १८७५ ॥ १ ॥ लब्धियुग्विहतःषष्ट्या ६० शेषेस्युर्गतवत्सराः । बार्हस्पत्येनमानेन प्रभवाद्याःक्रमादमी ॥ २ ॥

शाका दोजगह रखना प्रथम को बाइससे गुणा करना उसमें चारहज़ार दोसै इक्यानवे जोड़देना तिसमें एकहज़ार आठसे पचहत्तर का भाग लेना १ जो अङ्क लब्ध मिलै उसे दूसरे शाके में जोड़देना फिर उस अङ्क में साठ का भाग देना जो शेष बचे सो बृहस्पति के मतसे प्रभवादिगत संवत्सर होते हैं ॥ २ ॥

तत्रोदाहरणम् ॥

श्रीसंवत् १९४८ शाके १८१३ दूसरी जगह शाका स्थापित किया १८१३ इसे बाइससे गुणा किया ३९८८६ इसमें बारहजार दोसै इक्यानवे जोड़दिये ४४१७७ इस अङ्कमें एकहज़ार आठसै पचहत्तर का भाग लिया तो लब्ध मिले २३ इसे प्रथम शाके में जोड़दिया १८३६ इस अङ्कमें साठका भागदिया तो शेष बचे ३६ प्रवेश ३७ अर्थात् प्रभवादिसंवत्सर से छत्तीसवाँ गत हुआ और सैंतीसवाँ प्रवेशभया इसका शोभननाम संवत्सर होता है। अब संवत्सर के भुक्तमासादिक वा भोग्य मासादिक का उदाहरण लिखते हैं॥ एक हज़ार आठसै पचहत्तरका भाग लेने से जो शेषाङ्क बचाहै उसे बारह से गुणा करना फिर एकहज़ार आठसै पचहत्तर का भागलेना लब्धमिलै वे संवत्सर के भुक्तमास होते हैं फिर शेषाङ्क को तीससे गुणाकरके एकहज़ार आठसै पचहत्तर का भाग लेने से लब्ध भुक्त दिन मिलैंगे फिर शेषाङ्क को साठ से गुणाकरके एकहज़ार आठसै पचहत्तर का भाग लेने से लब्ध भुक्त घटी जानिये फिर शेषाङ्क को साठसे गुणाकरके एक हज़ार आठसै पचहत्तर का भागलेनेसे लब्धभुक्तपल मिलैंगे फिर भुक्तमासादिकबारह में घटानेसे भोग्यमासादिक होजायँगे१।२॥

प्रभवो १ विभवः २ शुक्लः ३ प्रमोदश्च ४ प्रजापतिः ५ । अङ्गिराः ६ श्रीमुखो ७ भावो ८ युवा ९ धाता१० तथैव च॥१॥ईश्वरो ११ बहुधान्यश्च १२ प्रमाथी १३ विक्रमो १४ वृषः १५ । चित्रभानुः १६ सुभानुश्च १७ तारणः १८ पार्थिवो १९ व्ययः २०॥२॥ इति ब्रह्मविंशतिः ॥ सर्वजित् १ सर्वधारी च २ विरोधी ३ विकृतः ४ खरः ५ । नन्दनो ६ विजयश्चैव ७ जयो ८ मन्मथ ९ दुर्मुखौ १०॥३॥हेमलम्बो ११ विलम्बश्च १२ विकारी १३

शर्वरी १४ प्लवः १५। शुभकृत् १६ शोभनः १७ क्रोधी १८ विश्वावसु १९ पराभवौ २० ॥ ४ ॥ इति विष्णुविंशतिः ॥ प्लवङ्गः १ कीलकः २ सौम्यः ३ साधारण ४ विरोधकौ ५। परिधावी ६ प्रमादी च ७ आनन्दो ८ राक्षसो ९ नलः १० ॥५॥ पिङ्गलः ११ कालयुक्तश्च १२ सिद्धार्थो १३ रौद्र १४ दुर्मती १५। दुन्दुभी १६ रुधिरोद्गारी १७ रक्ताक्षः १८ क्रोधनः १९ क्षयः २० ॥ ६ ॥ इति रुद्रविंशतिः ॥

ब्रह्म० प्रभव १ विभव २ शुक्ल ३ प्रमोद ४ प्रजापति ५ अङ्गिरा ६ श्रीमुख ७ भाव ८ युवा ९ धाता १० ॥ १ ॥ ईश्वर ११ बहुधान्य १२ प्रमाथी १३ विक्रम १४ वृष १५ चित्रभानु १६ सुभानु १७ तारण १८ पार्थिव १९ व्यय २० ॥ २ ॥ विष्णु० सर्वजित् २१ सर्वधारी २२ विरोधी २३ विकृत २४ खर २५ नन्दन २६ विजय २७ जय २८ मन्मथ २९ दुर्मुख ३० ॥ ३ ॥ हेमलम्ब ३१ विलम्ब ३२ विकारी ३३ शर्वरी ३४ प्लव ३५ शुभकृत् ३६ शोभन ३७ क्रोधी ३८ विश्वावसु ३९ पराभव ४० ॥ ४ ॥ शिव० प्लवङ्ग ४१ कीलक ४२ सौम्य ४३ साधारण ४४ विरोधक ४५ परिधावी ४६ प्रमादी ४७ आनन्द ४८ राक्षस ४९ नल ५० ॥५॥ पिङ्गल ५१ कालयुक्त ५२ सिद्धार्थ ५३ रौद्र ५४ दुर्मति ५५ दुन्दुभी ५६ रुधिरोद्गारी ५७ राक्षस ५८ क्रोधन ५९ क्षय ६० ॥६॥

अथ ऋतुज्ञानं तथायनज्ञानम् ॥

शिशिरपूर्वमृतुत्रयमुत्तरं ह्ययनमाहुरहश्चतदामरम्। भवति दक्षिणमन्यऋतुत्रयं निगदितारजनीमरुतां हि सा १ मृगादिराशिद्वयभानुभोगात्षट्चर्तवःस्युःशिशिरो वसन्तः। ग्रीष्मश्चवर्षाचशरच्चतद्वद्धेमन्तनामाकथितश्च षष्ठः ॥ २ ॥

शिशिर, वसन्त, ग्रीष्म इन तीनों ऋतुओं में सूर्य उत्तरायण होते हैं उसमें देवताओं का दिन होता है तथा वर्षा, शरद्, हेमन्त इन तीनों ऋतुओं में सूर्य दक्षिणायन होते हैं उसमें देवताओं की रात्रि होती है १ मकर, कुम्भ के सूर्यों में शिशिरऋतु, मीन मेष में वसन्तऋतु, वृष, मिथुन में ग्रीष्मऋतु, तथा कर्क, सिंह में वर्षाऋतु कन्या, तुला के सूर्यों में शरदृऋतु और वृश्चिक, धनके सूर्यों में हेमन्तऋतु होती है ॥ २ ॥

अथ ऋतुचक्रम् ॥

१०।११	१२।१	२।३	४।५	६।७	८।९	सूर्यराशि
शिशिर	वसन्त	ग्रीष्म	वर्षा	शरद्	हेमन्त	ऋतु

अथायनमध्ये शुभाशुभकर्म ॥

गृहप्रवेशत्रिदशप्रतिष्ठाविवाहचौलव्रतबन्धदीक्षाः।
सौम्यायने कर्म शुभं विधेयं यद्गर्हितं तत्खलु दक्षिणे च॥१॥

गृहप्रवेश, विवाह, देवप्रतिष्ठा, मुण्डन, जनेऊ और दीक्षा कर्म इतने कार्य उत्तरायण सूर्य में करना शुभ हैं और अशुभ कर्म दक्षिणायन में शुभ हैं ॥ १ ॥

अथ संवत्सरस्वामी ॥

युगं भवेद्वत्सरपञ्चकेन युगानि च द्वादशवर्षषष्ट्याम्।
भवन्ति तेषामधिदेवताश्च क्रमेण वक्ष्यामि मुनिप्रणीताः १ विष्णुर्जीवःशक्रोदहनस्त्वष्टा चाहिर्बुध्नः पितरः।
विश्वेदेवाश्चन्द्रज्वलनौ नासत्यनामानौ च भगः ॥ २ ॥

पांचवर्ष की एक युग की संख्या होतीहै प्रभवादि साठवर्षमें बारह युग होते हैं तिन वर्षों के अधिदेवता क्रमसे मुनियों ने कहे

है ॥ १ ॥ प्रभवादि पांचवर्ष के स्वामी विष्णु हैं बाद इसके पांच वर्ष के स्वामी बृहस्पति हैं फिर पांचवर्ष के स्वामी इन्द्र हैं बाद इसके पांचवर्ष के स्वामी अग्नि हैं फिर पांचवर्ष के स्वामी त्वष्टादेव हैं फिर पांचवर्ष के स्वामी अहिर्बुध्न हैं फिर पांचवर्ष के स्वामी पितर हैं फिर पांचवर्ष के स्वामी विश्वेदेव हैं फिर पांचवर्ष के स्वामी चन्द्रमा हैं फिर पांचवर्ष के स्वामी अग्नि हैं फिर पांचवर्ष के स्वामी अश्विनीकुमार हैं फिर पांचवर्ष के स्वामी भगदेव हैं ॥ २ ॥

अथ मासज्ञानम् ॥

दर्शावधिं मासमुशन्तिचान्द्रं सौरं तथा भास्कररा शिभोगात् । त्रिंशद्दिनंसावनसञ्ज्ञिमाहुर्नक्षत्रमिन्दोर्भ गणभ्रमाच्च ॥ १ ॥

शुक्लपक्ष की परेवासे कृष्णपक्ष की अमावसपर्यन्त चान्द्र मास की संज्ञाहै और संक्रान्ति से संक्रान्तितक सौरमास की संज्ञा होतीहै और कृष्णपक्ष की परेवासे शुक्लपक्ष की पूर्णमासी तक सावनसंज्ञक मास होताहै और नक्षत्र से नक्षत्रतक चन्द्रमा का नक्षत्रसंज्ञक मास होताहै अर्थात् चित्रानक्षत्र से स्वातीतक चैत्र जानिये और विशाखासे अनुराधातक वैशाख होताहै ज्येष्ठा से मूलतक ज्येष्ठ होताहै पूर्वाषाढ़ से अभिजित् तक आषाढ़ जानना और श्रवण से शतभिषातक श्रावणमास जानिये पूर्वाभाद्रपद से रेवतीतक भाद्रपद जानिये और अश्विनी से भरणीतक आश्विनमास होताहै कृत्तिका से रोहिणीतक कार्त्तिकमास होताहै और मृगशिरा से पुनर्वसुतक मार्गशीर्ष होता है पुष्यसे श्लेषातक पौषमास जानना और मघा से पूर्वाफाल्गुनीतक माघसंज्ञक महीना होताहै उत्तराफाल्गुनीसे हस्ततक फाल्गुनमास जानिये इसी प्रकार से बारहों मास तीस २ नक्षत्र के होते हैं उसका उदाहरण दिखाते हैं जोकि चैत्रमहीना चित्रा

से हस्ततक अभिजित् समेत अट्ठाइस हुए फिर द्वितीयावृत्तिका चित्रा उन्तीसवां भया और द्वितीया वृत्तिकी स्वातीपर्यन्त तीसों नक्षत्र होगये अर्थात् द्वितीयावृत्ति की स्वातीतक चैत्रमासान्त जानिये इसी प्रकारसे सब मास जानना ॥ १ ॥

अथ कार्यभेदेन मासज्ञानम् ॥

विवाहादौ स्मृतः सौरो यज्ञादौ सावनो मतः । पितृकार्येषु चान्द्रं च ऋक्षं दानव्रतेष्वपि ॥ १ ॥

विवाहादिक कार्य में सौरसंज्ञक मास लेना योग्य है और यज्ञादिक में सावनसंज्ञक मास ग्रहण करना चाहिये तथा पितृकार्य में चान्द्रसंज्ञक मास मानना और व्रतदानादि में नक्षत्र मास ग्रहण करना चाहिये ॥ १ ॥

इति मासनिर्णयम् ॥

अथ क्षयमासमलमासज्ञानम् ॥

असंक्रान्तिमासोऽधिमासः स्फुटं स्याद् द्विसंक्रान्तिमासः क्षयाख्यः कदाचित् । भवेत्कार्त्तिकादित्रये नान्यतः स्यात्तदा वर्षमध्येऽधिमासद्वयं च ॥ १ ॥

जिस महीने में संक्रान्तिहीन होजाय अर्थात् संक्रान्ति न होय वह महीना मलमास का जानिये और जिस महीनेमें दो संक्रान्तें पड़ें वह महीना क्षयमास का होताहै सो कभी २ पड़ता है हमेशा नहीं होताहै और क्षयमास मलमास के निर्णय में चान्द्रमहीना लेना चाहिये अर्थात् शुक्लपक्ष की परेवासे कृष्णपक्ष की अमावस पर्यन्त यही चान्द्रमास का प्रमाण है और कार्त्तिकादि तीनमास में क्षयमास होताहै और महीनों में नहीं होताहै अर्थात् कार्त्तिक अगहन पौष सिवाय इनके और में क्षयमास नहीं होता है और जब क्षयमास आता है तब वर्ष मध्य में दो मलमास पड़ते हैं ॥ १ ॥

अथ संवत्सरमध्ये राजादिज्ञानम् ॥

चैत्रादिमेषादिकुलीरतौलिमृगादिवाराधिपतिक्रमेण । राजा च मन्त्री त्वथसस्यनाथो रसाधिपोनीरसनायकश्च ॥ १ ॥

चैत्रशुक्लपक्ष की परेवा को जौन वार होय वही संवत्सर का राजा होता है और मेषकी संक्रान्ति को जो वार होय वही मन्त्री होता है और कर्क की संक्रान्ति को जो वार होय वही सस्यनाथ अर्थात् खेती का स्वामी होताहै और तुला की संक्रान्ति को जो वार पड़े सो रसाधिप होताहै और मकरकी संक्रान्ति को जो वार होय सो नीरसाधिप होता है ॥ १ ॥

अथ राजादिज्ञानचक्रंमतान्तरम् ॥

मेष	वृप	मि०	कर्क	सिं०	कं०	तु०	वृ०	ध०	म०	कुं०	मी०	संक्रां०
मंत्री	कोशाधिप	मेवाधिप तथा युवस्यधिप	सस्याधिप	सैन्याधिप	क्षत्राधिप	रसाधिप	आज्ञाधिप	धान्याधिप	नीरसाधिप	व्यवहाराधिप	व्यापाराधिप	संवत्सर कार्याधिप

जिस संक्रान्ति में जो वार होय वही कार्याधिप मेषादि क्रम से जानिये मुताबिक चक्र के समझलेना ॥

अथ संवत्सरमध्ये लाभव्ययज्ञानम् ॥

राशीशवर्षेशयुतंत्रि ३ गुण्यं शरेण ५ युक्तं तिथि १५ शेषलाभम् । लाभंत्रि ३ गुण्यं च शरेण ५ युक्तं तिथ्यावशेषं १५ व्ययमामनन्ति ॥ १ ॥ रसा ६ स्तिथ्यो १५ गजाः शैल चन्द्रा १७ नन्देन्दव १९ स्तथा । स्वर्गा २१ दिशः १० क्रमाज्ज्ञेयारव्यादीनां ध्रुवा इमे ॥ २ ॥

राशिस्वामीका ध्रुवाङ्क व राजाका ध्रुवाङ्क जोड़देना उस अङ्क को तीनसे गुणाकरना उसमें पांच जोड़देना फिर उसमें पन्द्रह का भागदेना शेष बचै सो लाभ होता है और जो लब्ध मिला है उसे तीनसे गुणाकरना उस अङ्कमें पांच जोड़देना उसमें पन्द्रह का भागदेना जो शेष रहै वही ख़र्च जानिये १ अब सूर्यादिग्रहों के ध्रुवाङ्क लिखते हैं, सूर्याङ्क ध्रुवा ६ चन्द्राङ्क १५ भौमाङ्क ८ बुधाङ्क १७ जीवाङ्क १९ शुक्राङ्क २१ शनैश्चराङ्क १० ये सूर्यादि ग्रहों के ध्रुवा जानिये ॥ २ ॥

तत्रोदाहरणम् ॥

जैसे मेषराशि का लाभ व्यय बनाना है उसका स्वामी मङ्गल भया उसका ध्रुवाङ्क आठ ८ भये और संवत्सर का राजा शुक्र है उसका ध्रुवाङ्क इक्कीस २१ भया दोनों ध्रुवाङ्क जोड़े तो २९ हुए इसको तीनसे गुणाकिया तो ८७ हुए उसमें पांच जोड़े तो ९२ भये इसमें पन्द्रह का भागदिया तो लब्धमिले ६ शेष बचे २ यही मेषराशि का लाभ जानिये फिर लब्ध जो छः ६ मिले हैं उन्हें तीन से गुणाकिया तो १८ भये तिसमें पांच और जोड़दिये तो हुए २३ तिसमें पन्द्रह का भागदिया तो शेष बचे ८ यही मेषराशि का ख़र्च जानिये इसीप्रकार से सब राशियों का लाभ ख़र्च जानना ॥

अथ युगानां प्रमाणम् ॥

द्वात्रिंशद्भिः सहस्रैश्च युक्तं लक्षचतुष्टयम् । प्रमाणं कलिवर्षाणांप्रोक्तं पूर्वैर्महर्षिभिः॥ १॥ युगानां कृतमुख्यानां क्रमान्मानं प्रजायते। कलेर्मानं क्रमान्निघ्नं चतु २ स्त्रि ३ द्वि २ मितैस्तदा ॥ २ ॥

चारलाख बत्तिसहज़ार ४३२००० वर्ष कलियुग का प्रमाण पूर्व महर्षि कहते हैं १ इसी युग के प्रमाण से सतयुगादिकाभी

प्रमाण कहते हैं क्रमसे कलिप्रमाण को चार ४ वा तीन ३ वा दो २ से गुणाकरना तो उसी क्रम से सत्ययुग वा त्रेता वा द्वापरयुग का प्रमाण होजायगा उसका उदाहरण लिखते हैं कलियुग के प्रमाण को चारगुणा किया तो १७२८००० भये यही कृतयुग का प्रमाण जानिये फिर कलिप्रमाण को तीन से गुणा किया तो १२९६००० हुए यही त्रेतायुग का प्रमाण भया फिरि कलिप्रमाण को दो से गुणा किया तो ८६४००० हुए यही द्वापर का प्रमाण जानिये ॥ २ ॥

अथ संवत्सरमध्ये वर्षाद्यानयनम् ॥

शाकस्त्रि ३ निघ्ननग ७ भाजिताश्च शेषंद्वि २ निघ्नं शर ५ संयुतञ्च । वर्षा च धान्यं तृणशीततेजो वायुश्च वृद्धिक्षयविग्रहौ च १ शाकोवेद ४ गुणं कृत्वा सप्तभि ७ र्भागमाहरेत् । शेषंद्विघ्नं २ त्रिभि ३ र्युक्तं भुक्तिविश्वाख्य संज्ञकः २ क्षुधा तृषा च निद्रा च आलस्योद्यममेव च । शान्तिः क्रोधस्तथा दम्भो लोभमैथुनयोः क्रमात् ३ त तश्च रसनिष्पत्तिः फलनिष्पत्तिरेव च । उत्साहः सर्वलो कानां फलान्येतानि चिन्तयेत् ४ शाकं च वसु ८ भि र्निघ्नं नव ९ भिर्भागमाहरेत् । शेषंद्वि २ घ्नं रूप १ युक्तं प्रोक्तविश्वाख्यसंज्ञकम् ५ उग्रत्वपापपुण्यानि व्या धिश्च व्याधिनाशनम् । आचारश्चाप्यनाचारो मृत्युर्ज न्म यथाक्रमम् ६ देशोपद्रवस्वास्थ्यञ्च चौरभीश्चौर नाशनम् । वह्निभिर्वह्निशान्तिश्च ज्ञातव्यानि यथाक्र मात् ७ शाकं चतुःस्थशशर ५ सप्त ७ नन्द ९ रुद्रै ११ र्हतस्सप्त ७ हृतावशेषम् । द्वि २ घ्नं त्रिभिः ३ संयुतम त्र मानमुद्भिज्जजाण्डजस्वेदजानाम् ८ सप्त ७ घ्नशाकं

नवभि ९ र्भाजिताशेषकन्तथा । लोचन २ घ्नं युतं रामै ३ र्जीवीयाश्च यथाक्रमम् ९ शलभाश्च शुकाश्चैव मूषकाः स्वर्णताम्रकौ । स्वचक्रं परचक्रं च वृष्टिर्वृष्टि विनाशनम् १० अर्कादिवारे संक्रान्तौ कर्कस्याब्दवि शोपकाः । दिशो १० नखा २० गजाः ८ सूर्या १२ धृ त्य १८ ष्टादश १८ शायकाः ५ ॥ ११ ॥

शाके को तीनसे गुणा करके सातका भाग लेना लब्ध मिले सो अलग रखना और शेष बचै उसे दूना करके पांच जोड़देना जो अङ्क होय सो वर्षा के बिस्वा निकलैंगे फिर लब्ध को तीन से गुणा करके सात का भाग देना लब्ध को अलग रखना शेष को दूना करके पांच जोड़देना जो अङ्क प्राप्त होय सो धान्य के बिस्वा जानिये फिर लब्धाङ्कको इसी रीति से गणितक्रिया करके तृणके बिस्वा बन जायँगे फिरि लब्धाङ्कसे इसीप्रकार वारंवार यही क्रिया करने से शीत वा तेज वा वायु वा वृद्धि वा क्षय वा विग्रह इन सबके बिस्वा अलग २ निकलैंगे उसका उदाहरण लिखते हैं ॥ श्रीसंवत् १९४८ शाके १८१३ इस शाके को तीनसे गुणा किया तो ५४३९ हुए इसमें सातका भाग दिया तो लब्ध मिले ७७७ शेष शून्य बचा ० इसमें पांच जोड़े तो पांचै भये ५ यही वर्षा के बिस्वा का प्रमाण जानिये और लब्धाङ्कसे पूर्वोक्तप्रकार धान्यादिक बिस्वा जानिये १ शाके को चार से गुणा करना उसमें सात का भाग लेना लब्ध को अलग रखना शेषाङ्कको दूना करना उस अङ्कमें तीन जोड़नेसे जो अङ्क होय सो क्षुधाके बिस्वा जानिये लब्ध को फिर चार से गुणा करके सात का भागदेना लब्ध को अलग रखना शेषाङ्क को दूना करके तीन और जोड़देना जो अङ्क होय सो तृषा के बिस्वा जानिये फिर लब्धाङ्कको इसी रीति से पूर्वोक्त क्रिया करने से वारंवार इसी प्रकार के गणित से निद्रा वा आलस्य वा

उद्यम वा शान्ति तथा क्रोध वा दम्भ अर्थात् पाखण्ड वा लोभ वा मैथुन वा रस वा फल तथा उत्साहके विस्वा जानिये २।३।४ शाका को आठगुणा करना और नवका भाग देइ जो लब्धमिलै सो अलग रखना शेषाङ्कको दूनाकरके उसमें एक जोड़ देना जो अङ्कहोय सो उद्यत्व के विस्वा होते हैं फिर लब्धाङ्क को आठगुणा करके नव का भाग देना जो लब्ध मिलै सो अलग रखना शेषाङ्क को दूना करके एक जोड़देना जो होय सो पापके विस्वा जानिये फिर लब्धाङ्कको इसी रीति से पूर्वोक्तक्रिया करने से वारंवार इसी प्रकार के गणितसे पुण्य वा व्याधि तथा व्याधिनाश वा आचार तथा अनाचार वा मृत्यु तथा जन्म वा देशोपद्रव वा देशस्वास्थ्य वा चौरभय तथा चौरनाश वा अग्नि तथा अग्निशान्ति इन सवों के विस्वा जानिये ५।६।७ शाके को चार जगह रखना प्रथमको पांच से गुणा करना दूसरे को सात से गुणा करना तीसरे को नव से गुणा करना चौथे को ग्यारह से गुणा करना इन चारों अङ्कों में अलग २ सात२ का भाग लेना शेषाङ्कोंको दूना २ करना चारो जगह पर उनमें तीन२ और जोड़देना फिर क्रमसे उद्भिज्ज, जरायुज, अण्डज, स्वेदज जीवों के विस्वा जानना अर्थात् प्रथमजगह के अङ्कमें उद्भिज्ज और दूसरे में जरायुज तीसरेमें अण्डज चौथेमें स्वेदज जीवों के विस्वा जानिये८ शाका को सात से गुणा करना और नव का भाग लेना लब्धको अलग रखना शेषाङ्क को दूना करना उसमें तीन और जोड़देना जो अङ्कहोय सो शलभ अर्थात् टीड़ीके विस्वा जानिये फिर लब्धाङ्क को सातसे गुणा करना और नव का भाग लेना लब्ध को अलग रखना शेषाङ्क को दूना करना उसमें तीन जोड़देना जो अङ्क होय सो शुक अर्थात् तोता के विस्वा जानना फिर लब्धाङ्क को इसी रीति से क्रिया करने से वारंवार गणितमार्ग से मूषक वा सोना वा तांवा तथा स्वचक्र वा परचक्र वा वृष्टि वा वृष्टिनाश के विस्वा अलग २ बनजायँगे ९।१० कर्कको

संक्रान्ति जिस दिन होय उसी दिनके अनुसार संवत्सर के बिस्वा जानिये तथा क्रमः रविवार को संक्रान्ति होय तो संवत्सर के दश विस्वा जानिये सोमवार को बीस बिस्वा मङ्गल के दिन आठ विस्वा बुधके दिन बारह विस्वा तथा बृहस्पतिवार को अठारह बिस्वा शुक्रवार को भी अठारह विस्वा जानिये शनिवार को पाँचबिस्वा होते हैं ॥ ११ ॥

अथ मेघानयनम् ॥

शाकंबाणाग्नि ३५ संयुक्तं वेदेन ४ परिभाजयेत् । शेषं मेघं विजानीयादावर्त्तादिचतुष्टये १ आवर्त्तकः १ संवर्त्तकः २ पुष्करो ३ द्रोणसंज्ञकः ४ । शुभाशुभफलं ज्ञेयं प्रोक्तं पूर्वैर्महर्षिभिः २ आवर्तके महावर्त्तः संवर्त्तो बहुतोयदः । पुष्करे चित्रिता वृष्टिर्द्रोणोऽपि बहुवारिदः ॥ ३ ॥

शाके में पैंतीस जोड़देना उसमें चार का भाग देना शेष मेघ जानना यथाक्रमः १ एक बचै तो आवर्त्तकनाम मेघ जानिये दो बचैं तो संवर्त्तकनाम मेघ जानिये तीन बचैं तो पुष्करसंज्ञक मेघ जानिये चार बचैंतो द्रोणसंज्ञक मेघ जानिये तिसका शुभाशुभफल जानना पूर्व महाऋषि कहते हैं २ अथ मेघफलम् ॥ आवर्त्त में महावर्त्त होय और संवर्त्तक में बहुत जल वर्षै और पुष्कर में चित्र विचित्र वर्षा होय और द्रोणमें बूड़ा आवै ३ अब मेघ निकालने का उदाहरण दिखाते हैं श्री संवत् १९४८ शाके १८१३ शाके में पैंतीस जोड़दिये तो १८४८ भये इसमें चार का भाग लिया तो शेषाङ्क बचा० तो चौथा द्रोणसंज्ञक मेघ समझना चाहिये इसी प्रकार से सब निकलैंगे ॥३॥

अथ वर्षे राजादीनां संक्षेपात्फलम् ॥

राजा भौमादिकानाञ्च वच्मि संक्षेपतः फलम् । गुरु शुक्रेन्दवोऽधीशास्सन्ति चेज्जनसौख्यदाः १ सुभिक्षं शो

भना वृष्टिर्देशे स्वास्थ्यं प्रकुर्वते । शनिभौमौ प्रकुर्वीते दुर्भिक्षं विग्रहो भयम् २ अल्पसौख्यप्रदः सौम्यः खलुदुःखप्रदो रविः। फलं सविस्तरश्चैषां विज्ञेयं संहितादिषु ॥३॥

संवत्सर के राजादिकन का फल संक्षेप से कहते हैं-गुरु वा शुक्र वा चन्द्रमा राजा होय तो मनुष्यों को सुख देनेवाले हैं १ और सुभिक्ष होय वर्षा अच्छी होय तथा देशस्वास्थ्य भी करै तथा शनैश्चर और मङ्गल राजा होय तो दुर्भिक्ष विग्रह करै २ और बुध राजा होय तो थोड़ा सुखकरै और सूर्य राजा होय तो दुःख हो तथा विस्तारपूर्वक फल संहितादिकन सों जानिये॥३॥

अथाषाढे पूर्णिमापवनफलम् ॥

आषाढे पूर्णिमायाञ्चेदनिलो वाति नैर्ऋतः । अनावृष्टिर्धान्यनाशो जलं कूपे न दृश्यते १ आषाढे पूर्णिमायान्तु वायव्ये यदि मारुतः। धर्मशीलस्तदा लोके धनं धान्यं गृहे गृहे २ आषाढे पूर्णिमायान्तु ईशान्ये याति मारुतः । सुखिनो हि तदा लोका गीतवाद्यपरायणाः ३ वह्निकोणे वह्निभीतिः पश्चिमे च जलाद्भयम् । अन्यत्र यदि वायुः स्यात्सुभिक्षं जायते तदा ॥ ४ ॥

आषाढ़मास की पूर्णमासी को जो नैर्ऋत्यदिशा से हवा चलै तो अनावृष्टि होय धान्यनाश होय कूप का जल सूखै १ आषाढ़ की पूर्णमासी को जो वायव्यदिशा को हवा चलै तो लोक में धर्मशील होय और धनधान्य घर २ होय २ और आषाढ़ की पूर्णमासी को ईशान्यदिशा में पवन चलै तो लोक में सुखप्राप्ति होय और गीतवाद्यपरायण होय ३ और अग्निकोण में अग्निभय होय और पश्चिमदिशा विषे चलै तो जल की भय होय और शेष दिशन में हवा चलै तो सुभिक्ष जानिये ॥ ४ ॥

अथ होलिकापवनफलम् ॥

पूर्वे वायुर्होलिकायाः प्रजाभूपालयोस्सुखम् । पलायते च दुर्भिक्षं दक्षिणे जायते ध्रुवम् १ पश्चिमे तृणसम्पत्तिरुत्तरे धान्यसंभवम् । यदि खे च शिखावृद्धिर्दुर्गराजोऽपि संक्षयेत् ॥ २ ॥

होलिका की वायु पूर्वदिशा में जाय तो राजा प्रजा सुखी होय और दक्षिणदिशा में जाय तो पलायमान अर्थात् पराजित होय वा दुर्भिक्ष होय १ और पश्चिमदिशा में जाय तो तृण बहुत पैदा होय और उत्तरदिशा में जाय तो धान्यसंभव होय अर्थात् पैदा होय और जो आकाश को जाय तो राजा का क़िला छूटजाय ॥ २ ॥

अथ सूर्यचन्द्रग्रहणज्ञानम् ॥

द्वि २ द्वादशे च १२ षष्ठे च ६ सप्तसप्तम ७ गे तथा । एकराशौ यदा राहुर्ग्रस्ते च शशिभास्करौ ॥ १ ॥

राहुसे दूसरे बारहें छठें सातयें वा राहुकी राशि में सूर्य चन्द्रमा होयँ तो ग्रहण परै ॥ १ ॥

अथ मतान्तरं ग्रहणज्ञानम् ॥

मासनक्षत्रमारभ्य ऋक्षं भवति षोडशः । अमायां प्रतिपत्सन्धौ सूर्यग्रहणनिश्चितम् १ रवेः पञ्चदशं ऋक्षं पूर्णमास्यां यदा भवेत् । रात्रौ च प्रतिपत्सन्धौ चन्द्रग्रहणनिश्चितम् ॥ २ ॥

कृष्णपक्ष की परेवा को जो नक्षत्र होय उससे सोलहवां नक्षत्र अमावस को पड़े और अमावस में परेवा मिलै तो सूर्यग्रहण निश्चित होय १ जिस नक्षत्र का सूर्य होय उससे पन्द्रहवां नक्षत्र पूर्णमासी को पड़े और रात्रि को परेवा मिलै तो चन्द्रग्रहण निश्चित होय ॥ २ ॥

अथ तिथिसंज्ञा ॥

नन्दा च भद्रा च जया च रिक्ता पूर्णेतितिथ्यो शुभ मध्यशस्ताः। सितेऽसितेशस्तसमाधमाः स्युः सितज्ञभौमार्किगुरौ च सिद्धाः ॥ १ ॥

नन्दा १ भद्रा २ जया ३ रिक्ता ४ पूर्णा ५ ये पांच प्रकार की तिथियां हैं सो शुक्लपक्षमें नन्दा अशुभ है भद्रा मध्यम है जया शुभ है रिक्ता अशुभ है पूर्णा मध्यम है और कृष्णपक्ष में नन्दा शुभ है भद्रा सम है जया अधम है रिक्ता शुभ है पूर्णा सम है इसी प्रकार से शुक्र, बुध, मङ्गल, शनैश्चर, बृहस्पति क्रमसे नन्दादि तिथि में सिद्धियोग होते हैं ॥ १ ॥

अथ तिथिचक्रं शुक्लपक्षे ॥

नन्दा	भद्रा	जया	रिक्ता	पूर्णा	तिथिसंज्ञा
१ ६ ११	२ ७ १२	३ ८ १३	४ ९ १४	५ १० १५	तिथि
अशुभ	मध्यम	शुभ	अशुभ	मध्यम	फल
शुक्र	बुध	भौम	शनि	गुरु	सिद्धियोग

अथ तिथिचक्रं कृष्णपक्षे ॥

नन्दा	भद्रा	जया	रिक्ता	पूर्णा	तिथिसंज्ञा
१ ६ ११	२ ७ १२	३ ८ १३	४ ९ १४	५ १० ३०	तिथि
शुभ	सम	अधम	शुभ	सम	फल
शुक्र	बुध	भौम	शनि	गुरु	सिद्धियोग

अथ तिथियों के कृत्य ॥

गीतं नृत्यं तथा क्षेत्रं चित्रोत्सवगृहादिकम्। वस्त्राल

ङ्गारशिल्पादिनन्दाख्यासु शुभं स्मृतम् १ विवाहोपनयौ यात्राभूषाशिल्पकलादिकम् । गजाश्वरथकृत्यं च भद्रा तिथिषु सिद्धिदम् २ सैन्यं संग्रामशस्त्रादियोत्रात्सव गृहादिकम् । भैषज्यं चैव वाणिज्यं सिद्ध्येत्सर्वं जयासु च ३ शत्रूणां वधबन्धादिविषशस्त्राग्नियोजनम् । कर्तव्यं तच्च रिक्तायां नैव सन्मङ्गलं क्वचित् ४ व्रतबन्धविवाहादि यात्राराज्याभिषेचनम् । शान्तिकं पौष्टिकं कर्म पूर्णासु किल सिद्ध्यति ॥ ५ ॥

गीत नृत्य तथा खेतीकर्म चित्र उत्सव वा गृहादिक कर्म तथा वस्त्राभूषण धारण करना और शिल्पादिक कर्म अर्थात् थवई की कृत्य इन कार्यों में नन्दातिथि शुभ है १ विवाह ज-नेऊ तथा यात्रा भूषण पहिरना वा थवई का काम वा कला सीखना और हाथी घोड़ा वा रथकर्म इन सब कार्यों में भद्रा तिथि शुभ है २ फौज के कर्म और युद्धकर्म और हथियारों के कर्म और यात्रा का उत्सव वा गृहादिक कर्म तथा भैषज्य अर्थात् औषध करना वा वाणिज्यकर्म इन कार्यों में जया तिथि शुभ है ३ शत्रुका वध करना वा बन्धनादि कर्म करना शस्त्र चलाना वा अग्नि लगाना इन कार्योंमें रिक्ता तिथि शुभहै और मङ्गलकार्य रिक्ता में कभी न करना ४ जनेऊ वा विवाह वा यात्राकरना वा राजगद्दीपर बैठना और शान्तिककर्म वा पौष्टिक कर्म इन कार्यों में निश्चय करके पूर्णातिथि शुभ है ॥ ५ ॥

अथ तिथिस्वामिज्ञानम् ॥

तिथीशावह्निधात्रम्बाहेरम्बोरगषण्मुखाः । रवीशा म्बायमोविश्वे हरिस्मरशिवेन्दवः । अमावास्यातिथे रीशाःपितरः सम्प्रकीर्तिताः ॥ १ ॥

परेवाके स्वामी अग्नि हैं द्वीजके स्वामी ब्रह्मा हैं तीज के

स्वामी देवीजी हैं चौथि के स्वामी गणेशजी हैं पञ्चमी के स्वामी सर्प हैं छठि के स्वामी स्वामिकार्त्तिक हैं सप्तमी के स्वामी सूर्य हैं अष्टमी के स्वामी शिवजी हैं नवमी के स्वामी दुर्गाजी हैं दशमी के स्वामी यम हैं एकादशी के स्वामी विश्वेदेवा हैं द्वादशी के स्वामी विष्णु हैं त्रयोदशी के स्वामी कामदेव हैं चतुर्दशी के स्वामी शिवजी हैं पूर्णमासी के स्वामी चन्द्रमा हैं अमावस के स्वामी पितर हैं इसी प्रकार से तिथियोंके स्वामी जानना ॥ १ ॥

अथ तिथिमध्ये तैलादिवर्ज्यम् ॥

षष्ठ्य ६ ष्टमी ८ भूत १४ विधुक्षयेषु ३० नो सेवेत ना तैलपले क्षुरं रतम् । नाभ्यञ्जनं विश्व १३ दश १० द्विके२ तिथौ धात्रीफलैस्स्नानममा ३० द्रि७गो ९ ष्वसत् ॥ १ ॥

छठि को तैलसेवन वर्जित है अष्टमी को मांस वर्जित है चतुर्दशी को क्षौर वर्जित है और अमावस को स्त्रीप्रसंग वर्जित है और त्रयोदशी वा दशमी वा द्वीज इन तिथियों में उवटन लगाना वर्जित है और अँवरा के फल का स्नान अमावस वा सप्तमी वा नवमी को न करै ॥ १ ॥

अथ तिथिमध्ये तैलादिपरिहारः ॥

षष्ठीशनैश्चरे तैलं महाष्टम्यां पलानि च । तीर्थक्षौरं चतुर्दश्यां दीपमाल्याञ्च मैथुनम् ॥ १ ॥

छठि के दिन जो शनैश्चर पड़े तो तैलसेवन करना चाहिये और दुर्गाष्टमी को मांस खाना योग्य है और तीर्थपर चतुर्दशी को क्षौर में दोष नहीं है और दीपमालिका अमावस को मैथुन योग्य है ॥ १ ॥ अथोक्तकार्ये सेवननिषिद्धाः ॥

कूष्माण्डं मातुलुङ्गं च पटोलं बृहतीफलम् । श्रीफलंपिचुमन्दञ्च धात्रीं पक्षादितस्त्यजेत् ॥ १ ॥

परेवा को कुम्हड़ा भोजन वर्जित है द्वीजको बिजौरा नींबू वर्जित है तीजको परवर वर्जित है चौथिको भांटा वर्जित है

पञ्चमी को बेल वर्जित है छठिको निमकौरी वर्जित है सप्तमी को आँवरा वर्जित है ॥ १ ॥

अथ शुभकृत्ये वर्जितयोगादिः ॥

व्यतीपातवैधृत्यमापर्वभद्रातिथेर्वृद्धिनाशौ जनुर्भं ग्रहर्क्षम् । कवीज्यास्तसंक्रान्तिन्यूनाधिमासं कुजार्कार्किरिक्तास्त्यजेद्भव्यकृत्ये १ विष्कुम्भवज्रेघटिका हि तिस्रो व्याघातशूले नव पञ्च जह्यात् । भव्येषु कृत्येष्वतिगण्ड गण्डे षडेव धीरः परिघार्द्धमाद्यम् ॥ २ ॥

व्यतीपातयोग वैधृतियोग वा अमावस तथा पर्व वा भद्रा और तिथिवृद्धि वा तिथिक्षय तथा जन्म का नक्षत्र वा ग्रहण का नक्षत्र और शुक्र वा बृहस्पति का अस्त और संक्रान्तिका दिन तथा क्षयमास मलमास और मङ्गल एतवार वा शनिवार तथा रिक्तातिथि ये कुयोग समस्त शुभकार्य में वर्जित हैं कोई आचार्य के मतसे संक्रान्ति में सोलह २ घड़ी पर पूर्व वर्जित हैं १ विष्कुम्भ वा वज्रयोगके आदि में तीन २ घड़ी वर्जित हैं और व्याघात के आदिमें नव घड़ी वर्जित हैं और शूल के आदि में पांच घड़ी वर्जित हैं और गण्ड वा अतिगण्डमें छः २ घड़ी वर्जित हैं और समस्त शुभकार्यों में परिघयोग के आदि का आधा वर्जित है ॥ २ ॥

अथ पर्वज्ञानम् ॥

चतुर्दश्यष्टमीकृष्णा अमावास्या च पूर्णिमा । पर्वाण्येतानि राजेन्द्र ! रविसंक्रान्तिरेव च ॥ १ ॥

कृष्णपक्षकी चतुर्दशी वा अष्टमी वा अमावस्या और पूर्णमासी वा संक्रान्तिका दिन ये पर्वसंज्ञक हैं शुभकार्य में वर्जित हैं ॥ १ ॥

अथ भद्राज्ञानम् ॥

शुक्ले पूर्वार्द्धेऽष्टमीपञ्चदश्योर्भद्रैकादश्यां चतुर्थ्यामप

रार्द्धे। कृष्णेन्त्यार्द्धेस्यात्तृतीयादशम्योः पूर्वे भागे सप्तमी शम्भुतिथ्योः ॥ १ ॥

शुक्लपक्ष में अष्टमी वा पूर्णमासी को भद्रा पूर्वदल में वास करती हैं और एकादशी वा चौथिको परदल में भद्रा वास करती हैं और कृष्णपक्ष में तीज वा दशमी को भद्रा परदल में वास करती हैं और सप्तमी वा चतुर्दशी को भद्रा पूर्वदल में वास करती हैं ॥ १ ॥

अथ भद्रावासज्ञानम् ॥

कुम्भकर्कद्वये मर्त्ये स्वर्गेऽब्जेजात्रयेलिगे । स्त्रीधनुर्जूकनक्रोधो भद्रातत्रैव तत्फलम् १ स्वर्गे भद्रा शुभं कार्यं पाताले च धनागमः । मृत्युलोके यदा भद्रा सर्वकार्यविनाशिनी ॥ २ ॥

कुम्भ, मीन, कर्क, सिंह इन राशियों का चन्द्रमा होय तो भद्रा का वास मृत्युलोक में होताहै और मेष, वृष, मिथुन वा वृश्चिक इन राशियों का चन्द्रमा होय तो भद्रा का वास स्वर्गलोक में जानिये और कन्या वा तुला वा धन वा मकर इन राशियों का चन्द्रमा होय तो भद्रा का वास पाताललोक में होता है सो जिस लोक में भद्रा होय उसी लोक में फल जानिये १ स्वर्ग में भद्रा होय तो कार्य में शुभफल करै और पाताल में होय तो धनलाभ करै और मृत्युलोक में होय तो सर्व कार्य नाशकरै ॥ २ ॥

अथ भद्रापरिहारः ॥

दिवाभद्रा यदा रात्रौ रात्रिभद्रा यदा दिने । तदा विष्टिकृतन्दोषन्न भवेत्सर्वसौख्यदः ॥ १ ॥

दिनकी जो भद्रा अर्थात् पूर्वार्द्ध की भद्रा सो रात्रिको पड़ै और रात्रि की जो भद्रा अर्थात् परार्द्ध की भद्रा सो दिन को पड़ै तो भद्रा दोष नहीं करसक्ती है सर्वसुख को देती है ॥ १ ॥

अथ मतान्तरे भद्रादिपरिहारः॥

विष्टिरङ्गारकश्चैव व्यतीपातश्च वैधृतिः । प्रत्यरिर्जन्मनक्षत्रं मध्याह्नात्परतश्शुभम् ॥ १ ॥

विष्टि जो भद्रा हैं अङ्गार जो मङ्गल है और व्यतीपात वा वैधृति जो योग तथा पाँचवाँ तारा और जन्म का नक्षत्र ये समस्त कुयोग मध्याह्न के उपरान्त शुभ हैं ॥ १ ॥

अथ शुक्रगुरुचन्द्रबालवृद्धज्ञानम् ॥

पुरःपश्चाद्भृगोर्बाल्यं त्रिदशाहञ्च वार्द्धकम् । पक्षं पञ्च दिनन्ते द्वे गुरोःपक्षमुदाहृतम् १ तेदशाहंद्वयोःप्रोक्तं केश्चित्सप्तदिनं परैः । त्र्यहं त्वात्ययिकेप्यन्यैरर्द्धाहञ्च त्र्यहंविधोः॥ २ ॥

जो शुक्र पूर्व में उदय होय तो तीन दिन बालक होता है और पश्चिम में उदय होय तो दशदिन बालक होता है अब वृद्ध का ज्ञान लिखते हैं जब पूर्वदिशा में शुक्र अस्त होने को होता है तिसके पहले पन्द्रह दिनसे वृद्ध होताहै और जब पश्चिम में अस्तहोने को होताहै तिसके पहले पाँचरोज वृद्ध होताहै और बृहस्पति उदय अस्त पूर्व पश्चिम में पन्द्रह २दिन बाल वा वृद्ध होताहै १ अब दूसरे आचार्य के मतसे कहते हैं गुरु शुक्र पूर्व पश्चिम उदय अस्त में बाल वृद्ध दश २ दिन का होताहै और कोई आचार्य के मतसे बाल वृद्ध सात २ रोज मानना चाहिये और आचार्य के मतसे आवश्यक कार्य में बाल वृद्ध शुक्र गुरु का तीन २ दिन मानना योग्यहै और इसी प्रकार से चन्द्रमा के उदय अस्त में साढ़े तीन २ दिन बाल वृद्ध मानना चाहिये ॥ २ ॥

अथ गुरुशुक्रास्तमध्ये कार्यवर्जितज्ञानम् ॥

वाप्यारामतडागकूपभवनारम्भप्रतिष्ठेव्रतारम्भोत्सर्गवधूप्रवेशनमहादानानि सोमाष्टके । गोदानाग्रयण

प्रपाप्रथमकोपाकर्मवेदव्रतंनीलोद्वाहमथातिपन्नशिशुसस्कारान्सुरस्थापनम् १ दीक्षामौञ्जिविवाहमुण्डनमपूर्वन्देवतीर्थेक्षणं संन्यासाग्निपरिग्रहौनृपतिसन्दर्शाभिषेकोगमम्। चातुर्मास्यसमाव्रतीश्रवणयोर्वेधंपरीक्षान्त्यजेत् वृद्धत्वास्तशिशुत्वइज्यसितयोन्यूनाधिमासेतथा॥२॥

बावली वा बगीचा और तालाब वा कुवाँ इनका आरम्भ करना वा प्रतिष्ठा करना और नवीन व्रत का आरम्भ करना तथा उद्यापन वा वधूप्रवेश वा महादानादि तथा यज्ञारम्भ करना वा श्राद्ध वा दाढ़ी बनवाना तथा नवान्न वा पौशाला वा प्रथम रक्षावन्धन वा वेदव्रत वा वृषोत्सर्ग वा बाजार लगाना वा बालक का संस्कार अर्थात् अन्नप्राशनादि कर्म करना वा देवप्रतिष्ठा करना १ तथा मन्त्र लेना अर्थात् शिष्य होना वा जनेऊ करना वा विवाह तथा मुण्डन करना और प्रथम तीर्थ वा प्रथम देवता का दर्शन वा संन्यास लेना वा अग्नि तपना वा राजा का दर्शन करना और राजगद्दी बैठना वा यात्रा करना वा चतुर्मास का व्रतारम्भ करना वा कर्णवेध करना वा परीक्षा लेना ये समस्त कर्म बृहस्पति वा शुक्र के उदय अस्त वा बाल वृद्ध में वर्जित हैं तिसी प्रकार से इतने कर्म क्षयमास तथा मलमास में भी वर्जित हैं ॥ २ ॥

अथ मतान्तरं कार्यवर्जितकुयोगज्ञानम् ॥

अस्ते वर्ज्यं सिंहनक्रस्थजीवे वर्ज्यं केचिद्वक्रगे चातिचारे । गुर्वादित्ये विश्वघस्रेऽपि पक्षे प्रोचुस्तद्वद्दन्तरत्नादिभूषाम् ॥ १ ॥

अस्तमें जो कार्य वर्जित हैं सो सिंह मकरकी बृहस्पति में भी वर्जित हैं और कोई आचार्य का मत यह है कि वक्र वा अतीचार बृहस्पति होय तौभी पूर्वोक्त कर्म वर्जितकरै और गुर्वादित्य अर्थात् सूर्य बृहस्पति एकराशिमें होयँ सो भी वर्जित हैं

और पूर्वोक्त कर्म में तेरह दिन का पक्ष पड़े सो भी वर्जित है और तिसी प्रकार से दन्तरत्नादि भूषण धारण करना अर्थात् दांतबँधाना वा रत्नादिजड़ाना भी वर्जित है ॥ १ ॥

अथ गुर्वादित्यादिपरिहारः ॥

गुर्वादित्ये दशाहानि गुरौ सिंहे त्रिमासिकम् । अतीचारे च वक्रे च अष्टाविंशतिवासरान् ॥ १ ॥

गुर्वादित्य दशदिन मानना चाहिये और सिंहकी बृहस्पति तीनमहीना वर्जितहै और अतीचार वा वक्री होय तो अट्ठाईस दिन वर्जित है ॥ १ ॥

अथ द्वितीयप्रकारेण गुर्वादित्यपरिहारः ॥

गुरुः सूर्यात्पृथग्भूत्वा पुनश्चेत्क्रियते युतिः । गुर्वादित्योद्भवो दोषो न भवेद्वै कदाचन ॥ १ ॥

गुरु सूर्य अलग होकर फिर एकराशि में प्रवेश करैं तो गुर्वादित्य का दोष निश्चय से नहीं होता है ॥ १ ॥

अथ सिंहस्थगुरुपरिहारः ॥

मघादिपञ्चपादेषु गुरुःसर्वत्रनिन्दितः।गङ्गागोदान्तरं हित्वा शेषांघ्रिषु न दोषकृत् ॥ १ ॥

चारि चरण मघा के एक चरण पूर्वाफाल्गुनी का ये पाँचो चरण सिंह की बृहस्पति में समस्त देशन में वर्जितहैं और गङ्गाजी वा गोदावरी वीच में छोड़कर शेष जो चार चरण बाकीरहे सो औरदेशोंमें नहीं वर्जितहैं अर्थात् गङ्गा गोदावरी के वीच में समस्त सिंह वर्जित है केवल मेष के सूर्यके विना सो वचन आगे लिखतेहैं ॥ १ ॥

अथ द्वितीयप्रकारेण सिंहस्थगुरुपरिहारः ॥

मेषेऽर्केचशुभोद्वाहो गङ्गागोदान्तरेऽपि च । सर्वसिंह गुरुर्वर्ज्यः कलिङ्गेगौडगुर्जरे ॥ १ ॥

मेषके सूर्यमें गङ्गा गोदावरी के अन्तरमें भी विवाह शुभ है और सर्प सिंह की बृहस्पति कलिङ्गदेश वा गौड़देश वा गुर्जरदेश में वर्जित है ॥ १ ॥

अथ मकरस्थगुरुपरिहारः ॥

रेवापूर्वे गण्डकीपश्चिमे च शोणस्योदग्दक्षिणेनीचइज्यः। वर्ज्यो नायं कौङ्कणे मागधे च गौडे सिन्धौ वर्जनीयः शुभेषु ॥ १ ॥

रेवानदी के पूर्व और गण्डकनदी के पश्चिम और शोणभद्र के उत्तर दक्षिण में मकर की बृहस्पति वर्जित है और कौंकण मागध देश में नहीं वर्जित है और गौड़देश वा सिन्धुदेश में वर्जित है शुभकार्य में ॥ १ ॥

अथ ग्रहणे वर्ज्यमासादिज्ञानम् ॥

नेष्टं ग्रहर्क्षे सकलार्द्धपादग्रासे क्रमात्तर्कगुणेन्दुमासान्। पूर्वं परस्तादुभयोस्त्रिघस्राग्रस्तास्तगेचाभ्युदिते ऽर्द्धखण्डे ॥ १ ॥

सर्वग्रहण होय तो ग्रहण का नक्षत्र शुभकार्य में छः महीने तक वर्जित है और आधा ग्रहण होय तो ग्रहणर्क्ष तीन महीने तक वर्जित है और चौथाई ग्रहण परे तो एक महीनातक शुभ कार्य में ग्रहण का नक्षत्र वर्जित है ग्रहण पड़ते२ अस्त होजाय तो ग्रहण के पहले तीन दिन शुभकार्य में वर्जित हैं और ग्रहण पड़ते २ उदय होय तो ग्रहण के पीछे तीन दिन शुभकार्य में त्याज्य हैं और जो दुपहर वा आधीरातको ग्रहणलगे तो तीन दिन पहले वा तीन दिन पीछे शुभकार्य में वर्जित हैं ॥ १ ॥

अथ चक्रम् ॥

सर्वग्रासे ग्रहर्क्षे वर्ज्यम्	अर्द्धग्रासे ग्रहर्क्षे वर्ज्यम्	पादग्रासे ग्रहर्क्षे वर्ज्यम्
मास ६	मास ३	मास १

पुनश्चक्रम् ॥

ग्रस्तास्तगे	ग्रस्तोदये	अर्द्धखण्डे अर्थात् दुपहर तथा अर्द्धरात्रि
पूर्वत्रिदिनं वर्ज्यम् ३	परं त्रिदिनं वर्ज्यम् ३	उभयोस्त्रिदिनं वर्ज्यम् ३

अथ कुयोगादिपरिहारः ॥

कुयोगास्तिथिवारोत्थास्तिथिभोत्थाभवारजाः। हूण वङ्गखसेष्वेव वर्ज्यास्त्रितयजास्तथा ॥ १ ॥

तिथिवार से युक्त जो कुयोग है तथा तिथि नक्षत्र से मिले जो कुयोग हैं और नक्षत्रवार मिलकर जो कुयोग हैं सो हूण-देश वा वङ्गदेश वा खसदेश में वर्जित हैं इसी प्रकार से तिथि वार नक्षत्र तीन से युक्त जो कुयोग सो भी इन्हीं देशों में वर्जित है ॥ १ ॥

अथ द्वितीयप्रकारेण कुयोगपरिहारः ॥

अयोगे सुयोगोऽपि चेत्स्यात्तदानीमयोगं निहत्यैष सिद्धिं तनोति । परे लग्नशुद्ध्या कुयोगादिनाशं दिनार्द्धोत्तरं विष्टिपूर्वं च शस्तम् ॥ १ ॥

कुयोग में जो सिद्धियोग पड़े तो कुयोग को हनै अर्थात् नाश करै और अपनी सिद्धि को प्रकाश करै तथा और आ-चार्यों का यह मत है कि लग्नशुद्ध होनेसे कुयोगादि नाश होते हैं और दुपहरके बादि भद्रादिक जो हैं कुयोग सो भी शुभ हैं सो वचन पहले लिख आये हैं ॥ १ ॥

अथ वारप्रवृत्तिज्ञानम् ॥

निशार्द्धं दिनमानं च युक्तापञ्चेन्दुभिस्तथा । वार प्रवृत्तिर्विज्ञेयासूर्यसिद्धान्तसम्मता ॥ १ ॥

रात्रिप्रमाण को आधा करना तिसमें दिनप्रमाण जोड़ देना

उस अङ्कमें पन्द्रह और जोड़देना जो अंक होय वही इष्टकाल वारप्रवृत्ति का सूर्योदय से समझलेना यह मत सूर्य सिद्धान्त का है १ अब उदाहरण लिखते हैं श्रीसंवत् १९४८ शाके १८१३ श्रावणकृष्णदशम्यां १० गुरुवासरे स्पष्टवारप्रवृत्तिर्व्याख्यायते-ग्रहलाघवेन स्पष्टदिनमानम् ३३ । १४ इस दिनमानको साठि में घटा देने से रात्रिमानभया २६ । ४६ तिसका आधा किया १३ । २३ इसको दिनमान में जोड़दिया ४६ । ३७ इसमें पन्द्रह और जोड़दिये ६१ । ३७ यह अंक हुआ इसमें साठि निकाल डारे तो रहे १ । ३७ यही इष्टकाल गुरुवार प्रवेशका हुआ अर्थात् एक घड़ी सैंतीस पल दिन चढ़े पर बृहस्पतिवार प्रवेश भया-जब अङ्क वारप्रवेश का साठि से ज़्यादा आवै तब साठि निकालकर जो शेष बचै सोई दिन चढ़े का इष्टकाल जानिये तथा जो अङ्क साठि से कम आवै उसे साठि में घटा देना जो शेष बचै सो उतनी रात्रिरहे का इष्टकाल जानना॥१॥

अथ कालहोराज्ञानम् ॥

वारादेर्घटिकाद्वि २ घ्नास्वाक्षहृच्छेषवर्जिताः । सैका १ स्तष्टानगैः ७ कालहोरेशादिनपक्रमात् ॥ १ ॥

जब से वारप्रवृत्ति लगै तबसे जो इष्टकाल बीता होय उसे दूना करना फिर उसे दो जगह रखना पहले अङ्कमें पांच का भाग देना जो शेषाङ्क होय उसे दूसरी जगह घटायदेना उसमें एक और जोड़देना उसमें सातका भागदेना जो शेषाङ्क रहै उसे दिनप के क्रमसे होरा जानिये अर्थात् जिस दिन का होरा बनावे उसीदिन से गिने शेषाङ्क पर्यन्त अन्तमें जो वार आवे उसीकी होरा जानिये १ अब उदाहरण लिखते हैं ॥ श्रीसंवत् १९४८ शाके १८१३ श्रावणकृष्ण १० गुरौ तत्र पूर्वोक्तं वारप्रवेशेष्टम् १ । ३७ अथ सूर्योदयादिष्टम् ६ । ७ इस इष्टमें वारप्रवेशका इष्ट घटाने से वारादि इष्ट हुआ ४ । ३० इसको

दूना किया तो हुआ ६ । ०० इसको दूसरी जगह रक्खा ६।०० इसमें पांचका भाग दिया तो शेष बचे ४ इसको जिसे दूना कियाहै उसमें घटाय देना अर्थात् नव में घटाय दिया तो शेष बचे ५ इसमें सात का भाग लिया तो पांचै शेष रहे इन्हें वेफैः से गिने तो सोमवार की होरा भई अब रात्रि रहे वारप्रवेश होय तो होरा का क्रम वारादि इष्ट बनाने का लिखते हैं जो इष्ट सूर्योदय से होय उसमें जो रात्रि रहेका इष्ट होय वारप्रवेशका सो जोड़देना जो होय सोई वारादि इष्टजानलेना फिर इसी उदाहरण से होरा बनाय लेना ॥ १ ॥

अथ द्वादशचन्द्रपरिहारः ॥

अभिषेके निषेके च प्राशने व्रतबन्धने । पाणिग्रहे प्रयाणे च चन्द्रमा द्वादशः शुभः ॥ १ ॥

अभिषेक जो राजगद्दीपर बैठाना निषेक जो गर्भधारण है और अन्नप्राशन तथा जनेऊ और विवाह वा यात्रा इतने कार्यों में बारहवां चन्द्रमा शुभ होता है ॥ १ ॥

अथ जन्मचन्द्रमानिषेधः ॥

जन्मगः फलदश्चन्द्रः पञ्चकर्माणि वर्जयेत् । यात्रा युद्धविवाहेषु प्रवेशे क्षौरकर्मणि ॥ १ ॥

जन्म का चन्द्रमा सर्वकार्य में शुभ है पांच कार्य में वर्जित है यात्रा वा युद्ध वा विवाह तथा प्रवेश वा क्षौरकर्म में त्याज्य है ॥ १ ॥

अथ चन्द्रमानिर्णयः ॥

पापान्तः पापयुग्द्यूने ७ पापाच्चन्द्रः शुभोप्यसत् । शुभांशे वाधिमित्रांशे गुरुदृष्टोऽशुभोपि सत् ॥ १ ॥

चन्द्रमा पापग्रहों के मध्य में होय वा पापग्रह से युक्त होय वा पापग्रहसे सातवें हो इन स्थानों में चन्द्रमा होय तो अपनी

राशि से शुभहोय तो भी अशुभ जानिये वा शुभग्रहके नवांशा में चन्द्रमा होय वा अपने मित्र के नवांशामें होय वा बृहस्पति की दृष्टि चन्द्रमा पर होय तो अपनी राशि से चन्द्रमा अशुभ होय तौ भी शुभ जानिये ॥ १ ॥

अथ द्वितीयप्रकारेण चन्द्रनिर्णयः ॥

सिताऽसितादौ सद्दुष्टे चन्द्रे पक्षौ शुभावुभौ । व्यत्यासे चाशुभौ प्रोक्तौ संकटेऽब्जबलंत्विदम् ॥ १ ॥

शुक्लपक्ष की परेवा को जिसकी राशि से चन्द्रमा शुभ होय और कृष्णपक्ष की परेवा को जिसकी राशि से चन्द्रमा अशुभ होय ऐसा योग जिसको होय तो दोनोंपक्ष में चन्द्रमा शुभ समझना चाहिये और व्यत्यास अर्थात् विलोम होय याने शुक्लपक्षादि में अशुभ होय और कृष्णपक्षादि में शुभ होय तो दोनों पक्षों में अशुभ जानिये यह बल चन्द्रमा का संकट अर्थात् विवाह यात्रा में लेना चाहिये ॥ १ ॥

अथ चन्द्रफलम् ॥

आद्ये चन्द्रः श्रियं कुर्यान्मनस्तोषं द्वितीयके । तृतीये धनसम्पत्तिश्चतुर्थे कलहागमः १ पञ्चमे ज्ञानवृद्धिश्च षष्ठे संपत्तिरुत्तमा । सप्तमे राजसन्मानं मरणं चाष्टमे तथा २ नवमे धर्मलाभं च दशमे मानसेप्सितम् । एकादशे सर्वलाभो द्वादशे हानिरेव च ॥ ३ ॥

पहला चन्द्रमा लक्ष्मीकारक है दूसरा मनको संतोषकारक है तीसरा धनसंपत्तिकारक है चौथे कलहागम है १ पांचवां ज्ञानवृद्धिकारक है छठवां संपत्तिदायक है सातवां राजसन्मानदायक है आठवां मरणप्रद है २ नववां धर्मलाभदायक है दशवां मनवाञ्छित सिद्धिकारक है ग्यारहवां सर्वलाभदायक है बारहवां हानिकारक है ॥ ३ ॥

अथ मेषादिलग्नानां चरस्थिरद्विस्वभावसंज्ञाचक्रम् ॥

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	ल.
च.	स्थि.	द्वि.	च.	स्थि.	द्वि.	च.	स्थि.	द्वि.	च.	स्थि.	द्वि.	सं.

अथ संवत्सरमध्ये शुभाशुभफलम् ॥

प्रभवाद्द्विगुणं कृत्वा त्रिभिर्न्यूनं तु कारयेत् । सप्तभिस्तु हरेद्भागं शेषं ज्ञेयं शुभाशुभम् १ एकचत्वारिदुर्भिक्षं पञ्चद्वाभ्यां सुभिक्षकम् । त्रिषष्ठे च समं ज्ञेयं शून्ये पीडा न संशयः ॥ २ ॥

प्रभवादि संवत्सरों को दूना करना उसमें तीन कम करना उसमें सात का भाग देना जो शेष बचै सो शुभाशुभफल जानना १ एक वा चार बचै तो दुर्भिक्ष परे पांच वा दो बचै तो सुभिक्ष होय तीन वा छः बचैं तो सम जानिये और शून्य बचै तो पीड़ा होई कुछ संशय नहीं है ॥ २ ॥

अथ तिथ्यादिगुणज्ञानम् ॥

तिथिरेकगुणोपेता नक्षत्रं च चतुर्गुणम् । वारश्चाष्टगुणः प्रोक्तः करणं षोडशान्वितम् १ स्याद्द्वात्रिंशद्गुणोयोगस्ताराषष्टिगुणान्विता । चन्द्रो दशगुणोलग्नं सहस्रगुणमुच्यते ॥ २ ॥

तिथि में एकगुण है नक्षत्र में चारगुण हैं वार में आठ गुण हैं और करण में सोलह गुण होते हैं १ और योग में बत्तीस गुण होते हैं और तारा में साठि गुण हैं और चन्द्रमा में दशगुण होते हैं तथा लग्न में सहस्रगुण हैं अर्थात् हज़ारगुण होते हैं॥२॥

अथ ताराज्ञानम् ॥

जन्मभाद्दिनभं यावद् गणनीयं यथाक्रमम् । नव ९ भिस्तुहरेद्भागं शेषं ताराबलाबलम् १ जन्म १ संपद् २

विपत् ३ क्षेमः ४ प्रत्यरिः ५ साधक ६ स्तथा ॥ वधो ७ मैत्रा ८ तिमैत्रेयं ९ तारानामसदृक्फलाः २ (नारदः) कृष्णे बलवती तारा शुक्लपक्षे तु चन्द्रमाः । सदा ग्राह्या बुधैरेवं कृष्णे तारा न चन्द्रमाः ॥ ३ ॥

जन्म के नक्षत्र से दिनके नक्षत्रतक गिनै तिसमें नौ का भाग दे जो शेष बचै सो तारा जानिये १ एक बचै तो जन्मतारा जानिये दो बचैं तो सम्पत्तारा होता है तीन बचैं तो विपत्तारा जानना चार बचैं तो क्षेम तारा समझना चाहिये पांच बचैं तो प्रत्यरि तारा होता है छः बचैं तो साधक होय सात बचैं तो वध तारा जानिये आठ बचैं तो मैत्र तारा होताहै शून्य बचै तो अतिमैत्र तारा जानना २ कृष्णपक्ष में तारा बली है और शुक्लपक्ष में चन्द्रमा बली है पण्डितलोग हमेशा कृष्णपक्ष में तारा ग्रहण करते हैं चन्द्रमा नहीं ग्रहण करते हैं ॥ ३ ॥

अथ दिशास्वामिज्ञानम् ॥

रविःशुक्रो महीसूनुः स्वर्भानुर्भानुजो विधुः । बुधो बृहस्पतिश्चैव दिशामीशास्तथा ग्रहाः ॥ १ ॥

पूर्वदिशा के स्वामी सूर्य हैं आग्नेय का स्वामी शुक्र है दक्षिण का स्वामी मङ्गल है नैर्ऋत्य का स्वामी राहु है पश्चिम का स्वामी शनैश्चर है वायव्य का स्वामी चन्द्रमा है उत्तर का स्वामी बुध जानिये तथा ईशान्य का स्वामी बृहस्पति जानना ॥ १ ॥

अथ ग्रहज्ञातिज्ञानम् ॥

ब्राह्मणौ जीवशुक्रौ च क्षत्रियौ भौमभास्करौ । चन्द्र सौम्यौ च विट्शूद्रौ राहुमन्दौ तथान्त्यजौ ॥ १ ॥

बृहस्पति शुक्र ब्राह्मण हैं सूर्य मंगल क्षत्री हैं चन्द्रमा वैश्य है बुध शूद्र है राहु शनैश्चर अंत्यज जाति हैं ॥ १ ॥

अथ ग्रहवर्णज्ञानम् ॥

रक्तावङ्गारकादित्यौ श्वेतौ शुक्रनिशाकरौ । गु

रङ्गौ पीतहरितौ शनिराह्वसितौ स्मृतौ ॥ १ ॥

सूर्य मङ्गल लालवर्ण हैं शुक्र चन्द्रमा श्वेतवर्ण हैं बृहस्पति पीत है बुध हरितवर्ण है शनैश्चर राहु श्याम वर्ण जानिये ॥१॥

अथ नक्षत्रज्ञानम् ॥

अश्विनी भरणी चैव कृत्तिका रोहिणी मृगः । आर्द्रा पुनर्वसुः पुष्यस्ततः श्लेषा मघा तथा १ पूर्वाफाल्गुनिका तस्मादुत्तराफाल्गुनी ततः । हस्तश्चित्रा तथा स्वाती विशाखा तदनन्तरम् २ अनुराधा ततो ज्येष्ठा तथा मूलं निगद्यते । पूर्वाषाढोत्तराषाढा ह्यभिजिच्छ्रवणस्ततः ३ धनिष्ठाशततारारव्यं पूर्वभाद्रपदाततः।उत्तराभाद्रपाच्चैव रेवत्येतानि भानि च ॥ ४ ॥

अश्विनी १ भरणी २ कृत्तिका ३ रोहिणी ४ मृगशिरा ५ आर्द्रा ६ पुनर्वसु ७ पुष्य ८ श्लेषा ९ मघा १० ॥ १ ॥ पूर्वाफाल्गुनी ११ उत्तराफाल्गुनी १२ हस्त १३ चित्रा १४ स्वाती १५ विशाखा १६ ॥२॥ अनुराधा १७ ज्येष्ठा १८ मूल १९ पूर्वाषाढ़ २० उत्तराषाढ़ २१ अभिजित् २२ श्रवण २३ ॥ ३ ॥ धनिष्ठा २४ शतभिष २५ पूर्वभाद्रपद २६ उत्तरभाद्रपद २७ रेवती २८ ये अट्ठाइस नक्षत्र अभिजित् समेत समझना चाहिये ॥४॥ अब अभिजित् के जानने का क्रम लिखते हैं ॥ उत्तराषाढ़ का चौथा चरण तथा श्रवण नक्षत्र का पन्द्रहवां हिस्सा आदि का यही अभिजित् नक्षत्र की संख्या है ॥

अथ सप्तविंशयोगचक्रम् ॥

विष्कुम्भ १	प्रीति २	आयुष्मान् ३	सौभाग्य ४	शोभन ५	अतिगंड ६	सुकर्मा ७
धृति ८	शूल ९	गण्ड १०	वृद्धि ११	ध्रुव १२	व्याघात १३	हर्षण १४
वज्र १५	सिद्ध १६	व्यतीपात १७	वरीयान् १८	परिघ १९	शिव २०	सिद्धि २१
साध्य २२	शुभ २३	शुक्ल २४	ब्रह्म २५	ऐन्द्र २६	वैधृति २७	० ०

अथ ग्रहस्वामिज्ञानम् ॥

शिवोदुर्गागुहोविष्णुर्ब्रह्मेन्द्रः कालसंज्ञकः । सूर्यादीनां क्रमादेते स्वामिनः परिकीर्त्तिताः ॥ १ ॥

सूर्यके स्वामी शिव हैं चन्द्रमा के स्वामी दुर्गाजी हैं मङ्गल के स्वामीस्वामिकार्त्तिकहैं बुधके स्वामी विष्णुहैं बृहस्पति के स्वामी ब्रह्मा हैं शुक्रके स्वामी इन्द्रहैं शनैश्चर के स्वामी काल हैं ॥ १ ॥

अथ करणज्ञानम् ॥

बवश्च बालवश्चैव कौलवस्तैतिलस्तथा । गरश्च वणिजो विष्टिः सप्तैतानि चराणि च १ कृष्णपक्षे चतुर्दश्यां शकुनिः पश्चिमे दले । चतुष्पदं च नागः स्यादमावास्यादलद्वये २ शुक्लप्रतिपदायां च किंस्तुघ्नः प्रथमे दले । स्थिराण्येतानि चत्वारि करणानि जगुर्बुधाः ३ शुक्लप्रतिपदान्ते च बवाख्यः करणो भवेत् । एकादशैव ज्ञेयानि चरस्थिरविभागतः ४ तिथिं च द्विगुणीकृत्य हीनमेकं च कारयेत् । सप्तभिस्तु हरेद्भागं शेषं करणमुच्यते ॥५॥

बव१ बालव२ कौलव३ तैतिल४ गर५ वणिज्६ विष्टि७ ये सात करण चरसंज्ञक जानिये १ कृष्णपक्षकी चतुर्दशी को दूसरे दल में शकुनीकरण होता है और अमावस के प्रथम दल में चतुष्पद करण होताहै और दूसरेदलमें नाग करण होताहै २ और शुक्लपक्ष की प्रतिपदा के प्रथम दल में किंस्तुघ्न करण होताहै इन चार करणोंकी स्थिरसंज्ञाहै आचार्य कहतेहैं ३ शुक्लपक्षकी प्रतिपदाके दूसरे दलमें बव करण होताहै इसी क्रमसे ग्यारह करण होतेहैं चर स्थिर विभाग करिके अर्थात् प्रथम के सात चरसंज्ञक हैं पीछेके चार स्थिरसंज्ञक हैं ४ गत तिथिको दूना करना एकको घटायदेना उसमें सातको भाग देना शेष जो रहे सो बवादिक करण जानिये ॥ ५ ॥ इसका उदाहरण चक्र से जानना ॥

अथ करणचक्रम् ॥

शुक्ल पक्षे	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	तिथि
करण	किंस्तु घ्न	वाल व	तैति ल	वणि ज्	वव	कौल व	गर	विष्टि	वाल व	तैति ल	वणि ज्	वव	कौल व	गर	विष्टि	प्रथमदल
करण	वव	कौल व	गर	विष्टि	वाल व	तैति ल	वणि ज्	वव	कौल व	गर	विष्टि	वाल व	तैति ल	वणि ज्	वव	द्वितीय दल
कृष्ण पक्षे	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	३०	तिथि
करण	वाल व	तैति ल	वणि ज्	वव	कौल व	गर	विष्टि	वाल व	तैति ल	वणि ज्	वव	कौल व	गर	विष्टि	चतु ष्पद	प्रथमदल
करण	कौल व	गर	विष्टि	वाल व	तैति ल	वणि ज्	वव	कौल व	गर	विष्टि	वाल व	तैति ल	वणि ज्	शकु नि	नाग	द्वितीय दल

अथ नक्षत्रस्वामिज्ञानम् ॥

अश्विनी दस्रदैवत्या भरणी यमदैवता । आग्नेयी कृत्तिका प्रोक्ता विधाता रोहिणीश्वरः १ मृगशीर्षेश्वरश्चन्द्रस्तथैवार्द्रेश्वरःशिवः । अदितिस्तु पुनर्वस्वोःपतिः पुष्यस्य वाक्पतिः २ आश्लेषाधिपतिःसर्पो मघेशाः पितरस्स्मृताः । भगश्च पूर्वाफाल्गुन्या उफायाः पतिरर्यमा ३ हस्तस्याधिपतिः सूर्यस्त्वष्टाचित्राभिधस्य च। स्वातेश्च दैवतं वायुर्विशाखेन्द्राग्निदेवता ४ अनुराधेश्वरो मित्रो ज्येष्ठाया इन्द्र उच्यते । मूलस्य दैवतं रक्षः पूर्वाषाढेश्वरो जलम् ५ उषाया दैवतं विश्वे विधिश्चाभिजिताधिपः। श्रवणाधिपतिर्विष्णुर्धनिष्ठा वसुदेवता ६ वरुणः शततारायाःपूभेशःकथितोऽजपात् । अहिर्बुध्न्यस्त्वथोभायाः पूषोक्तोरेवतीपतिः ॥ ७ ॥

अश्विनी नक्षत्र के स्वामी अश्विनीकुमार हैं, भरणी के स्वामी यम हैं, कृत्तिका के स्वामी अग्नि हैं, रोहिणी के स्वामी ब्रह्मा हैं १ मृगशिरा के स्वामी चन्द्रमा हैं, आर्द्रा के स्वामी शिवजी हैं, पुनर्वसु के स्वामी अदितिदेव हैं, पुष्यके स्वामी बृहस्पति हैं २ श्लेषा के स्वामी सर्प हैं, मघा के स्वामी पितर हैं, पूर्वाफाल्गुनी के स्वामी भगदेव हैं, उत्तराफाल्गुनी के स्वामी अर्यमादेव हैं ३ हस्त के स्वामी सूर्य हैं, चित्रा के स्वामी त्वष्टा देवता हैं, स्वाति के स्वामी वायुदेवता हैं, विशाखा के स्वामी अग्नि और इन्द्र हैं ४ अनुराधा के स्वामी मित्रदेव हैं, ज्येष्ठा के स्वामी इन्द्र हैं, मूलके स्वामी राक्षस हैं, पूर्वाषाढ़ के स्वामी जल हैं ५ उत्तराषाढ़ के स्वामी विश्वेदेवता हैं, अभिजित् के स्वामी विधि हैं, श्रवण के स्वामी विष्णुदेव हैं, धनिष्ठा के स्वामी वसुदेव हैं ६ शतभिष के स्वामी वरुण हैं, पूर्वाभाद्रपद के स्वामी

अजपातृदेव हैं, उत्तराभाद्रपद के स्वामी अहिर्बुध्न्य हैं, रेवती के स्वामी पूषा देव हैं ॥ ७ ॥

अथ सामान्यतः शुभाशुभनक्षत्रकर्मज्ञानम् ॥

रोहिण्यश्विमृगाःपुष्यो हस्तश्चित्रोत्तरात्रयम् । रेवती श्रवणश्चैव धनिष्ठा च पुनर्वसुः १ अनुराधा तथा स्वाती शुभान्येतानि भानि च । सर्वाणि शुभकार्याणि सिद्ध्यन्त्येषु च भेषु च २ पूर्वात्रयं विशाखा च ज्येष्ठार्द्रा मूलमेव च । शतताराभिधेष्वेव कृत्यं साधारणं स्मृतम् ३ भरणी कृत्तिका चैव मघा श्लेषा तथैव च । अत्युग्रं दुष्टकार्यं यत् प्रोक्तभेषु विधीयते ॥ ४ ॥

रोहिणी, अश्विनी, मृगशिरा, पुष्य, हस्त, चित्रा, तीनों उत्तरा, रेवती, श्रवण, धनिष्ठा, पुनर्वसु १ तथा अनुराधा वा स्वाती ये नक्षत्र शुभ हैं इनमें सर्व शुभकार्य शुभ हैं २ तीनों पूर्वा, विशाखा, ज्येष्ठा, आर्द्रा, मूल, शतभिष इन नक्षत्रों में साधारण कृत्य करना शुभ है ३ भरणी, कृत्तिका, मघा, श्लेषा इनमें अतिउग्र कार्य दुष्टकार्य सिद्ध हैं ॥ ४ ॥

अथ स्थिरध्रुवनक्षत्रसंज्ञाज्ञानम् ॥

उत्तरात्रयरोहिण्यो भास्करश्च ध्रुवं स्थिरम् । तत्र स्थिरंबीजगेहशान्त्यारामादिसिद्धये ॥ १ ॥

तीनों उत्तरा वा रोहिणी तथा रविवार दिन इनकी ध्रुवस्थिर संज्ञा है इनमें स्थिरकार्य तथा गृहकार्य बीजबोना और शान्त्यादिक वा बाग़ लगाना ये कार्य सिद्ध हैं ॥ १ ॥

अथ चरसंज्ञकनक्षत्रज्ञानम् ॥

स्वात्यादित्ये श्रुतेस्त्रीणि चन्द्रश्चापि चरं चलम् । तस्मिन् गजादिकारोहो वाटिकागमनादिकम् ॥ १ ॥

स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष ये नक्षत्र और

सोमवार दिन इनकी चरचलसंज्ञा है इनमें हाथी इत्यादिक सवारी करै वा फुलवारी लगावै और यात्रादिक कर्म करै ॥१॥

अथोग्रसंज्ञकनक्षत्रज्ञानम् ॥

पूर्वात्रयं याम्यमघे उग्रं क्रूरं कुजस्तथा । तस्मिन्घाताग्निशाठ्यानि विषशस्त्रादि सिध्यति ॥ १ ॥

तीनों पूर्वा, भरणी, मघा इन नक्षत्रों की तथा भौम का दिन इनकी उग्रक्रूरसंज्ञाहै इनमें घात करना आगलगाना तथा क्रूरकर्म विष शस्त्रादि शुभ हैं ॥ १ ॥

अथ मिश्रसंज्ञकनक्षत्रज्ञानम् ॥

विशाखाग्नेयभे सौम्ये मिश्रं साधारणं स्मृतम् । तत्राग्निकार्यं मिश्रं च वृषोत्सर्गादि सिध्यति ॥ १ ॥

विशाखा, कृत्तिका और बुधवार इनकी मिश्र साधारण संज्ञा है इनमें अग्निकार्य वा मिश्र अर्थात् मिलेभये कार्य वृषोत्सर्गादिक सिद्ध हैं ॥ १ ॥

अथ लघुक्षिप्रसंज्ञकनक्षत्रसंज्ञाज्ञानम् ॥

हस्ताश्विपुष्याभिजितः क्षिप्रं लघु गुरुस्तथा । तस्मिन्पण्यरतिज्ञानं भूषाशिल्पकलादिकम् ॥ १ ॥

हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित् वा गुरुवार इनकी लघु क्षिप्र संज्ञा है इनमें बाज़ार लगाना रति करना वा भूषण धारण करना वा थवई का काम करना वा कला सीखना ये कर्म शुभ हैं ॥ १ ॥

अथ मृदुमैत्रसंज्ञकनक्षत्रज्ञानम् ॥

मृगान्त्यचित्रामित्रर्क्षं मृदुमैत्रं भृगुस्तथा । तत्र गीताम्बरक्रीडा मित्रकार्यं विभूषणम् ॥ १ ॥

मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा और शुक्रवार इनकी मृदुमैत्र संज्ञा है इनमें गीतारम्भ वा वस्त्रधारण वा विहार करना वा मित्रकार्य करना श्रेष्ठ है ॥ १ ॥

अथ तीक्ष्णदारुणसंज्ञकनक्षत्रज्ञानम् ॥

मूलेन्द्रार्द्राहिभं सौरिस्तीक्ष्णदारुणसंज्ञकम् । तत्रा भिचारघातोग्रभेदाः पशुदमादिकम् ॥ १ ॥

मूल, ज्येष्ठा, आर्द्रा, श्लेषा और शनिवार इनकी तीक्ष्ण दारुण संज्ञा है तिसमें अभिचार घात अर्थात् मिलके मारना और उग्र कर्म करना वा भेद अर्थात् तोड़ फोड़ करना वा पशुदमादिक अर्थात् पशुनाथना इत्यादिक शुभ हैं ॥ १ ॥

अथ ऊर्ध्वमुखनक्षत्रज्ञानम् ॥

उत्तरात्रितयं पुष्यो रोहिण्यार्द्राश्रुतित्रयम् । ऊर्ध्व वक्त्रोगणो ज्ञेयो नक्षत्राणि मनीषिणः १ प्रासादच्छत्रगेहानि प्राकारध्वजतोरणम् । नानाभिषेकमश्वं च कुर्या दूर्ध्वगणेमुखे ॥ २ ॥

तीनों उत्तरा, पुष्य, रोहिणी, आर्द्रा, श्रवण, धनिष्टा, शत- भिष इन नक्षत्रों की ऊर्ध्वमुख संज्ञा है १ इनमें देवस्थान वा म- ण्डप बनाना वा बन्दनवार बाँधना वा पताका बाँधना तथा छत्र धारण करना तथा गृहकार्य करना और अभिषेक करना वा घोड़े की सवारी करना इतने कार्य ऊर्ध्वमुख नक्षत्रों में शुभहैं॥२॥

अथ तिर्यङ्मुखनक्षत्रसंज्ञाज्ञानम् ॥

रेवतीयुगलंज्येष्ठा मैत्रं हस्तत्रयो मृगः । पुनर्वसुश्च विज्ञेयो गणास्तिर्यङ्मुखो बुधैः १ वृक्षारोपणवाणिज्यं सर्वसिद्धिं च कारयेत् । वाहनानि च यन्त्राणि गमनं च विधीयते ॥ २ ॥

रेवती, अश्विनी, ज्येष्ठा, अनुराधा, हस्त, चित्रा, स्वाती, मृग- शिरा, पुनर्वसु इन नक्षत्रों की तिर्यङ्मुखसंज्ञा पण्डितलोग कहते हैं१इन नक्षत्रों में वृक्ष लगाना वाणिज्यकरना सिद्ध है और वाहन यन्त्रादि अर्थात् गाड़ी इत्यादि तथा रहँटाआदि शुभ हैं ॥ २ ॥

अथाधोमुखनक्षत्रज्ञानम् ॥

पूर्वात्रयं मघाश्लेषा विशाखाकृत्तिकायमः । मूलं चाधोमुखं ज्ञेयं नवकोऽयं गणो बुधैः १ भूकार्यमुग्रकार्यं च खननं विवरस्य च । युद्धं चाधोमुखं यच्च तत्कार्यं कारयेद् बुधः ॥ २ ॥

तीनों पूर्वा, मघा, श्लेषा, विशाखा, कृत्तिका, भरणी, मूल इन नव नक्षत्रों की अधोमुखसंज्ञा पण्डित कहते हैं १ इनमें भूमिकार्य, उग्रकार्य, कुवां खोदना और युद्धकरना ये कार्य शुभ हैं तथा और जे अधोमुख अर्थात् नीचे को देखते हैं सो सब शुभ हैं ॥ २ ॥ अथ वारकृत्यम् ॥

सोमसौम्यगुरुशुक्रवासराः सर्वकर्मसु भवन्ति सिद्धिदाः । भानुभौमशनिवासरेषु च प्रोक्तमेव खलु कर्म सिद्ध्यति ॥ १ ॥

चन्द्रमा, बुध, शुक्र, वृहस्पति ये सब कामों में सिद्धि के देनेवाले हैं और शनि, सूर्य, मङ्गल में कहे जो कर्म तिनमें सिद्धि देनेवाले हैं ॥ १ ॥

अथ वारदोषपरिहारः ॥

यस्मिन् वारे तु यत्कृत्यं पूर्वाचार्यैरुदाहृतम् । तत्कृत्यं तस्य खेटस्य होरायां खलु सिद्ध्यति १ वारदोषाश्च ये प्रोक्ता रात्रौ न प्रभवन्ति ते ॥ शनिभौमार्कवारेषु विशेषादिति केचन ॥ २ ॥

जिस वार की जो कृत्य है सो न मिलै तो उसी वार की होरा विषे कृत्य शुभ है पूर्वाचार्य कहते हैं १ दूसरा परिहार यह है कि वार का दोष रात्रि को नहीं होता है और कितेक आचार्यों का यह मत है कि शनि, भौम, रवि का दोष रात्रि को विशेष करिके नहीं है ॥ २ ॥

अथ रविवारकर्मज्ञानम् ॥

राज्याभिषेकोत्सवयानसेवागोवह्निमन्त्रौषधशस्त्रकर्म। सुवर्णताम्रौर्णिकचर्मकाष्ठसंग्रामपण्यादिरवौविदध्यात् १॥

राज्याभिषेक उत्सवकर्म यात्रा करना वा गौ पालना वा अग्नि में हवनकरना वा मन्त्रोपदेश करना तथा औषधखाना वा शस्त्र बनाना वा सोना तांबा ऊन चर्म वा काष्ठकर्म करना तथा युद्धकर्म वा बाज़ार लगाना इतने कर्म इतवार को करना शुभ हैं ॥ १ ॥ अथ चन्द्रवारकर्मज्ञानम् ॥

शङ्खाब्जमुक्तारजतंसुभोज्यस्त्रीवृक्षकृष्यंभुविभूषणाद्याः। गानंक्रतुक्षीरविकारशृङ्गीपुष्पाम्बरारम्भणमिन्दुवारे १॥

शङ्ख, कमल, मोती, चांदी, भोजन, स्त्रीभोग, वृक्षलगाना वा कृषीकर्म वा जलकर्म वा भूषणादि बनवाना वा गानविद्या सीखना वा यज्ञकर्म तथा गोरसकर्म अर्थात् दूध दही मथना तथा सींग मढ़ाना वा पुष्प अर्थात् फूलकर्म तथा वस्त्रकर्म इन कर्मों की कृत्य सोमवार को करना चाहिये ॥ १ ॥

अथ भौमवारकर्म ॥

भेदानृतस्तेयविषाग्निशस्त्रबन्ध्याविघाताहवशाठ्यदम्भात् । सेनानिवेशाकरधातुहेमप्रवालरत्नानि कुजे विदध्यात् ॥ १ ॥

भेदकर्म, अनृतकर्म अर्थात् चोरी इत्यादि तथा विषकर्म अग्निकर्म बधकर्म घातकर्म शाठ्यकर्म दम्भादिकर्म वा सेना निवेश वा धातु मूंगा रत्नादि कृत्य इतने कार्य मङ्गलवार को करना शुभ हैं ॥ १ ॥ अथ बुधवारकर्म ॥

नैपुण्यपुण्याध्ययनं कलाश्च शिल्पादिसेवालिपिलेखकानि। धातुक्रियाकाञ्चनयुक्तिसन्धिव्यायामवादाश्च बुधे विधेयाः ॥ १ ॥

चतुरता तथा पुण्य वा विद्यापढ़ना और कलासीखना वा शिल्पविद्या सीखना वा धातुक्रियाकरना वा सोनायुक्त सन्धि अर्थात् सोने का भूषण जड़ना मोती इत्यादि तथा मित्रता वा विवाद इतने कर्म बुधवार को करना शुभ हैं ॥ १ ॥

अथ गुरुवारकर्मज्ञानम् ॥

धर्मक्रियापौष्टिकयज्ञविद्यामाङ्गल्यहेमाम्बरवेश्मयात्रा । रथाश्वभैषज्यविभूषणादि कार्यं विदध्यात्सुरमन्त्रिवारे ॥ १ ॥

धर्मक्रियाकरना, पुष्टिकाम करना, यज्ञ करना, विद्याभ्यास करना, माङ्गलिक कर्म करना, सोना वा वस्त्रादि कार्य करना तथा गृह बनाना वा यात्राकरना तथा रथ बनाना तथा औषध करना वा भूषण धारण करना इतने कार्य बृहस्पतिवार में करना चाहिये ॥ १ ॥ अथ शुक्रवारकर्मज्ञानम् ॥

स्त्रीगीतशय्यामणिरत्नगन्धवस्त्रोत्सवालङ्करणादिकर्म । भूपण्यगोकोशकृषिक्रियाश्च सिध्यन्ति शुक्रस्य दिने समस्ताः ॥ १ ॥

स्त्रीप्रसंग तथा गानविद्या सीखना वा शय्या बनाना तथा मणि रत्न कर्म वा चन्दनादि कर्म तथा वस्त्रकर्म वा उत्साह तथा अलङ्कार वा भूमिकर्म वा बाज़ारकर्म तथा गोकर्म वा द्रव्यकर्म तथा खेतीकर्म इतने कर्म शुक्रवार के दिन शुभ हैं॥१॥

अथ शनिवारकर्मज्ञानम् ॥

गृहप्रवेशदीक्षादिगजबन्धः स्थिरक्रिया । दासशस्त्रानृतंस्तेयमेतत्सिद्ध्येच्छनैश्चरे ॥ १ ॥

गृहप्रवेश करना वा दीक्षा लेना वा हाथीबाँधना तथा स्थिर क्रिया करना वा दासकर्म वा शस्त्रकर्म वा झूठ बोलना वा चोरी करना ये कर्म शनैश्चर के दिन शुभ हैं ॥ १ ॥

अथ पञ्चकज्ञानम् ॥

धनिष्ठार्द्धोत्तरं पञ्च ऋक्षेष्वेषु त्यजेद् बुधः । याम्य दिग्गमनं शय्याविताने गेहगोपनम् १ प्रेतदाहं न कुर्वीत तृणकाष्ठादिसंग्रहम् ॥ २ ॥

आधे धनिष्ठा से रेवतीपर्यन्त पञ्चक होती है तिसमें दक्षिण दिशाकी यात्रा और खटिया बनाना वा तम्बूबनाना वा गृह-छवाना वर्जित है १ तथा प्रेतदाह वा तृण लकड़ीका काम भी वर्जित है ॥२॥ अथ मेषराशिगतग्रहणफलम् ॥

उपरागो यदा मेषे पीड्यन्ते सर्वदा जनाः । काम्बो जाङ्घ्रिकिराताश्च पाञ्चालश्चकलिङ्गकः ॥ १ ॥

मेषराशि में ग्रहणपरैं तो काम्बोज, अङ्घ्रि, किरात, पाञ्चाल, कलिङ्ग इन देशन को पीड़ाकरैं ॥ १ ॥

अथ वृषराशिगतग्रहणफलम् ॥

वृषे च ग्रहणे गोपाः पशवः पथिका जनाः । महान्तो मनुजा ये च पीड्यन्ते साधवस्तथा ॥ २ ॥

वृषराशि में ग्रहणपरैं तो गोप पशु पथिक अर्थात् रास्ता चलनेवाले वा महात्मालोग वा साधुन को पीड़ा होय ॥ २ ॥

अथ मिथुनराशिगतग्रहणफलम् ॥

रविचन्द्रमसौ ग्रस्तौ मिथुने च वराङ्गनाः । पीड्यन्ते वाह्लिका मत्स्या यमुनातटवासिनः ॥ ३ ॥

मिथुनराशि में सूर्यचन्द्रग्रहण परैं तो सुन्दर श्रेष्ठ स्त्री और वाह्लिकदेश मत्स्यदेश वा यमुनातटवासिन को पीड़ा करैं ॥३॥

अथ कर्कराशिगतग्रहणफलम् ॥

कर्कटे ग्रहणे पीडा मल्लादीनां च जायते । अन्तरं सर्वशाणां च तदा मत्स्यविनाशिनः ॥ ४ ॥

कर्कराशि में ग्रहणपरैं तो मल्लादिकन को पीड़ाकरैं अर्थात्

कुश्तीवाज़न को पीड़ा जानिये तथा अन्तरवेद और सवीर व मत्स्यदेश को विनाश करैं ॥ ४ ॥

अथ सिंहराशिगतग्रहणफलम् ॥

सिंहे च ग्रहणे पीडा सर्वेषां वनवासिनाम्। नृपाणां नृपतुल्यानां मनुजानां च जायते ॥ ५ ॥

सिंहराशि में ग्रहण परैं तो सर्व वनवासिन को पीड़ा करैं और राजन को राजसम मनुष्यन को पीड़ा करैं ॥ ५ ॥

अथ कन्याराशिगतग्रहणफलम् ॥

कन्यायां ग्रहणे पीडा त्रिपुराणां च शालिनाम् । कवीनां लेखकानां च जायते पीडनं सदा ॥ ६ ॥

कन्या में ग्रहण परैं तो त्रिपुष्करदेशवासिन को पीड़ाकरैं और धान्य को नाश करैं तथा कवि वा लेखकन को पीड़ाकरैं ॥ ६ ॥

अथ तुलाराशिगतग्रहणफलम् ॥

तुलायामुपरागे च दशार्णबाहुकाहुकाः । मरुवश्चपरात्यश्च पीड्यन्ते साधवश्च ये ॥ ७ ॥

तुलाराशि में ग्रहण परैं तो दशार्ण, वाहुक, आहुक, मरुव और परात्य इन देशन को पीड़ाकरैं ॥ ७ ॥

अथ वृश्चिकराशिगतग्रहणफलम् ॥

वृश्चिके ग्रहणे पीडा सर्पजातेश्च जायते । औदुम्बरस्य भद्रस्य चोलायोध्येयकस्य च ॥ ८ ॥

वृश्चिकराशि में ग्रहणपरैं तो सर्पनको पीड़ाकरैं औदुम्वरदेश भद्रदेश और चोलदेश वा अयोध्यावासिन को पीड़ाकरैं ॥ ८ ॥

अथ धनराशिगतग्रहणफलम् ॥

यदोपरागे चापे च तदा मत्स्याश्च वासिनः । विदेहमल्लपाञ्चालाः पीड्यन्ते च भिषग्विदैः ॥ ९ ॥

धनराशि में ग्रहणपरैं तो मत्स्यदेशवासिन को पीड़ाकरैं तथा

विदेह वा मल्ल वा पांचालदेशों में पीड़ाकरैं और वैद्य वा पण्डितों को पीड़ाकरैं ॥ ६ ॥

अथ मकरराशिगतग्रहणफलम् ॥

मकरे ग्रहणे पीडा नीचानां मन्त्रवादिनाम् । स्थविराणां भटानां च चित्रकूटस्थसंक्षयः ॥ १० ॥

मकरराशिपर ग्रहण परैं तो नीचमन्त्रवादिन को पीड़ाकरैं वृद्ध और योधन को पीड़ा होय और चित्रकूटवासिन की क्षय होय ॥ १० ॥ अथ कुम्भराशिगतग्रहणफलम् ॥

कुम्भे चैवोपरागे च पश्चिमस्थैस्तथार्बुदैः । तस्करै रोगिणां मृत्युः पीड्यन्ते बहुधा बुधाः ॥ ११ ॥

कुम्भराशिपर ग्रहणपरैं तो पश्चिमस्थ देशवाले वा अर्बुद देशवाले पीड़ा पावैं और चोर वा रोगिन की मृत्यु होय और पण्डित लोग पीड़ित होयँ ॥ ११ ॥

अथ मीनराशिगतग्रहणफलम् ॥

मीनोपरागे पीड्यन्ते जलद्रव्याणि सागराः । जलोपजीविनो लोका ये च यत्र प्रतिष्ठिताः ॥ १२ ॥

मीनराशि पर ग्रहणपरैं तो जलद्रव्य वा सागर वा जलोपजीवी पीड़ापावैं अर्थात् जलसे जिनकी जीविका है वा जलके पास जे टिके हैं ते पीड़ापावैं ॥ १२ ॥

अथैकमासेचन्द्रसूर्यग्रहणफलम् ॥

यदैकमासे ग्रहणं जायते शशिसूर्ययोः । शस्त्रकोपैः क्षयं यान्ति तदामायापरस्परम् ॥ १ ॥

इति श्रीपण्डितसूर्यनारायणत्रिपाठिविरचिते बृहज्ज्योतिस्सारसंग्रहे संवत्सरप्रकरणं प्रथमं समाप्तम् ॥ १ ॥

जब एक मास में चन्द्र सूर्य दोनों ग्रहणपरैं तो शस्त्रकोपसे क्षय होय अर्थात् युद्ध होय राजों में परस्पर माया होय ॥ १ ॥

इति श्रीपण्डितसूर्यनारायणत्रिपाठिविरचितबृहज्ज्योतिरसारसंग्रहवार्तिक टीकायांसंवत्सरप्रकरणं प्रथमं समाप्तम् ॥ १ ॥

अथ वस्त्रतथाभूषणधारणमुहूर्त्तम् ॥
तथा चूडिकादिधारणं च ॥

पौष्णध्रुवाश्विकरपञ्चकवासवेज्यादित्येप्रवालरदशङ्खसुवर्णवस्त्रम् । धार्यं विरिक्तशनिचन्द्रकुजेह्नि रक्तं भौमेध्रुवादितियुगे सुभगा न दध्यात् ॥ १ ॥

रेवती, तीनों उत्तरा, रोहिणी, अश्विनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, धनिष्ठा, पुष्य, पुनर्वसु इन नक्षत्रों में सूंगाधारण करना तथा दंत बँधाना तथा चूड़ी पहिरना तथा सोना वा वस्त्र धारण करना शुभ है और रिक्तातिथि तथा शनि चन्द्रवार वर्जित हैं और मङ्गलवार को लालवस्त्र धारण करना शुभ है तथा मङ्गलवार वा तीनों उत्तरा तथा रोहिणी नक्षत्र वा पुनर्वसु पुष्य में सौभाग्य स्त्री न धारण करै ॥ १ ॥

अथ चूडिकाचक्रज्ञानम् ॥

यावद्भास्करभुक्तिभानि दिवसे धिष्ण्यानि संख्या ततः वह्नि ३ भूत ५ गुणा ३ ब्धि ४ सप्त ७ नयनं २ पृथ्वी १ करे २ न्दुः १ क्रमात् । सूर्यारोर्कविसौम्यराहुरविजा जीवः शशी केतवः क्रूरेऽसच्चशुभे शुभं च कथितं चक्रे च चूडाह्वये ॥ १ ॥

जिस नक्षत्र के सूर्य होयँ वहांसे दिनके नक्षत्रतक गिनै प्रथम तीन नक्षत्र सूर्य के हैं सो अशुभहैं फिर पांच मङ्गल के हैं सो भी अशुभ जानिये फिर तीन नक्षत्र शुक्र के हैं सो शुभ हैं फिर चार नक्षत्र बुधके हैं सो भी शुभ जानिये फिर सात नक्षत्र राहु के हैं सो अशुभ हैं फिर दो नक्षत्र शनैश्चर के हैं सो भी अशुभ जानना फिर एक नक्षत्र बृहस्पति का है सो शुभ है फिर दो नक्षत्र चन्द्रमा के हैं सो भी शुभ हैं फिर एक नक्षत्र केतु का है सो अशुभ जानिये इसी क्रमसे चूड़ाचक्र जानना॥१॥

अथ चूडिकाचक्रं सूर्यभात् २८ ॥

सू.	मं.	शु.	बु.	रा.	श.	बृ.	चं.	के.	ग्रहाः
३	५	३	४	७	२	१	२	१	नक्षत्र
अशुभ	अशुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	फल

अथ मुहूर्त्तंविनापि कुत्रचिद्वस्त्रधारणम् ॥

राज्ञा प्रीत्यार्पितं वस्त्रं विवाहे चोत्सवादिषु । तथा विप्राज्ञया धार्य्यं निन्द्ये धिष्णेऽपि वासरे ॥ १ ॥

राजा प्रीतिसे वस्त्र अर्पण करे तथा विवाह में व उत्सवादिक में तथा ब्राह्मण की आज्ञा मानिके इन कार्यों में विना मुहूर्त्त वस्त्र धारण करना शुभ है नक्षत्र वार निन्दित जानिये ॥ १ ॥

अथ नीलाम्बरधारणमुहूर्त्तं तथा कृष्णाम्बरधारणं च ॥

पुनर्वसुधनिष्ठाख्येऽश्विभे हस्ताच्चतुष्टये । पूर्वोत्तरे शनौ सूर्ये नीलकृष्णाम्बरं शुभम् ॥ १ ॥

पुनर्वसु, धनिष्ठा, अश्विनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा ये नक्षत्र वा शनैश्चर इतवार दिन में नील वा स्याह वस्त्र धारण शुभ है ॥ १ ॥

अथ रोमजाम्बरधारणम् ॥

नीलवस्त्रोदिते धिष्णे रेवतीपुष्ययोरपि । शुक्रे शनैश्चरेऽर्के च धारयेद्रोमजाम्बरम् ॥ १ ॥

नीलवस्त्र में जो नक्षत्र कहे हैं सो रोमज वस्त्रधारण में लेना योग्य है तथा रेवती वा पुष्यनक्षत्र भी शुभ हैं और शुक्र, शनैश्चर, इतवार ये दिन शुभ जानिये ॥ १ ॥

अथ पट्टकूलधारणम् ॥

जीवेऽर्के च बुधे शुक्रे वस्त्रोक्तर्क्षे श्रवान्विते । स्थिरे ऽसद्ग्रहैर्युक्ते पट्टकूलस्य धारणम् ॥ १ ॥

बृहस्पति, रविवार, बुधवार, शुक्रवार वा वस्त्रोक्त नक्षत्र तथा श्रवण नक्षत्र तथा शुभग्रहयुक्त स्थिरलग्न इनमें रेशमी वस्त्र धारण करना शुभ है ॥ १ ॥

अथ वस्त्रधारणनक्षत्रफलम् ॥

वस्त्रप्राप्तिरथाश्विन्यां भरण्यां तद्विनाशनम् । कृत्तिकाग्निभयं कुर्याद्रोहिण्यां सर्वसम्पदः १ मृगमूषकभीतिस्स्यादार्द्रायां निधनं भवेत् । पुनर्वसौ तथा पुष्ये धनधर्ममहोत्सवः २ आश्लेषायां भवेच्छोको मघायां मरणं ध्रुवम् । राज्ञो भयं तु पूफायामुफायां तु धनागमः ३ कर्मसिद्धिस्तु हस्तर्क्षे चित्रायामिष्टसंपदः । मिष्टभोजनदा स्वाती विशाखानन्ददायिनी ४ मित्राप्तिरनुराधायां ज्येष्ठायां वाससां हृतिः । जलप्लुतिश्च मूलर्क्षे पूर्वाषाढा तिरोगदा ५ मिष्टान्नदोत्तराषाढःश्रवणे नयनार्तिकृत् । धान्यागमोधनिष्ठायां विषभीतिःशताभिधे ६ पूर्वाभाद्रे जलाद्भीतिरुत्तरायां धनागमः । रत्नावाप्तिस्तु रेवत्यां भवेद्वस्त्रस्य धारणात् ॥ ७ ॥

अश्विनी नक्षत्र में जो वस्त्र धारण करै तो वस्त्रप्राप्ति होय भरणी में पहिरै तो विनाश होय कृत्तिकामें अग्निभय होय रोहिणी में सर्व संपदा होयँ १ मृगशिरा में मूषक की भय होय आर्द्रा में मृत्यु होय पुनर्वसु वा पुष्यमें धन धर्म वा महोत्सव होय २ श्लेषा में शोक होय मघा में मरण होय पूर्वाफाल्गुनी में राजभय होय उत्तराफाल्गुनी में धनागम होय ३ हस्त में कर्मसिद्धि होय चित्रा में श्रेष्ठसंपदा होय और स्वाती में वस्त्रधारण करने से श्रेष्ठभोजन मिलैं विशाखा में आनन्दप्राप्ति होय ४ अनुराधा में मित्रप्राप्ति होय ज्येष्ठा में वस्त्र चोरायजाय मूल में वस्त्र धारण करै तो जल में डूब जाय

पूर्वाषाढ़ में महारोग होय ५ उत्तराषाढ़ में मिष्टान्नप्राप्ति होय श्रवण में वस्त्र धारण करने से नेत्ररोग होय धनिष्ठा में धान्यागम होय शतभिष में विषकी भय होय ६ पूर्वाभाद्रपद में जल से भय होय उत्तराभाद्रपद में धनागम होय रेवती में वस्त्र धारण करने से रत्नप्राप्ति होय ॥ ७ ॥

अथ स्त्रीणां वस्त्राभरणादिधारणमुहूर्त्तम् ॥

अश्विन्यां च धनिष्ठायां रेवत्यां करपञ्चके । सुवर्ण रत्नदन्तादिवस्त्राणां धारणं स्त्रियाः ॥ १ ॥

अश्विनी, धनिष्ठा, रेवती, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा और अनुराधा इन नक्षत्रों में स्त्री को सुवर्ण रत्न चूड़िकादि तथा वस्त्र धारण करना शुभ है ॥ १ ॥

अथ नवीनवस्त्रक्षालनम् ॥

पुनर्वसुद्वयेऽश्विन्यां धनिष्ठाहस्तपञ्चके । हित्वार्का र्किबुधान् रिक्तां षष्ठीं श्राद्धदिनं तथा १ व्रतं पर्व च व स्त्राणि क्षालयेद्रजकादिना ॥ २ ॥

पुनर्वसु, पुष्य, अश्विनी, धनिष्ठा, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा इन नक्षत्रों में धोबी से वस्त्र का धोलाना शुभ है तथा इतवार शनैश्चर बुध वा रिक्तातिथि वा छठि तथा श्राद्ध का दिन १ तथा व्रत का दिन वा पूर्वोक्त पर्व इन सबको वर्जित करना ॥ २ ॥

अथ वितानादिनिर्माणबन्धनमुहूर्त्तम् ॥

कुर्याद्वस्त्रोदिते धिष्ण्ये तूलिकामुपधानकम् । विता नाद्यं च बध्नीयादूर्ध्वमूर्ध्वमुखोडुषु ॥ १ ॥

जो नक्षत्र वस्त्र में कहे हैं उनमें कनात सामियाना तम्बू बनाना शुभहै तथा ऊर्ध्वमुख नक्षत्र में तम्बूखड़ाकरना शुभहै॥१॥

अथोपानत्परिधानं चर्मकृत्यञ्च ॥

चित्रा पूर्वानुराधा च ज्येष्ठाश्लेषामघास्मृगे । विशाखा

कृत्तिकामूले रेवत्यांज्ञार्किसूर्यजे १ उपानत्परिधानं च चर्मकर्मणि शस्यते ॥ २ ॥

चित्रा, पूर्वा, अनुराधा, ज्येष्ठा, श्लेषा, मघा, मृगशिरा, विशाखा, कृत्तिका, मूल, रेवती तथा बुध, रविवार, शनैश्चर १ इनमें जूता पहिरना शुभहै तथा सब चर्मकृत्य शुभ जानना॥२॥

अथ भूषणघट्टनं मुहूर्त्तम् ॥

त्रिपुष्कराभिधे योगे त्र्युत्तरे रेवतीद्वये । श्रुतित्रये मृगे पुष्ये पुनर्वस्वनुराधयोः। हस्तत्रयेऽथ रोहिण्यां भूषा कार्या शुभेऽहनि ॥ १ ॥

त्रिपुष्करका दिन, तीनों उत्तरा, रेवती, अश्विनी, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष, मृगशिरा, पुष्य, पुनर्वसु, अनुराधा, हस्त, चित्रा, स्वाती, रोहिणी इन नक्षत्रों तथा शुभ दिन में जेवर बनवाना शुभ है ॥ १ ॥

अथ द्विपुष्करत्रिपुष्करयोगज्ञानम् ॥

भद्रातिथीरविजभूतनयार्कवारेद्वीशार्यमाजचरणादितिवह्निवैश्वे । त्रैपुष्करो भवति मृत्युविनाशवृद्धौ त्रैगुण्यदो द्विगुणकृद्वसुतक्षचान्द्रे ॥ १ ॥

भद्रासंज्ञक तिथि अर्थात् द्वीज, सप्तमी, द्वादशी वा शनैश्चर, मङ्गल, इतवार दिन तथा विशाखा, उत्तराफाल्गुनी, पूर्वभाद्रपद, पुनर्वसु, कृत्तिका, उत्तराषाढ़ इन नक्षत्र व पूर्वोक्त तिथि वारयुक्त होकर त्रिपुष्करनाम योग होताहै तिसमें मृत्यु विनाश वा वृद्धि होय तो तीन दफ़ा होती है तथा तिथि वार पूर्वोक्त वा धनिष्ठा चित्रा मृगशिरा नक्षत्र इनके युक्त होने से द्विपुष्कर योग होता है उसमें हानि लाभ शुभाशुभ होय तो दो दफ़ा जानिये ॥ १ ॥

अथ गजस्याङ्कुशमुहूर्त्तम् ॥

शुभवारे शुभे लग्ने शुभांशे शोभने तिथौ ।
अङ्कुशाः करिणां योज्याः शनेर्लग्नेशनेर्दिने ॥ १ ॥

शुभवार, शुभग्रहों की लग्न, शुभग्रहों का नवांश वा शुभ तिथियों में हाथी के अंकुश हांकने का मुहूर्त शुभ है तथा शनैश्चर की लग्न अर्थात् मकर, कुम्भ लग्नैं होयँ और शनैश्चर का दिन होय ॥ १ ॥

अथ रससेवनमुहूर्त्तम् ॥

हस्तत्रयेऽश्विनीपुष्येऽनुराधान्त्ये श्रुतित्रये । पुनर्भे मृगशीर्षेऽर्के भौमेज्ये रसभक्षणम् ॥ १ ॥

हस्त, चित्रा, स्वाती, अश्विनी, पुष्य, अनुराधा, रेवती, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष, पुनर्वसु, मृगशिरा इन नक्षत्रों में तथा इतवार, मङ्गल, बृहस्पति इन वारों में रस खाना शुभ है ॥१॥

अथ मल्लक्रीडामुहूर्त्तम् ॥

ज्येष्ठार्द्राभरणीपूर्वामूलाश्लेषामघाविधौ। जया पूर्णा सुसद्वारे सार्के शीर्षोदयेऽङ्कके । सत्खेटैः केन्द्रगैः सार्कै मल्लक्रीडा शुभावहा ॥ १ ॥

ज्येष्ठा, आर्द्रा, भरणी, तीनों पूर्वा, मूल, श्लेषा, मघा, रोहिणी ये नक्षत्र मल्लविद्या में शुभ हैं जया पूर्णासंज्ञक तिथी शुभ हैं इतवार समेत शुभदिन शुभ हैं और शीर्षोदय लग्नैं होयँ अर्थात् मिथुन, कन्या, तुला, वृश्चिक, कुम्भ लग्नैं होयँ और शुभग्रह केन्द्र में होयँ सहित सूर्य के ॥ १ ॥

अथ तप्तलोहदाहमुहूर्त्तम् ॥

शतचित्राश्विनीमूले विशाखाकृत्तिकाइभे। ज्येष्ठाश्लेषाकुजेऽर्केऽङ्गे क्रूरलोहाग्निभेषजम् ॥ १ ॥

शतभिष, चित्रा, अश्विनी, मूल, विशाखा, कृत्तिका, हस्त, ज्येष्ठा, श्लेषा इन नक्षत्रों में लोह दाह शुभ है मङ्गल वा एतवार की लग्नें शुभ हैं अर्थात् मेष-वृश्चिक सिंह ॥ १ ॥

अथ लवणकृत्यम् ॥

लवणारम्भकृत्यं तु भरणीरोहिणीश्रवे । शनिवारे दिवाश्रेष्ठं जन्मराशेःशनेर्बले ॥ १ ॥

भरणी, रोहिणी, श्रवण इन नक्षत्रों में लोन बनाना शुभ है तथा शनैश्चरवार शुभ है और दिन विषे शुभ है अर्थात् रात्रि को त्याज्य है और जन्मराशि से गोचरोक्त शनैश्चर बलीहोय॥१॥

अथ नटविद्यामुहूर्त्तम् ॥

चित्रार्द्रारोहिणीपुष्ये त्र्युत्तरेश्रवणत्रये । ससूर्यसौम्य वारे च नटविद्या प्रशस्यते ॥ १ ॥

चित्रा, आर्द्रा, रोहिणी, पुष्य, ३ उत्तरा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष ये नक्षत्र नटविद्या में शुभ हैं तथा रविवार के सहित शुभदिन होयँ॥१॥ अथ कुम्भकारकृत्यम् ॥

पुनर्वसुद्वये हस्तत्रयेन्त्ये रोहिणीमृगे । अनुराधाश्रवोज्येष्ठा ससूर्यसौम्यवासरे १ तथा चरोदयेप्रोक्ताकुम्भ कारक्रिया बुधैः ॥ २ ॥

पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, रेवती, रोहिणी, मृगशिरा, अनुराधा, श्रवण, ज्येष्ठा इन नक्षत्रों में कुम्हार की कृत्य शुभ है और सहित एतवार के शुभदिन होय और चरलग्नें होयँ ॥ १ । २ ॥ अथ स्वर्णकारकृत्यम् ॥

श्रुतित्रयेऽश्विनीपुष्ये मृगे हस्तचतुष्टये । कृत्तिकायां पुनर्वसौ शुभे लग्ने शुभेतिथौ १ हेमकारक्रिया शस्ता हित्वा बुधशनैश्चरौ ॥ २ ॥

श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष, अश्विनी, पुष्य, मृगशिरा,

हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, कृत्तिका, पुनर्वसु इन नक्षत्रों में सोनार का कर्म शुभ है तथा शुभग्रहों की लग्नें होयँ और शुभतिथी होयँ तथा बुध शनैश्चर वार वर्जित है ॥ १ । २ ॥

अथ ताम्बूलभक्षणमुहूर्त्तम् ॥

अनुराधात्रये हस्तत्रितये रेवतीद्वये । उत्तरासु च रोहिण्यां श्रवणाद्वितये मृगे१ पुनर्वसौ तथा पुष्ये शनिभौमान्यवासरे । ताम्बूलभक्षणं सार्द्धद्विमासेऽन्नाशनेऽथवा२॥

अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, हस्त, चित्रा, स्वाती, रेवती, अश्विनी, उत्तरा, रोहिणी, श्रवण, धनिष्ठा, मृगशिरा १ पुनर्वसु, पुष्य इन नक्षत्रों में ताम्बूलभक्षण शुभ है शनि, मङ्गलवार वर्जित है तथा जन्म से अढ़ाई महीने में पानभक्षण शुभ है वा अन्नप्राशन के दिन शुभ है ॥ २ ॥

अथ वारविषघटीज्ञानम् ॥

नखा २० यमा २ र्क १२ दिक् १० सप्त ७ बाण ५ तत्त्व २५ मिताः क्रमात् । आभ्यो नाडीचतुष्कं च विषं तद्रविवासरात् ॥ १ ॥

रविवार के दिन बीस घड़ी के उपरान्त चार घड़ी तक विषघटी होती हैं सोमवार के दिन दो घड़ी के उपरान्त मङ्गल को बारह घड़ी के उपरान्त बुध को दश के उपरान्त बृहस्पति को सात के उपरान्त शुक्र को पांच घड़ी के उपरान्त शनैश्चर को पचीस घड़ी के उपरान्त चार घड़ीतक विषघटी जानिये और सब वारों में भी चार २ घड़ी विषघटी जानना ॥ १ ॥

अथ वारविषघटीचक्रम् ॥

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	वासराः
२०	२	१२	१०	७	५	२५	विषघटी उ०
४	४	४	४	४	४	४	विषघटीयावत्

अथ तिथिविषघटीज्ञानम् ॥

तिथि १५ बाणा ५ ष्ट ८ सप्ता ७ ङ्ग ६ पञ्च ५ वेदा ४ ष्ट ८ भूधराः ७ । दिग्व १० ग्नय ३ र्क १२ मनु १४ र्नग ७ वसवो ८ घटितः क्रमात् १ आस्यो घटीचतुष्कञ्च ४ विषं प्रतिपदादितः ॥ २ ॥

परेवा से लगाकर पूर्णमासी तथा अमावसपर्यन्त इन घड़िन के उपरान्त चार घड़ीतक विषघटी होती हैं चक्र के क्रम से समझलेना ॥ १ । २ ॥

अथ तिथिविषघटीचक्रम् ॥

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५।३०	तिथि
१५	५	८	७	६	५	४	८	७	१०	३	१२	१४	७	८	विषघटी उपरान्त
४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	विषघटी यावत्

अथ सकलकर्मसिद्ध्यर्थमभिजिन्मुहूर्त्तः ॥

अङ्गुल्योविंशतिः सूर्ये शङ्कुसोमे च षोडश । कुजे पञ्चदशाङ्गुल्यो बुधवारे चतुर्दश १ त्रयोदश गुरोर्वारे द्वादशार्कजशुक्रयोः । शङ्कुमूले यदा च्छाया मध्याह्ने च प्रजायते २ तत्राऽभिजित्तदाख्यातो घटिकैका स्मृता बुधैः।अत्र कार्याणि सर्वाणि सिद्धिं यान्ति कृतानि च॥३॥

एतवार के दिन बीस अंगुलका शंकुखड़ाकरै सोमवार को सोलह अंगुलका मङ्गलको पन्द्रह अंगुल बुधको चौदह अंगुल बृहस्पति को तेरह अंगुल शुक्रको बारह अंगुल शनिको बारह अंगुल का शंकुखड़ाकरै दुपहर को जब छाया शंकुमूल के बराबर होय तब से लगायत एक घड़ीतक अभिजित्संज्ञक मुहूर्त्त होता है उसमें सर्व कार्य प्रारम्भ करने से सिद्ध होते हैं ॥ १ । २ । ३ ॥

अथ दिनमध्येपञ्चदशमुहूर्त्तज्ञानम् ॥

गिरिशभुजगमित्रापित्र्यवस्वम्बुविश्वेऽभिजिदथ च विधाताइन्द्रइन्द्रानलौ च । निर्ऋतिरुदकनाथोप्यर्यमाथो भगश्च क्रमतइहमुहूर्त्तावासरेबाणचन्द्राः ॥ १ ॥

गिरिश १ भुजग २ मित्र ३ पित्र्य ४ वसु ५ अम्बु ६ विश्वे ७ अभिजित् ८ विधाता ९ इन्द्र १० इन्द्रानल ११ निर्ऋति १२ उदकनाथ १३ अर्यम १४ भग १५ ये पन्द्रह मुहूर्त्त दिनभर में होते हैं सूर्योदय से सूर्यास्तपर्यन्त दिनमान के भाग से जानना ॥ १ ॥

अथ रात्रिमध्येपञ्चदशमुहूर्त्तज्ञानम् ॥

शिवोजपादादष्टौस्युर्भेशाअदितिजीवकौ । विष्ण्वर्कत्वाष्ट्रमरुतोमुहूर्त्तानिशिकीर्तिताः ॥ १ ॥

शिव १ पूर्वाभाद्रपद २ उत्तराभाद्रपद ३ रेवती ४ अश्विनी ५ भरणी ६ कृत्तिका ७ रोहिणी ८ मृगशिर ९ अदिति १० जीव ११ विष्णु १२ अर्क १३ त्वाष्ट्र १४ मरुत १५ ये पन्द्रह मुहूर्त्त रात्रि को होते हैं ॥ १ ॥

अथ कार्यकृत्यमुहूर्त्तम् ॥

नक्षत्रनाथतुल्येस्मिन् कार्यंकुर्यात्स्वमोदितम् । दिनमध्येऽभिजित्संज्ञे दोषसंज्ञेषु सत्स्वपि १ सर्वं कुर्याच्छुभं कर्मयाम्यदिग्गमनं विना ॥ २ ॥

नक्षत्रस्वामी के तुल्य कार्य करना चाहिये अर्थात् कार्योक्त नक्षत्र जब न मिलै तब इन मुहूर्त्तों में करना योग्य है (तत्रोदाहरणम्) जैसे अनुराधा जिस कार्य में उक्त है तो दिनमें तीसरा मुहूर्त्त मित्रसंज्ञक होता है सोई अनुराधा का स्वामी है उसी में कार्यारम्भ करना चाहिये इसी क्रमसे सब जानलेना और

जो दिन मध्य में अभिजित् मुहूर्त्त होता है उसमें कार्य करने से सर्वदोष के समूह में भी अच्छा जानना १ सब शुभकर्म करना उचित है परन्तु दक्षिणदिशा की यात्रा वर्जित है ॥२॥

अथ वारदुर्मुहूर्त्तज्ञानम् ॥

रवावर्यमाब्रह्मरक्षश्च सोमे कुजेवह्निपित्रेबुधेचाभिजित्स्यात् । गुरौतोयरक्षोभृगौब्राह्मयपित्रौ शनावीशसर्पौ मुहूर्त्तानिषिद्धाः ॥ १ ॥

एतवार के दिन अर्यमा मुहूर्त वर्जित है सोमवारके दिन ब्रह्म वा रक्ष वर्जित है मङ्गलको वह्नि वा पितृ वर्जितहै बुधवार को अभिजित् वर्जित है गुरुवारको तोय वा रक्ष वर्जित है शुक्र को ब्राह्मय वा पितृ वर्जित है शनैश्चर को ईश वा सर्प वर्जितहै॥१॥

अथ रविवारादिमुहूर्त्तनिषिद्धचक्रम् ॥

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	वाराः
अर्यमा१४	ब्रह्म ६	वह्नि२२	अभिजित् ८	तोय ६	ब्राह्मय ६	ईश १	मुहूर्त्ताः
००	राक्षस १२	पितृ ४	००	रक्ष १२	पितृ ४	सर्प २	मुहूर्त्ताः

अथ लग्न वा राशिस्वामिज्ञानम् ॥

मेषवृश्चिकयोर्भौमः शुक्रो वृषतुलाधिपः । बुधःकन्यामिथुनयोः कर्कस्वामी च चन्द्रमाः १ स्वामीमीनधनुर्जीवः शनिर्मकरकुम्भयोः । सिंहस्याधिपतिः सूर्यःकथितोगणकोत्तमैः२ कन्यायाराहुराख्यातो केतुर्वैमिथुनस्य च॥३॥

मेष वृश्चिक का स्वामी मङ्गल है वृषतुला का मालिक शुक्र है कन्या मिथुन का स्वामी बुध है और कर्क का स्वामी चन्द्रमा है १ धनुर्वा मीन का स्वामी बृहस्पति है मकर वा कुम्भ का स्वामी शनैश्चर है सिंह का स्वामी सूर्य है पण्डित कहते हैं २ कन्या का स्वामी राहु है मिथुन का स्वामी केतु है ॥ ३ ॥

अथ राशीशचक्रम् ॥

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.	ग्रहाः
५	४	१ ८	६ ३	६ १२	२ ७	१० ११	६	३	स्वामिनः

अथोत्पातादियोगज्ञानम् ॥

द्वीशात्तोयाद्वासवात्पौष्णभाच्च ब्राह्मयात्पुष्यादर्यमर्क्षाच्चतुर्भैः । स्यादुत्पातोमृत्युकाणौ च सिद्धिर्वारेर्काद्ये तत्फलंनामतुल्यम् ॥ १ ॥

विशाखा से पूर्वाषाढ़ से धनिष्ठा से रेवती से तथा रोहिणी से वा पुष्य से तथा उत्तराफाल्गुनी से इन नक्षत्रों से चार २ नक्षत्र रविवारादि के क्रमसे उत्पात तथा मृत्यु व काण तथा सिद्धि योग होता है चक्र से खुलासा समझ लेना ॥ १ ॥

अथोत्पातादियोगचक्रम् ॥

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	वाराः
वि.	पू. षा.	ध.	रे.	रो.	पुष्य	उ. फा.	उत्पातयोगः
अनु.	उ. षा.	श.	अ.	मृ.	श्ले.	ह.	मृत्युयोगः
ज्ये.	अभि.	पू. भा.	भ.	आ.	म.	चि.	काणयोगः
मू.	श्र.	उ. भा.	कृ.	पु.	पू. फा.	स्वा.	सिद्धियोगः

अथ कुलिकादियोगः ॥

कुलिकःकालवेला च यमघण्टश्च कण्टकः । वाराद्विघ्नेक्रमान्मन्दे बुधेजीवेकुजेक्षणः ॥ १ ॥

कुलिक, कालवेला, यमघण्ट, कण्टक ये चार प्रकार के योग हैं सो वर्त्तमानवारसे गिनै शनैश्चरतक जो अङ्क होइ उसे दूना करै जो अङ्क होइ उसी मुहूर्त्तमें कुलिकयोग जानिये और जो कालवेला विचारै तो वर्त्तमान वार से बुधतक गिनै उसे

दूना करै जो अङ्क होइ उसी मुहूर्त्त में कालवेला योग होता है और जो यमघण्ट विचारना होय तब वर्त्तमान वारसे बृहस्पति तक गिनै उसे दूना करै जो अङ्क होय उसी मुहूर्त्त में यमघण्ट योग जानिये और जो कण्टक विचारना होय तो वर्त्तमानवार से मङ्गलतक गिनै उसे दूना करै जो अङ्क होय उसी मुहूर्त्त में कण्टक योग जानिये ॥ १ ॥

तत्रोदाहरणम् ॥

एतवार के दिन कुलिक विचारना चाहै तो एतवार से शनैश्चर तक गिनै तो सात हुए ७ इसको दूना किया तो चौदह भये १४ इसी चौदहें मुहूर्त्त में कुलिक होयगा अर्थात् तेरह मुहूर्त्त के उपरान्त चौदहपर्यन्त कुलिक जानना और मुहूर्त्त दिन का सोलहवां हिस्सा होता है ॥

अथ क्रकचयोगज्ञानम् ॥

तिथ्यङ्केन समायुक्तो वाराङ्को यदि जायते । त्रयोदशाङ्कः क्रकचो योगोऽयं निन्दितः शुभे ॥ १ ॥

तिथि वार मिलायकै तेरह होयँ तो क्रकचयोग होता है शुभ कर्म्म में निन्दित है ॥ १ ॥

अथ रवियोगज्ञानम् ॥

सूर्यभाद्वेद ४ गो ९ तर्क ६ दि १० ग्विश्व १३ नख २० संमितम् । चन्द्रर्क्षेरवियोगाः स्युः दोषसङ्घविनाशकाः १॥

सूर्य के नक्षत्र से दिनके नक्षत्र तक विचारै चारि नव छः दश तेरह वीस ये अङ्क होयँ तो रवियोग जानिये दोषके समूह को नाश करनेवाले हैं ॥ १ ॥

अथ सूर्यभाद्रवियोगचक्रम् ॥

४	९	६	१०	१३	२०	नक्षत्र
रवियोगः	रवियोगः	रवियोगः	रवियोगः	रवियोगः	रवियोगः	संज्ञा

अथ स्त्रीणांकज्जलादर्शकृत्यम् ॥

चित्राचतुष्टयेऽश्विन्यां धनिष्ठारेवतीमृगे । शुक्रेऽर्के ह्लिशनौस्त्रीणां दर्पणाञ्जनयोर्धृतिः ॥ १ ॥

चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, अश्विनी, धनिष्ठा, रेवती, मृगशिरा ये नक्षत्र वा शुक्र, एतवार, शनैश्चर, वारों में स्त्रियों को अञ्जन अर्थात् सुरमा इत्यादि वा दर्पण देखना शुभ है ॥ १ ॥

अथ सुगन्धादिधारणेमुहूर्त्तम् ॥

श्रुतित्रयेश्विनीपुष्ये पूर्वाषाढानुराधयोः । हस्तत्रयेपुनर्भेन्त्ये मृगभे च शुभेहनि १ चन्दनागुरुकस्तूरी पुष्पाणां धारणं शुभम् ॥ २ ॥

श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष, अश्विनी, पुष्य, पूर्वाषाढ़, अनुराधा, हस्त, चित्रा, स्वाती, पुनर्वसु, रेवती, मृगशिरा ये नक्षत्र वा शुभवारों में चन्दन, अगुरु, कस्तूरी, फूल इत्यादि सुगन्ध धारण करना शुभ है ॥ १ । २ ॥

अथ मद्यारम्भमुहूर्त्तम् ॥

रौद्रेपैत्र्येवारुणेपौरुहूते याम्येसार्प्येनैर्ऋतेचैवधिष्ण्ये। पूर्वाख्येषुत्रिष्वपिश्रेष्ठउक्तो मद्यारम्भःकालविद्भिः पुराणैः ॥ १ ॥

आर्द्रा, मघा, शतभिष, ज्येष्ठा, भरणी, श्लेषा, मूल, तीनों पूर्वा इन नक्षत्रों में मदिरा बनाना शुभ है ॥ १ ॥

अथ वृक्षारोपणम् ॥

शतद्वीशमूलान्त्यचित्रानुराधामृगत्र्युत्तराधातृहस्ताशिवपुष्ये । भवेद्वृक्षवल्ल्यादिरोपःप्रशस्तःसितेशीतगौसोमपुत्रेसुरेज्ये १ वैशाखेश्रावणेमार्गे कार्त्तिके फाल्गुने तथा । एते साधारणा मासा वृक्षस्यारोपणे शुभाः॥२॥

शतभिष, विशाखा, सूल, रेवती, चित्रा, अनुराधा, मृग-शिरा, ३ उत्तरा, रोहिणी, हस्त, अश्विनी, पुष्य इन नक्षत्रों में वृक्ष लतादिरोपण शुभ है तथा शुक्र तथा चन्द्रवार वा बुध वा बृहस्पति ये शुभ हैं १ वैशाख, श्रावण, मार्ग, कार्त्तिक, फाल्गुन ये मास वृक्ष लगाने में शुभ हैं ॥ २ ॥

अथ वृक्षचक्रम् ॥

सूर्यभाद्दिनभं यावद्वृक्षचक्रं विचारयेत् । त्रीणि मूले भवेद्रोगस्त्वचि त्रीणि धनागमः १ शाखायां वेद नाशः स्यात्पत्रे युग्मदरिद्रता । शीर्षे त्रीणि शुभं प्रोक्तं पूर्वमेकं तु मृत्युदम् २ याम्ये पञ्च सुतो नाशः पश्चिमे द्वे धनप्रदे । उत्तरे वेदलाभः स्यात्तदुक्तं ब्रह्मयामले॥३॥

सूर्य के नक्षत्र से दिन के नक्षत्रतक गिनै तीन नक्षत्र वृक्ष के जड़ में स्थापितकरै सो रोगप्रद हैं और तीन नक्षत्र त्वचा में देइ सो धनप्रद हैं १ और शाखा में चार नक्षत्र देइ सो नाशप्रद हैं और दो नक्षत्र पत्र में देइ सो दरिद्रदाता हैं और तीन शिर में देइ सो शुभप्रद हैं और एक नक्षत्र पूर्व में देइ सो मृत्युकारक है २ और दक्षिण में पांच नक्षत्र देइ सो पुत्र-नाशक हैं और दुइ नक्षत्र पश्चिम में देइ सो धनदाता हैं तथा उत्तर में चारनक्षत्र देइ सो लाभप्रद हैं यह चक्र ब्रह्मयामल में कहा है ॥ ३ ॥ अथ वृक्षचक्रन्यासचक्रं सूर्यभात् २७ ॥

मूल	त्वचा	शाखा	पत्र	शीर्ष	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	स्थान
३	३	४	२	३	१	५	२	४	नक्षत्र
रोग प्रदः	धना गमः	नाश प्रदः	दरि द्रता	शुभ प्रदः	मृत्यु प्रदः	पुत्र नाशः	धन प्रदः	लाभ प्रदः	फलम्

अथ गवां क्रयविक्रयमुहूर्त्तम् ॥

शक्रवासवकरेषु विशाखापुष्यवारुणपुनर्वसुभेषु । अ

शिवपूषभयुतेषु विधेयो क्रयविक्रयविधिः सुरभीणाम्॥१॥

ज्येष्ठा, धनिष्ठा, हस्त, विशाखा, पुष्य, शतभिष, पुनर्वसु, अश्विनी, रेवती इन नक्षत्रों में गौवोंका लेना वेंचना शुभहै॥१॥

अथ राजदर्शनमुहूर्त्तम् ॥

त्र्युत्तरे श्रवणाद्वन्द्वे मृगे पुष्यानुराधयोः । रोहिण्यां रेवतीयुग्मे चित्राहस्ते शुभेऽह्नि १ बलिन्यर्केऽर्कवारेऽपि राजदर्शनमीरितम् ॥ २ ॥

तीनों उत्तरा, श्रवण, धनिष्ठा, मृगशिरा, पुष्य, अनुराधा, रोहिणी, रेवती, अश्विनी, चित्रा, हस्त ये नक्षत्र वा रविवार के सहित शुभदिनों में राजा की मुलाकात शुभ है तथा गोचरोक्त सूर्य बली होय ॥ १ । २ ॥

अथ पशूनां प्रवेशयात्रास्थितयः ॥

न रिक्ताष्टमीदर्शभौमेषु चित्राश्रुतित्र्युत्तरेरोहिणीषु प्रकामम् । पशूनां प्रवेशप्रयाणं स्थिती च प्रकुर्वन्ति धीराः कदाचित्कथंचित् ॥ १ ॥

रिक्तातिथि तथा अष्टमी वा अमावस तथा मङ्गलदिन इन को पशुयात्रादि में वर्जितकरे तथा चित्रा, श्रवण, तीनोंउत्तरा, रोहिणी इन नक्षत्रों में पशुप्रवेश वा पशुयात्रा वा पशुस्थित वर्जितकरना पण्डित कहते हैं ॥ १ ॥

अथ क्रयविक्रयमुहूर्त्तम् ॥

पुष्यो भाद्रपदायुग्मं स्वाती च श्रवणोश्विनी । हस्तोत्तरामृगो मैत्रं तथा श्लेषा च रेवती १ ग्राह्याणि भानि चैतानि क्रयविक्रयणे बुधैः । चन्द्रभार्गवजीवाश्च वाराः शकुनमुत्तमम् ॥ २ ॥

पुष्य,पूर्वाभाद्रपद,उत्तराभाद्रपद,स्वाती, श्रवण, अश्विनी, हस्त, उत्तरा, मृगशिरा, अनुराधा, श्लेषा, रेवती १ ये नक्षत्र

तथा चन्द्रवार वा शुक्रवार तथा गुरुवार में क्रय विक्रय कार्य अर्थात् खरीदना बेचना शुभ है तथा उत्तम शकुन लेना योग्य है ॥ २ ॥ अथ विपणिसूचीकर्ममुहूर्त्तम् ॥

स्याद्रोहिणीत्र्युत्तराहस्तपुष्ये चित्रान्त्यमित्रे विपणि मृगाश्वे । पुनर्वसौ मित्रहये धनिष्ठा चित्रासु सौम्येऽहनि कर्मसूच्याः ॥ १ ॥

रोहिणी, तीनों उत्तरा, हस्त, पुष्य, चित्रा, रेवती, अनुराधा तथा मृगशिरा वा अश्विनी ये नक्षत्र तथा शुभदिनों में दुकान करना शुभ है तथा पुनर्वसु, अनुराधा, अश्विनी, धनिष्ठा, चित्रा ये नक्षत्र वा शुभदिनों में सूचीकर्म अर्थात् दरज़ी की कृत्य शुभ है ॥ १ ॥ अथ भैषज्यकर्ममुहूर्त्तम् ॥

अर्काश्विपुष्ये श्रवणात्रये च मूलादितिस्वातिमृगे सपौष्णे । चित्रासुमित्रे च शुभेऽह्नि सार्के भैषज्यकर्म प्रचरेद्विरिक्ते ॥ १ ॥

हस्त, अश्विनी, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष, मूल, पुनर्वसु, स्वाती, मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा ये नक्षत्र वा रविवार के सहित शुभदिनों में भैषज्यकर्म अर्थात् औषध खानेको शुभ है ॥ १ ॥ अथ वाजिहस्तिकर्ममुहूर्त्तम् ॥

क्षिप्रान्त्यवस्विन्दुमरुज्जलेशादित्येष्वरिक्तारदिने प्रशस्तम् । स्याद्वाजिकृत्यन्त्वथहस्तिकार्यं कुर्यान्मृदुक्षिप्रचरेषु विद्वान् ॥ १ ॥

क्षिप्रसंज्ञक नक्षत्र तथा रेवती, धनिष्ठा, स्वाती, मृगशिरा, शतभिषा ये नक्षत्र घोड़े के कार्य में शुभहैं सवारी इत्यादि श्रेष्ठ है रिक्तातिथि और मङ्गलवार वर्जित है अब हस्तीकार्य कहते हैं मृदुसंज्ञक, क्षिप्रसंज्ञक, चरसंज्ञक इन नक्षत्रों में हाथी के कार्य शुभ हैं सवारी इत्यादिक श्रेष्ठ हैं ॥ १ ॥

अथाश्वचक्रम् ॥

अश्वाकारं लिखेच्चक्रं साभिजिद्भानि विन्यसेत्। स्कन्धे सूर्यभात्पञ्च ५ पृष्ठे च दश १० भानि च १ पुच्छे द्वे २ स्थापयेत्याहुश्चतुष्पादे चतुष्टयम् ४ उदरे विन्यसेत्पञ्च सुखे द्वे तुरगस्य च २ अर्थलाभो सुखे स स्यक् वाजी नश्यति चोदरे। चरणस्थे रणे भङ्गः पुच्छे पत्नी विनश्यति ३ अर्थसिद्धिर्भवेत्पृष्ठे स्कन्धे स्कन्ध पतिर्भवेत्। अश्वाकारमिदं चक्रं विचार्यं गणकोत्तमैः ४॥

सूर्य के नक्षत्र से अश्वाकारचक्र लिख अभिजित्समेत चन्द्रमा के नक्षत्रतक स्थापितकरै प्रथम पांचनक्षत्र स्कन्धमें देइ फिर दश नक्षत्र पीठ में देइ १ फिर दुइ नक्षत्र पुच्छमें देइ फिर चार नक्षत्र चारों चरणों में देइ फिर पांच नक्षत्र पेटमें देइ फिर दुइ नक्षत्र सुख में देइ २ अथ फलम् ॥ सुख में परै तो अर्थलाभ होइ पेटमें परै तो घोड़े को नाश करै चरणों में परै तो रण में भङ्गकरै पुच्छ में परै तो स्त्री विनाश करै ३ पीठ में परै तो अर्थसिद्धि करै और स्कन्धमें परै तो स्कन्धपति होय अर्थात् पालकी इत्यादि सवारी मिलैं यह अश्वाकार चक्र उत्तम ज्योतिषी बिचारै ॥ ४ ॥

अथाश्वचक्रन्यासः २८ ॥

स्कन्ध	पृष्ठ	पुच्छ	पाद	उदर	मुख	अङ्ग
५	१०	२	४	५	२	नक्षत्र
स्कन्धपतिर्भवेत्	अर्थसिद्धिः	पत्नीनाशः	रणेभङ्गः	वाजिनशः	अर्थलाभः	फल

अथ गजचक्रम् ॥

गजाकारं लिखेच्चक्रं जन्मभान्तं च सूर्यभात्। कर्णे शीर्षे रदे पुच्छे द्वयं सर्वत्र योजयेत् १ शुण्डायां तु द्वयं

योऽयं वेदाः पृष्ठोदरे मुखे। षड्वै चतुर्षु पादेषु साभिजि ह्निन्यसेत्क्रमात् २ कर्णे चैव महालाभो मस्तके लाभ एव च। दन्ते चैव भवेल्लाभो पुच्छे हानिः प्रजायते ३ शुण्डायां तु शुभं ज्ञेयं पृष्ठे तु सुखसंपदा। उदरे रोग संभूतिर्मुखे तु मध्यमः स्मृतम् ४ पादयोश्च भवेल्लाभो गजे चैवं विनिर्दिशेत् ॥ ५ ॥

सूर्य के नक्षत्र से जन्मनक्षत्र तक गजाकार चक्र लिखै दुइ नक्षत्र गजके कर्णमें देइ दुइ दन्तमें देइ दुइ पुच्छमें देइ १ और दुइ शुण्ड में देइ चार पृष्ठ में देइ चार पेट में देइ चार मुख में देइ छः नक्षत्र चरणों में देइ अभिजित् समेत गिनै २ अथ फलम् ॥ कर्ण में परै तो महालाभ होय मस्तक में परै तो लाभ होय और दन्त में परै तौभी लाभ होय तथा पुच्छ में परै तो हानि होय ३ शुण्ड में परै तो शुभप्रद है तथा पृष्ठ में परै तो सुख संपदा होय पेट में परै तो रोगकरै मुख में परै तो मध्यम है ४ चरणों में परै तो लाभ होइ इसी क्रमसे गजचक्र देखना ॥ ५ ॥

अथ गजचक्रन्यासः २८ ॥

कर्ण	मस्तक	दन्त	पुच्छ	शुण्ड	पृष्ठ	उदर	मुख	पाद	अङ्ग
२	२	२	२	२	४	४	४	६	नक्षत्र
महा लाभ	लाभ	लाभ	हानि	शुभ	सुख सम्पदा	रोग	मध्यम	लाभ	फल

अथ सेवाचक्रम् ॥

नराकारं लिखेच्चक्रं सेवार्थे भृत्यसंग्रहे। शीर्षे त्रीण्यर्थं लाभः स्यान्मुखे त्रीणि विनाशनम् १ हृदि पञ्च धनं धान्यं पादे षट्कं दरिद्रता। पृष्ठे द्वे प्राणसंदेहो नाभौ वेदाः शुभावहाः २ गुदे द्वे भयपीडा च दक्षहस्तैकमर्थं

कम् । एकवासे नाशकरं भृत्यसात्स्वामिभान्तकम् ३ प्रथमं सेव्यनक्षत्रं द्वितीयं सेवकस्य च । न सेवासु स्थिरा तस्य यतः प्राणार्थनाशदः ॥ ४ ॥

भृत्य जो नौकर है उसके नक्षत्र से स्वामी के नक्षत्र तक गिनै तीन नक्षत्र शिर में देय सो अर्थलाभप्रद हैं और मुख में तीन नक्षत्र देय सो विनाशकारक हैं १ पांच हृदय में देय सो धनधान्य के देनेवाले हैं और चरणों में छः नक्षत्र देय सो दरिद्रप्रद हैं और दुइ नक्षत्र पीठ में देइ सो प्राण संदेह-कारक हैं और नाभि में चार नक्षत्र देइ सो शुभकारी हैं २ दुइ नक्षत्र गुदा में देइ सो भयपीड़ाकारक हैं एक दहिने हाथ में देइ सो अर्थदाता है एक वायें हाथ में देइ सो नाशकारक है ३ प्रथम नक्षत्र स्वामी का होय उससे दूसरा नक्षत्र सेवक का होय तौ सेवा स्थिर न रहै प्राणार्थ को नाशकरै ॥ ४ ॥

अथ सेवाचक्रन्यासः २७ ॥

शिर	मुख	हृदय	चरण	पीठ	नाभि	गुदा	दक्षिणकर	वामकर	अङ्ग
३	३	५	६	२	४	२	१	१	नक्षत्र
अर्थ लाभः	विनाशः	धन धान्यः	दरिद्रं	प्राण संदेहः	शुभः	भयपीडा कारकः	अर्थदाता	नाश कारकः	फल

अथ सेवामुहूर्त्तम् ॥

हस्तद्वयेऽनुराधायां रेवतीयुगले मृगे । पुष्ये बुधे गुरौ शुक्रे सत्तिथौ रविवासरे १ योनिराशिपयोर्मैत्र्यां स्वामिसेव्यो न जीविभिः ॥ २ ॥

हस्त, चित्रा, अनुराधा, रेवती, अश्विनी, मृगशिरा, पुष्य ये नक्षत्र वा बुध, गुरु, शुक्रवार एतवार वा शुभ तिथियों में सेवाकर्म शुभ है तथा योनि वा राशीश से मित्रता होय स्वामी वा सेवक से ॥ १ । २ ॥

अथ छत्रधारणमुहूर्त्तम् ॥

त्र्युत्तरारोहिणीरौद्रपुष्यश्च शततारका । धनिष्ठा श्रवणश्चैव शुभानि छत्रधारणे ॥ १ ॥

तीनों उत्तरा, रोहिणी, आर्द्रा, पुष्य, शतभिष, धनिष्ठा, श्रवण ये नक्षत्र छत्रधारण में शुभ हैं ॥ १ ॥

अथ छत्रचक्रम् ॥

मूले त्रीणि सप्त दण्डे कण्ठे चैव तु पञ्चकम् । मध्येवसु प्रदातव्यं शिखरे वेद एव च १ मूले च जायते नाशो दण्डेहानिर्धनक्षयः । कण्ठे च राजसन्मानो मध्ये छत्रपतिर्भवेत् २ शिखरे कीर्त्तिवृद्धिश्च जन्मभात्सूर्यभान्तकम् ॥ ३ ॥

जन्म के नक्षत्र से सूर्य के नक्षत्रतक छत्रचक्र स्थापित करै तीन नक्षत्र मूल में देइ और दण्ड में सात नक्षत्र देइ और पांच कण्ठ में देइ मध्य में आठ देइ और शिखर में चार देइ १ अथ फलम् ॥ मूल में परै तो नाशकरै दण्ड में परै तो हानि करै तथा धनक्षय होय कण्ठ में परै तो राजसन्मान होय मध्य में परै तो छत्रपति होय औ शिखर में परै तो कीर्त्ति-वृद्धि होइ ॥ २ । ३ ॥

अथ छत्रचक्रन्यासः २७ ॥

मूल	दण्ड	कण्ठ	मध्य	शिखर	अङ्ग
३	७	५	८	४	नक्षत्र
नाशः	हानिः	धनक्षयः	राजसन्मानं	छत्रपतिः	फल

अथ धनुषचक्रम् ॥

सूर्यभाज्जन्मभान्तं च धनुषे चैव योजयेत् । चापाग्रे बाण ५ संख्याकं शराग्रे पञ्च ५ दीयते १ शरमूले

तथा पञ्च ५ पञ्च ५ संधौ प्रकीर्त्तितम् । दण्डे द्वयं २ तु दद्याद्वै धनुषश्चक्रमुत्तमम् २ अग्रे हानिः शरे लाभो शरमूले जयस्तथा । चापसंधौ तु शौर्यं स्याद्दण्डभङ्गः प्रजायते ॥ ३ ॥

सूर्य के नक्षत्र से जन्मनक्षत्र तक धनुषचक्र लिखना धनुष के अग्र में पांच नक्षत्र देना उसका फल हानिकारक है और पांच नक्षत्र बाण के आगे स्थापित करना उसका फल लाभकारी जानिये तथा पांच नक्षत्र बाण के मूल में देना उसका फल जयकारक है और धनुष के दोनों संधिन पर पांच पांच नक्षत्र देना तिसका फल शूरता उत्पन्नकरै अर्थात् बड़ा लड़नेवाला होय तथा धनुषके दण्ड में दुइ नक्षत्र देना तिसका फल संग्राम में भङ्गकारक है ॥ १ । ३ ॥

अथ धनुषचक्रन्यासः २७ ॥

धनुपाग्र	बाणाग्र	मूल	प्रथमसंधि	द्वितीयसंधि	दण्ड	अङ्क
५	५	५	५	५	२	नक्षत्र
हानिः	लाभः	जयः	शूरता	शूरता	भङ्गः	फल

अथ धनुर्विद्यामुहूर्त्तम् ॥

अनुराधामघापुष्यमृगशीर्षेऽष्टमीतिथौ । धनुर्विद्यादिकं कार्यं द्वादश्यां शुभवासरे ॥ १ ॥

अनुराधा, मघा, पुष्य, मृगशिरा ये नक्षत्र वा शुभवार तथा अष्टमी द्वादशी तिथिमें धनुर्विद्या शुभ है ॥ १ ॥

अथ दीपिकाचक्रम् ॥

दीपिकायां मुखे पञ्च ५ लाभसन्मानदायकाः । कण्ठे नव ९ धनप्राप्तिर्मध्येष्ट ८ स्वामिमृत्युदाः । दण्डे पञ्च ५ भवेद्राज्यमग्निऋक्षाच्च दीपकम् ॥ १ ॥

कृत्तिका नक्षत्र से दिन नक्षत्रतक दीपचक्र लिखै पांचमुख में देइ तिसका फल लाभ सन्मानदायक है कण्ठमें नवनक्षत्र देइ सो धनदाता है मध्य में आठ स्वामी की मृत्युदायक हैं दण्ड में पांच राज्यदायक हैं ॥ १ ॥

अथ दीपिकाचक्रन्यासः ॥

मुख	कण्ठ	मध्य	दण्ड	अङ्ग
५	६	८	५	नक्षत्र
लाभसन्मानप्राप्तिः	धनदः	स्वामिमृत्युः	राज्यलाभ	फल

अथेक्षुयन्त्रचक्रम् ॥

वेद ४ द्वि २ नेत्र २ भू १ भूत ५ बाण ५ हस्त २ रसाः ६ क्रमात् । प्रथमे च भवेल्लक्ष्मीर्द्वितीये हानिमेव च १ तृतीये सर्वलाभं च चतुर्थे च क्षयं तथा । पञ्चमे च भवेन्मृत्युः षष्ठस्थाने शुभं स्मृतम् २ सप्तमे चैव पीडा स्यादष्टमे धनधान्यदम् । सूर्यभाद्गणयेच्चान्द्रमिक्षु यन्त्रेण योजयेत् ॥ ३ ॥

सूर्यनक्षत्र से दिन नक्षत्रतक ऊखके रस निकालने का चक्र लिखना तिसका क्रम आठ भाग का जानना प्रथम भाग में चार नक्षत्र देना तिसका फल लक्ष्मीप्राप्तिकारक है दूसरे भाग में दो नक्षत्र हैं तिसका फल हानिकारक है तीसरे भाग में दो नक्षत्र हैं सो सर्व लाभकारी हैं चौथे भाग में एक नक्षत्र है सो क्षयकारक है पांचवें भाग में पांच नक्षत्र हैं सो मृत्युकारक हैं छठे भाग में पांच नक्षत्र हैं सो शुभकारक जानिये सातयें भाग में दो नक्षत्र लिखना सो पीड़ाकारक हैं अष्टम भाग में छः नक्षत्र हैं सो धनधान्यदायक जानिये ॥ १ । ३ ॥

अथेक्षुयन्त्रचक्रन्यासः २७ ॥

भाग	नक्षत्र	फलम्
प्रथम भाग	४	लक्ष्मीः
द्वितीय भाग	२	हानिः
तृतीय भाग	२	सर्वलाभः
चतुर्थभाग	१	क्षयः
पञ्चमभाग	५	मृत्युः
षष्ठभाग	५	शुभः
सप्तम भाग	२	पीड़ा
अष्टम भाग	६	धनधान्यम्

अथ कोल्हूचक्रम् ॥

सूर्यनक्षत्रमारभ्य गणयेद्दिनभावधिम् । त्रयं ३ मूले ऽधरे पञ्च ५ दक्षे पञ्च ५ विधीयते १ शीर्षे त्रयं ३ त्रयं ३ शैले शेषकर्त्तरि उच्यते । शुभं मूलेऽधरेधान्यं दक्षे पीडा विधीयते २ शीर्षे नाशश्च शैले च चर्चराकर्तरि स्तथा ॥ ३ ॥

सूर्य के नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक कोल्हूचक्र विचारै तीन नक्षत्र मूलमें देइ पांच अधरमें देइ पांच दहिनेदेइ १ तीन नक्षत्र शीर्ष में देइ तथा तीन नक्षत्र शैलमें देइ शेष जो बाकी रहे आठ सो कर्तरी में देना चाहिये ॥ अथ फलम् ॥ मूल में परै तो शुभ है अधर में परै तो धान्य मिलै दक्षिणमें परै तो पीड़ा होइ २ शीर्ष में परै तो नाश करै कर्तरी में परै तो चर्चराहट होइ ॥ ३ ॥

अथ कोल्हूचक्रन्यासः २७ ॥

मूल	अधर	दक्षिण	शीर्ष	शैल	कर्त्तरी	स्थान
३	५	५	३	३	८	नक्षत्र
शुभम्	धान्यम्	पीडा	नाशः	नाशः	चर्चराहट	फलम्

अथ मार्जनीचक्रं तथा मुहूर्त्तम् ॥

गुणा ३ राम ३ तर्का ६ गुणा ३ तर्क तर्का ६ फलं दग्धधान्यं व्यथा सम्पदा च । अरिश्चार्थलाभोरवेर्भाच्च ज्ञेयं गृहेमार्जनीषु रवियामलानि १ हरिस्सूर्यचित्रादितिर्मैत्रपुष्ये मृगे धातृदस्रे विरिक्ते च भौमे । त्यजेत्कुम्भ मीनौ ह्यलिंगेहशुद्धौ पवित्रार्थमेतद्रवेर्यामलानि ॥ २ ॥

सूर्य के नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक विचारै प्रथम तीन नक्षत्र दग्धप्रद हैं अर्थात् अग्निसे जरै फिर तीन नक्षत्र धान्यदायक हैं फिर छः नक्षत्र व्यथायोग्य हैं फिर तीन नक्षत्र संपदा देते हैं फिर छः नक्षत्र शत्रुवृद्धिकारक हैं फिर छः नक्षत्र अर्थलाभप्रद हैं इसी प्रकार से गृहकी मार्जनी अर्थात् झाडूका चक्र विचारना सूर्ययामल में कहा है १ श्रवण, हस्त, चित्रा, पुनर्वसु, अनुराधा, पुष्य, मृगशिरा, रोहिणी, अश्विनी इन नक्षत्रों में मार्जनीबन्धन शुभ है तथा रिक्तातिथि वा मङ्गलवार तथा कुम्भ मीन वृश्चिक लग्नें वर्जित हैं गृहपवित्रार्थ रवियामल में कहा है तथा लौकिकमत से एतवार भी वर्जित है॥२॥

अथ मार्जनीचक्रन्यासः २७ ॥

३	३	६	३	६	६	नक्षत्र
दग्ध	धान्यम्	व्यथा	सम्पदा	शत्रुः	अर्थलाभः	फलम्

अथ चुल्लीचक्रम् ॥

सूर्यभाद्वेद ४ नाशाय वेद ४ संख्या सुखाय च । रस ६ संख्या च दारिद्र्यं वेद ४ संख्या पुनः सुखम् १ बाण ५ संख्यास्त्रियानाशः पुत्रलाभश्च शेषके । चुल्ल चक्रं प्रवक्ष्यामि यथोक्तं गर्गभाषितम् ॥ २ ॥

सूर्य के नक्षत्र से दिनके नक्षत्रतक चुल्लचक्र विचारना प्रथम चार नक्षत्र नाशप्रद हैं फिर चार नक्षत्र सुखप्रद हैं १ फिर छः नक्षत्र दारिद्र्यप्रद हैं फिर चार सुखप्रद हैं फिर पांच स्त्रीनाशक हैं शेष जो रहे चार सो पुत्र लाभकारक हैं ॥ २ ॥

अथ चुल्लीचक्रन्यासः ॥

४	४	६	४	५	४	नक्षत्र.
नाश	सुख	दारिद्र्य	सुख	स्त्रीनाश	पुत्रलाभ	फल

अथ रथकर्ममुहूर्त्तम् ॥

रथकर्मशुभं क्षिप्रमृदुब्राह्मेन्द्रभैश्चरैः । सौम्योदये शुभेवारे रविवारे विशेषतः ॥ १ ॥

क्षिप्रसंज्ञक नक्षत्र तथा मृदुसंज्ञक वा रोहिणी तथा ज्येष्ठा तथा चरसंज्ञक नक्षत्रों में रथकर्म शुभ है तथा शुभग्रहों की लग्नें होयँ तथा रविवार के सहित शुभवार होय ॥ १ ॥

अथ खट्वाचक्रम् ॥

सूर्यभाच्चन्द्रभं गण्यं खट्वाचक्रं विचारयेत् । मस्तके वेद ४ शुभदं कोणयोरष्ट ८ मृत्युदम् १ शाखामष्ट ८ शुभोनित्यं मध्ये त्रीणि ३ शुभप्रदम् । पादयोर्वेद ४ नक्षत्रं हानिमृत्युमहद्भयम् २ खट्वायां सर्वमासेषु पञ्च पक्षं विवर्जयेत् । कन्यायां प्रथमे पक्षे धनुर्मीनं तथैव च ॥ ३ ॥

सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिनै खट्वाचक्र विचारै बनाने को वा प्रवेश होनेको चक्र समझना चाहिये मस्तक में चार नक्षत्र देइ तिसका फल शुभकारक है और कोणों में आठ नक्षत्र देइ सो मृत्युकारक फल है १ शाखा में आठ शुभप्रद हैं तथा मध्य में तीन शुभप्रद हैं पाद में चार नक्षत्र हानि मृत्यु महाभय देनेवाले हैं २ खाट बनाना सर्व मास में पांचपक्ष वर्जित हैं प्रथमकन्याकी संक्रांति के पंद्रह अंश तथा धन वा मीन की संक्रांति वर्जित है ॥ ३ ॥

अथ खट्वाचक्रन्यासः २७ ॥

मस्तक	कोण	शाखा	मध्य	पाद	अङ्ग
४	८	८	३	४	नक्षत्र
शुभदम्	मृत्युदः	शुभम्	शुभप्रदम्	हानिमृत्युमहाभयम्	फलम्

अथ खट्वामुहूर्त्तम् ॥

रोहिणी चोत्तरा ज्ञेया हस्तपुष्यपुनर्वसुः। अनुराधाश्विनीशस्ता खट्वानिर्माणकर्मणि १ शुभे योगे शुभे वारे विदध्यात्खट्वकां नरः। मृताशौचे तथा हेया रिक्तामाविष्टिवैधृतौ २ पितृपक्षे श्रावणे च भाद्रे मास्यशुभेऽहनि। वर्जयेद्भौममन्दे च खट्वानिर्माणकं सदा ॥ ३ ॥

रोहिणी३ उत्तरा, हस्त, पुष्य, पुनर्वसु, अनुराधा, अश्विनी ये नक्षत्र खट्वानिर्माण में शुभ हैं १ शुभयोग वा शुभवार में मनुष्य खट्वा को धारणकरै अर्थात् खट्वापर प्रवेशकरै तथा मृत्युसूतक वा रिक्तातिथि तथा अमावस वा भद्रा तथा वैधृति २ तथा पितृपक्ष वा श्रावण तथा भाद्रमास वा अशुभदिन अर्थात् जिस दिन कोई उत्पात भया होय वह दिन वर्जित है और मङ्गल शनैश्चर खट्वानिर्माण में हमेशा वर्जितकरै ॥ ३ ॥

अथ चरहीमुहूर्त्तम् ॥

स्वामिहस्तप्रमाणेन दीर्घविस्तारसंयुतम् । वसु ८ भिश्च हरेद्भागं शेषाङ्के फलमादिशेत् १ पशुहानिः १ पशोर्नाशः २ पशुलाभः ३ पशुक्षयः ४ । पशुरोगः ५ पशोर्वृद्धिः ६ पशुभेदः ७ पशोश्चयः ८ ॥ २ ॥

स्वामी के हाथों के प्रमाण से लम्बाई चौड़ाई का जोड़ करना चरही के बनाने में आठका भाग देना शेषाङ्क बचै उस का फल जानना १ एक बचै तो पशुहानि दो बचैं तो पशु-नाश तीन बचैं तो पशुलाभ चार बचैं तो पशुक्षय पांच बचैं तो पशुरोग छः बचैं तो पशुवृद्धि सात बचैं तो पशुभेद आठ बचैं तो बहुत पशु होयँ ॥ २ ॥

अथ शस्त्राभ्यासमुहूर्त्तम् ॥

हस्तत्रये श्रुतौ दास्रे पुष्येदित्युत्तरासु च । सुदिने सर्वशस्त्राणामभ्यासः सन्बुधं विना ॥ १ ॥

हस्त, चित्रा, स्वाति, श्रवण, अश्विनी, पुष्य, पुनर्वसु, तीनों उत्तरा शुभदिन अर्थात् चन्द्र, बृहस्पति, शुक्र इन में शस्त्र सीखने का मुहूर्त्त शुभ है और बुधवार वर्जित है ॥ १ ॥

अथ सेतुबंधनमुहूर्त्तम् ॥

ध्रुवर्क्षे स्वातिभे सौम्ये स्थिरलग्ने शुभे सिते । सेतूनां बन्धनं कार्यं जीवमन्दार्कवासरे ॥ १ ॥

ध्रुवसंज्ञक, स्वाती, मृगशिरा ये नक्षत्र पुलबांधने में शुभ हैं और स्थिर लग्नैं शुभ हैं तथा शुक्लपक्ष और बृहस्पति, शनैश्चर, एतवार दिन शुभ हैं १ तथा किसी आचार्य के मतसे भूमिसुप्त वा पाताल चन्द्रमा वा राहु भी विचारना चाहिये सो आगे लिखते हैं ॥ १ ॥ अथ भूमिसुप्तज्ञानम् ॥

प्रद्योतनात्पञ्च ५ नगा ७ ङ्क ९ सूर्य १२ नवेन्दु १९

षड्विंश २६ मितानि भानि । शेते मही नैव गृहं विधेयं तडागवापीखननञ्च शस्तम् ॥ १ ॥

सूर्य के नक्षत्र से सात पांच नव बारह उन्नीस और छब्बीस इतने नक्षत्र चन्द्रनक्षत्र तक होयँ तो भूमिसुप्त जानिये तिस में पुलबन्धन तथा पृथिवी खोदना खेती इत्यादि तथा गृहारम्भ तथा तालाव और बावली खोदना नहीं शुभ हैं ॥ १ ॥

अथ चन्द्रलोकवासज्ञानम् ॥

तिथिस्पञ्चगुणी कृत्वा एकेन च समन्वितम् । त्रिभिश्चैव हरेद्भागं शेषञ्चन्द्रं विचारयेत् १ एकेन वसते स्वर्गे द्विके पातालमेव च । तृतीये वसते मृत्युः सर्वकर्माणि साधयेत् २ पातालस्थे यदा चन्द्रे षट्कर्माणि वर्जयेत् । गृहहोमकृषीयात्रातडागाकूपकर्मणि ॥ ३ ॥

वर्त्तमान तिथि को पांच से गुणाकरि उसमें एक जोड़ देइ तिसमें तीन का भाग देइ शेष जो रहै सो चन्द्रलोक वास जानिये १ एक बचै तो चन्द्रमा का वास स्वर्ग में जानिये दुइ बचैं तो पाताल में जानिये तीन बचैं तो मृत्युलोक में जानना सर्वकार्य में साधना करना योग्य है २ पाताललोक में चन्द्रमा बसै तौ छः कर्म वर्जित करना चाहिये एक तो गृहारम्भ दूसरा होम करना तीसरा खेती का कर्म चौथा यात्रा करना पांचवां तालाब खोदना छठा कुवां खोदना वर्जित है ३ तिसका उदाहरण लिखते हैं श्री संवत् १९४८ शाके १८१३ भाद्रकृष्णषष्ठ्यां ६ भौमेष्टम् ०२।०५ चन्द्रवासचिन्तनं अर्थात् भादों वदी छठि मङ्गल को चन्द्रवास का उदाहरण जानिये ॥ छठि को पांचसे गुणा किया तो तीस भये ३० उसमें एक जोड़ दिया तो इकतिस भये ३१ तिस में तीनका भाग दिया तो शेष बचा एक १ तो चन्द्रमा का वास स्वर्ग में जानना इसी रीति से सब तिथियों का समझना चाहिये ॥

अथ राहुवास्तुज्ञानम् ॥

देवालये गेहविधौ जलाशये राहोर्मुखं शम्भुदिशो विलोमतः । मीनार्कसिंहार्कमृगार्कतस्त्रिभे खाते मुखात्पृष्ठविदिक् शुभा भवेत् ॥ १ ॥

देवालय तथा गृहारम्भ वा जलाशय में राहुका मुख विचारना चाहिये क्रम से ईशान दिशा से विलोम होता है तिसका क्रम लिखते हैं देवालय में मीन के सूर्यों से तीन तीन राशि गिनै ईशान वायव्य नैर्ऋत्य आग्नेय इन विदिशों में राहुमुख जानिये तथा गृहारम्भ में सिंह के सूर्यों से तीन तीन राशि चारों विदिशों में राहुमुख जानना और जलाशय बिषे मकर के सूर्यों से तीन तीन राशि चारों विदिशों में राहुमुख जानना चाहिये चक्रसे खुलासा समझ लेना जिस दिशा में राहु का मुख होय उसकी पृष्ठ अर्थात् पीछेवाली दिशा में खात होता है उसी दिशा में आरम्भ करना शुभ है अर्थात् उसी दिशा में खोदना चाहिये १ तिसका उदाहरण लिखते हैं ईशान में राहु का मुख होय तो पृष्ठ आग्नेय दिशा में होती है और जो वायव्य में राहु का मुख होय तो पृष्ठ ईशान होती है और जो नैर्ऋत्य मुख होय तो वायव्य पृष्ठ होती है और आग्नेय मुख होय तो नैर्ऋत्य पृष्ठ होती है ॥ एवं सर्वत्र ॥ १ ॥

अथ देवालयराहुमुखचक्रम् ॥

ईशान	वायव्य	नैर्ऋत्य	आग्नेय	दिशा
मी. मेष वृष	मि. कर्क सिंह	कन्या तु. वृश्चिक	धन मं. कुं.	सूर्यराशि

अथ गृहारम्भेराहुमुखचक्रम् ॥

ईशान	वायव्य	नैर्ऋत्य	आग्नेय	दिशा
सिंह, कन्या तुला	वृश्चिक धन म.	कुं. मी. मेष	वृष मिथुन कर्क	सूर्यराशि

अथ जलाशये राहुमुखचक्रम् ॥

ईशान	वायव्य	नैर्ऋत्य	आग्नेय	दिशा
म. कुं. मी.	मे. वृष मि.	कर्क सिंह कन्या	तु. वृश्चिक धन	सूर्यराशि

अथ कूपचक्रसूर्यभात् ॥

कूपेर्कभान्मध्यगतैस्त्रिभिर्भैः स्वादूदकं पूर्वदिशि त्रिभिस्त्रिभिः । खण्डं जलं स्वादुजलं जलक्षयं स्वादूदकं क्षारजलं शिलाश्च १ मिष्टं जलं क्षारजलं क्रमाद्भवेद्दै सूर्यभात्त्रित्रिमितैः फलं वदेत् ॥ २ ॥

सूर्य के नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक कूपचक्र गिनै मध्यमें तीन नक्षत्र देय उसका फल स्वादजल होय और पूर्वादि आठ दिशों में तीन २ नक्षत्र देना उसका फल लिखते हैं पूर्व में पड़े तो खण्डजल अर्थात् खण्डित जल होय आग्नेय में स्वाद जल होय दक्षिण में जलक्षय होय नैर्ऋत्यमें स्वादजल होय पश्चिम में क्षार जल होय वायव्य में शिला निकसै १ उत्तर में मीठा जल होय ईशान में क्षारजल होय इसीप्रकार से सूर्य के नक्षत्र से तीन २ नक्षत्रों का फल जानिये ॥ २ ॥

अथ कूपचक्रन्यासः ॥
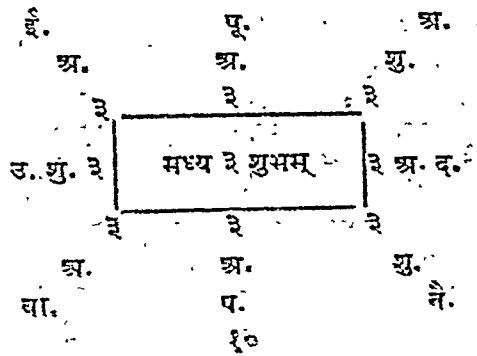
अथ द्वितीयप्रकारेण कूपचक्रम् ॥

रोहिण्यादि लिखेच्चक्रं मध्येत्रयप्रतिष्ठितम् । पूर्वादि दिक्षु सर्वासु सृष्टिमार्गेण दीयते १ मध्ये शीघ्रजलं स्वादं पूर्वे भूमिश्च खण्डितः । आग्नेय्यां सुजलं प्रोक्तं दक्षिणे निर्जलं तथा २ नैर्ऋत्ये चामृतं वारि पश्चिमे शोभनं जलम् । वायव्येऽपि जलं हन्ति चोत्तरे स्वादुकं जलम् ३ ईशाने कटुकक्षारं अल्पतीक्ष्णस्यसम्भवम् ॥ ४ ॥

रोहिणी आदि दै दिन नक्षत्र तक कूपचक्र गिनै मध्य में तीन नक्षत्र स्थापित करै और पूर्वादि आठो दिशन में तीन २ नक्षत्र देइ उसका फल लिखते हैं १ मध्य में परै तो शीघ्र जल होय वा स्वादित होइ पूर्व में भूमि खण्डित परै अर्थात् कोई विवरपड़ै ॥ आग्नेय में सुन्दर जल होय दक्षिण में निर्जल होय २ नैर्ऋत्य में अमृत जल होय पश्चिम में शोभन जल होइ वायव्य में जल को हनै उत्तर में स्वादु जल होय ३ ईशान में करुवा वा खारी जल होय और अल्प तीक्ष्ण होय अर्थात् थोड़ा होय निकम्मा होय ॥ ४ ॥

अथ कूपचक्रन्यासः ॥
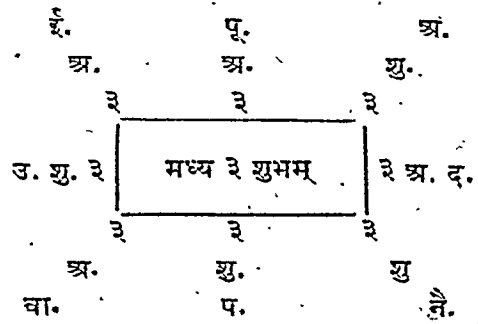
अथ तृतीयप्रकारेण भौमभात्कूपचक्रम् ॥

शशि १ शरा ५ ब्धि ४ त्रि ३ त्र्य ३ ब्धि ४ गुणा ३

व्यये ४ वृधजलेषुससिद्धिरभङ्गदम् । रुजमसिद्धियशो र्थप्रसिद्धये जलविभङ्गकरःकुजभादिषु ॥ १ ॥

मङ्गलके नक्षत्र से दिन नक्षत्रतक कूप चक्र विचारे प्रथम एकमें परे तो अशुभ जानिये फिर पांच में शुभफल जानना फिर चार में शुभ जानिये फिर तीन में रोग होताहै फिर तीन में अशुभ जानिये फिर चार में यश जानना फिर तीन नक्षत्रों में अर्थ प्रसिद्ध जानिये फिर चार नक्षत्रमें जलभङ्ग जानिये॥१॥

अथ भौमभात्कूपचक्रन्यासः २७ ॥

१	५	४	३	३	४	३	४	न०
अशुभ	शुभ	शुभ	रोगः	अशुभ	यशः	अर्थ सिद्धिः	जल भङ्गः	फल

अथ चतुर्थप्रकारेणकूपचक्रं राहुभात् ॥

राहुऋक्षात्त्रयं पूर्वे त्रयमाग्नेयतः क्रमात् । मध्ये चत्वारि ऋक्षांते फलं वाच्यं शुभाशुभम् १ पूर्वे शोक करं राहुः आग्नेय्यां जलदं सदा । दक्षिणे स्वामिमरणं नैर्ऋत्यां दुःखदायकम् २ पश्चिमे सुखसौभाग्यं वायव्ये जलवर्द्धनम् । चोत्तरे निर्जलं विद्यादीश्वरे जलसिद्धि दम् ३ मध्ये च सजलं वाच्यं नान्यथा रुद्रभाषितम् । स्वयंरूपी सदा राहुः फलदस्तत्क्षणे भुवि ४ कूपचक्रं प्रवक्ष्यामि विज्ञेयं सर्वदा बुधैः ॥ ५ ॥

राहुके नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक कूपचक्र विचारे प्रथम तीन नक्षत्र कूपके पूर्वदिशा में देइ और तीन२ नक्षत्र आग्नेय से सर्व दिशों में देना और पीछे को चार नक्षत्र मध्य में देना तिसका फल कहते हैं १ पूर्व में परे तो राहु शोक को करे आ-ग्नेय में जल सम्पदा होय दक्षिण में स्वामी का मरण होय और नैर्ऋत्य में दुःखप्राप्ति होय २ पश्चिम में सुखसौभाग्य

होय वायव्य में जल की वृद्धि होय उत्तर में निर्जल होय ई-शान में जलसिद्धि होय ३ मध्य में परै तो जल निकसै अ-न्यथा वचन नहीं है श्रीमहादेवजी कहते हैं अपनेही रूपसे सदा राहु फल को देताहै पृथिवी में ४ सो ये कूपचक्र जो कहा है सो सब पण्डित हमेशः चिन्तवन करैं ॥ ५ ॥

अथ राहुभात्कूपचक्रन्यासः २८ ॥

पू०	आ०	द०	नै०	प०	वा०	उ०	ई०	मध्य	दिशा
३	३	३	३	३	३	३	३	४	नक्षत्र
अ०	शु०	अ०	अ०	शु०	शु०	अ०	शु०	शुभम्	फल

अथ कूपमुहूर्त्तम् ॥

हस्तात्तिस्रोवासवं वारुणं च मित्रं पित्रं त्रीणि चैवोत्त राणि । प्राजापत्यं चापि नक्षत्रमाहुः कूपारम्भे श्रेष्ठमाद्या मुनीन्द्राः ॥ १ ॥

हस्त, चित्रा, स्वाति, धनिष्ठा, शतभिष, अनुराधा, मघा, तीनों उत्तरा, रोहिणी इन नक्षत्रों में कुवां खोदना शुभ है मुनीन्द्र कहते हैं ॥ १ ॥

अथ गृहमध्ये कूपदिशाफलम् ॥

कूपेर्वास्तोर्मध्यदेशेर्थनाशस्त्वीशान्यादौ पुष्टिरैश्वर्य वृद्धिः । सूनोर्नाशःस्त्रीविनाशो मृतिश्च संपत्पीडा शत्रुतः स्याच्च सौख्यम् ॥ १ ॥

गृह के मध्य में कुवां खोदै तो अर्थनाश होय ईशान में पुष्टता होय पूर्व में ऐश्वर्यवृद्धि होय आग्नेय में पुत्रनाश होय दक्षिण में स्त्री विनाश होय नैर्ऋत्य में गृहपति की मृत्यु होय पश्चिम में सम्पदा होय वायव्य में शत्रुपीड़ा होय उत्तर में सुखप्राप्ति होय ॥ १ ॥

इति कूपदिशाफलम् ॥

अथ तडागचक्रम् ॥

तडागे च प्रवक्ष्यामि यदुक्तं ब्रह्मयामले । सूर्यभाच्चन्द्रभं यावद्गणयेत्सततं बुधैः १ दिक्षुऋक्षद्वये यस्य मध्ये पञ्च नियोजयेत् । षट्ऋक्षे वारिवाहे च फलं तत्र विचारयेत् २ पूर्वे तु बहुशोकं च आग्नेय्यां सजलं बहु । दक्षिणे वारिनाशं च नैर्ऋत्ये चामृतं जलम् ३ पश्चिमे च जलंस्वादु वायव्ये वारिशोषणम् । उत्तरे च स्थितो तोयमीशाने कुत्सितं जलम् ४ मध्ये छिद्रजलं याति वारिवाहेतिपूर्णता ॥ ५ ॥

सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक तड़ाग अर्थात् तालाव चक्र गिनै १ पूर्वादि आठो दिशों में दो २ नक्षत्र देय मध्य में पांच नक्षत्र देइ और छः नक्षत्र जलस्थ में देइ उसका फल लिखते हैं २ पूर्व दिशा में पड़े तो बहुत शोक होइ आग्नेय में जल बहुत होय दक्षिण में जल नाशकरै नैर्ऋत्य में अमृत जल होय ३ पश्चिम में स्वाद जल होइ वायव्य में जलको सोखै उत्तर में जल स्थित होइ ईशान में खारी जल होय ४ मध्य में छिद्रजल अर्थात् खण्डित जल होइ जलस्थ में परै तो पूर्णजल होय ये चक्र ब्रह्मयामल में कहा है ॥ ५ ॥

अथ तडागचक्रन्यासः सूर्यभात् २७ ॥

पूर्व	आ०	द०	नै०	प०	वा०	उ०	ई०	मध्य	वारिवाह	स्थान
२	२	२	२	२	२	२	२	५	६	नक्षत्र
बहुशोक	बहुजल	जलनाश	अमृतजल	जलस्वाद	जलशोष	जलस्थित	कुत्सितजल	छिद्रजल	पूर्णजल	फल

अथ तडागमुहूर्त्तम् ॥

ध्रुववसुजलपुष्यो नैर्ऋतं मैत्रसंज्ञकम् । नक्षत्रं शुभदं ज्ञेयं तडागे सर्वदा बुधैः ॥ १ ॥

ध्रुवसंज्ञक, धनिष्ठा, पूर्वाषाढ़, पुष्य, मूल, मैत्रसंज्ञक ये नक्षत्र तालाब खोदने में शुभदायक हैं ॥ १ ॥

अथ निर्वारचक्रम् ॥

निर्वारेपूर्वतस्त्रीणि त्रीणि त्रीणि च सर्वतः । मध्ये चत्वारि देयानि राहुभाच्चन्द्रभं बुधैः १ मध्ये पूर्वजलं सौख्यं चोत्तरे धनवर्द्धनम् । याम्यां नैर्ऋत्ययोर्दुःखं भय मग्नपरेषु दिक् ॥ २ ॥

राहुके नक्षत्र से दिन के नक्षत्र तक नेवारचक्र गिनै पूर्वादि आठोंदिशों में तीन २ नक्षत्र देइ मध्य में चारनक्षत्र देइ १ अथ फलम् ॥ मध्यमें वा पूर्वमें परै तो जलका सुख होय उत्तर में धनकी वृद्धि होइ दक्षिण वा नैर्ऋत्यमें दुःख होय आग्नेय वा और जो बाकीरहीं दिशा तिनमें भय होय ॥ २ ॥

अथ नेवारचक्रन्यासः २८ ॥

पूर्व	आ०	द०	नै०	प०	वा०	उ०	ई०	मध्य	दिशा
३	३	३	३	३	३	३	३	४	नक्षत्र
सौख्यं जल.	भय.	दुःखं.	दुःखं.	भय.	भय.	धनवृद्धिः.	भय.	सौख्यं जल.	फल

अथ जलाशयमुहूर्त्तम् ॥

अनुराधामघाहस्तरेवतीषूत्तरात्रये । रोहिणीयुगले पुष्ये धनिष्ठाद्वितये तथा १ पूर्वाषाढाभिधेनैव शुभेमासि शुभे दिने। वापीकूपतडागानामारम्भः कथितो बुधैः॥ २॥

अनुराधा, मघा, हस्त, रेवती, तीनों उत्तरा, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, धनिष्ठा, शतभिष १ पूर्वाषाढ़ ये नक्षत्र वा शुभ मास वा शुभ दिनों में बावली कुवाँ तालाब खोदना शुभ है॥२॥

अथ वापीमुहूर्त्तम् ॥

स्वात्यश्विपुष्यहस्तेषु मैत्रे चैव पुनर्वसौ । रेवत्यां वारुणे चैव वापीकर्म प्रशस्यते ॥ १ ॥

स्वाती, अश्विनी, पुष्य, हस्त, अनुराधा, पुनर्वसु, रेवती, शतभिष इन नक्षत्रों में बावली को कृत्य शुभ है ॥ १ ॥

अथ जन्म तथा नामराशिकार्यभेदेननिर्णयम् ॥

देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके । नामराशेः प्रधानत्वं जन्मराशेरतःपरम् ॥ १ ॥

देश के कार्य ग्राम के कार्य गृह के कर्म तथा युद्धकार्य वा नौकरी करना और व्यवहारकरना इन कार्यों में नामराशि प्रधानहै और जो कार्यहैं सो जन्मराशिसे विचारना चाहिये॥१॥

अथ दीक्षाग्रहणमुहूर्त्तम् ॥

आर्द्राचित्रात्र्युत्तरेरेवतीन्दुब्राह्मे मित्रे वाधनिष्ठासु दीक्षा । ग्राह्या मार्गे फाल्गुने श्रावणोर्जे माघे वारे मन्दमाहेयहीने ॥ १ ॥

आर्द्रा, चित्रा, तीनों उत्तरा, रेवती, मृगशिरा, रोहिणी, अनुराधा, वा धनिष्ठा इन नक्षत्रों में दीक्षालेना शुभ है तथा अगहन, फाल्गुन, श्रावण, कार्त्तिक, माघ ये महीने शुभ हैं तथा शनि मंगलवार वर्जित है ॥ १ ॥

अथ द्वितीयप्रकारेण दीक्षामासफलम् ॥

मन्त्रस्वीकरणं चैत्रे बहुदुःखफलप्रदम् । वैशाखे रत्नलाभश्च ज्येष्ठे च मरणं ध्रुवम् १ आषाढे बन्धुनाशःस्याच्छ्रावणे च शुभावहम् । प्रजाहानिर्भाद्रपदे सर्वत्र सुख

माश्विने २ कार्तिके धनवृद्धिः स्यान्मार्गशीर्षे शुभप्रदम् । पौषे तु ज्ञानहानिःस्यान्माघे मेधाविवर्द्धनम् ३ फाल्गुने सुखसौभाग्यं सर्वत्र परिकीर्त्तितम् ॥ ४ ॥

चैत्र में दीक्षालेइ तो वहु दुःख प्राप्त होइ वैशाख में रत्न-लाभ होइ ज्येष्ठ में मरण होय १ आषाढ़ में वन्धुनाश होइ श्रावण में शुभ होइ भाद्र में पुत्रहानि होय आश्विन में सर्व सुख होय २ कार्तिक में धनवृद्धि होय अगहन में शुभदायक है पौष में ज्ञानहानि होय माघ में ज्ञानवृद्धि होय ३ फाल्गुन में सुख सौभाग्य होय ॥ ४ ॥

अथ तैलाभ्यङ्गमुहूर्त्तफलम् ॥

तैलाभ्यङ्गे रवौ तापः सोमे शोभा कुजे मृतिः । बुधे धनं गुरौ हानिः शुक्रे दुःखं शनौ सुखम् ॥ १ ॥

एतवार को तेल लगावै तो ज्वर आवै चन्द्रवार में शोभा होइ मङ्गल में मृत्यु होइ बुध को धन प्राप्ति होइ वृहस्पति में धनहानि होइ शुक्र में दुःख होइ शनिश्चर को सुख होइ॥ १ ॥

अथ तैलाभ्यङ्गपरिहारः ॥

रवौ पुष्पं गुरौ दूर्वा भौमवारे च मृत्तिका । शुक्रे तु गोमयं क्षिप्त्वा तैलदोषो न विद्यते ॥ १ ॥

एतवार को फूलयुक्त तेललगावै मङ्गल को मिट्टीयुक्त लगावै वृहस्पति को दूर्वायुक्त लगावै शुक्र को गोबरयुक्त लगावै तो तेल लगाने का दोष नहीं होता है ॥ १ ॥

अथ राज्याऽभिषेकमुहूर्त्तम् ॥

राज्याभिषेकः शुभमुत्तरायणे गुर्विन्दुशुक्रैरुदितैर्बला न्वितैः । भौमार्कलग्नेशदशेशजन्मपैर्नो चैत्ररिक्तारनि शामलिम्लुचे १ शाक्रःश्रवःक्षिप्रमृदुध्रुवोडुभिःशीर्षोदये

चोपचये शुभस्तनौ । पापैस्त्रिषष्ठायगतैः शुभग्रहैः केन्द्र त्रिकोणायधनत्रिसंस्थितैः २ पापैस्तनौरुङ्निधने मृतिः सुतेपुत्रार्तिरर्थव्ययगैर्दरिद्रता । स्यात्खेलशोऽष्टपदोबुनाम्बुगैस्सर्वशुभं केन्द्रगतैःशुभग्रहैः ३ गुरुर्लग्नकोणे कुजारी सितःखे सराजा सदा मोदते राजलक्ष्म्या । तृतीयायगौ सौरिसूर्यौ खबन्ध्वोर्गुरुश्चेद्धरित्री स्थिरा स्यान्नृपस्य ॥ ४ ॥

राजगद्दी बैठने का मुहूर्त्त कहते हैं उत्तरायण सूर्य होयँ बृहस्पति चन्द्रमा शुक्र उदित होयँ तथा मङ्गल सूर्य वा जन्म लग्न का स्वामी वा महादशादिकों का स्वामी तथा जन्मराशि का स्वामी ये ग्रह बलान्वित होयँ अर्थात् उच्चादिक स्थान में होयँ वा मित्रके घरमें होयँ तथा अपने घर का होइ अथवा मित्रग्रह देखता होइ तो बली जानना चैत्रमास तथा रिक्तातिथि वर्जितहै तथा मङ्गलवार वा रात्रि समय में वा मलमासमें भी वर्जितहै १ ज्येष्ठा, श्रवण, क्षिप्रसंज्ञक, मृदुसंज्ञक, ध्रुवसंज्ञक ये नक्षत्र शुभ हैं तथा शीर्षोदयी उपचय लग्नें होयँ अर्थात् मिथुन, कन्या, तुला, वृश्चिक, कुम्भ ये लग्नें शीर्षोदय कहावती हैं अब उपचय लग्नें लिखते हैं जन्मलग्न वा जन्मराशि से तीसरे छठे दशयें ग्यारहें जो लग्नें होयँ सो उपचय लग्न कहावती हैं तथा शुभग्रहोंकी लग्नें होयँ और पापग्रह लग्नसे तीसरे छठे ग्यारहें होयँ शुभग्रह केन्द्र १।४।७।१० त्रिकोण ९।५ वा ग्यारहें वा दूसरे तीसरे होयँ २ पापग्रह लग्न में परै तो राजा के रोग होय और आठयें जो पापग्रह परै तो मृत्यु होइ पांचयें जो पापग्रह होइ तो पुत्रको पीड़ाकरै और दूसरे बारहें पापग्रह होइ तो दरिद्रता होइ दशयें पापग्रह होइ तो आलसी होइ चौथे वा सातयें पापग्रह होइ तो ऐश्वर्य भ्रष्टकरै और जो शुभग्रह केन्द्रमें होइ तो सर्वग्रह शुभकारी होयँ ३ बृहस्पति लग्न १ वा त्रिकोण ९।५

में होइ मङ्गल छठेहोय तथा शुक्र दशयें होय तो राजा सदा राजलक्ष्मी से आनन्द होय तीसरे शनैश्चर होइ ग्यारहें सूर्य होय दशयें वा चौथे बृहस्पति होइ तो राजा के पृथ्वी सदा स्थिररहे ॥ ४ ॥

अथ पशुक्रयविक्रयमुहूर्त्तम् ॥

पूर्वा मैत्रद्वयं मूलं वासवं रेवती करः । पुनर्वसुद्वयं ग्राह्यं पशूनां क्रयविक्रये ॥ १ ॥

तीनों पूर्वा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, धनिष्ठा, रेवती, हस्त, पुनर्वसु, पुष्य ये नक्षत्र पशु बेचने खरीदने को शुभ हैं ॥ १ ॥

अथ नृत्यारम्भमुहूर्त्तम् ॥

हस्तात्तिस्रो वासवञ्चानुराधा ज्येष्ठा पौष्णं वारुणं चोत्तरा च । पूर्वाचार्यैः कीर्तिताश्चन्द्रवर्तिर्नृत्यारम्भे शोभनोऽऽक्षवर्गः ॥ १ ॥

हस्त, चित्रा, स्वाति, धनिष्ठा, अनुराधा, ज्येष्ठा, रेवती, शतभिष, तीनों उत्तरा इन नक्षत्रों में नृत्यारम्भ शुभ है तथा चन्द्रमा बली होय आचार्य कहते हैं ॥ १ ॥

अथ ऋणग्रहणऋणदानमुहूर्त्तम् ॥

स्वात्यादित्यमृदुद्विदैवगुरुभे कर्णत्रयाश्वे चरे लग्ने धर्मसुताष्टशुद्धिसहिते द्रव्यप्रयोगः शुभः । नारे ग्राह्य मृणं तु संक्रमदिने वृद्धौ करेऽह्नि यत्तद्वंशेषु भवेदृणं न च बुधे देयं कदाचिद्धनम् १ तीक्ष्णमिश्रध्रुवोग्रैर्यद्द्रव्यं दत्तं निवेशितम् । प्रयुक्तञ्च विनष्टञ्च विष्टयां पाते च नाप्यते २ ऋणग्राहकनक्षत्रम्प्रथममृणदस्य भात् । द्वितीयमृणसंबन्धो न कर्त्तव्यः कदाचन ॥ ३ ॥

स्वाती, पुनर्वसु, मृदुसंज्ञक, विशाखा, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा,

शतभिष, अश्विनी इन नक्षत्रों में ऋण ग्रहण शुभ है और चर लग्नें शुभ हैं तथा लग्न से नवयें पांचयें आठयें घर में कोई ग्रह न होइ तथा मङ्गलवार वा संक्रान्ति तथा वृद्धियोग तथा हस्तनक्षत्र तथा एतवार दिन इन वारादिकों में ऋण ग्रहण करै तो उसके वंश में ऋण बना रहै तथा बुधवार को ऋण देना वर्जित है १ तीक्ष्णसंज्ञक, मिश्रसंज्ञक, ध्रुवसंज्ञक, उग्रसंज्ञक इन नक्षत्रों में द्रव्य किसी को देइ तथा गाड़ देइ वा किसी को सौंप देइ अथवा खोजाय तो फिर मिलै नहीं तथा यही फल भद्रा वा पात का भी जानना २ ऋणी के नक्षत्र से धनी का नक्षत्र दूसरा होय तो ऋण कभी न लेय ॥ ३ ॥

अथ हलप्रवाहमुहूर्त्तम् ॥

मूलद्वीशमघाचरध्रुवमृदुक्षिप्रैर्विनार्कं शनिं पापैर्हीनबलैर्विधौ जललवे शुक्रे विधौ मांसले । लग्ने देवगुरौ हलप्रवहणं शस्तं न सिंहे घटे कर्काजैणधटे तनौ क्षयकरं रिक्तासु षष्ठ्यां तथा ॥ १ ॥

सूल, विशाखा, मघा, चरसंज्ञक, ध्रुवसंज्ञक, मृदुसंज्ञक, क्षिप्रसंज्ञक इन नक्षत्रों में हलप्रवाह शुभ है तथा एतवार वा शनैश्चरवार वर्जित है और पापग्रह बल से रहित होय और चन्द्रमा जलराशि के नवांशा में होय अर्थात् मकर, कुम्भ, मीन, कर्क का नवांशा जलराशि का होता है नवांशा का क्रम आगे लिखैंगे तथा शुक्र, चन्द्रमा बलिष्ठ होयँ उच्चादिक में तथा लग्न में बृहस्पति होय वा सिंह, कुम्भ, कर्क, मेष, मकर, तुला ये लग्नें वर्जित हैं क्षय को करती हैं तथा रिक्ता तिथि ४। ९।१४ छठि ६ ये भी क्षयकारक जानना ॥ १ ॥

अथ बीजोप्तिमुहूर्त्त तथा बीजोप्तिचक्र तथा हलचक्रम् ॥

एष्वेवश्रुतिवारुणादितिविशाखोडूनि भौमं विना बीजोप्तिर्गदिता शुभात्वगुभतोऽष्टा ८ ग्नी ३ न्दु १ रामे ३

न्द्वः १ । रामे ३ न्द्र १ ग्नि ३ युगा ४ न्यसच्छुभक राण्युक्तौ हलेर्कोज्झिताद्भाद्रामा ३ ष्ट ८ नवा ९ ष्ट ८ भानि मुनिभिः प्रोक्तान्यसत्सन्ति च ॥ १ ॥

पहिले हलप्रवाह में जो नक्षत्रादिक कहे हैं तिनमें बीजोप्ति भी करना चाहिये परन्तु श्रवण, शतभिष, पुनर्वसु, विशाखा ये नक्षत्र बीजोप्ति में वर्जित करना योग्य हैं और मङ्गल भी वर्जित है और सब तिथि वारादिक हलप्रवाह के जानना अब बीजोप्ति का चक्र लिखते हैं राहुके नक्षत्र से दिनके नक्षत्र तक गिनकर विचारना प्रथम आठ नक्षत्र अशुभ हैं फिर तीन शुभ हैं फिर एक अशुभ है फिर तीन शुभ हैं फिर एक अशुभ है तीन शुभ हैं फिर एक अशुभ है तीन शुभ हैं फिर चार अशुभ हैं ये बीजोप्तिचक्र कहा अब हलचक्र कहते हैं सूर्य के उज्झित नक्षत्र से अर्थात् जिस नक्षत्र के सूर्य होयँ तिसके पहिलेवाले नक्षत्र से गिनकर विचारना प्रथम तीन नक्षत्र अशुभ हैं फिर आठ नक्षत्र शुभ हैं फिर नव अशुभ हैं फिर आठ शुभ हैं अभिजित् समेत अट्ठाइस जानना ॥ १ ॥

अथ राहुभाद्बीजोप्तिचक्रन्यासः २७ ॥

८	३	१	३	१	३	१	३	४	नक्षत्र
अ.	शु.	अ.	शु.	अ.	शु.	अ.	शु.	अ.	फल

अथ सूर्यनक्षत्रउज्झिताद्धलचक्रन्यासः २८ ॥

३	८	९	८	नक्षत्र
अ.	शु.	अ.	शु.	फल

अथ पुनर्बीजोप्तित्याज्यम् ॥

रवौरौद्राद्यपादस्थे भूमेः संजायते रजः । तस्माद्दिन त्रयं तत्र बीजवापं परित्यजेत् ॥ १ ॥

जब आर्द्रा नक्षत्र के सूर्य प्रवेश होयँ तबसे तीन दिनतक पृथ्वी रजस्वला धर्म को प्राप्त होतीहै तिसमें बीज बोना वर्जित है ॥ १ ॥ अथ धान्यच्छेदनमुहूर्त्तम् ॥

तीक्ष्णाजपादकरवह्निवसुश्रुतीन्दुस्वातीमघोत्तरजलान्तकतक्षपुष्ये । मन्दाररिक्तरहिते दिवसेऽतिशस्ता धान्यच्छिदा निगदिता स्थिरभे विलग्ने ॥ १ ॥

तीक्ष्णसंज्ञक नक्षत्र तथा पूर्वभाद्रपद, हस्त, कृत्तिका, धनिष्ठा, श्रवण, मृगशिरा, स्वाती, मघा, तीनों उत्तरा, पूर्वाषाढ़, भरणी, चित्रा, पुष्य ये नक्षत्र अन्न काटने में शुभ हैं तथा शनि मङ्गलवार वा रिक्तातिथि वर्जित है और स्थिरलग्न होय॥१॥

अथ द्वितीयप्रकारेण हलचक्रम् ॥

त्रिभिस्त्रिभिस्त्रिभिः पञ्च त्रिभिः पञ्च त्रिभिर्द्वयम् । सूर्यभाद्दिनभं यावद्धानिवृद्धी हलक्रमात् ॥ १ ॥

सूर्य के नक्षत्र से दिन नक्षत्रतक हलचक्र विचारना उसका फल चक्र के न्यास से समझना ॥ १ ॥

अथ हलचक्रन्यासः ॥

३	३	३	५	३	५	३	२	नक्षत्र
हानि	वृद्धि	हानि	वृद्धि	हानि	वृद्धि	हानि	वृद्धि	फल

अथ द्वितीयप्रकारेण धान्यच्छेदनमुहूर्त्तं राजमार्तण्डे ॥

रौद्रे पित्र्ये तथा सौम्ये हस्ते पुष्येऽनिले तथा । सस्यच्छेदं प्रशंसन्ति मूलश्रवणवासवे । गुरौ शुक्रे शुभं हित्वा रिक्तां भौमशनैश्चरौ ॥ १ ॥

आर्द्रा, मघा, मृगशिरा, हस्त, पुष्य, स्वाती इन नक्षत्रों में नवीन धान्यच्छेदन शुभ है तथा मूल, श्रवण, धनिष्ठा भी धान्यच्छेदन में शुभहैं और गुरुवार वा शुक्रवार शुभ हैं तथा रिक्ता ४ । ९ । १४ तिथि वा मङ्गल शनैश्चरवार वर्जित हैं॥ १ ॥

शुक्लपक्ष की परेवा से गिनकर जे तिथि होयँ उनमें वार रविवारादि जोड़देना तिसमें एक और जोड़देना तिसमें चार का भाग देना जो शेष तीन बचैं वा शून्य बचै तो अग्निका वास पृथ्वी में जानना उसमें हवन करनेसे सुख प्राप्त होताहै और एक बचै तो अग्निवास आकाश में जानना उसका फल प्राण-नाशक है और जो दो बचैं तो पाताल में अग्निवास जानना उसका फल अर्थनाशक है ॥ १ ॥

अब उदाहरण देखाते हैं ॥

श्रीसंवत् १९४८ शाके १८१३ भाद्रकृष्णचतुर्दश्यां १४ रवा-विष्टम् ०१ । १५ अग्निवास विचार करने का क्रम लिखते हैं शुक्लपक्ष की परेवा से कृष्णपक्षकी चतुर्दशीतक उन्तिसभये२९ उसमें एक और जोड़दिया तो तीसहुए ३० तिसमें रविवार जोड़ दिया तो भये ३१ तिसमें चार का भागदिया तो बचे तीन ३ अग्नि का वास पृथ्वी में जानना ॥ १ ॥

अब दूसरा उदाहरण शुक्लपक्ष का देखाते हैं ॥

श्रीसंवत् १९४८ शाके १८१३ भाद्रशुक्ल ८ शुक्रेष्टम् ०४।०० तिथि अष्टमी में एक जोड़दिया तो नव भये ९ तिसमें वार जोड़ दिया तो पन्द्रहहुए १५ तिसमें चार का भागदिया तो शेष बचे तीन ३ पृथ्वी में अग्निवास जानिये ॥ १ ॥

अथ नवान्नमुहूर्त्तम् ॥

नवान्नं स्याच्चरक्षिप्रमृदुभे सत्तनौ शुभम् । विना नन्दा विषघटीमधुपौषार्किभूमिजान् ॥ १ ॥

चरसंज्ञक, क्षिप्रसंज्ञक, मृदुसंज्ञक ये नक्षत्र वा शुभग्रहों की लग्नों में नवान्नकर्म शुभ है तथा नन्दातिथि १ । ६ । ११ वा विषघटी वर्जित हैं वा चैत्र पूसमास तथा शनैश्चर मङ्गलवार भी वर्जित हैं ॥ १ ॥

अथ विषघटीचक्रम् ॥

अ.	भ.	कृ.	रो.	मृ.	आ.	पुन.	पुष्य	श्ले.	म.	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	नक्षत्र
५०	२४	३०	४०	१४	२१	३०	२०	३२	३०	२०	१८	११	२०	घटी
स्वा.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू. पा.	उ.पा.	श्र.	ध.	श.	पू.भा.	उ.भा.	रे.	००	नक्षत्र
१४	१४	१०	१४	५६	२४	२०	१०	१०	१८	१६	२४	३०	००	घटी

इन नक्षत्रों की इतनी घटी के उपरान्त चार घड़ीतक विषघटी होती हैं ॥

अथ नवान्नचक्रम् ॥

बुधर्क्षात्पुत्र ५ पुत्रेषु ५ पुत्र ५ वेद ४ द्वये २ न्दु १ कैः । सच्छुभं शुभमर्थघ्नं शुभं व्यर्थं शुभं क्रमात् १ न वान्नचक्रं ज्ञातव्यं कथितं गणकोत्तमैः ॥ २ ॥

बुध के नक्षत्र से दिन के नक्षत्र तक गिनै प्रथम पांच नक्षत्र शुभ हैं फिर पांच शुभ हैं फिर पांच शुभ हैं फिर पांच अर्थनाशक हैं फिर चार शुभ हैं फिर दो व्यर्थ हैं अर्थात् शुभ नहीं हैं फिर एक शुभ है १ ये नवान्नचक्र जानना उत्तम पण्डितों ने कहा है ॥ २ ॥

अथ नवान्नचक्रन्यासः २७ ॥

५	५	५	५	४	२	१	नक्षत्र
शु.	शु.	शु.	अ.	शु.	अ.	शु.	फल

अथाग्निपरिहारः ॥

विवाहयात्राव्रतगोचरेषु चूडोपनीते ग्रहणे युगाद्यैः । दुर्गाविधानेन सुतप्रसूतौ नैवाग्निचक्रं परिचिन्तनीयम् ॥ १ ॥

विवाह का होम वा यात्रा का होम तथा व्रत का होम वा गोचर के ग्रहों का होम तथा मुण्डन और जनेऊ का होम वा ग्रहण का होम वा युगादितिथियों का होम तथा दुर्गाजी का होम वा बालक के जन्मप्रसूति का होम अर्थात् मूलादिशान्ति इन कार्यों में अग्निचक्र न विचारै ॥ १ ॥

अथ युगादिमन्वादितिथिज्ञानम् ॥

मन्वाद्यास्त्रितिथी मधौ तिथिरवी ऊर्जे शुचौ दिक् तिथी ज्येष्ठेन्त्ये च तिथिस्त्विषेनवतपस्यश्वाः सहस्ये शिवा । भाद्रेऽग्निश्च सितेत्वमाष्टनभसः कृष्णे युगाद्या सिते गोग्नीबाहुलराधयोर्मदनदर्शौभाद्रमाघासिते ॥१॥

शुक्लपक्ष में मन्वादि तिथियां होतीहैं तथा क्रमः॥ चैत्रमास में तीज तिथि मन्वादि होती है कार्त्तिक में पूर्णमासी वा द्वादशी होती है आषाढ़ में दशमी वा पूर्णमासी जानिये तथा ज्येष्ठ वा फाल्गुन में पूर्णमासी मन्वादि होती हैं कुवार में नवमी और माघ में सप्तमी होती है और पौष में एकादशी वा भाद्र में तीज होती है इतनी तिथी इन महीनोंके शुक्लपक्ष में मन्वादितिथी होती हैं और श्रावण मास के कृष्णपक्षविषे अमावस वा अष्टमी मन्वादि होती है। अब युगादिसंज्ञा लिखते हैं शुक्लपक्ष में कार्त्तिक की नवमी और वैशाख की तीज युगादि होती है तथा कृष्णपक्ष में भाद्रमास की तेरस तथा माघ में अमावस इनकी युगादिसंज्ञा है पुण्यकाल होता है॥ १॥

अथ शुक्लपक्षे मन्वादितिथिचक्रम्॥

चैत्र	कार्त्तिक	आषाढ़	ज्येष्ठ	फाल्गुन	आश्विन	माघ	पौष	भाद्र	मास
३	१५ १२	१० १५	१५	१५	९	७	११	३	तिथि

अथ कृष्णपक्षे मन्वादितिथिचक्रम्॥

श्रावण	मास
३०। ८	तिथि

अथ युगादितिथिचक्रं शुक्लपक्षे॥

कार्त्तिक	वैशाख	मास
९	३	तिथि

अथ युगादितिथिचक्रं कृष्णपक्षे॥

भाद्र	माघ	मास
१३	३०	तिथि

अथ रोगमुक्तस्नानमुहूर्तम् ॥

इन्द्वोर्वारे भार्गवे च ध्रुवेषु सार्पादित्यस्वातियुक्तेषु भेषु । पित्र्ये चान्त्ये चैव कुर्यात्कदाचिन्नैव स्नानं रोग मुक्तस्य जन्तोः १ लग्नेचरे सूर्यकुजेज्यवारे रिक्तातिथौ चन्द्रबले च हीने । केन्द्रत्रिकोणार्थगते च पापे स्नानं हितं रोगविमुक्तकानाम् ॥ २ ॥

सोमवार, शुक्रवार, ध्रुवसंज्ञक नक्षत्र, श्लेषा, पुनर्वसु, स्वाति, मघा, रेवती ये नक्षत्र और वार रोगी स्नान को वर्जित हैं १ चरलग्नें १।४।७।१० एतवार, मङ्गल, बृहस्पतिवार तथा रिक्ता ४।६।१४ तिथि ये शुभ हैं और चन्द्रमा बलसे हीन होइ और केन्द्र त्रिकोण या अर्थ में १।४।७।१०।६।५।२ पापग्रह होइ ॥ २ ॥

अथ रोगोत्पन्नशुभाशुभज्ञानम् ॥

स्वातिश्लेषारौद्रपूर्वात्रयेषु शाक्रे भौमे सूर्यजे सूर्य वारे । नन्दारिक्ता यस्य रोगस्य प्राप्तिर्मृत्युर्ज्ञेयः शङ्करो रक्षितापि १ पक्षाद्धस्ते वासवेषु द्विदैवे मूलाश्विन्योर ग्निधिष्ण्येनवाहात् । याम्ये त्वाष्ट्रे वैष्णवे वारुणेच नैरुज्यं स्यान्नूनमेकादशाहात् २ अहिर्बुध्न्येतिष्यसंज्ञे यमर्क्षे प्राजापत्यादित्ययोः सप्तरात्रात् । रोगान्मुक्तिर्ज्ञी व्यते मानवानां निःसन्दिग्धं जल्पितं गर्गमुख्यैः ॥ ३ ॥

स्वाती, श्लेषा, आर्द्रा, ३ पूर्वा, ज्येष्ठा ये नक्षत्र होयँ तथा मङ्गल, शनैश्चर, एतवार ये वार होइँ तथा रिक्ता ४।६।१४ नन्दा १।६।११ तिथी होइँ इन नक्षत्र वार तिथि तीनों के युक्त होने से जो रोग उत्पन्न होइ तौ रोगी की मृत्यु होइ जो महादेव रक्षा करैं तौभी न जियै १ हस्त में जो रोग उत्पन्न होइ तो पन्द्रहदिन में आराम होइ वा धनिष्ठा, विशाखा, मूल,

अश्विनी, कृत्तिका इनमें रोग उत्पन्न होय नवदिनमें आराम होय तथा भरणी, चित्रा, श्रवण, शतभिष इनमें ग्यारहदिन में आराम होइ २ उत्तराभाद्रपद, पुष्य, उत्तराफाल्गुनी, रोहिणी, पुनर्वसु इनमें रोग होइ तो सातदिन रहै बाद उसके मनुष्य आराम होकर जियै निःसन्देह गर्गाचार्य हैं मुख्य जिनमें ऐसे आचार्य कहते हैं ॥ ३ ॥

अथ सर्पदंशविचारः ॥

यः कृत्तिकामूलमघाविशाखासार्प्यान्तकार्द्रासु भुजङ्गदष्टः । स वैनतेयेन सुरक्षितोऽपि प्राप्नोति मृत्योर्वदनं मनुष्यः ॥ १ ॥

कृत्तिका, मूल, मघा, विशाखा, श्लेषा, भरणी, आर्द्रा इन नक्षत्रों में जिसको सर्प काटै उसको गरुड़भी रक्षाकरैं तौभी मरनेसे न बचै ॥ १ ॥

अथ शिल्पविद्यामुहूर्त्तम् ॥

मृदुध्रुवक्षिप्रचरेज्ञगुरौवाखलग्नगे । विधौज्ञजीववर्गस्थे शिल्पविद्या प्रशस्यते ॥ १ ॥

मृदुसंज्ञक, ध्रुवसंज्ञक, क्षिप्रसंज्ञक, चरसंज्ञक इन नक्षत्रों में थवई का काम शुभ है तथा लग्नसे बुध दशयें होइँ वा लग्न में होइँ तथा बृहस्पति दशयें वा लग्नमें होइँ और चन्द्रमा वा बुध बृहस्पति ये षड्वर्ग में होइँ अर्थात् अपने नवांशादिकों में होइँ षड्वर्ग आगे लिखेंगे नवांशादिक सो जानना ॥ १ ॥

अथ मुद्रापातनमुहूर्त्तम् ॥

चित्रामृगान्त्यकरपुष्यहयानुराधाधात्र्युत्तरे श्रवणात स्त्रितयेऽदितौ च । स्वातौ विचन्द्ररविजेऽहनि पातनं स्यात्पूर्णासु सुष्ठु च जयासु सुमुद्रिकानाम् ॥ १ ॥

चित्रा, मृगशिरा, रेवती, हस्त, पुष्य, अश्विनी, अनुराधा, रोहिणी, ३ उत्तरा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष, पुनर्वसु, स्वाती

इन नक्षत्रों में रुपया बनाना शुभ है तथा चन्द्रवार व शनिवार वर्जित है तथा पूर्णा तिथि ५ । १० । १५ वा जयातिथि ३ । ८ । १३ शुभ हैं ॥ १ ॥

अथ काष्ठादिस्थापनचक्रम् ॥

सूर्यर्क्षाद्रस ६ भैरधःस्थलगतैः पाकोरसैः संयुतः शीर्षे युग्म २ मितैःशवस्य दहनं मध्ये युगैः४ सर्पभीः । प्रागाशादिषु वेद ४ भैःस्वसुहृदां स्यात्सङ्गमो रोगभीः क्वाथादेः करणं सुखं च गदितं काष्ठादिसंस्थापने ॥ १ ॥

सूर्य के नक्षत्र से दिन नक्षत्रतक काष्ठचक्र गिनै छः नक्षत्र काष्ठ के नीचे स्थापित करै उसका फल भोजन रससे संयुक्त होइ और दो नक्षत्र शिरमें देइ तिसका फल मुर्दाकी दाहमें इंधन लगै और मध्यमें चारदेइ उसका फल सर्प निकसै और पूर्वादि चारों दिशों में चार २ नक्षत्र देइ उसका फल पूर्व में मित्रसे मिलाप होइ दक्षिणमें रोग होइ पश्चिममें काढ़ा में इं-धन लगै अर्थात् रोग होइ उसकी दवा में इंधन लगै उत्तर में धरै तो सुख होइ १ इसी में बठिया भी विचारै ॥ १ ॥

अथ काष्ठादिचक्रन्यासः २८ ॥

अधः	शीर्ष	मध्य	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	स्थान
६	२	४	४	४	४	४	नक्षत्र
शु.	अ.	अ.	शु.	अ.	अ.	शु.	फलम्

अथ प्रेतकर्ममुहूर्त्तम् ॥

क्षिप्राहिमूलेन्द्रहरीशवायुभे प्रेतक्रिया स्याज्झष कुम्भगे विधौ । प्रेतस्य दाहं यमदिग्गमन्त्यजेच्छय्यावितानं गृहगोपनादि च ॥ १ ॥

क्षिप्रसंज्ञक, श्लेषा, मूल, ज्येष्ठा, श्रवण, आर्द्रा, स्वाती इन

नक्षत्रों में प्रेतकर्म शुभ है तथा कुम्भ मीन के चन्द्रमा में प्रेत का दाह त्याज्य है तथा दक्षिणदिशा की यात्रा वर्जित है और शय्या जो खटिया है सो वर्जित है वा तंबू वर्जित है वा मकान छावना वर्जित है आदि शब्द से सब तृण इत्यादि क्रिया त्याज्य हैं ॥ १ ॥ अथ नारायणबलिसुहूर्त्तम् ॥

शुक्रारार्किषु दर्शभूतमदने नन्दासु तीक्ष्णोग्रभे पौष्णे वारुणभे त्रिपुष्करदिने न्यूनाधिमासेऽयने । याम्ये ऽब्दात्परतश्च पातपरिघे देवेज्यशुक्रास्तके भद्रावैधृतिके शवप्रतिकृतेर्दाहो न पक्षेसिते १ जन्मप्रत्यरितारयोर्मृ ति ८ सुखा ४ न्त्ये १२ ऽब्जे च कर्तुर्नसन्मध्योमित्रभगा दितिध्रुवविशाखाद्यङ्घ्रिभे ज्ञेऽपि च । श्रेष्ठोऽर्केज्यविधो र्दिने श्रुतिकरस्वात्यश्विपुष्ये तथा त्वाशौचात्परतोवि चार्यमखिलं मध्ये यथा सम्भवम् ॥ २ ॥

शुक्र, मङ्गल, शनिवार वा अमावस, चतुर्दशी, तेरसि, नन्दा १।६।११ तिथी वा तीक्ष्णसंज्ञक नक्षत्र तथा उग्रसंज्ञक रेवती शतभिष ये नक्षत्र और त्रिपुष्कर दिन तथा क्षयमास मलमास ये सम्पूर्ण वारादिक नारायणबलिक्रिया में वर्जित हैं और वर्षके उपरान्त दक्षिणायन सूर्य वर्जित हैं और पात वा परिघयोग वा बृहस्पति शुक्र का अस्त वा भद्रा वा वैधृतियोग वा शुक्लपक्ष वर्जित है १ जन्मतारा वा पाँचवाँ तारा और चौथा आठवां बारहवाँ चन्द्रमा ये कर्ता को अशुभ हैं तथा अनुराधा, पूर्वाफाल्गुनी, पुनर्वसु, ध्रुवसंज्ञक, विशाखा, मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा ये नक्षत्र और बुधवार में दाह मध्यम है तथा एतवार बृहस्पति चन्द्रवार ये दिन तथा श्रवण, हस्त, स्वाती, अ- श्विनी, पुष्य नक्षत्रों में नारायणबलि शुभ है और वर्ष के

उपरान्त समग्रविचार करना योग्य है और वर्षके भीतर यथा-संभव करना चाहिये अर्थात् सामान्य विचारना चाहिये ॥२॥

अथ नौकाकर्ममुहूर्त्तम् ॥

शुभाहे विष्णुयुग्मेन्द्रमृगमैत्राशिवपाणिषु । चालनं घट्टनं स्थानान्नावःशुभतिथीन्दुषु ॥ १ ॥

शुभवार वा श्रवण, धनिष्ठा, ज्येष्ठा, मृगशिरा, अनुराधा, अश्विनी, हस्त नक्षत्र तथा शुभतिथि वा शुभ चन्द्रमा में नावका चलना वा बनाना शुभ है ॥ १ ॥

अथ देवारामजलाशयप्रतिष्ठामुहूर्त्तम् ॥

जलाशयारामसुरप्रतिष्ठासौम्यायने जीवशशाङ्कशुक्रे। दृश्ये मृदुक्षिप्रचरे ध्रुवेस्यात्पक्षे सितस्वर्क्षतिथिक्षणे वा १ रिक्तारवर्ज्ये दिवसेऽतिशस्ता शशाङ्कपापैस्त्रि ३ भवा ११ ङ्ग ६ संस्थैः । व्यष्टा ८ न्त्य १२ गैस्सत्त्व चरैर्मृगेन्द्रे सूर्यो ५ घटे को युवतौ च विष्णुः २ शिवो नृयुग्मे द्वितनौ च ३ । ६ । ९ । १२ देव्याः क्षुद्राश्चरे १ । ४ । ७ । १० सर्व इमे स्थिरर्क्षे । पुष्ये ग्रहाविघ्नप यक्षसर्पभूतादयोऽन्त्येश्रवणेऽजिनश्च ॥ ३ ॥

जलाशय वा बाग तथा देवता की प्रतिष्ठा का मुहूर्त्त लिखते हैं उत्तरायण सूर्य होइँ और बृहस्पति चन्द्रमा शुक्र उदय होयँ मृदुसंज्ञक, क्षिप्रसंज्ञक, चरसंज्ञक, ध्रुवसंज्ञक ये नक्षत्र शुभहैं और शुक्लपक्ष होइ जिस नक्षत्र वा जिस तिथि का स्वामी जौन देवता होइ वे तिथ्यादिक भी प्रतिष्ठा में शुभ हैं और जिस मुहूर्त्तका जौन देवता स्वामी है उस मुहूर्त्त में भी शुभ जानिये १ रिक्तातिथि ४ । ९ । १४ वा मङ्गलवार वर्जित है तथा चन्द्रमा वा पापग्रह तीसरे, ग्यारहें, छठे होइँ और शुभग्रह आठवें बारहें वर्जित हैं सूर्यकी प्रतिष्ठा सिंह लग्न में करना योग्य है और

ब्रह्माकी प्रतिष्ठा कुम्भलग्न में शुभ है तथा कन्या लग्न में विष्णु की प्रतिष्ठा करे वा मिथुनलग्न में महादेवजी की प्रतिष्ठा शुभ है तथा द्विस्वभावलग्न में ३।६।९।१२ देवी की प्रतिष्ठा शुभ है वा क्षुद्रदेवता की प्रतिष्ठा चरलग्न में शुभ है अर्थात् जे छोटे देवता हैं उनकी क्षुद्रसंज्ञा है और स्थिरलग्न में सर्वदेवतनकी प्रतिष्ठा शुभ है २ और पुष्यनक्षत्र में ग्रहस्थापन करे तथा गणेश, यक्ष, सर्प, भूतादिक रेवती में स्थापित करे तथा श्रवण में अजिन अर्थात् बौद्धजी की प्रतिष्ठा शुभ है ॥ ३ ॥

अथ सर्वारम्भमुहूर्त्तम् ॥

व्ययाष्टशुद्धोपचये लग्नगे शुभदृग्युते । चन्द्रे त्रिषड्दशायस्थे सर्वारम्भः प्रसिद्ध्यति ॥ १ ॥

लग्न से बारहें आठयें शुद्ध होइ अर्थात् कोई ग्रह न होइ और उपचय लग्न होइ अर्थात् जन्मलग्न जन्मराशिसे तीसरी छठी दशईं ग्यारहीं लग्नैं होयँ और शुभग्रहों की दृष्टि होइ तथा शुभग्रहयुक्त होइ और चन्द्रमा जन्मलग्न वा जन्मराशि से तीसरे छठें दशयें ग्यारहें होइ तो सर्वारम्भ शुभ है अर्थात् सर्व शुभाशुभ कार्य करना शुभ है ॥ १ ॥

अथ पादुकासनादिमुहूर्त्तदीपिकायाम् ॥

मैत्रेऽन्त्यचन्द्रयमभादितिवाजिचित्राहस्तोत्तरात्रयहरीज्यविधातृभानि । एतेष्वतीवशयनासनपादुकानां संभोगकार्यमुदितं मुनिभिः शुभाहे ॥ १ ॥

अनुराधा, रेवती, मृगशिरा, भरणी, पुनर्वसु, अश्विनी, चित्रा, हस्त, तीनों उत्तरा, श्रवण, पुष्य, रोहिणी इन नक्षत्रों में आसन व खड़ाऊं धारण करना शुभ है मुनि कहते हैं और शुभ दिन होयँ ॥ १ ॥

अथ मुहूर्त्तगणपतौ नवीनपात्रे भोजनम् ॥

रोहिणीयुगले हस्तत्रितये रेवतीद्वये । श्रवणत्रितये

पुष्ये पुनर्वस्वनुराधयोः १ त्र्युत्तरे बुधशुक्रेज्यवारे चामृत योगके। सुवर्णरौप्यपात्रेषु भोजनादि शुभप्रदम् ॥ २ ॥

रोहिणी, मृगशिरा, हस्त, चित्रा, स्वाति, रेवती, अश्विनी, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष, पुष्य, पुनर्वसु, अनुराधा, १ तीनों उत्तरा ये नक्षत्र वा बुध, शुक्र, गुरुवार वा अमृतयोग में सोने चांदी के पात्र में भोजन करना शुभ है ॥ २ ॥

अथामृतसिद्धियोगोरत्नमालायाम् ॥

हस्ते रवौ शशधरे च मृगोत्तमर्क्षे भौमेऽश्विनी बुध दिने च तथानुराधा । तिष्यो गुरौ भृगुसुतेऽपि च पौ ष्णधिष्ण्यं रोहिण्यथार्कतनयेऽमृतसिद्धियोगाः ॥ १ ॥

एतवार के दिन हस्तनक्षत्र होइ चन्द्रवार को मृगशिरा होइ मङ्गल के दिन अश्विनी होइ बुधके दिन अनुराधा होइ बृहस्पति को पुष्य होइ शुक्र को रेवती होइ शनैश्चर को रोहिणी होइ तो इन नक्षत्र वारों के युक्त होने से अमृतसिद्धियोग होता है ॥ १ ॥

अथ नवीनपात्रचक्रं शक्तियामले ॥

पात्रचक्रं प्रवक्ष्यामि यदुक्तं शक्तियामले। सूर्यभाच्चन्द्र पर्यन्तं गणनीयं सदा बुधैः १ दिक्षु दिक्षु द्वयं न्यस्यमध्ये चैकादशं न्यसेत् । वर्तुलाकारचक्रस्य भोक्तृपात्रस्य नि र्णयः२ बन्धनं सौख्यहानी च लाभं सौख्यं, मृतिस्तथा। पुत्रमायुश्शोकवृद्धी पूर्वादिक्रमतो भवेत् । रिक्तानष्टेन्दु षष्ठीश्च विष्णोः सुप्तं विवर्जयेत् ॥ ३ ॥

पात्रचक्र लिखते हैं शक्तियामल में कहा है सूर्य के नक्षत्र से दिन के नक्षत्रतक गिनै १ पूर्वादि आठ दिशों में दो२ नक्षत्र देइ और ग्यारह नक्षत्र मध्य में देइ गोलचक्र भोजनपात्र का निर्णय करै २ पूर्व में परै तो बंधन होय आग्नेय में सुख होय द-

क्षिण में हानि होय नैर्ऋत्य में लाभ होय पश्चिम में सुख होय वायव्य में मृत्यु होय उत्तर में पुत्रलाभ होय ईशान में शोक होय मध्य में वृद्धि होय रिक्तातिथि ४। ६। १४ वा अमावस तथा छठि वा विष्णुशयन अर्थात् आषाढ़सुदी एकादशी से कार्त्तिकसुदी एकादशी तक विष्णुशयन होती है ये सब भोजनपात्र में वर्जित हैं ॥ ३ ॥

अथ पात्रचक्रन्यासः ॥

पू०	आ०	द०	नै०	प०	वा०	उ०	ई०	मध्य	दिशा
२	२	२	२	२	२	२	२	११	नक्षत्र
अ०	शु०	अ०	शु०	शु०	अ०	शु०	अ०	शुभ	फल

अथ नवाङ्गनाभोगमुहूर्त्तम् ॥

प्रथमाभिगमःशस्तो नववध्वाःशुभेऽहनि । गर्भाधानोक्तनक्षत्रे शस्ते ज्योत्स्नाकरे निशि ॥ १ ॥

नवीन स्त्री का भोग शुभ दिनों में श्रेष्ठ है तथा गर्भाधान के नक्षत्र शुभ हैं अर्थात् मृगशिरा, अनुराधा, श्रवण, रोहिणी, हस्त, ३ उत्तरा, स्वाती, धनिष्ठा, शतभिष येही नक्षत्र गर्भाधान के जानिये तथा चन्द्रमा शुभ होइ और रात्रि होय ॥१॥

अथेष्टिकारम्भमुहूर्त्तम् ॥

उत्तराश्विश्रवेपुष्ये ज्येष्ठान्त्ये रोहिणीकरे । स्थिरेऽङ्गेऽर्के गुरौ मन्दे इष्टिकारम्भणं चरेत् ॥ १ ॥

३ उत्तरा, अश्विनी, श्रवण, पुष्य, ज्येष्ठा, रेवती, रोहिणी, हस्त इन नक्षत्रों में ईंट पाथना शुभहै और स्थिर लग्नें २। ५। ८। ११ शुभ हैं एतवार वेफै शनैश्चर ये वार शुभ हैं ॥ १ ॥

अथ रत्नपरीक्षामुहूर्त्तम् ॥

पुनर्भे शतहस्तर्क्षे श्रवेज्येष्ठेपरीक्षणम्। रत्नानामष्टमीं भूतं हित्वा भौमं शनैश्चरम् ॥ १ ॥

पुनर्वसु, शतभिष, हस्त, श्रवण, ज्येष्ठा इन नक्षत्रों में रत्नपरीक्षा शुभ है तथा अष्टमी वा चतुर्दशी तिथि और मङ्गल शनैश्चरवार वर्जित है ॥ १ ॥

अथ कलशचक्रम् ॥

सूर्यभात्पञ्चरामाद्विवसुपञ्चशुभाशुभम् । फलंक्रमा द्बुधैर्ज्ञेयं चक्रे कलशसंज्ञके ॥ १ ॥

सूर्य के नक्षत्र से दिननक्षत्र तक कलशचक्र लिखे प्रथम पांच नक्षत्र शुभ हैं फिर तीन अशुभ हैं फिर सातनक्षत्र शुभ हैं आठ फिर अशुभ जानिये पांच फिर शुभ जानिये पण्डित कहते हैं ॥ १ ॥

अथ कलशचक्रन्यासः २८ ॥

५	३	७	८	५	नक्षत्र
शु.	अ.	शु.	अ.	शु.	फल

अथ शस्त्रघट्टनमुहूर्त्तम् ॥

कृत्तिकासु विशाखायां भौमार्कशनिवासरे । सल्लग्ने घटितं शस्त्रं नृपाणां जयदायकम् ॥ १ ॥

कृत्तिका, विशाखा नक्षत्र में वा भौम रवि शनिवारों में हथियार बनवावे और शुभग्रहों की लग्नें होयँ तो राजों को जयदायक है ॥ १ ॥

अथ शस्त्रधारणमुहूर्त्तम् ॥

पुनर्वसुद्वये हस्ते चित्रायां रोहिणीद्वये । विशाखादि त्रये कुर्य्यात्त्युत्तरे रेवतीद्वये १ रिक्तां विना तिथौ सूर्य शुक्रजीवादिने तथा । सन्नाहच्छुरिकाखड्गकुन्तशस्त्रादि धारणम् ॥ २ ॥

पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, रोहिणी, मृगशिरा, विशाखा,

अनुराधा, ज्येष्ठा, ३ उत्तरा, रेवती, अश्विनी १ ये नक्षत्र और रिक्ता को छोड़कर तिथी और रविवार वा शुक्रवार वा गुरुवार इन नक्षत्रादिकों में बख्तर, छूरी, तरवार, भाला इत्यादि शस्त्रधारण शुभ है ॥ २ ॥

अथाग्निशस्त्रघट्टनं धारणं च ॥

विशाखाकृत्तिकापूर्वा मघाश्लेषाश्विनीमृगे । मूला र्द्राभरणीज्येष्ठासजीवेक्रूरवासरे ॥ घट्टनं धारणं प्रोक्तं वह्निशस्त्रस्य शोभनम् ॥ १ ॥

विशाखा, कृत्तिका, पूर्वा, मघा, श्लेषा, अश्विनी, मृगशिरा, मूल, आर्द्रा, भरणी, ज्येष्ठा ये नक्षत्र वा बृहस्पति, एतवार, मङ्गल, शनैश्चर वारों में अग्नि शस्त्र बनाना वा धारण करना शुभ है ॥ १ ॥

अथ मृगयामुहूर्त्तम् ॥

आश्लेषाभरणीज्येष्ठापूर्वार्द्रास्वातिमूलकैः । विशाखायां च पापेऽह्नि यायादाखेटकन्नृपः ॥ १ ॥

श्लेषा, भरणी, ज्येष्ठा, ३ पूर्वा, आर्द्रा, स्वाति, मूल, विशाखा ये नक्षत्र वा पापवारों में अर्थात् रवि, भौम, शनि में शिकार खेलना शुभदायक है ॥ १ ॥

अथ द्रव्यनिधीनांगुप्तस्थाने स्थापनम् ॥

धनिष्ठोफाविशाखाख्ये पूर्वाषाढाभिधेऽन्त्यभे । रोहिण्यां च निधेर्भूमौ स्थापनं शुभमीरितम् ॥ १ ॥

धनिष्ठा, उत्तराफाल्गुनी, विशाखा, पूर्वाषाढ़, रेवती, रोहिणी इन नक्षत्रों में द्रव्य भूमि में स्थापित करना शुभ है ॥ १ ॥

अथ वाणिज्यमुहूर्त्तम् ॥

अनुराधोत्तरापुष्ये रेवतीरोहिणीमृगे । हस्तचित्रा शिवभे कुर्याद्वाणिज्यं दिवसे शुभे ॥ १ ॥

अनुराधा, ३ उत्तरा, पुष्य, रेवती, रोहिणी, मृगशिरा, हस्त, चित्रा, अश्विनी ये नक्षत्र वा शुभवारों में वाणिज्यक्रिया शुभ है ॥ १ ॥ अथ धर्मक्रियामुहूर्त्तम् ॥

धर्मक्रियामित्रमृगान्त्यचित्राश्रुतित्रयेस्वात्यदितौ कराश्वे । पुष्ये च सौम्येषु दिनेषु शस्तेत्याहुर्मुहूर्त्तागमकोविदेन्द्राः ॥ १ ॥

अनुराधा, मृगशिरा, रेवती, चित्रा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष, स्वाती, पुनर्वसु, हस्त, अश्विनी, पुष्य ये नक्षत्र वा शुभवारों में धर्म कर्म शुभ है शास्त्र के जाननेवालों में श्रेष्ठ ज्योतिषी हैं सो कहते हैं ॥ १ ॥

अथ रक्तमोक्षणविरेकवमनं च ॥

हस्तत्रयेऽश्विनीपुष्ये शतभे रोहिणीद्वये । श्रवणे चानुराधायां ज्येष्ठायां रक्तमोक्षणम् १ गुरुभौमार्कवारेषु कार्यं शुभतिथौ तथा । विरेको वमनं शुक्रे चन्द्रे चैवोक्तभादिषु ॥ २ ॥

हस्त, चित्रा, स्वाती, अश्विनी, पुष्य, शतभिष, रोहिणी, मृगशिरा, श्रवण, अनुराधा, ज्येष्ठा इन नक्षत्रों में रक्तमोक्षण अर्थात् फ़स्त लेना शुभ है और गुरु, भौम, रविवार शुभ हैं और शुभतिथी होइँ तथा क़यकरना वा दस्तहोना पूर्वोक्त नक्षत्रों में शुभ है तथा शुक्र सोमवार दिन शुभ हैं ॥ १ । २ ॥

अथ सन्धिमुहूर्त्तम् ॥

अनुराधामघापुष्ये तिथ्यर्द्धे तैतिलाभिधे । लग्ने सद्दृष्टिगेऽष्टम्यां द्वादश्यां सन्धिरिष्यते ॥ १ ॥

अनुराधा, मघा, पुष्य ये नक्षत्र वा तैतिलकरण में मिलाप करना शुभ है तथा अष्टमी द्वादशी तिथि शुभ हैं और लग्नपर शुभग्रहों की दृष्टि होय ॥ १ ॥

अथ कथाप्रारम्भचक्रम् ॥

वेदाब्धिर्वेदः श्रुतिर्वेदर्वेदः फलं गुरोर्भाद् गुणश्मेव गण्यम् । अर्थश्च लाभश्च तथा च सिद्धिर्लाभो मृती राजभयञ्च मोक्षः १ कथारम्भम्प्रकुर्वीत प्रोक्तं पूर्वैर्महर्षिभिः ॥ २ ॥

बृहस्पति के नक्षत्र से दिनके नक्षत्रतक कथारम्भ चक्र विचारना प्रथम चार नक्षत्र अर्थ के देनेवाले हैं फिर चार लाभप्रद हैं फिर चार सिद्धि के देनेवाले हैं फिर चार लाभप्रद हैं फिर चार मृत्युकारक हैं फिर चार राजभय को देनेवाले हैं फिर तीन नक्षत्र भय को देनेवाले हैं यह कथारम्भचक्र पूर्वाचार्य कहते हैं ॥ १ । २ ॥

अथ कथारम्भचक्रन्यासः ॥

४	४	४	४	४	४	३	नक्षत्र
अर्थ	लाभ	सिद्धि	लाभ	मृत्यु	राजभय	मोक्ष	फल

अथ दुन्दुभिमृदङ्गादिकरवाद्यम् ॥

हस्तत्रयेऽनुराधान्त्ये पुनर्वसुयुगेऽश्विभे । श्रवत्रयमृगेऽर्केह्नि शुभेपूर्णाजयासु च १ शुभेदुन्दुभिभेर्यादिकरवाद्यं समीरितम् । वंशाद्यं मुखवाद्यन्तु पूर्वेष्वेव समीरितम् ॥ २ ॥

हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, रेवती, पुनर्वसु, पुष्य, अश्विनी, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष, मृगशिरा ये नक्षत्र वा एतवार समेत शुभ दिनों में नगाड़ा वा नफीरी तथा मृदंग वंशी इत्यादि बाजा बजाना शुभ है और पूर्णा ५ । १० । १५ जया ३ । ८ । १३ तिथी शुभ हैं ॥ १ । २ ॥

अथ शान्तिकपौष्टिककर्ममुहूर्त्तम् ॥

पुनर्वसुद्वये स्वातीत्र्युत्तरे श्रवणत्रये । रेवतीद्वितये

हस्तेऽनुराधारोहिणीद्वये १ शान्तिकं पौष्टिकं कर्म पुण्याहे कीर्त्तितम्बुधैः ॥ २ ॥

पुनर्वसु, पुष्य, स्वाती, ३ उत्तरा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष, रेवती, अश्विनी, हस्त, अनुराधा, रोहिणी, मृगशिरा इन नक्षत्रों में शान्तिकर्म वा पुष्टिकर्म करना शुभ है और पुण्यदिन होइ संक्रान्ति इत्यादिक तथा युगादिमन्वादिक में कर्म पुण्यकाल जानिये ॥ १ । २ ॥ अथ वीरसाधनमुहूर्त्तम् ॥

मघार्द्राभरणीमूले मृगेऽङ्कसद्बुधे गते। शुद्धाष्टमे भृगौ तूर्ये वीरवेतालसाधनम् ॥ १ ॥

मघा, आर्द्रा, भरणी, मूल, मृगशिरा इन नक्षत्रों में वीर-वैताल साधन शुभ है और शुभग्रहों की लग्नैं होइँ और कुम्भ राशि का बुध होइ और आठवां स्थान शुद्ध होय तथा चौथे शुक्र होइ ॥ १ ॥

अथ मन्त्रयन्त्रव्रतादिमुहूर्त्तम् ॥

उफाहस्ताश्विनीकर्णविशाखामृगभेऽहनि। शुभे सूर्ययुते शस्तम्मन्त्रयन्त्रव्रतादिकम् ॥ १ ॥

उत्तराफाल्गुनी, हस्त, अश्विनी, श्रवण, विशाखा, मृगशिरा ये नक्षत्र वा एतवार के समेत शुभ दिनों में मन्त्र यन्त्र व्रतादि साधन शुभ है ॥ १ ॥

अथ रजोवतीस्नानमुहूर्त्तम् ॥

ज्येष्ठानुराधाकररोहिणीषु स्वातीधनिष्ठासु मृगोत्तरासु। रजोवतीस्नानविधिं प्रकुर्याच्छुभस्य वारे च शुभे तिथौ च ॥ १ ॥

ज्येष्ठा, अनुराधा, रोहिणी, स्वाती, धनिष्ठा, मृगशिरा, ३ उत्तरा इन नक्षत्रों में रजस्वला स्त्री का स्नान शुभ है और शुभवार वा शुभतिथी होयँ ॥ १ ॥

अथ गर्भधारणमुहूर्त्तम् ॥

मृगानुराधाश्रुतिरोहिणीषु हस्तोत्तरास्वातिवसौ शतर्क्षे । विहाय षष्ठीं शुभवासरेषु गर्भस्य चाधानविधिं प्रकुर्यात् १ शुभे त्रिकोणकेन्द्रस्थे पापे षष्ठे त्रिलाभगे । पुत्रकामःस्त्रियङ्गच्छेन्नरो युग्मासु रात्रिषु ॥ २ ॥

मृगशिरा, अनुराधा, श्रवण, रोहिणी, हस्त, ३ उत्तरा, स्वाति, धनिष्ठा, शतभिष ये नक्षत्र गर्भधारण में शुभ हैं और शुभतिथि होइँ और छठि तिथि वर्जित है १ शुभग्रह केन्द्र वा त्रिकोण में होइँ ४ । ७ । १० । १ । ९ । ५ पापग्रह तीसरे छठे ग्यारहें होयँ पुत्र की कामना के हेतु पुरुष स्त्रीप्रसंग करै और रजोधर्म के दिन से युग्म अर्थात् सम रात्रि होय ॥ २ ॥

अथ सीमन्तपुंसवनकर्ममुहूर्त्तम् ॥

आर्द्रात्रयं भाग्ययुग्मं मृगपूषाश्रुतिः करः । मूलत्रये गुरुः सूर्ये भौमे रिक्तां विना तिथिः १ आद्ये द्वये त्रये मासे लग्ने कन्याभषे स्थिरे । चापे पुंसवनं कुर्यात्सीमन्तं चाष्टमे तथा ॥ २ ॥

आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, मृगशिरा, रेवती, श्रवण, हस्त, मूल, पूर्वाषाढ़, उत्तराषाढ़ ये नक्षत्र सीमन्त वा पुंसवनकार्य में शुभ हैं तथा गुरुवार वा एतवार और मङ्गलवार शुभ हैं तथा रिक्ता तिथि वर्जित है १ पहिला महीना वा दूसरा महीना वा तीसरा महीना गर्भसे इन महीनों में पुंसवन शुभ है और लग्न कन्या मीन तथा स्थिर लग्नैं २ । ५ । ८ । ११ शुभ हैं और धन लग्न भी शुभ है और सीमंत कर्म गर्भ से आठयें महीना में शुभ है ॥ २ ॥

अथ द्वितीयप्रकारेण सीमन्तपुंसवनकर्म ॥

रवीज्यभौमेकरमूलपुष्ये श्रोत्रेदितौ पुंसवनं मृगर्क्षे । चरेत्षडर्काष्ट ६ । १२ । ८ तिथीन् विहाय सीमन्तकर्मा ष्टमषष्ठमासे ॥ १ ॥

एतवार, बृहस्पति, मंगलवार वा हस्त, मूल, पुष्य, श्रवण, पुनर्वसु, मृगशिरा इन नक्षत्रों में पुंसवन शुभ है तथा छठि, द्वादशी, अष्टमी तिथि वर्जित हैं और छठे आठयें महीने में सीमन्तकर्म शुभ है और नक्षत्रादिक पुंसवन के जानिये ॥ १ ॥

अथ जातकर्ममुहूर्त्तम् ॥

तज्जातकर्मादिशिशोर्विधेयं पर्वाख्यरिक्तोनतिथौ शुभेह्नि । एकादशे द्वादशकेऽपि घस्रे मृदुध्रुवक्षिप्रचरोडुषु स्यात् ॥ १ ॥

बालक के जातकर्म का मुहूर्त्त लिखते हैं पर्व पूर्वोक्त वा रिक्ता तिथि वर्जित है और शुभ दिन होयँ और जन्म से ग्यारहवां बारहवां दिन होय मृदुसंज्ञक, ध्रुवसंज्ञक, क्षिप्रसंज्ञक और चरसंज्ञक ये नक्षत्र जातकर्म में शुभदायक हैं ॥ १ ॥

अथ प्रसूतास्नानमुहूर्त्तम् ॥

हस्ताश्विनीत्र्युत्तररोहिणीषु मृगानुराधापवनान्त्यभेषु । स्नायात्प्रसूतागुरुभानुभौमे त्यक्त्वा हरेर्वासरम ष्टषष्ठीम् ॥ १ ॥

हस्त, अश्विनी, ३ उत्तरा, रोहिणी, मृगशिरा, अनुराधा, स्वाती, रेवती ये नक्षत्र प्रसूता स्नान में शुभ हैं और गुरुवार वा एतवार तथा मङ्गलवार शुभ हैं और द्वादशी अष्टमी छठि ये तिथि वर्जित हैं ॥ १ ॥

अथ द्वितीयप्रकारेण प्रसूतास्नानम् ॥

पौष्णध्रुवेन्दुकरवातहयेषु सूतीस्नानं समित्रभरवीज्य

कुजेषु शस्तम् । नाद्रात्रयं श्रुतिमघान्तकमिश्रमूलत्वाष्ट्रं ज्ञसौरिवसुपट्विरिक्ततिथ्याम् ॥ १ ॥

रेवती, ध्रुवसंज्ञक, मृगशिरा, हस्त, स्वाती, अश्विनी, अनुराधा ये नक्षत्र प्रसूतास्नान में शुभ हैं एतवार, बृहस्पति, मङ्गलवार शुभ हैं तथा आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, श्रवण, मघा, भरणी, विशाखा, कृत्तिका, मूल, चित्रा ये नक्षत्र वर्जित हैं तथा बुध, शनिवार वर्जित हैं अष्टमी, छठि, द्वादशी, रिक्ता ये तिथियाँ वर्जित हैं ॥ १ ॥

अथ दत्तपुत्रमुहूर्त्तम् ॥

हस्तादिपञ्चकभिषग्वसुपुष्यभेषु सूर्यक्षमाजगुरुभार्गववासरेषु । रिक्ताविवर्जिततिथिष्वलिकुम्भलग्ने सिंहे वृषे भवति दत्तसुतग्रहोऽयम् ॥ १ ॥

हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, अश्विनी, धनिष्ठा, पुष्य ये नक्षत्र और एतवार, मङ्गल, बृहस्पति, शुक्र ये वार पुत्र गोदमें लेने में शुभ हैं रिक्तातिथि वा कुम्भ वृश्चिक लग्नें वर्जित हैं और सिंह वृष लग्नें शुभहैं ॥ १ ॥

अथ नामकरणमुहूर्त्तम् ॥

चित्रानुराधामृगरेवतीषु धात्रश्विनीत्र्युत्तरहस्तपुष्ये पुनर्वसौ च श्रवणत्रिकेषु बुधार्कचन्द्रेज्यसितेषुनाम १॥

चित्रा, अनुराधा, मृगशिरा, रेवती, रोहिणी, अश्विनी, तीनों उत्तरा, हस्त, पुष्य, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष ये नक्षत्र वा बुध, रवि, चन्द्र, बृहस्पति, शुक्र इन वारों में बालक का नाम रखना शुभ हैं ॥ १ ॥

अथ जलपूजामुहूर्त्तम् ॥

मूलादितिद्वयं आर्द्रा श्रवणश्च मृगः करः । जलवाप्यर्चने हेयाः शुक्रमन्दार्कभूमिजाः ॥ १ ॥

मूल, पुनर्वसु, श्रवण, मृगशिरा, हस्त इन नक्षत्रों में प्रसूता स्त्री को जलपूजा शुभ है तथा शुक्र, शनैश्चर, मङ्गलवार वर्जित हैं ॥ १ ॥

अथ द्वितीयप्रकारेण जलपूजामुहूर्त्तम् ॥

कवीज्यास्तचैत्राधिमासेनपौषे जलं पूजयेत्सूतिका मासपूर्तौ । बुधेन्द्विज्यवारे विरिक्ते तिथौ हि श्रुतीज्यादितीन्द्वर्कनैर्ऋत्यमैत्रे ॥ १ ॥

शुक्र, बृहस्पति का अस्त और चैत्रमास वा मलमास तथा पूस ये जलपूजा में वर्जित हैं और बालक के जन्म से पूरेमास में जलपूजा शुभ है तथा बुध, चन्द्र, गुरुवार शुभ हैं और रिक्ता ४ । ६ । १४ तिथि वर्जित हैं तथा श्रवण, पुष्य, पुनर्वसु, मृगशिरा, हस्त, मूल, अनुराधा इन नक्षत्रों में जलपूजा शुभ है ॥ १ ॥

अथ बालकनिष्काशनमुहूर्त्तम् ॥

मैत्रत्रये हरिद्वन्द्वे विधिद्वन्द्वे दितिद्वये । स्वातिहस्तोत्तराषाढपूर्वार्यमहयेषु सत् १ सिंहत्रये घटे लग्ने मासयोस्त्रिचतुर्थयोः । यात्रातिथौ च निष्काश्यः शिशुर्नैवार्किभौमयोः ॥ २ ॥

अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, स्वाति, हस्त, उत्तराषाढ़, ३ पूर्वा, उत्तराफाल्गुनी, अश्विनी इन नक्षत्रों में बालक का निष्काशन शुभ है १ सिंह, कन्या, तुला, कुम्भ ये लग्नें शुभ हैं तथा जन्मसे तीसरा चौथा महीना होय और यात्राकी तिथी होयँ अर्थात् २।३। ५ । ७ । १० । ११ । १३ ये तिथी यात्रा की जानिये और कृष्णपक्ष की परेवा भी श्रेष्ठ है और शनैश्चर मङ्गलवार वर्जित है॥२॥

अथ द्वितीयप्रकारेण निष्काशनन्तथा दोलारोहमुहूर्त्तम् ॥

दन्ता३२र्क१२ भूप १६धृति१८ दिग्मित १० वासरे

स्याद्वारेशुभेमृदुलघुध्रुवभैःशिशूनाम् । दोलाधिरूढिरथ निष्क्रमणंचतुर्थमासेगमोक्तसमयेऽर्कमितेऽह्निवासरे १॥

जन्म के दिन से बत्तीसवां तथा बारहवां तथा सोलहवां तथा अठारहवां वा दशवां इन दिनों में बालक को झूला झुलाना शुभ है मृदुसंज्ञक, लघुसंज्ञक, ध्रुवसंज्ञक नक्षत्र शुभ हैं और बाहर निकालने को चौथा महीना वा बारहवां दिन शुभ है और यात्रा का मुहूर्त्त होय ॥ १ ॥

अथ दोलारोहचक्रम् ॥

दोलारोहेऽर्कभात्पञ्च ५ शर ५ पञ्चे ५ षु ५ सप्तभैः । नैरुज्यं मरणं कार्श्यं व्याधिः सौख्यं क्रमाच्छिशोः ॥ १ ॥

सूर्यनक्षत्र से दिननक्षत्रतक झूलाचक्र गिने प्रथम पांच नक्षत्रों का फल निरोगकारक है फिरि पांच मरणप्रद हैं फिरि पांच में कृशता होवे फिरि पांच में व्याधि होय फिरि सात नक्षत्रों में सुख होय ॥ १ ॥

अथ दोलाचक्रन्यासः ॥

५	५	५	५	७	नक्षत्र
शुभ	अ.	अ.	अ.	शुभ	फल

अथ स्त्रीपुरुषयोर्मध्ये राशिभेदेन कर्मनिर्णयं तदुक्तं मुहूर्त्तगणपतौ ॥

विवाहे गर्भसंस्कारे चन्द्रशुद्धिः स्त्रिया अपि । भूषाम्ब रादिकार्येषु भर्तुश्चैवैन्दवं बलम् ॥ १ ॥

विवाहकार्य वा संस्कार वा गर्भकर्म इन कार्यों में चन्द्रबल स्त्री के राशि से लेना चाहिये और भूषण वस्त्रादि धारण करने के जो कार्य हैं सो पुरुष की राशि से विचारना चाहिये ॥ १ ॥

अथ ताम्बूलभक्षणमुहूर्त्तम् ॥

वारेभौमार्कहीने ध्रुवमृदुलघुभैर्विष्णुमूलादितीन्द्र

स्वातीवस्वम्बुपेतैर्मिथुनमृगसुताकुम्भगोमीनलग्ने । सौम्येकेन्द्रत्रिकोणैः शुभगगनगतैःशत्रुलाभत्रिसंस्थैस्ताम्बूलंसार्द्धमासद्वयमितसमये प्रोक्तमन्नाशने वा ॥ १ ॥

मङ्गल, शनैश्चरवार तांबूल खाने में वर्जित हैं और ध्रुव, मृदु, लघुसंज्ञक नक्षत्र तथा श्रवण, मूल, पुनर्वसु, ज्येष्ठा, स्वाती, धनिष्ठा, शतभिष ये नक्षत्र शुभ हैं तथा मिथुन, कन्या, कुम्भ, वृष, मीन ये लग्नैं शुभ हैं और शुभग्रह केन्द्र १।४।७।१० वा त्रिकोण ९।५ में होय और पापग्रह दशयें छठें ग्यारहें तीसरे हों जन्म से अढ़ाई महीनामें तांबूल भक्षण करै वा अन्नप्राशन के दिन करै ॥ १ ॥

अथ बालकभूमिप्रवेश तथा कटिसूत्रबन्धनमुहूर्त्तम् ॥

पृथ्वींवराहमभिपूज्यकुजेविशुद्धेरिक्तेतिथौव्रजतिपञ्च समासिबालम् । बद्ध्वाशुभेह्नि कटिसूत्रमधुध्रुवेन्दुज्येष्ठर्क्षमैत्रलघुभैरुपवेशयेत्क्ष्मौ ॥ १ ॥

पृथ्वी व वराहजी की पूजा करै तथा अपनी राशिसे मङ्गल शुद्ध होय गोचरोक्त तथा रिक्तातिथि होय जन्म से पांचवां महीना होय और शुभ दिन होयँ ध्रुवसंज्ञक, मृगशिरा, ज्येष्ठा, अनुराधा और लघुसंज्ञक ये नक्षत्र होयँ तो कटिसूत्र अर्थात् बालक के करधनी बांधै और पृथ्वी में बैठारै ॥ १ ॥

अथान्नप्राशनमुहूर्त्तम् ॥

रिक्तानन्दाष्टदर्शं हरिदिवसमथो सौरिभौमार्कवारं लग्नंजन्मर्क्षलग्नाष्टमग्रहलवगं मीनमेषालिकं च । हित्वा षष्ठात्समेमास्यथहि मृगदृशां पञ्चमादोजमासे नक्षत्रैः स्यात्स्थिराख्यैस्समृदुलघुचरैर्बालकान्नाशनं सत् १ केन्द्रत्रिकोणसहजेषु शुभैः खशुद्धे लग्ने त्रिलाभरिपुगैश्च

वदन्ति पापैः । लग्नाष्टषष्ठरहितं शशिनं प्रशस्तं मैत्राम्बु पानिलजनुर्भमसच्चकेचित् ॥ २ ॥

रिक्तातिथि ४ । ९ । १४ नन्दा १ । ६ । ११ अष्टमी, अमावस, द्वादशी, शनिवार, एतवार, मङ्गलवार और जन्मलग्न, जन्मराशि से आठईं लग्न वा अठवां नवांशा वा मीन मेष वृश्चिक लग्नें ये संपूर्ण अन्नप्राशन में वर्जित हैं और छठे महीने से सम महीनों में लड़के का अन्नप्राशन करे अर्थात् छठे अठयें दशयें इत्यादि में करे और कन्या का अन्नप्राशन पांचयें महीने से विषम महीनों में करे अर्थात् पांचयें सातयें नवयें इत्यादि में करे स्थिरसंज्ञक, मृदुसंज्ञक, लघुसंज्ञक, चरसंज्ञक ये नक्षत्र शुभ हैं १ केंद्र १ । ४ । ७ । १० वा त्रिकोण ९ । ५ वा तीसरे शुभग्रह होयँ और दशयें कोई ग्रह न होय तथा पापग्रह तीसरे ग्यारहें छठे होयँ और चन्द्रमा छठे आठयें न होय तथा अनुराधा शतभिष स्वाती वा जन्म का नक्षत्र कोई आचार्य के मतसे ये भी अशुभ हैं ॥ तथा दूसरे वचन से पांचयें स्थान क्षीणचन्द्रमा वर्जित है अन्नप्राशन में अर्थात् कृष्णपक्ष की दशमी से अमावसतक क्षीणचन्द्रमा जानना ॥ २ ॥

अथ कर्णवेधमुहूर्त्तम् ॥

हित्वैतांश्चैत्रपौषावमहरिशयनं जन्ममासं च रिक्तां युग्माब्दं जन्मताराम्तुमुनिवसुभिः संमिते मास्यथोवा । जन्माहात्सूर्यभूपैः परिमितदिवसे ज्ञेज्यशुक्रेन्दुवारेऽथो जाब्दे विष्णुयुग्मादितिमृदुलघुभैः कर्णवेधः प्रशस्तः १ संशुद्धे मृतिभवनेत्रिकोणकेन्द्रत्र्यायस्थैः शुभखचरैः कवीज्यलग्ने । पापाख्यैररिसहजायगेहसंस्थैर्लग्नस्थे त्रिदशगुरौ शुभावहः स्यात् ॥ २ ॥

चैत्रमास पौषमास तथा अवमतिथ्यादि अर्थात् तिथ्यादिकों की हानि हरिशयन अर्थात् आषाढ़सुदी एकादशी से कार्त्तिक शुक्ल एकादशीतक तथा जन्म का महीना वा रिक्तातिथि ये समस्तकर्णवेध में वर्जित हैं और युग्मवर्ष अर्थात् जन्म से दूसरी, चौथी, छठी इस क्रम से युग्मवर्षभी वर्जित हैं और जन्मतारा वर्जित है तथा जन्मसे छठवां, सातवां, आठवां महीना शुभ है तथा जन्म से बारहें सोरहें दिन भी शुभ है तथा बुध, बृहस्पति, शुक्र, चन्द्रवार शुभ हैं तथा ओज वर्ष श्रेष्ठ है अर्थात् पहिली, तीसरी, पांचईं इस क्रम से तथा श्रवण, धनिष्ठा, पुनर्वसु, मृदुसंज्ञक, लघुसंज्ञक इन नक्षत्रों में कर्णवेध शुभहै १ लग्न से अठयें कोई ग्रह न होय त्रिकोण ९ । ५ केन्द्र १ । ४ । ७ । १० तीसरे ग्यारहें शुभग्रह होयँ और शुक्र, बृहस्पति की लग्न होय अर्थात् वृष, तुला, धन, मीन ये लग्नें होयँ और पापग्रह छठें, तीसरे, ग्यारहें होयँ और लग्न में बृहस्पति होयँ तो कर्णवेध शुभ है ॥ २ ॥

अथ मुण्डनमुहूर्त्तम् ॥

चूडावर्षात्तृतीयात्प्रभवति विषमेऽष्टार्करिक्ताद्यषष्ठीपर्वोनाहेविचैत्रोदगयनसमयेज्ञेन्दुशुक्रेज्यकानाम् । वारेलग्नांशयोश्चास्वभनिधनतनौनैधनेशाद्वियुक्ते शाक्रोपेतैर्विमैत्रैर्मृदुचरलघुभैरायषट्त्रिस्थपापैः १ पञ्चमासाधिकेमातुर्गर्भेचौलंशिशोर्नसत् । पञ्चवर्षाधिकस्येष्टं गर्भिण्यामपिमातरि २ तारादौष्टयेऽब्जेत्रिकोणोच्चगे वा क्षौरं सत्स्यात्सौम्यमित्रस्ववर्गे । सौम्येभेऽब्जेशोभनेदुष्टतारा शस्ताज्ञेया क्षौरयात्रादिकृत्ये ३ ऋतुमत्याःसूतिकायाः सूनोश्चौलादिनाचरेत् । ज्येष्ठापत्यस्य न ज्येष्ठे कैश्चिन्मार्गेपि नेष्यते ॥ ४ ॥

विषम वर्ष में मुण्डन श्रेष्ठ है अर्थात् पहिले, तीसरे, पांचवें इस क्रमसे विषम वर्ष जानिये तथा अष्टमी द्वादशी रिक्ता ४ । ९ । १४ परेवा छठि वा पर्व पूर्वोक्त वा चैत्रमास ये वर्जित हैं और उत्तरायण सूर्य शुभ हैं बुध, चन्द्र, शुक्र, बृहस्पतिवार शुभहैं और जन्म की लग्न वा जन्मकी राशि से आठवाँ लग्न वर्जित है तथा आठवां ग्रह शुद्ध होय अर्थात् कोई ग्रह न होय ज्येष्ठा नक्षत्र के युक्त और अनुराधा नक्षत्र के विना मृदुसंज्ञक, चरसंज्ञक, लघुसंज्ञक नक्षत्र शुभ हैं। और पापग्रह ग्यारहें छठें तीसरे शुभ हैं १ जिस बालक की माता के पांच महीना से अधिक गर्भ होय उस बालक का मुण्डन वर्जित है तथा जो पांच वर्ष से बालक अधिक होय तो मुण्डन श्रेष्ठ है गर्भ का दोष नहीं है २ जो तारा दुष्ट होय और चन्द्रमा त्रिकोण ९ । ५ वा उच्च अर्थात् वृष का होय तो तारा का दोष नहीं है अथवा चन्द्रमा शुभग्रह के षड्वर्ग में होय वा मित्र के षड्वर्ग में होय वा शुभग्रह की राशिमें होय तो दुष्ट तारा शुभ है और मुण्डनादि यात्रा भी शुभ है ३ बालक की माता रजस्वला होय तो बालक का मुण्डन अशुभ है और जो आदि गर्भ का बालक होय तो ज्येष्ठमासमें मुण्डन अशुभ है और कोई आचार्य कहते हैं कि आदि गर्भ का बालक होय तो अगहन में मुण्डन वर्जित है ॥ ४ ॥

अथ नित्यक्षौरमुहूर्त्तम् ॥

क्षौरे प्राणहरास्त्याज्या मघा मैत्रं च रोहिणी । उत्तराकृत्तिका वारा भानुभौमशनैश्चराः १ रिक्ता हेयाष्टमी षष्ठी क्षौरे चन्द्रक्षयोनिशा । सन्ध्याविष्टयन्तगण्डान्ता भोजनान्तश्च गोग्रहम् ॥ २ ॥

मघा, अनुराधा, रोहिणी, तीनों उत्तरा, कृत्तिका ये नक्षत्र तथा एतवार मङ्गल शनैश्चरवार ये नित्यक्षौर अर्थात् हजामत

बनाने में वर्जित हैं १ रिक्ता तिथि ४।६।१४ अष्टमी, छठि, अमावस वा रात्रि वा सन्ध्या वा भद्रा तथा गण्डान्त और भोजन के पीछे तथा गोशाला में इतने में क्षौर वर्जित है ॥ २ ॥

अथ द्वितीयप्रकारेण क्षौरमुहूर्त्तम् ॥

पुष्ये पौष्णे चाश्विनीष्वैन्दवे च शाक्रे हस्ताद्ये त्रिके भेप्वदित्यः । क्षौरं कार्यं वैष्णवादित्रये च हित्वा भौमादित्यपाताङ्किवारान् १ आज्ञया नरपतेर्द्विजन्मनां दाहकर्म मृतसूतकेषु च । बन्धमोक्षमखदीक्षणेषु च क्षौरमिष्टमखिलेषु तुष्टिदम् ॥ २ ॥

पुष्य, रेवती, अश्विनी, मृगशिरा, ज्येष्ठा, हस्त, चित्रा, स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष इन नक्षत्रों में क्षौरकर्म शुभ है तथा रवि, भौम, शनिवार वर्जित हैं १ राजा वा ब्राह्मण की आज्ञा मानिके क्षौर कर्म शुभ है तथा दाहकर्म में तथा सूतकान्त में वा बन्दीखाने से छूटने में तथा यज्ञ में वा दीक्षा में क्षौरकर्म शुभहै मुहूर्त्त की जरूरत नहीं है ॥ २ ॥

अथाक्षरारम्भमुहूर्त्तम् ॥

गणेशविष्णुवाग्रमाः प्रपूज्य पञ्चमाब्दके तिथौ शिवार्कदिग्द्विषट्शरत्रिके रवावुदक् । लघुश्रवोनिलान्त्यभादितीशलक्षमित्रभे चरोनसत्तनौ शिशोर्लिपिग्रहः सतां दिने ॥ १ ॥

गणेश, विष्णु, सरस्वती, लक्ष्मी की पूजनकरिके पञ्चमवर्ष में अक्षरारम्भ शुभ है एकादशी, द्वादशी, दशमी, द्वीज, छठि, पञ्चमी, तीज ये तिथियां शुभ हैं और उत्तरायण सूर्य होयँ और लघुसंज्ञक नक्षत्र वा श्रवण, स्वाती, रेवती, पुनर्वसु, चित्रा, अनुराधा ये नक्षत्र शुभ हैं तथा चरसंज्ञक लग्न १।४।७।१० वर्जित हैं और शुभ दिनों में बालक लिखना प्रारम्भ करै ॥१ ॥

अथ विद्यारम्भमुहूर्त्तम् ॥

मृगात्कराच्छ्रुतित्रयेऽश्विमूलपूर्विकात्रये गुरुद्वयेऽर्क जीवविस्सितेऽह्नि षड्शरत्रिके । शिवार्कदिग्द्विकेतिथौ ध्रुवान्त्यमित्रभे परैः शुभैरधीतिरुत्तमा त्रिकोणकेन्द्रगैः स्मृता ॥ १ ॥

मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, हस्त, चित्रा, स्वाती, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष, अश्विनी, मूल, तीनों पूर्वा, पुष्य, श्लेषा इन नक्षत्रों में विद्यारम्भ शुभ है तथा एतवार, गुरुवार, बुधवार, शुक्रवार ये दिन शुभ हैं और छठि, पञ्चमी, तीज, एकादशी, द्वादशी, दशमी, द्वितीया ये तिथियां शुभ हैं । तथा और आचार्यों के मत से ध्रुवसंज्ञक नक्षत्र तथा रेवती वा अनुराधा ये शुभ हैं और शुभग्रह त्रिकोण ९।५ वा केन्द्र १।४।७।१० में होयँ ॥ १ ॥

अथ गणितारम्भमुहूर्त्तम् ॥

शतद्वयेऽनुराधार्द्रे रोहिणीरेवतीकरे । पुष्ये जीवे बुधे कुर्यात्प्रारम्भं गणितादिषु ॥ १ ॥

शतभिष, पूर्वभाद्रपद, अनुराधा, आर्द्रा, रोहिणी, रेवती, हस्त, पुष्य ये नक्षत्र वा गुरु बुधवार में गणितारम्भ शुभ है॥१॥

अथ व्याकरणारम्भमुहूर्त्तम् ॥

रोहिणीपञ्चके हस्तात्पुनर्भे मृगभेऽश्विभे । पुष्ये शुक्रेज्यविद्वारे शब्दशास्त्रम्पठेत्सुधीः ॥ १ ॥

रोहिणी, हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा, पुनर्वसु, मृगशिरा, अश्विनी, पुष्य ये नक्षत्र वा शुक्र, बृहस्पति, बुधवार में व्याकरणशास्त्र पढ़ना शुभ है ॥ १ ॥

अथ न्यायादिशास्त्रारम्भमुहूर्त्तम् ॥

त्र्युत्तरे रोहिणीपुष्ये पुनर्भे श्रवणे करे । अश्विन्यां शतभे स्वातौ न्यायशास्त्रादिकं पठेत् ॥ १ ॥

तीनों उत्तरा, रोहिणी, पुष्य, पुनर्वसु, श्रवण, हस्त, अ-श्विनी, शतभिष और स्वाति इन नक्षत्रों में न्यायशास्त्र आदिक पढ़ना शुभदायक है ॥ १ ॥

अथ धर्मशास्त्रपुराणारम्भमुहूर्त्तम् ॥

हस्तादिपञ्चके पुष्ये रेवतीद्वितये मृगे । श्रवत्रये शुभारम्भो धर्मशास्त्रपुराणयोः ॥ १ ॥

हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा, पुष्य, रेवती, अश्विनी, मृगशिरा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष इन नक्षत्रों में धर्मशास्त्रारम्भ वा पुराणारम्भ शुभ है ॥ १ ॥

अथ वैद्यविद्या तथा गारुडीविद्यारम्भमुहूर्त्तम् ॥

हस्तत्रयेऽनुराधायां पुनर्भे श्रवणत्रये । मूले चान्त्येऽश्विनीपुष्ये ज्येष्ठाश्लेषार्द्रभे मृगे १ वैद्यविद्या कुजेऽब्जेर्के ज्येष्ठाहीनेऽत्र गारुडी ॥ २ ॥

हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष, मूल, रेवती, अश्विनी, पुष्य, ज्येष्ठा, श्लेषा, आर्द्रा, मृगशिरा इन नक्षत्रों में वैद्यविद्या शुभ है और मङ्गल, सोम वार, एतवार ये दिन शुभ हैं और इन्हीं नक्षत्रों में ज्येष्ठा के विना सर्पविद्या शुभ है ॥ १।२॥

अथ जैनविद्यारम्भमुहूर्त्तम् ॥

श्रवत्रये मघापूर्वाऽनुराधारेवतीत्रये । पुनर्भे स्वाति भे सूर्ये शुक्रे जैनागमम्पठेत् ॥ १ ॥

श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष, मघा, पूर्वा, अनुराधा, रेवती, अश्विनी, भरणी, पुनर्वसु, स्वाति ये नक्षत्र वा रवि शुक्रवार में जैनविद्या पढ़ना शुभदायक है ॥ १॥

अथ फ़ारसीविद्यारम्भमुहूर्त्तम् ॥

ज्येष्ठाश्लेषा तथा पूर्वा रेवती भरणीद्वये । विशाखा

द्रोत्तराषाढाशतभे पापवासरे । लग्ने स्थिरे च चन्द्रे च फारसीमारबीं पठेत् ॥ १ ॥

ज्येष्ठा, श्लेषा, तीनों पूर्वा, रेवती, भरणी, कृत्तिका, विशाखा, आर्द्रा, उत्तराषाढ़, शतभिष ये नक्षत्र वा शनि, मङ्गल, रविवार में फ़ारसी तथा अरबीविद्या पढ़ना शुभ है ॥ १ ॥

अथ लेखनारम्भमुहूर्त्तम् ॥

शुभे तिथौ शुभे वारे रेवतीयुगले तथा । श्रवणे चानुराधायां तथैवार्द्रादिषु त्रिषु १ हस्तादित्रितये कुर्याल्लेखनारम्भणं सुधीः ॥ २ ॥

शुभतिथि वा शुभवारों में लेखनारम्भ शुभ है तथा रेवती, अश्विनी, श्रवण, अनुराधा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा और स्वाति ये नक्षत्र लिखने में शुभ हैं ॥ १ । २ ॥

अथ बालकजन्मसमये अभुक्तमूलादिज्ञानम् ॥

ज्येष्ठान्ते घटिकायुग्मं मूलादौ घटिकाद्वयम् । अभुक्तमूलमेतत्स्यादित्येवं नारदोऽब्रवीत् १ वशिष्ठस्तु तयोरन्त्याद्ययोरेकद्विनाडिकम् । अङ्गिराघटिकामेकामन्ये षट्चाष्ट तत्र तु २ जातं शिशुं त्यजेत्तातो न पश्येद्वाष्टहायनम् ॥ ३ ॥

ज्येष्ठा नक्षत्र के अन्त में दो घड़ी और मूल के आदि में दो घड़ी ये अभुक्तसंज्ञक मूल होते हैं नारदजी का वचन है १ और वशिष्ठजी कहते हैं कि ज्येष्ठा के अन्त में एक घड़ी और मूल के आदि में दो घड़ी अभुक्तसंज्ञक मूल जानिये तथा अङ्गिरा ऋषि कहते हैं कि ज्येष्ठान्त की एक घड़ी और मूलादि की एक घड़ी अभुक्तसंज्ञक मूल होते हैं तथा और आचार्यों का मत है कि ज्येष्ठा के अन्त छः घड़ी और मूलादि में आठ घड़ी अभुक्त हैं २ ऐसे योग में बालक उत्पन्न होय तो

पिता उसे त्याग करै अथवा आठ वर्षतक देखै नहीं ॥ ३ ॥

अथ मूलजनने पादफलम् ॥

मूलाद्यचरणे तातो द्वितीये जननी तथा । तृतीये तु धनं नश्येच्चतुर्थोऽपि शुभावहः ॥ १ ॥

मूल के पहिले चरण में जन्म होय तो पिता का नाश होय दूसरे में माता का नाश होय तीसरे में धन का नाश होय चौथा शुभ है ॥ १ ॥

अथ द्वितीयप्रकारेणपादफलम् ॥

आद्ये पिता नाशमुपैति मूलपादे द्वितीये जननी तृतीये । धनञ्चतुर्थोऽस्य शुभोऽथ शान्त्या सर्वत्र सत्स्यादहिभे विलोमम् ॥ १ ॥

पहिले चरण में पिताका नाश करै दूसरे में माता का नाश करै तीसरे में धनका नाश करै चौथा शुभहै और शान्ति करने से सब शुभ हैं और श्लेषा का विलोम जानिये अर्थात् पहिला शुभ है दूसरे चरण में धन का नाश होय तीसरे चरण में माता का नाश होय चौथे चरण में पिता का नाश होय ॥ १ ॥

अथ ज्येष्ठायाश्चरणफलम् ॥

आद्ये पादेऽग्रजं हन्ति ज्येष्ठायामनुजं द्विके । तृतीये जननीं जातः स्वात्मानं च तुरीयके ॥ १ ॥

ज्येष्ठा के पहिले चरण में बड़े भाई का नाश करै दूसरे में छोटे भाई का नाश करै तीसरे में माता का नाश करै चौथे में बालक अपनै नाशहोजाय ॥ १ ॥

अथ मूलवासज्ञानम् ॥

माघाषाढाश्विनोभाद्रपदे मूलं वसेद्दिवि । कार्त्तिके श्रावणे चैत्रे पौषमासे तु भूतले १ वैशाखे फाल्गुने

ज्येष्ठे मार्गे पातालवर्ति तत् । भूतले वर्त्तमाने तु ज्ञेयो दोषोऽन्यथा न हि ॥ २ ॥

माघ, आषाढ़, कुँवार, भाद्रपद, इन महीनों में मूलवास आकाश में जानिये कार्त्तिक, श्रावण, चैत्र, पौष में पृथ्वी में मूलवास होता है १ वैशाख, फाल्गुन, ज्येष्ठ तथा अगहन में मूलवास पाताल में जानिये जब पृथ्वी में मूल बसै तब दोष को करता है अन्य नहीं होता है ॥ २ ॥

अथ मूलवासचक्रम् ॥

आकाश	पृथ्वी	पाताल	मूलवास
माघ आषाढ़ आश्विन भाद्र	कार्त्तिक चैत्र श्रावण पौष	फाल्गुन ज्येष्ठ मार्गशीर्ष वैशाख	मास

अथ स्तन्यपानमुहूर्त्तम् ॥

जातकर्मोक्तनक्षत्रे श्रवणे च पुनर्वसौ । त्यक्त्वा स्वातीं स्तन्यपानं शुभं प्रोक्तं शुभेऽहनि ॥ १ ॥

जातकर्म में जौन नक्षत्र कहे हैं उन्हीं में वा श्रवण पुनर्वसु में बालक को प्रथम माता का दुग्ध पान कराना शुभ है और स्वाती नक्षत्र वर्जित है और शुभ दिन होय ॥ १ ॥

अथ सूतिकाक्वाथमुहूर्त्तम् ॥

भैषज्यगदिते धिष्ण्ये वारे दुर्योगवर्जिते । आरोग्य हेतवे क्वाथः सूतिकायाश्च तच्छिशोः ॥ १ ॥

जो नक्षत्र भैषज्य अर्थात् दवा खाने में कहे हैं उनमें सूतिका स्त्री को काढ़ा देना शुभ हैं और दुर्योग वर्जित करै तथा इसी मुहूर्त्त में बालक को भी आरोग्यके वास्ते काढ़ा इत्यादि देना चाहिये॥१॥ अथ सूतिकापथ्यमुहूर्त्तम् ॥

अन्नाशनोक्तनक्षत्रे शुभाहे सांऽशुमालिनि । हित्वा रिक्तां च दुर्योगं सूतिकापथ्यमीरितम् ॥ १ ॥

जो नक्षत्र अन्नप्राशन में कहे हैं उनमें सूतिका स्त्री को पथ्य देना शुभदायक है और एतवारके समेत शुभदिन होयँ तथा दुष्टयोग वा रिक्ता तिथि वर्जित है ॥ १ ॥

अथ लिङ्गाण्डच्छेदनमुहूर्त्त यवनागमे ॥

नराश्ववृषभादीनां लिङ्गाण्डच्छेदनम्मतम् । अर्कारे ज्यान्त्यपुष्यार्कस्वातीन्दुश्रुतिवासवैः ॥ १ ॥

मनुष्य वा वृषादिकनका लिङ्गाण्डछेदनकरै यमनशास्त्र के मत से बिचारै एतवार मङ्गलवार वा गुरुवार तथा रेवती, पुष्य, हस्त, स्वाती, मृगशिरा, श्रवण, धनिष्ठा ये नक्षत्र और वार शुभ हैं ॥ १ ॥

अथ शुभाशुभतारीखज्ञानम् ॥

तृतीया तथैवाष्टमीविश्वसंख्या तथाष्टादशी च त्रयोविंशतिश्च । तथैवाष्टविंशत्तरीखानिषिद्धा सदा यावनैश्शास्त्रविद्भिः प्रदिष्टा ॥ १ ॥

तीसरी तारीख़, फ़ारसी वा अठवीं तेरहीं अठारहवीं तथा तेईसवीं वा अट्ठाईसवीं ये निषिद्ध हैं यवनशास्त्र में प्रदिष्ट हैं ॥ १ ॥

अथ गण्डान्तयोगेन मूलनक्षत्रज्ञानम् ॥

ज्येष्ठाश्लेषारेवतीनामन्ते च घटिकाद्वयम् । आदौ मूलमघाश्वानां भगण्डोघटिकाद्वयम् ॥ १ ॥

ज्येष्ठा, श्लेषा, रेवती इन नक्षत्रों केअन्त में दो घड़ी और मूल, मघा, अश्विनी की आदि में दो घड़ी ये नक्षत्र गण्डान्त होता है और ये छः नक्षत्र मूल के जानना ॥ १ ॥

अथ तिथिगण्डान्तज्ञानम् ॥

नन्दिकायास्तिथेरादौ पूर्णानां च तथान्तिमे । घटिकैकाशुभे त्याज्या तिथिगण्डोयमुच्यते ॥ १ ॥

नन्दातिथि के आदि में और पूर्णातिथि के अन्तमें एक एक घड़ी तिथि गण्ड होता है ॥ १ ॥

अथ लग्नगण्डान्तज्ञानम् ॥

मीनवृश्चिककर्कान्ते घटिकार्द्धं परित्यजेत् । आदौ मेषस्य चापस्य सिंहस्य घटिकार्द्धकम् ॥ १ ॥

मीन, वृश्चिक, कर्कके अन्तमें आधी घड़ी लग्न गण्ड होता है और मेष, धन, सिंह के आदिमें आधी घड़ीतक लग्नगण्ड होताहै ॥ १ ॥

अथ गण्डान्तफलम् ॥

तिथिगण्डे भगण्डे च लग्नगण्डे च जातकः । न जीवति तदा जातो जीविते च धनी भवेत् ॥ १ ॥

तिथिगण्डान्त वा नक्षत्रगण्डान्त वा लग्नगण्डान्त में बालक पैदा होय तो जीवै नहीं और जीवै तो धनी होवै ॥ १ ॥

अथाग्निहोत्रमुहूर्त्तम् ॥

प्राजापत्ये पूषभे सद्विदैवे पुष्ये ज्येष्ठाश्वीन्दुवेकृत्तिकासु । अग्न्याधानञ्चोत्तराणां त्रयेऽपि श्रेष्ठम्प्रोक्तम्प्राक्तनैर्विप्रमुख्यैः ॥ १ ॥

रोहिणी, रेवती, विशाखा, पुष्य, ज्येष्ठा, अश्विनी, मृगशिरा, कृत्तिका, ३ उत्तरा इन नक्षत्रों में अग्निहोत्र यज्ञ शुभ है आचार्य कहते हैं यह यज्ञ ब्राह्मणन को मुख्य है ॥ १ ॥

अथ द्वितीयप्रकारेणाग्निहोत्रमुहूर्त्तम् ॥

सौम्यायने विशाखायां कृत्तिकारोहिणीमृगे । त्र्युत्तरे रेवतीज्येष्ठा पुष्येऽग्न्याधानमिष्यते १ कुजेऽर्केज्जे गुरौ शुक्रे नो नीचास्तंगतेऽरिभे । नोरिक्तायान्तिथौ कर्के

लग्ने नैव मृगत्रये २ अग्न्याधानं प्रकुर्वीत नेन्दौ लग्नगतेऽपि च । त्रिकोणोपचये केन्द्रे सूर्यजीवकुजेन्दुषु ३ शेषे चोपचये शुद्धे रन्ध्रेऽग्न्याधानमुत्तमम् । लग्नेजीवेधनुर्गे वा द्यूने खे वा धने कुजे । चन्द्रे वा त्रिषडायस्थे सूर्ये वा दीक्षितो भवेत् ॥ ४ ॥

उत्तरायणसूर्यों में अग्निहोत्र शुभ है तथा विशाखा, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा, ३ उत्तरा, रेवती, ज्येष्ठा, पुष्य इन नक्षत्रों में अग्निहोत्र शुभ है १ मङ्गल, सूर्य, चन्द्रमा, बृहस्पति, शुक्र ये न नीच के होयँ न अस्त होयँ और न शत्रुकी राशिमें होयँ और रिक्ता तिथि न होय तथा कर्क, मकर, कुम्भ, मीन ये लग्नैं वर्जित हैं २ चन्द्रमा लग्न में न होय तथा त्रिकोण ६ । ५ वा उपचय लग्न अर्थात् जन्मलग्न वा जन्मराशि से तीसरी छठी ग्यारहवीं लग्न में वा केन्द्र १।४।७।१० में सूर्य, बृहस्पति, मङ्गल, चन्द्रमा होय ३ और जो ग्रह बाक़ी रहे सो उपचयलग्न में होयँ और आठयें घर में कोई ग्रह न होय तो अग्निहोत्र शुभ है और बृहस्पति लग्न में होय वा धनराशि की होय तथा सातयें दशयें होय वा मङ्गल दूसरे होय ४ अथवा चन्द्रमा तीसरे छठे ग्यारहें होय वा सूर्य की दृष्टि चन्द्रमा पर होय ॥

अथ तृतीयप्रकारेणाग्निहोत्रमुहूर्त्तंदीपिकायामाह ॥

पुष्योत्तराविशाखासु ज्येष्ठान्त्याग्निकचन्द्रभे । अग्न्याधानमरिक्तासु कार्यं वा देवजेऽहनि ॥ १ ॥

पुष्य, ३ उत्तरा, विशाखा, ज्येष्ठा, रेवती, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा इन नक्षत्रों में अग्निहोत्र शुभ है और रिक्तातिथि वर्जित है तथा बृहस्पतिवार शुभ है ॥ १ ॥

अथ यज्ञोपवीतमुहूर्त्तम् ॥

पूर्वाषाढहरित्रयेऽश्विमृगभे हस्तत्रये रेवतीज्येष्ठापु

ध्वभगेषु चोत्तरगते भानौ च पक्षे सिते । गोमीनप्रमदा धनुर्वनचरे शुक्रे गुरौ भास्करे पञ्चम्यां दशमीत्रये व्रत मिह श्रेष्ठं द्वितीयाद्वये ॥ १ ॥

पूर्वाषाढ़, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष, अश्विनी, मृगशिरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, रेवती, ज्येष्ठा, पुष्य, पूर्वाफाल्गुनी ये नक्षत्र शुभ हैं यज्ञोपवीत में तथा उत्तरायण सूर्य होयँ और शुक्लपक्ष होय और वृष, मीन, कन्या, धन, सिंह ये लग्नैं शुभ हैं और शुक्र, बृहस्पति, रविवार शुभ हैं और पञ्चमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी, द्वीज, तीज ये तिथियाँ शुभ हैं ॥ १ ॥

अथ द्वितीयप्रकारेणयज्ञोपवीतमुहूर्त्तम् ॥

क्षिप्रध्रुवाहिचरमूलमृदुत्रिपूर्वा रौद्रेऽर्कविद्गुरुसिते न्दुदिने व्रतं सत् । द्वित्रीषुरुद्ररविदिक्प्रमिते तिथौ च कृष्णादिमत्रिलवकेऽपि न चापराह्णे १ कवीज्यचन्द्रल ग्नपारिपौ मृतौ व्रतेऽधमाः । व्ययेऽब्जभार्गवौ तथा तनौ मृतौ सुते खलाः २ व्रतबन्धेऽष्टषट्रिष्फवर्जिताः शोभनाश्शुभाः । त्रिषडाये खलाः कर्कगोस्थः पूर्णोवि धुस्तनौ ॥ ३ ॥

क्षिप्रसंज्ञक नक्षत्र, ध्रुवसंज्ञक, श्लेषा, चरसंज्ञक, मूल, मृदुसंज्ञक, ३ पूर्वा, आर्द्रा ये नक्षत्र यज्ञोपवीत में शुभ हैं तथा एतवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार ये दिन शुभ हैं द्वीज, तीज, पञ्चमी, एकादशी, द्वादशी, दशमी ये तिथियाँ शुभ हैं और कृष्णपक्ष की पञ्चमी तक शुभ है शेष कृष्णपक्ष अशुभ जानना और पराह्ण अर्थात् दिन के तीसरे भाग में वर्जित है १ शुक्र, बृहस्पति, चन्द्रमा और लग्न का स्वामी ये ग्रह लग्न से छठे आठयें होयँ तो यज्ञोपवीत अ[illegible] [illegible]निये तथा बारहें चन्द्रमा वा शुक्र होयँ तौ भी [illegible] मातुः पु [illegible] और लग्न में वा आठयें

घरमें वा पांचयें घर में क्रूर ग्रह होयँ तौ भी अधम जानिये २ यज्ञोपवीत में आठयें बारहें वा छठे शुभग्रह वा पापग्रह सब वर्जित हैं और तीसरे, छठे, ग्यारहें स्थानमें पापग्रह होयँ और कर्क वा वृषराशि का होकर पूर्ण अर्थात् शुक्लपक्ष का चन्द्रमा लग्न में होय ॥ ३ ॥

अथ यज्ञोपवीतलग्ने नवांशाफलम् ॥

क्रूरो जडो भवेत्पापः पटुः षट्कर्मकृद् वटुः । यज्ञार्थभाक् तथा मूर्खो रव्याद्यंशे तनौ क्रमात् ॥ १ ॥

यज्ञोपवीत की लग्न में जो सूर्य का नवांशा होय तो बालक क्रूर होय और चन्द्रमा का नवांशा होय तो जड़ होय तथा मङ्गल का होय तो पापी होय और बुध के नवांशा में पण्डित होय और बृहस्पति के नवांशा में षट्कर्म करै और शुक्रका नवांशा होय तो यज्ञ का अर्थी होय और शनैश्चर के नवांशा में मूर्ख होय इस प्रकार से लग्न में सूर्यादि ग्रहों का नवांशा जानिये ॥ १ ॥

अथ यज्ञोपवीते चन्द्रनवांशाफलम् ॥

विद्यानिरतःशुभराशिलवे पापांशगते हि दरिद्रतरः । चन्द्रे स्वलवे बहुदुःखयुतः कर्णादितिभे धनवान् स्वलवे ॥ १ ॥

चन्द्रमा शुभग्रह के नवांश में होय तो बालक विद्यानिरत होय और पापग्रह के नवांश में होय तो दरिद्र होय और जो कर्क का नवांश होय तौ बहुत दुःख प्राप्ति होय तथा श्रवण वा पुनर्वसु नक्षत्र का चन्द्रमा होकर कर्क के नवांश में होय तो धनवान् करै ॥ १ ॥

अथ यज्ञोपवीतमध्ये कुयोगादिज्ञानम् ॥

कृष्णे प्रदोषेऽनध्याये शनौ निश्यपराह्णके । प्राक्

सन्ध्यागर्जिते नेष्टो व्रतबन्धो गलग्रहे ॥ १ त्रयोदश्यादि चत्वारि सप्तम्यादि दिनत्रये। चतुर्थीमेकमेतेषु अष्टावेते गलग्रहाः ॥ २ ॥

कृष्णपक्ष वा प्रदोष वा अनध्ययन वर्जित है तथा शनिवार वा रात्रि तथा पराह्ण पहिले दिन सन्ध्याको मेघ गर्जै तो यज्ञोपवीत अशुभ है तथा गलग्रह वर्जित है १ अब गलग्रह लिखते हैं तेरसि से चार तिथि अर्थात् तेरसि चौदश पूर्णमासी परेवा तक तथा सप्तमीसे तीनि तिथी अर्थात् सप्तमी अष्टमी नवमी तक तथा चौथि ये आठ तिथी गलग्रह जानिये ॥ २ ॥

अथ प्रदोषज्ञानम् ॥

अर्कतर्कत्रितिथिषु प्रदोषस्स्यात्तदग्रिमैः । रात्र्यर्द्ध सार्द्धप्रहरयाममध्यस्थितैः क्रमात् ॥ १ ॥

द्वादशी के दिन अर्द्धरात्रिपर्यन्त तेरसि प्रवेश होय तो प्रदोष होता है तथा छठिके दिन डेढ़पहर रात्रितक सप्तमी प्रवेश होय तौ भी प्रदोष जानिये तथा तीज के दिन पहररात्रि के भीतर तक चौथि प्रवेश होय तवहूँ प्रदोष जानिये ॥ १ ॥

अथानध्यायज्ञानम् ॥

शुचिशुक्रपौषतपसां दिगाश्विरुद्रार्कसंख्यसिततिथयः। भूतादित्रितयाष्टमि संक्रमणंचव्रतेष्वनध्यायाः॥ १ ॥

आषाढ़मास में दशमी अनध्याय है ज्येष्ठ में द्वितीया अनध्याय है पूष में एकादशी अनध्याय है माघ में द्वादशी अनध्याय जानना और ये सम्पूर्ण तिथी शुक्लपक्ष की जानिये तथा चतुर्दशी से तीन १४ । १५ । १ तिथी वा अष्टमी तथा संक्रान्ति का दिन ये भी तिथी अनध्याय जानना ॥ १ ॥

अथान्यकुयोगज्ञानम् ॥

नान्दीश्राद्धोत्तरं मातुः पुष्पे लग्नान्तरे नहि ।

शान्त्या चौलं व्रतं पाणिग्रहःकार्योऽन्यथा न सत् ॥१॥

नान्दीमुखश्राद्ध के उपरान्त और कार्य की लग्नके अन्तर विषे बालक की माता रजस्वला होय तो मुण्डन वा जनेऊ तथा विवाहशान्ति करने से शुभ हैं और विना शान्ति अशुभ जानिये ॥ १ ॥

अथ ग्रहयुक्तकुयोगज्ञानम् ॥

शुक्रे जीवे तथा चन्द्रे सूर्यभौमार्किसंयुते । निर्गुणः क्रूरचेष्टः स्यान्निर्घृणः सद्युते पटुः ॥ १ ॥

शुक्र, बृहस्पति, चन्द्रमा, सूर्य के संग में होयँ तो बालक निर्गुण होय तथा शुक्र, बृहस्पति, चन्द्रमा, मङ्गल के संग होयँ तो बालक क्रूरचेष्टा होय वा शुक्र, बृहस्पति, चन्द्रमा, शनैश्चर के संग होयँ तो बालक निर्दय होय तथा सब शुभग्रह एक घर में होयँ तो पण्डित होय ॥ १ ॥

अथ यज्ञोपवीतेरविगुर्वादिबलम् ॥

गुरुसूर्यबलं ज्ञेयं विवाहे यद्विवक्ष्यते । चन्द्रताराबलं पूर्वमुक्तं ग्राह्यं वटोः शुभम् १ वटुकन्याजन्मराशेस्त्रि कोणायद्विसप्तगः । श्रेष्ठो गुरुः खषट्त्र्याद्ये पूजयान्यत्र निन्दितः २ चतुर्थे चाष्टमे चैव द्वादशस्थे दिवाकरे । वि वाहितो नरो मृत्युं प्राप्नोत्यत्र न संशयः ३ जन्मन्यथो द्वितीये वा पञ्चमे सप्तमेऽपि वा । नवमे च दिवानाथे पूजया पाणिपीडनम् ४ एकादशे तृतीये वा षष्ठे वा दशमे ऽपि वा । वरस्य शुभदो नित्यं विवाहे दिननायकः ॥ ५ ॥

जिसतरह से विवाहमें बृहस्पति और सूर्य का बल विचारा जाता है उसी तरहसे जनेऊ में विचारना चाहिये और पूर्वोक्त चन्द्रमा वा तारा का बल लेना चाहिये जब अच्छा होय तब

जनेऊ बालकका शुभ है १ बालक वा कन्या की जन्मराशि से नवम पञ्चम ग्यारहें दूसरे सातयें इन स्थानन में बृहस्पति होय तो श्रेष्ठ है तथा दशयें, छठे, तीसरे, पहिले होय तो दान देने से शुभ है तथा चौथे, आठयें, बारहें अशुभ जानिये २ जन्म राशि से चौथे, आठयें, बारहें सूर्य होयँ तो बालक की मृत्यु जानिये ३ तथा जन्मका होय वा दूसरे स्थानमें होय वा पांचयें सातयें होय वा नवयें होय तो पूजा करने से शुभ है ४ तथा ग्यारहें, तीसरे, छठे वा दशयें सूर्य होयँ तो शुभ जानिये ॥ ५ ॥

अथ गुरुबलचक्रम् ॥ अथ रविबलचक्रम् ॥

स्थानानि	फलम्	स्थानानि	फलम्
११।२।५।७।६	शुभम्	११।३।६।१०	शुभम्
६।१।३।१०	पूज्यः	१।२।५।७।६	पूज्यः
४।८।१२	नेष्टः	४।८।१२	नेष्टः

अथ गुरुपरिहारः ॥

स्वोच्चे स्वभे स्वमैत्रे वा स्वांशे वर्गोत्तमे गुरुः । रिष्फा ष्टतूर्यगोपीष्टो नीचारिस्थः शुभोऽप्यसत् ॥ १ ॥

बृहस्पति कर्कराशि के होय वा धन मीन राशि के होय वा अपने मित्र के घरमें होय अर्थात् मेष वृश्चिक के होय वा धन मीन के नवांशा में होय तथा वर्गोत्तम अर्थात् जिस राशि के बृहस्पति होय उसी राशि का नवांश होय तो बारहें आठयें चौथे शुभ जानिये अथवा नीच अर्थात् मकरराशि के होय वा शत्रुघर में अर्थात् मिथुन कन्या तुला वृष के होय तो शुभ होय तौभी अशुभ जानिये ॥ १ ॥

अथ यज्ञोपवीतलग्ने केन्द्रस्थानगतग्रहफलम् ॥

राजसेवी वैश्यवृत्तिः शस्त्रवृत्तिश्च पाठकः । प्राज्ञोऽर्थ वान्म्लेच्छसेवी केन्द्रे सूर्यादिखेचरैः ॥ १ ॥

सूर्य केन्द्र में होय तो राजाका नौकर होय और चन्द्रमा होय तो वैश्यवृत्ति होय मङ्गल होय तो हथियार उठावने की वृत्ति होय बुध होय तो पाठक अर्थात् पढ़ने व पढ़ानेवाला होय बृहस्पति होय तो पण्डित होय शुक्र होय तो अर्थवान् होय शनैश्चर होय तो म्लेच्छकी नौकरी करै ॥ १ ॥

अथ ग्रहाणां केन्द्रफलचक्रम् ॥

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्रहाः
राजसेवी	वैश्यवृत्तिः	शस्त्रवृत्तिः	पाठकः	प्राज्ञः	अर्थवान्	म्लेच्छसेवी	फलम्

अथ द्वितीयप्रकारेण गुरुपरिहारः ॥

चैत्रे मासि रवौ मीने विबलेऽपि गुरौ वटोः । व्रतबन्धः प्रशस्तः स्याच्चैत्रे मीनयुतः शुभः ॥ १ ॥

चैत्रमहीना होय मीन के सूर्य होयँ व निर्बल बृहस्पति होयँ तौभी जनेऊ शुभ जानिये क्योंकि चैत्र में मीनके सूर्य बहुत शुभ होते हैं ॥ १ ॥

अथ राज्ञांक्षुरिकाबन्धनमुहूर्त्तम् ॥

व्रतोक्तमासतिथ्यादौ विचैत्रे सबले कुजे । विभौमे क्षुरिकाबन्धः प्राग्विवाहान्महीभुजाम् ॥ १ ॥

यज्ञोपवीत के मास तिथ्यादिक होयँ परन्तु चैत्रके विना और मङ्गलराशि से गोचरोक्त बली होय और मङ्गलवार के विना विवाह के प्रथम राजों को क्षुरिकाबन्धन शुभ है ॥ १ ॥

अथ विवाहमुहूर्त्तम् ॥

मूलानुराधा मृगरेवतीषु हस्तोत्तरास्वातिमघासु धात्र्ये । ज्येष्ठे तपः फाल्गुनराधमार्गे शुचौ तु पाणिग्रहणं प्रशस्तम् ॥ १ ॥

मूल, अनुराधा, मृगशिरा, रेवती, हस्त, ३ उत्तरा, स्वाति,

मघा, रोहिणी ये नक्षत्र वा ज्येष्ठ, माघ, फाल्गुन, वैशाख, अगहन, आषाढ़ इन महीनों में विवाह शुभ है ॥ १ ॥

अथ वरवरणमुहूर्त्तम् ॥

उत्तरात्रितयपूर्विकात्रयरोहिणीध्वनलभे वरणं सत् । योषितो गुरुरिनः पुरुषस्येन्दुर्द्वयोः परिणये सबलः सन् ॥ १ ॥

तीनों उत्तरा, तीनों पूर्वा, रोहिणी, कृत्तिका इन नक्षत्रों में टीका चढ़ाना शुभहै और स्त्री को गुरुबल और पुरुष को सूर्य-बल लेकर विवाह शुभहै जैसा कि यज्ञोपवीत में कहा है तैसा विचारना चाहिये और चन्द्रमा का बल दोनों को लेना चाहिये पूर्वोक्त प्रकार से जानलेना प्रथम संवत्सरप्रकरण में कहाहै ॥ १ ॥

अथ द्वितीयप्रकारेण वरणमुहूर्त्तम् ॥

धरणिदेवोऽथवा कन्यकासोदरः शुभदिने गीतवाद्यादिभिः संयुतः । वरवृतिं वस्त्रयज्ञोपवीतादिना ध्रुवयुते वह्निपूर्वात्रयैराचरेत् ॥ १ ॥

ब्राह्मण वा कन्या का भाई फलदान चढ़ावै शुभदिन होय गीत बाजादि संयुक्त होइ और वस्त्र यज्ञोपवीतादि संयुक्त करै ध्रुवसंज्ञक नक्षत्र वा कृत्तिका वा ३ पूर्वा शुभ हैं ॥ १ ॥

अथ विवाहेजन्ममासादिनिषेधः ॥

आद्यगर्भसुतकन्ययोर्द्वयोर्जन्ममासभतिथौ करग्रहः । नोचितोऽथ विबुधैः प्रशस्यते चेद्द्वितीयजनुषोस्सुतप्रदः ॥ १ ॥

आदिगर्भ के उत्पन्न सुत कन्या होयँ तो जन्ममास वा जन्मनक्षत्र वा जन्मतिथि विवाह विषे वर्जित है और जो दूसरे गर्भ के सुत कन्या होइँ तो जन्ममासादिक सुतप्रद हैं अर्थात् विवाह होने से पुत्र होइ ॥ १ ॥

अथ ज्येष्ठमासनिषेधः ॥

ज्येष्ठद्वन्द्वं मध्यमं संप्रदिष्टं त्रिज्येष्ठं स्यान्नैव युक्तं कदापि । केचित्सूर्यं वह्निगं प्रोह्यमाहुर्नैवान्योन्यं ज्येष्ठयोः स्याद्विवाहः ॥ १ ॥

दुइज्येष्ठ में विवाह मध्यम है अर्थात् वर कन्या में से एक आदि गर्भ का उत्पन्न होय और ज्येष्ठ महीना होइ इसे दो ज्येष्ठ कहते हैं और तीन ज्येष्ठ में विवाह वर्जित है अर्थात् वर कन्या ज्येष्ठ होइँ और ज्येष्ठ महीना होइ इसको तीन ज्येष्ट जानना और किसी आचार्य का यह मत है कि कृत्तिका नक्षत्र के सूर्य होइँ तो ज्येष्ठ में विवाह शुभ है तथा कोई आचार्य के मत से नहीं उत्तम है ॥ १ ॥

अथ विवाहमण्डपादिकमुहूर्त्तम् ॥

चित्राविशाखाशततारकाश्विनी ज्येष्ठाभरण्यां शिव भाच्चतुष्टयम् । हित्वा प्रशस्तं फलतैलवेदिकाप्रदानकं कण्डनमण्डपादिकम् ॥ १ ॥

चित्रा, विशाखा, शतभिष, अश्विनी, ज्येष्ठा, भरणी, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, श्लेषा इन नक्षत्रों को छोड़कर और जो शेष नक्षत्र हैं तिनमें फलदान वा तैलपूजन वा वेदी बनाना वा कण्डन अर्थात् अन्नकूटना वा मण्डप छावना शुभहै अथवा माँड़व सेराने का मुहूर्त्त वा और जो विवाहसम्बन्धी कार्य हैं सो सब विवाह के कहे हुए जे नक्षत्र हैं तिनमें करना योग्य है ॥ १ ॥

अथ विवाहादिनिषेधज्ञानम् ॥

सुतपरिणयात्षण्मासान्तः सुताकरपीडनं न च निजकुले तद्वद्वा मण्डनादपि मुण्डनम् । न च सहजयोर्देये भ्रात्रोः सहोदरकन्यके न सहजसुतोद्वाहोब्दार्द्धे शुभे न पितृक्रिया १ चूडाव्रतं वापि विवाहतो व्रताच्चूडा

च नेष्टा पुरुषत्रयान्तरे । वधूप्रवेशाच्च सुताविनिर्गमः षण्मासतोवाब्दविभेदतः शुभः ॥ २ ॥

बालक के विवाह से छःमहीनातक कन्या का विवाह वर्जित है अपने कुल विषे तिसीप्रकार से विवाह से छःमहीना तक मुण्डन वर्जितहै तथा दोनों भाई सगे वा दोनों बहिन सगी कन्यों का विवाह वर्जितहै १ विवाह से मुण्डन वा यज्ञोपवीत छःमहीना तक वर्जितहै तीनपुरुषों की औलाद में अर्थात् पिता पितामह प्रपितामह तक और वधूप्रवेश से छःमहीनातक कन्या का भेजना पति के घर मनाहै परन्तु संवत्सर बदल जाय तो शुभहै॥२॥

अथ पञ्चशलाकावेधचक्रम् ॥

अपि तिर्यग्गतोर्ध्वपञ्चरेखाः प्रतिकोणं द्वयमग्नि मीशकोणे । इतराणि लिखेत्क्रमेण भानि प्रथितं पञ्च शलाकचक्रमुक्तम् १ यदृक्षगो यः खचरः स तत्र प्रले खनीयो गणकैस्तु पूर्वैः । या पौर्णमासी निकटे विवा हात्तत्तारकस्थो विधुरत्र देयः ॥ २ ॥

पांचरेखा वेंड़ीकरै पांच खड़ी करै पञ्चशलाकाचक्र बनावै और कोणों में दो दो रेखा लिखै तिसमें ईशान दिशा से कृत्तिकादि दे अंट्ठाइसों नक्षत्र लिखै १ जौन ग्रह जिस नक्षत्र में होय तहां लिखै पण्डित कहते हैं और विवाह के नगीच जौन पूर्णमासी होय उस पूर्णमासी को जौन नक्षत्र होय उसीनक्षत्र में चन्द्रमा लिखदेना ॥ २ ॥

अथ पञ्चशलाकावेधफलम् ॥

एकरेखास्थितिर्वेधो दिननाथादिभिर्ग्रहैः । विवाहे तत्र मासान्ते न जीवंति कदाचन ॥ १ ॥

एक रेखा में परस्पर विवाह का नक्षत्र और कोई ग्रह होइ तो वेध होताहै उसमें विवाह होइ तो एक महीना के भीतर में न जियै ॥ १ ॥

अथ पञ्चशलाकाचक्रन्यासः ॥

अथ लत्तादोषज्ञानम् ॥

सूर्योद्वादशमष्टमं रविसुतःषष्ठं गुरुर्भूमिजस्तार्तीयिक मथो निहन्ति पुरतो नक्षत्रकं लत्तया । द्वाविंशन्तुहिनांशुकश्च नवमं राहुर्बुधः सप्तमं शुक्रः पञ्चमकन्तु पृष्ठत इह प्रायेण लत्तां त्यजेत् ॥ १ ॥

सूर्य अपने नक्षत्र से बारहें नक्षत्र को लत्ता मारते हैं और शनैश्चर आठयें नक्षत्र को मारताहै और बृहस्पति छठे को हनता है मङ्गल तीसरे को मारताहै ये ग्रह अपने आगेवाले नक्षत्रों को मारतेहैं तथा चन्द्रमा अपने से बाइसयें नक्षत्र को मारताहै और राहु अपने से नवयें नक्षत्र को मारताहै और बुध सातयें को मारता है तथा शुक्र पांचयें नक्षत्र को लत्ता मारता है ये ग्रह अपने से पीछे वाले नक्षत्र को मारते हैं ये लत्ता विवाह में वर्जित हैं ॥ १ ॥

अथ पातदोषज्ञानम् ॥

शूलस्य गण्डस्य च वैधृतेश्च साध्यव्यतीपातकहर्षणानाम् । यत्तारकं स्यादवसानसंस्थं तत्पातितं वङ्गकलिङ्गदुष्टम् ॥ १ ॥

शूल, गण्ड, वैधृति, साध्य, व्यतीपात, हर्षण इन योगोंका जिस नक्षत्र में अन्त होय उस नक्षत्र में पातदोष लगता है वङ्ग वा कलिङ्ग देश में वर्जितहै ॥ १ ॥

अथ युतिदोषज्ञानम् ॥

यत्र गेहे भवेच्चन्द्रो ग्रहस्तत्र यदा भवेत् । युतिदोषस्तदा ज्ञेयो विना शुक्रं शुभाशुभम् १ रविणा संयुतो हानिर्भौमेन निधनं शशी । करोति मूलनाशं च राहुकेतुशनैश्चराः २ वर्गोत्तमगते चन्द्रे स्वोच्चे मित्रर्क्षगे तथा। युतिदोषश्च न भवेद्दम्पत्योः श्रेयसी सदा ॥ ३ ॥

जिस गृह में चन्द्रमा होय उसी घर में और कोई ग्रह होय तो युतिदोष जानिये परन्तु शुक्र विना अर्थात् शुक्र शुभ है अन्य अशुभहैं १ ॥ फलम् ॥ सूर्य संयुक्त होय तो हानि होय मङ्गलयुक्त होय तो मृत्यु होय राहु केतु शनैश्चर युक्त होयँ तो मूल नाश करें २॥ अब परिहार लिखते हैं चन्द्रमा वर्गोत्तम होय अर्थात् जिसकी राशि होय उसीका नवांश होय अथवा उच्चका होय तथा मित्र के गृह में होय तो युतिदोष नहीं होता है दम्पति अर्थात् स्त्री पुरुष सुखी होयँ ॥ ३ ॥

अथ यामित्रदोषज्ञानम् ॥

पाणिग्रहस्य शीतांशोर्नक्षत्रं यच्चतुर्दशम् । नक्षत्रं खेटयुक्तं चेद्यामित्रं स्याद्विगर्हितम् ॥ १ ॥

विवाह के नक्षत्र से चौदहें नक्षत्रपर कोई ग्रह होय तो यामित्र दोष जानिये सो वर्जितहै ॥ १ ॥

अथ पञ्चकदोषज्ञानम् ॥

रविक्रान्तियातांशयुक्ताश्च तिथ्योरविर्दिग्गजाः सिन्धवः खेटभक्ताः । भवेत्पञ्चकं रोगवह्नीशचौरमृतिर्दोषमेनं प्रजह्याद्विवाहे ॥ १ ॥

सूर्य के गतांश और पन्द्रह वा बारह वा दश वा आठ वा चारि इनको अलग २ धरिकै जोड़ना तिन अङ्कों में नव का भाग लेना शेष पांच बचैं तो क्रमसे पांचों स्थान में पांच पञ्चक रोग १ अग्नि २ राज ३ चौर ४ मृत्यु ५ होते हैं सो विवाहमें वर्जितहैं ॥ १ ॥

अथ पञ्चकदोषपरिहारः ॥

रात्रौ चौररुजौ दिवा नरपतिः वह्निः सदा सन्ध्ययोर्मृत्युश्चाथ शनौ नृपो विदि मृतिः भौमेऽग्निचौरो रवौ । रोगोऽथ व्रतगेहगोपनृपसेवायां न पाणिग्रहे वर्ज्याश्चक्रमतो बुधैरुगनलक्ष्मापालचौरामृतिः ॥ १ ॥

रात्रि को चौर वा रोगपञ्चक वर्जित है दिन में नृपपञ्चक वर्जित है और अग्निपञ्चक हमेशा वर्जितहै और दोनों संध्या में मृत्युपञ्चक वर्जितहै ॥ अथ वारपरत्वेन परिहारः ॥ शनैश्चर को नृपपञ्चक वर्जित है बुधको मृत्युपञ्चक वर्जित है मङ्गलको अग्नि वा चौरपञ्चक वर्जितहै और एतवारको रोगपञ्चक वर्जित है ॥ अथ कार्यभेदेन परिहारः ॥ जनेऊ में रोगपञ्चक वर्जितहै और मकान बनानेमें अग्निपञ्चक वर्जितहै तथा राजसेवा में नृपपञ्चक त्याज्य है और यात्रा में चौरपञ्चक त्याज्य है तथा विवाह में मृत्युपञ्चक त्याज्य है ॥ १ ॥

अथ विवाहाङ्गे ग्रहविचारः ॥

व्यये शनिः खेऽवनिजस्तृतीये भृगुस्तनौ चन्द्रखला न शस्ताः । लग्नेट्कविग्लौश्च रिपौ मृतौ ग्लौर्लग्नेशुभाराश्च मदे च सर्वे १ किं कुर्वन्ति ग्रहास्सर्वे यस्य केन्द्रे बृहस्पतिः । मत्तमातङ्गयूथानां शतं हन्ति च केशरी २ त्र्यायाष्टषट्सु रविकेतुतमोऽर्कपुत्रास्त्र्यायारिगः क्षितिसुतौ द्विगुणायगोऽब्जः । सप्तव्ययाष्टरहितौ ज्ञगुरू

सितोऽष्टत्रिद्यूनषड्व्ययगृहान्परिहृत्य शस्तः ३ शुक्रो दश सहस्राणि बुधो दशशतानि च। लक्षमेकन्तु दोषाणां गुरुर्लग्ने व्यपोहति ॥ ४ ॥

बारहें शनैश्चर, दशयें मङ्गल, तीसरे शुक्र, लग्न में चन्द्रमा वा क्रूरग्रह शुभ नहीं हैं लग्नका स्वामी वा शुक्र वा चन्द्रमा छठे नहीं शुभ हैं और आठयें स्थान में चन्द्रमा वा लग्नेश वा शुभग्रह वा मङ्गल नहीं शुभहैं और सातयें स्थान में शुभग्रह नहीं शुभ है १ विवाह की लग्न विषे सप्तम छोड़कर केन्द्र में बृहस्पति होय तो और ग्रह क्या करसक्ते हैं जिसतरह से मत्तहाथिन के समूह को सिंह एकही नाश करदेता है उसीतरह से गुरु सर्वदोपनाशक है २ तीसरे ग्यारहें आठयें छठे सूर्य केतु राहु शनैश्चर होयँ और तीसरे ग्यारहें छठे मङ्गल होयँ और दूसरे तीसरे ग्यारहें चन्द्रमा होय और सातयें बारहें आठयें बुध बृहस्पति न होयँ और शुक्र आठयें तीसरे सातयें छठे बारहें वर्जित है ३ लग्न में शुक्र होयँ तो दशहज़ार दोषको हनैं और बुध लग्न में होयँ तो एकहज़ार दोष को नाशकरैं और जो बृहस्पति लग्न में होयँ तो एकलाख दोष को नाशकरदेइँ ॥ ४ ॥

अथैकार्गलदोषज्ञानम् ॥

विष्कुम्भवज्रपरिघव्यतिपातशूलव्याघातवैधृतिषु गण्ड इहातिगण्डे । एकार्गलो भवति चेत्किल साभिजित्कः पीयूषकान्तिरसमर्क्षगतो रवेर्भात् ॥ १ ॥

विष्कुम्भ, वज्र, परिघ, व्यतीपात, शूल, व्याघात, वैधृति, गण्ड, अतिगण्ड इन योगों में एकार्गल होताहै सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्रतक अभिजित् समेत गिनै जो नक्षत्र सम संज्ञक होयँ और पूर्वोक्त योग भी होयँ तो एकार्गल दोष जानिये विवाह में त्याज्य है ॥ १ ॥

अथोपग्रहदोषज्ञानम् ॥

शराष्टदिक्शक्रनगातिधृत्यस्तिथिर्धृतिश्च प्रकृतेश्च पञ्च । उपग्रहः सूर्यभतोऽब्जतारा शुभा न देशे कुरुबाह्लिकानाम् ॥ १ ॥

सूर्यके नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिनै जो पांच, आठ, दश, चौदह, सात, उन्नीस, पन्द्रह, अठारह, इक्कीस, बाइस, तेइस, चौबिस, पचीस इतने नक्षत्र होयँ तो उपग्रह दोष जानिये सो कुरु वा बाह्लीकदेश में शुभ नहीं है ॥ १ ॥

अथ क्रान्तिदोषज्ञानम् ॥

पञ्चास्याजौ गोमृगौ तौलिकुम्भौ कन्यामीनौ कर्क्यलीचापयुग्मौ । तत्रान्योन्यं चन्द्रभान्वोर्निरुक्तं क्रान्तेः साम्यं नो शुभं मङ्गलेषु ॥ १ ॥

सिंह, मेष, वृष, मकर, तुला, कुम्भ, कन्या, मीन, कर्क, वृश्चिक, धन, मिथुन इन राशिन में परस्पर सूर्य चन्द्रमा होयँ तो क्रांतिसाम्यदोष जानिये सो विवाह में अशुभ है ॥ १ ॥

अथ दग्धातिथिज्ञानम् ॥

मीने चापे द्वितीयार्के चतुर्थीवृषकुम्भयोः । मेषकर्कटयोः षष्ठी कन्यायां मिथुनेऽष्टमी १ दशमी वृश्चिके सिंहे द्वादशीमकरे तुले । एतास्तु तिथयो दग्धाः शुभे कर्माणि वर्जिताः ॥ २ ॥

मीन वा धन के सूर्यों में द्वीजतिथि दग्धा होती है और वृष वा कुम्भके सूर्यों में चतुर्थी दग्धा होती है और मेष कर्क के सूर्यों में छठि दग्धा है तथा कन्या वा मिथुन के सूर्यों में अष्टमी दग्धा है १ और वृश्चिक सिंह के सूर्यों में दशमी दग्धा है और मकर वा तुला के सूर्यों में द्वादशी दग्धा है सो शुभकर्म में वर्जित है ॥ २ ॥

अथ लत्तादिदोषपरिहारः ॥

लत्ता मालवके देशे पातश्च कुरुजाङ्गले। एकार्गलं च काश्मीरे वेधं सर्वत्र वर्जयेत् ॥ १ ॥

लत्तादोष मालवादेश में वर्जित है और पातदोष कुरुजाङ्गल देश में वर्जितहै और एकार्गलदोष काश्मीरदेश में वर्जितहै तथा वेधदोष सर्वदेशों विषे वर्जित है ॥ १ ॥

अथ शूद्रादीनां पुनर्विवाहार्थे गन्धर्वविवाहचक्रम् ॥

गान्धर्वादिविवाहेर्काद्दिदनेत्रगुणेन्दवः । कुयुगाङ्गानि भूरामत्रिपद्यामशुभाशुभाः ॥ १ ॥

सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रनक्षत्र तक गन्धर्वविवाह विचारे चार दो तीन एक एक चार छः एक तीन फिर तीन इस क्रम से प्रथम अशुभ फिर शुभ जानिये ॥ १ ॥

अथ गन्धर्वविवाहचक्रन्यासः ॥ २८ ॥

४	२	३	१	१	४	५	१	३	३
अ.	शु.	अ.	शु.	अ.	शु.	अ.	शु.	अ	शु.

अथ स्वयंवरकालमुहूर्त्तम् ॥

पितापितामहोभ्राता माताबन्धुर्यदा न हि । ऋतौ वर्षत्रयादूर्ध्वं कन्या कुर्यात्स्वयंवरम् ॥ १ ॥

कन्या का पिता वा पिता का पिता वा भाई वा माता वा कुटुम्बी ये कोई न होयँ और कन्या रजस्वला भये पीछे तीन वर्ष के उपरांत अपने मन से पति करलेइ ॥ १ ॥

अथ गोधूलिकाज्ञानम् ॥

यदा नास्तंगतो भानुः गोधूल्या पूरितं नभः । सर्वमङ्गलकार्येषु गोधूलिः शस्यते सदा ॥ १ ॥

सूर्य जब अस्त होनेपर होयँ जिस समय गौवनकी धूरि

आकाशमें पूरित होइ तो उस समय जितने मङ्गल कार्य हैं वे सब शुभ हैं ॥ १ ॥

अथ अन्धादिलग्नज्ञानम् ॥

दिने सदान्धा वृषमेषसिंहा रात्रौ च कन्या मिथुनं कुलीरः । मृगस्तुलालिर्बधिरोऽपराह्णे सन्ध्यासु कुब्जा घटधन्विमीनाः १ दारिद्र्यं बधिरतनौ दिवान्धलग्ने वैधव्यं शिशुमरणं निशान्धलग्ने । पङ्ग्वङ्गे निखिलधनानि नाशमीयुः सर्वत्राधिपगुरुदृष्टिभिर्न दोषः ॥ २ ॥

दिनको वृष, मेष, सिंह लग्नैं सदा अन्धी होती हैं और रात्रिको कन्या, मिथुन, कर्क अन्धी होती हैं और पराह्ण में मकर, तुला, वृश्चिक ये बहिरी हैं और कुम्भ, धन, मीन ये सन्ध्याबिषे कुबरी हैं १ ॥ अथ फलम् ॥ बहिरी लग्नमें विवाह होनेसे दारिद्र्य आताहै और दिनकी अन्धीलग्नैं वैधव्यकारक हैं और रात्रिकी जो अन्धी लग्नैं हैं सो बालकनकी मृत्युकारक हैं और लँगड़ी लग्नन में धन नाश होता है विवाह में तथा लग्नन के स्वामी पर बृहस्पति की दृष्टि होय तो नहीं दोष है इति परिहारः ॥ २ ॥

अथ द्वितीयप्रकारेण लग्नफलम् ॥

घस्रे तुलाली बधिरौ मृगाश्वौ रात्रौ च सिंहाजवृषा दिवान्धाः । कन्यानृयुक्कर्कटका निशान्धा दिने घटोन्त्ये निशि पंगुसंज्ञः १ दिवान्धो वरहन्ता च रात्र्यन्धो धननाशकः । दुःखदो बधिरो लग्नः कुब्जा वंशविनाशिनी ॥ २ ॥

दिनको तुला-वृश्चिक-लग्नैं बहिरी होतीहैं और धन-मकर रात्रिको बहिरी होती हैं सिंह-मेष-वृष ये दिन को अन्धी हैं कन्या, मिथुन, कर्क ये रात्रिको अन्धी हैं और दिनको

कुम्भ लँगड़ी है रात्रि को मीन लँगड़ी है १ फल पूर्वोक्त जानिये तथा अब दूसरी प्रकार से लिखते हैं दिनकी अन्धी लग्न वरको हने और रात्रिकी अन्धी धन नाश करै और बहिरी लग्न में दुःख होय और कुबरी लग्न में वंश का नाश होय ॥२॥

अथ विवाहमध्ये कर्तरीदोषज्ञानम् ॥

लग्नात्पापावृज्वनृजू व्ययार्थस्थौ यदा तदा । कर्तरी नाम सा ज्ञेया मृत्युदारिद्र्यशोकदा ॥ १ ॥

विवाह की लग्न से कर्तरीदोष विचारै पापग्रह मार्गी होकर लग्न के बारहें होय और पापग्रह वक्री होकर लग्नके दूसरे घर में होय तो कर्तरीनाम दोष होताहै मृत्यु दारिद्र्य शोकको देनेवालाहै ॥ १ ॥ अथ कुलिकयोगज्ञानम् ॥

सूर्ये च सप्तमी सोमे षष्ठी भौमे च पञ्चमी । बुधे च तुर्थी देवेज्ये तृतीया भृगुनन्दने १ द्वितीया वर्जनीया च प्रतिपच्च शनैश्चरे । कुलिकाख्यो हि योगोऽयं विवाहादौ न शस्यते ॥ २ ॥

एतवार को सप्तमी सोमवार को छठि मङ्गलको पञ्चमी बुधको, चौथि तीज को वेफै द्वीजको शुक्र परेवा को शनैश्चर इन तिथिवारों करके कुलिकयोग होताहै सो विवाहादिक में नहीं शुभहै ॥ १।२ ॥ अथ कुलिकयोगचक्रम् ॥

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	वाराः
७	६	५	४	३	२	१	तिथयः

अथ नवांशज्ञानम् ॥

मेषसिंहधनुर्लग्ने नवांशा मेषतस्स्मृताः । वृषकन्यामृगे लग्ने मकरान्नवमांशकः १ कर्कालिमीनलग्नेषु नवांशाः कर्कतस्स्मृताः । नृयुग्मतौलिकाभेषु तौलितस्स्युर्नवांशकाः ॥ २ ॥

मेष, सिंह, धन लग्नका नवांशा मेषसे गिनना तथा वृष, कन्या, मकर लग्न का नवांशा मकर से गिनना १ और कर्क, वृश्चिक, मीन का नवांशा कर्कसे गिनना मिथुन, तुला, कुम्भ का नवांशा तुलासे गिनना तथा गिनने का क्रम यह है कि तीस अंश की लग्न होती है उसका नवांशा तीन अंश वीस कलाका भया वह प्रथम नवांशा जानिये इसी क्रमसे नव नवांशा होतेहैं स्पष्ट लग्नमें वा स्पष्ट ग्रहों में जितने अंश वा कला वीते होयँ उसका नवांशा इसी रीति से विचारना तथा चक्रसे खुलासा जानना ॥ २ ॥

अथ नवमांशचक्रम् ॥

मेष	वृष	मि०	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृ०	धन	मकर	कुं०	मीन	लग्न
मेष	मकर	तुला	कर्क	मेष	मकर	तुला	कर्क	मेष	मकर	तु०	कर्क	नवांश गणना
३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	अंश
२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	कला
६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	अंश
४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	कला
१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	अंश
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	कला
१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	अंश
२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	कला
१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	अंश
४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	कला
२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	अंश
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	कला
२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	अंश
२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	कला
२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	अंश
४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	कला
३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	अंश
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	कला

अथ नवमांश उदाहरणम् ॥

स्पष्टलग्नम् ०५ । १० । २० । २५ ।

कन्या लग्न दश अंश बीस कला पच्चीस विकला स्पष्ट हैं उसका नवमांश कहो ॥

अथोत्तरम् ॥

कन्या लग्न का नवांश मकर से गिनाजाता है और दश अंश बीसकला पच्चीस विकला स्पष्ट है तो तीनअंश बीसकला के क्रमसे चौथा नवांश हुआ कन्या का मकर से गिनाजाता है तब मेष का नवांश भया उसका स्वामी मङ्गल भया ॥

अथ होराज्ञानम् ॥

होरयोरोजराशौ तु रवीन्दूक्रमतः पती । समराशौ तु चन्द्रार्कौ होरेशौ क्रमतो वदेत् ॥ १ ॥

विषम लग्नमें पन्द्रह अंशतक सूर्यकी होरा होती है फिर पन्द्रह अंश चन्द्रमाकी होरा होती है और समराशिमें प्रथम पन्द्रह अंशतक चन्द्रमाकी होरा होतीहै फिर पन्द्रह अंशतक सूर्यकी होरा होतीहै ॥ १ ॥

अथ होराचक्रम् ॥

मेष	वृष	मि.	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृ.	धन	मकर	कुम्भ	मीन	लग्न
सूर्य्य	चं.	सूर्य्य	चं.	सूर्य्य	चं.	सूर्य्य	चं.	सूर्य्य	चं.	सूर्य्य	चं.	अंश १५
चं.	सूर्य्य	चं.	सूर्य्य	चं.	सूर्य्य	चं.	सूर्य्य	चं.	सूर्य्य	चं.	सूर्य्य	अंश ३०

अथ द्रेष्काणज्ञानम् ॥

द्रेष्काण आद्ये लग्नस्य द्वितीयः पञ्चमस्य च । द्रेष्काणश्च तृतीयश्च लग्नान्नवमराशितः ॥ १ ॥

द्रेष्काण का प्रकार तीनभाग से दश दश अंश का होताहै तिस में प्रथम दश अंशतक उसी लग्न का द्रेष्काण जानना स्वामी उसका द्रेष्काणाधिप होताहै औरदूसरे भाग में अर्थात् ग्यारह अंश से बीस अंशतक लग्न से पांचईं लग्न का द्रेष्काण भया उसका स्वामी द्रेष्काणाधिप जानिये तथा तीसरे भाग अर्थात् इक्कीस अंश से तीस अंशतक लग्न से नवईं लग्न का द्रेष्काण भया स्वामी उसका द्रेष्काणाधिप होता है ॥ १ ॥

अथ द्रेष्काणचक्रम् ॥

०	मे०	वृ०	मि०	कर्क	सिं०	क०	तु०	वृ०	ध०	म०	कुं०	मी०	लग्न
द्रेष्काण लग्न	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	प्रथम भाग
द्रेष्काण पति	मं०	शु०	बु०	चं०	सू०	बु०	शु०	मं०	बृ०	श०	श०	बृ०	अंश १०
द्रेष्काण लग्न	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	द्वितीय भाग
द्रेष्काण पति	सू०	बु०	शु०	मं०	बृ०	श०	श०	बृ०	मं०	शु०	बु०	चं०	अंश २०
द्रेष्काण लग्न	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	तृतीय भाग
द्रेष्काण पति	बृ०	श०	श०	बृ०	मं०	शु०	बु०	चं०	सू०	बु०	शु०	मं०	अंश ३०

अथ त्रिंशांशज्ञानम् ॥

कुजार्कीज्यज्ञशुक्राणां बाणेष्वष्टादिमार्गणाः । भागाः स्युर्विषमे भे तु समराशौ विपर्ययात् १ कुजार्किगुरुविच्छुक्रास्त्रिंशांशपतयः क्रमात् । पञ्चपञ्चाष्टशैलेषु भागानां विषमे गृहे ॥ २ ॥

विषमराशि का त्रिंशांश प्रथम पांच अंश मङ्गलका जानना फिरि पांच अंश शनैश्चर का जानना फिरि आठ अंश बृहस्पति का जानव फिरि सात अंश बुध का होता है फिरि पांच अंश शुक्र का जानिये और समराशि में विलोम जानना १ अब खुलासा समराशि का त्रिंशांश लिखते हैं समराशि में प्रथम पांच अंश शुक्र का त्रिंशांश जानिये फिरि सात अंश बुध का जानिये फिरि आठअंश तक बृहस्पति का जानना फिरि पांच अंश शनैश्चरका जानिये फिरि पांच अंश मङ्गलका जानलेना॥२॥

अथ विषमत्रिंशांशचक्रम् ॥

अंश	मे.	मि.	सिं.	तु.	ध.	कुं.	लग्न
५	मं.	मं.	मं.	मं.	मं.	मं.	ग्रह
५	श.	श.	श.	श.	श.	श.	ग्रह
८	बृ.	बृ.	बृ.	बृ.	बृ.	बृ.	ग्रह
७	बु.	बु.	बु.	बु.	बु.	बु.	ग्रह
५	शु.	शु.	शु.	शु.	शु.	शु.	ग्रह

अथ समत्रिंशांशचक्रम् ॥

अंश	वृ.	कर्क	क.	वृ.	म.	मीन	लग्न
५	शु.	शु.	शु.	शु.	शु.	शु.	ग्रह
७	बु.	बु.	बु.	बु.	बु.	बु.	ग्रह
८	बृ.	बृ.	बृ.	बृ.	बृ.	बृ.	ग्रह
५	श.	श.	श.	श.	श.	श.	ग्रह
५	मं.	मं.	मं.	मं.	मं.	मं.	ग्रह

अथ द्वादशांशज्ञानम् ॥

स्याद्द्वादशांश इह राशित एव गेहं होराऽथ दृष्कन वमांशकसूर्यभागाः । त्रिंशांशकश्च षडिमे कथितास्तु वर्गाः सौम्यैः शुभं भवति चाशुभमेव पापैः ॥ १ ॥

द्वादशांश अपनी राशि से गिनै अढ़ाई अढ़ाई अंश एक एक भागपर समझलेना चक्र से खुलासा समझना गेह होरा द्रेष्काण नवांश द्वादशांशक त्रिंशांशक ये छः वर्ग कहे हैं सो इस षड्वर्ग में शुभग्रह होयँ तो शुभ जानिये तथा पापग्रह होयँ तो अशुभ जानिये ॥ १ ॥

अथ ग्रहाणां गेहचक्रम् ॥

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्रहाः
५	४	१ ८	३ ६	९ १२	७ २	१० ११	राशयः

अथ द्वादशांशचक्रम् ॥

अंश	मे.	वृष	मि.	कर्क	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	लग्न
२॥	१ मं.	२ शु.	३ बु.	४ चं	५ सू.	६ बु.	७ शु.	८ मं.	९ बृ.	१० श.	११ श.	१२ बृ.	ग्रह
२॥	२ शु.	३ बु.	४ चं.	५ सू.	६ बु.	७ शु.	८ मं.	९ बृ.	१० श.	११ श.	१२ बृ.	१ मं.	ग्रह
२॥	३ बु.	४ चं.	५ सू.	६ बु.	७ शु.	८ मं.	९ बृ.	१० श.	११ श.	१२ बृ.	१ मं	२ शु.	ग्रह
२॥	४ चं.	५ सू.	६ बु.	७ शु.	८ मं.	९ बृ.	१० श.	११ श.	१२ बृ.	१ मं.	२ शु.	३ बु.	ग्रह
२॥	५ सू.	६ बु.	७ शु.	८ मं.	९ बृ.	१० श.	११ श.	१२ बृ.	१ मं.	२ शु.	३ बु.	४ चं.	ग्रह
२॥	६ बु.	७ शु.	८ मं.	९ बृ.	१० श.	११ श.	१२ बृ.	१ मं.	२ शु.	३ बु.	४ चं.	५ सू.	ग्रह
२॥	७ शु.	८ मं.	९ बृ.	१० श.	११ श.	१२ बृ.	१ मं.	२ शु.	३ बु.	४ चं.	५ सू.	६ बु.	ग्रह
२॥	८ मं.	९ बृ.	१० श.	११ श.	१२ बृ.	१ मं.	२ शु.	३ बु.	४ चं.	५ सू.	६ बु.	७ शु.	ग्रह
२॥	९ बृ.	१० श.	११ श.	१२ बृ.	१ मं.	२ शु.	३ बु.	४ चं.	५ सू.	६ बु.	७ शु.	८ मं.	ग्रह
२॥	१० श.	११ श.	१२ बृ.	१ मं.	२ शु.	३ बु.	४ चं.	५ सू.	६ बु.	७ शु.	८ मं.	९ बृ.	ग्रह
२॥	११ श.	१२ बृ.	१ मं.	२ शु.	३ बु.	४ चं.	५ सू.	६ बु.	७ शु.	८ मं.	९ बृ.	१० श.	ग्रह
२॥	१२ बृ.	१ मं.	२ शु.	३ बु.	४ चं.	५ सू.	६ बु.	७ शु.	८ मं.	९ बृ.	१० श.	११ श.	ग्रह

अथ विवाहमध्ये राशिमेलनविचारः

तत्रादौ होढ़ाचक्रम् ॥

मेष	वृष	मि.	कर्क	सिंह	कन्या	तु.	वृश्चि.	ध.	म.	कुं.	मी.
चू	ई	का	ही	मा	टो	रा	तो	ये	भो	गू	दी
चे	उ	की	पुन.	मी	पा	री	वि.	यो	जा	गे	पू.भा.
चो	ए	मृ.	हू	मू	पी	चि.	ना	भा	जी	ध.	दू
ला	कृ.	कू	हे	मे	उ.फा.	रू	नी	भी	उ.षा. / जू	गो	था
अ.	ओ	घा	हो	म.	पू	रे	नू	मू.	जे	सा	झा
ली	वा	ङा	डा	मो	ष	रो	ने	भू	जो / खा	सी	ञा
लू	वी	छा	पुष्य	टा	णा	ता	अनु.	धा	अभि.	सू.	उ.भा.
ले	वू	आ.	डी	टी	ठा	स्वा.	नो	फा	खी / खू	श.	दे
लो	रो.	के	डू	टू	ह.	ती	या	ढा	खे	से	दो
भ.	वे	को	डे	पू.फा.	पे	तू	यी	पू.षा.	खो / श्र.	सो	चा
आ	वो	हा	डो	टे	पो	ते	यू	भे	गा	दा	ची
०	०	०	श्ले.	०	०	०	ज्ये.	०	गी	०	रे.

अथ वर्णादिगुणज्ञानम् ॥

वर्णो १ वश्यं २ तथा तारा ३ योनिश्च ४ ग्रहमैत्रकम् ५ ॥ गणमैत्री ६ भकूटं च ७ नाडी ८ चैते गुणाधिकाः ॥ १ ॥

वर्ण, वश्य, तारा, योनि, ग्रहमैत्री, गणमैत्री, भकूट, नाड़ी ये गुण वर्णादिक एकसे एक अधिक हैं ॥ १ ॥

तत्रादौ वर्णज्ञानम् ॥

मीनालिकर्कटा विप्राः क्षत्री मेषोहरिर्धनुः । शूद्रयुग्मं तुलाकुम्भौ वैश्यकन्यावृषोमृगः १ नोत्तमामुद्वहेत्कन्यां

ब्राह्मणीं च विशेषतः । म्रियते हीनवर्णश्च ब्रह्मणा सदृशो यदि २ विप्रवर्णेषु या नारी शूद्रवर्णेषु यः पतिः । ध्रुवं भवति वैधव्यं शुक्रस्य दुहिता यदि ॥ ३ ॥

मीन वृश्चिक कर्क ये राशि ब्राह्मण वर्ण हैं मेष सिंह धन क्षत्रिय वर्ण हैं मिथुन तुला कुम्भ ये शूद्रवर्ण हैं कन्या वृष मकर वैश्यवर्ण जानिये १ वर्ण में श्रेष्ठ कन्या नहीं उत्तम है ब्राह्मणी विशेष वर्जित है और वर्णहीन वर की मृत्यु होय चहै ब्रह्मा के समान होय २ तथा ब्राह्मणवर्ण स्त्री होय और पति शूद्रवर्ण होय तो शीघ्रही वैधव्य होजाय चहै शुक्राचार्य की कन्या होय तौ भी वैधव्यसे न बचै ॥ ३ ॥

अथ वर्णचक्रम् ॥

ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	वर्ण
१२।८।४	१।५।६	६।२।१०	३।७।११	राशि

अथ वश्यज्ञानम् ॥

मकरस्य पूर्वभागो मेषसिंहोधनुर्वृषः। चतुष्पदाकीट संज्ञा कर्कः सर्पश्च वृश्चिकः १ तुला च मिथुनं कन्या पूर्वार्द्धो धनुषस्तथा । द्विपदाख्या पश्चिमार्द्धं मकरस्य तथा पुनः २ कुम्भमीनौ जलचरौ राशयः परिकीर्तिताः । सिंहं विना वशाः सर्वे द्विपदानां चतुष्पदाः ३ भक्ष्या जलचरास्तेषां भयस्थाने सरीसृपाः ॥ ४ ॥

मकरराशि का पहलाभाग अर्थात् आधी मकर वा मेष सिंह धनका दूसरा भाग वा वृष इन राशिन की चतुष्पदसंज्ञा है और कर्क की कीट संज्ञा है वृश्चिककी सर्पसंज्ञा है १ तुला मिथुन कन्या धनका पहलाभाग इनकी द्विपदसंज्ञा है और मकर का दूसरा भाग २ कुम्भ मीन जलचर हैं इसप्रकार राशी

कहींहैं और द्विपद के सब वश्य हैं एक सिंह नहीं वश है ३ और जलचर द्विपद के भोजन है और सर्प से द्विपद को भय होता है ॥ ४ ॥ इति वश्यफलम् ॥

अथ वश्यचक्रम् ॥

मकर पूर्वार्द्ध । मेष । सिंह । धनपरार्द्ध । वृष	चतुष्पद
कर्क	कीट
वृश्चिक	सर्प
तुला । मिथुन । कन्या । धन । पूर्वार्द्ध	द्विपद
मकर परार्द्ध । कुम्भ । मीन	जलचर

अथ ताराज्ञानम् ॥

कन्यर्क्षाद्वरभं यावत्कन्याभं वरभादपि । गणयेन्नव हृत् शेषे त्री ३ ष्व ५ द्रि ७ भमसत्स्मृतम् ॥ १ ॥

कन्या के नक्षत्र से वरके नक्षत्रतक गिनै और वर के नक्षत्रसे कन्या के नक्षत्र तक गिनै दोनों अङ्क जुदे २ स्थापितकरै उनमें नवका भागदेइ तीन वा पांच वा सात शेष बचैं तो अशुभ तारा जानिये ॥ १ ॥

अथ योनिज्ञानम् ॥

अश्विन्याः शतभस्याश्वो महिषः स्वातिहस्तयोः । पूभाधनिष्ठयोः सिंहो भरण्यन्त्यभयोर्गजः १ कृत्तिकापुष्ययोर्मेषः श्रुतिपूषाद्द्वयोः कपिः । उषाभिजिद्द्वयोर्बभ्रू रोहिणीमृगयोरहिः २ ज्येष्ठानुराधयोरेणःश्वामूलार्द्राभयोस्तथा । पुनराश्लेषयोरोतुराखुः पूफामघर्क्षयोः ३ विशाखाचित्रयोर्व्याघ्रो गौरुफोत्तरभाद्रयोः । मैत्री वैरं विचार्य्यैवं भानां प्रोक्तास्तु योनयः ४ गोव्याघ्रं महिषाश्वं च श्वैणं मार्जारमूषकम् । सिंहेभं कपिमेषञ्च वैरन्तु

नकुलोरगम् ५ त्याज्यं परस्परं वैरं दम्पत्योः स्वामि भृत्ययोः ॥ ६ ॥

अश्विनी और शतभिष अश्वयोनि है और स्वाति और हस्त महिषयोनि है पूर्वाभाद्रपद और धनिष्ठा सिंहयोनि है भरणी, रेवती हाथीयोनि है १ कृत्तिका, पुष्य मेढ़ायोनि है श्रवण, पूर्वाषाढ़ इन दोनों की वानरयोनि है उत्तराषाढ़ वा अभिजित् नेउलायोनि है रोहिणी मृगशिरा सर्पयोनि है २ ज्येष्ठा, अनुराधा मृगयोनि है मूल, आर्द्रा कुत्तायोनि है पुनर्वसु तथा श्लेषा विलारयोनि है पूर्वाफाल्गुनी वा मघा मूषकयोनि है ३ विशाखा और चित्रा व्याघ्रयोनि है उत्तराफाल्गुनी वा उत्तराभाद्रपद की गोयोनि है इसीप्रकार से मैत्री वा वैर विचारै नक्षत्र से कहा है योनिसंज्ञा है ४ अब परमवैर लिखते हैं गौ और बाघ का परमवैर है और महिष वा घोड़ा का है तथा कुत्ता वा मृगा का परमवैर है सिंह वा हस्ती का महावैर है वानर वा मेढ़ा का परमवैर है और नेउला वा सर्प का परमवैर है ५ यह परस्पर वैर त्याज्यकरै विवाहमें वा नौकरी में वर्जित है ॥ ६ ॥

अथ योनिचक्रम् ॥

नक्षत्र	योनि
अ. श.	अश्व
स्वा. ह.	महिष
ध. पूर्वाभा.	सिंह
भ. रे.	हस्ती
पुष्य. कृ.	मेष
श्र. पू. षा.	वानर
उ. षा. अभि.	नकुल
मृ. रो.	सर्प
ज्ये. अनु.	हरिण
मू. आ.	श्वान
पुनर्व. श्ले.	मार्जार
म. पू. फा.	मूषक
वि. चि.	व्याघ्र
उ. भा. उ. फा.	गो

अथ ग्रहमैत्रीज्ञानम् ॥

मित्राणि द्युमणेः कुजेज्यशशिनः शुक्रार्कजौ वैरिणौ सौम्यश्चास्य समो विधोर्बुधरवी मित्रे न चास्य द्विषत् । शेषाश्चास्य समो कुजस्य सुहृदश्चन्द्रेज्यसूर्या बुधः शत्रु

रशुक्रशनी समौ च शशिभृत्सूनोस्सिताहस्करौ १ मित्रे चास्य रिपुः शशी गुरुशनिक्ष्माजाः समा गीष्पतेर्मित्राण्यर्ककुजेन्दवो बुधसितौ शत्रू समः सूर्यजः। मित्रे सौम्यशनी कवेः शशिरवी शत्रू कुजेज्यौ समौ मित्रे शुक्रबुधौ शनेः रविशशिक्ष्माजा द्विषोन्यः समः ॥ २ ॥

सूर्य के मङ्गल, वृहस्पति, चन्द्रमा मित्र हैं वुध सम हैं शुक्र, शनैश्चर,शत्रु हैं चन्द्रमाके वुध,सूर्य मित्र हैं मङ्गल वृहस्पति शुक्र शनि सम हैं और शत्रु कोई नहीं है मङ्गल के चन्द्रमा वृहस्पति सूर्य मित्र हैं वुध शत्रु हैं शुक्र शनि सम हैं वुध के शुक्र सूर्य मित्र हैं चन्द्रमा शत्रु हैं वृहस्पति, शनैश्चर, मङ्गल सम हैं वृहस्पति के सूर्य मङ्गल चन्द्रमा मित्र हैं वुध शुक्र शत्रु हैं शनैश्चर सम हैं शुक्र के वुध शनैश्चर मित्र हैं चन्द्रमा सूर्य शत्रु हैं मङ्गल वृहस्पति सम हैं शनैश्चर के शुक्र, वुध मित्र हैं सूर्य, चन्द्रमा, मङ्गल शत्रु हैं वृहस्पति सम हैं ॥ १ । २ ॥

अथ मैत्रीचक्रम्

सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.	ग्रह
मं.वृ.चं.	सू. बु.	चं.वृ.सू.	शु. सू.	सू.मं.चं.	बु.श.	शु. बु.	मित्र
बु.	मं.वृ.शु.श.	शु.श.	वृ. श. मं.	श.	मं. वृ.	वृ.	सम
शु. श.	००	बु.	चं.	बु. शु.	चं. सू.	सू.चं.मं.	शत्रु

अथ गणमैत्रीज्ञानम् ॥

रक्षोनरामरगणाः क्रमतो मघाहिवस्विन्द्रमूलवरुणानिलतक्षराधा। पूर्वोत्तरात्रयविधातृयमेशभानि मैत्रादितीन्दुहरिपौष्णमरुल्लघूनि १ निजनिजगणमध्ये प्रीतिर

स्युत्तमा स्यादमरमनुजयोः सा मध्यमा संप्रदिष्टा । असुरमनुजयोश्चेन्मृत्युरेव प्रदिष्टो दनुजविबुधयोः स्याद्वैरमेकान्तकोऽत्र ॥ २ ॥

मघा, श्लेषा, धनिष्ठा, ज्येष्ठा, मूल, शतभिष, कृत्तिका, चित्रा, विशाखा ये नक्षत्र राक्षसगण हैं ३ पूर्वा, ३ उत्तरा, रोहिणी, भरणी, आर्द्रा इन नक्षत्रों का मनुष्यगण है अनुराधा, पुनर्वसु, मृगशिरा, श्रवण, रेवती, स्वाति, हस्त, अश्विनी, पुष्य इन नक्षत्रों का देवतागण है १ ॥ अथ फलम् ॥ अपने अपने गण में प्रीति उत्तम होय और देवता मनुष्य की मध्यम प्रीति जानना और राक्षस मनुष्य वर कन्या होयँ तो मृत्यु जानिये और राक्षस देवता का वैर जानना ॥ २ ॥

अथ गणचक्रम् ॥

म.	श्ले.	ध.	ज्ये.	मू.	श.	कृ.	चि.	वि.	राक्षस
पू. भा.	पू. षा.	पू. फा.	उ.भा.	उ.षा.	उ. फा.	रो.	भ.	आ.	मनुष्य
अनु.	पुन.	मृ.	श्र.	रे.	स्वा.	ह.	अ.	पुष्य	देवता

अथ भकूटगुणम् ॥

मृत्युः षडष्टके ज्ञेयोऽपत्यहानिर्नवात्मजे । द्विद्वादशे निर्द्धनत्वं द्वयोरन्यत्र सौख्यकृत् ॥ १ ॥

षडष्टक में मृत्यु होय और नवपञ्चक में शत्रुहानि होय तथा द्विद्वादश में निर्द्धनी होय अन्यत्र शुभ है ॥ १ ॥

अथ मृत्युषडष्टकज्ञानम् ॥

कन्यामेषे वृषेचापे कामालिघटकर्कटे । मृगसिंहे तुलामीने त्यजेन्मृत्युषडष्टके ॥ १ ॥

कन्या वा मेष से तथा वृष वा धनसे मिथुन वा वृश्चिक से

कुम्भ वा कर्क से मकर वा सिंह से तुला वा मीन से मृत्यु षड- ष्टक होती है ॥ १ ॥

अथ वृद्धिषडष्टकज्ञानम् ॥

मेषालिमकरेयुग्मे कन्याकुम्भतुले वृषे । सिंहमीने धने कर्के षडष्टं प्रतिवृद्धिदम् ॥ १ ॥

मेष वृश्चिक । मकर मिथुन । कन्या कुम्भ । तुला वृष । सिंह मीन । धन कर्क ये परस्पर वृद्धिषडष्टक जानना ॥ १ ॥

अथ वर्गगुणम् ॥

अकचटतपयशवर्गाः खगेशमार्जारसिंहशुनाम् । सर्पाखुमृगावीनां निजनिजपञ्चमवैरिणामष्टौ ॥ १ ॥

अवर्ग, कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग, पवर्ग, यवर्ग, शवर्ग ये आठ प्रकार के वर्ग हैं सो क्रम से जानना गरुड़ १ मार्जार २ सिंह ३ कुत्ता ४ सर्प ५ मूषक ६ मृग ७ मेष ८ ये आठ वर्ग अवर्गादि क्रम से चक्रमें जानिये अपने से पांचवां शत्रु है ॥ १ ॥

अथ वर्गचक्रम् ॥

अ इ उ ए	गरुड़	१	त थ द ध न	सर्प	५
क ख ग घ ङ	मार्जार	२	प फ ब भ म	मूषक	६
च छ ज झ ञ	सिंह	३	य र ल व	मृग	७
ट ठ ड ढ ण	श्वान	४	श ष स ह	मेष	८

अथ नाडीगुणम् ॥

ज्येष्ठारौद्रार्यमाम्भःपतिभयुगयुगं दास्रभं चैकनाडी पुष्येन्दुत्वाष्ट्रमित्रान्तकवसुजलभं योनिबुध्न्ये च मध्या । वाय्वग्निव्यालविश्वोडुयुगयुगमथोपौष्णभंचापरास्याद्दम्पत्योरेकनाड्यां परिणयनमसन्मध्यनाड्यां हि मृत्युः १॥

ज्येष्ठा, मूल, आर्द्रा, पुनर्वसु, शतभिष, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, अश्विनी इन नक्षत्रों की आदि नाड़ी है॥ पुष्य, मृगशिरा, चित्रा, अनुराधा, भरणी, धनिष्ठा, पूर्वाषाढ़, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराभाद्रपद ये मध्यनाड़ी हैं ॥ स्वाती, विशाखा, कृत्तिका, रोहिणी, श्लेषा, मघा, उत्तराषाढ़, श्रवण, रेवती ये अन्तनाड़ी हैं ॥ फलम् ॥ एक नाड़ी में वर कन्या का नक्षत्र होय तो विवाह अशुभ है और मध्य नाड़ी में होय तो मृत्यु होय ॥ १ ॥

अथ नाडीचक्रम् ॥

आदि	अ.	आ.	पुन.	उ. फा.	ह.	ज्ये.	मू.	श.	पू. भा.
मध्यम	भ.	मृ.	पुष्य	पू. फा.	चि.	अनु.	पू. पा.	ध.	उ. भा.
अन्त	कृ.	रो.	श्ले.	म.	स्वा.	वि.	उ. पा	श्र.	रे.

अथ नक्षत्रनिषेधज्ञानम् ॥

भामिनीजन्मनक्षत्राद् द्वितीयंपतिसम्भवम् । न शुभं भर्तृनाशाय कथितं ब्रह्मयामले ॥ १ ॥

स्त्री के जन्मनक्षत्र से दूसरा नक्षत्र पतिका होय तो विवाह नहीं शुभ है पतिनाशक है ब्रह्मयामल में कहा है ॥ १ ॥

अथ भकूटादिपरिहारः ॥

प्रोक्ते दुष्टभकूटके परिणयस्त्वेकाधिपत्ये शुभोऽथो राशीश्वरसौहृदेऽपि गदितो नाड्यर्क्षशुद्धिर्यदि । अन्यर्क्षेशपयोर्बलित्वसखिते नाड्यर्क्षशुद्धौ तथा ताराशुद्धिवशेच राशिवशिताभावे निरुक्तो बुधैः ॥ १ ॥

दुष्टभकूट अर्थात् षडष्टकादिक होयँ तथा वर कन्या की राशि का एक ही स्वामी होय तो विवाह शुभ है तथा दूनों राशियों के स्वामी से मित्रता होय और नाड़ी शुद्ध होय तो भी दुष्टभकूट शुभ है तथा और आचार्य के मत से यह है कि वर कन्या की राशि के नवांश का स्वामी बली होकर दूनों परस्पर मित्रता करें और नाड़ी शुद्ध होय तथा तारा शुद्ध होय तो वश्यगुण का अभाव जानिये अर्थात् वश्यगुण बनें चहै न बनें शुभ है ॥ १ ॥

अथ गणपरिहारः ॥

मैत्र्यां राशिस्वामिनोरंशनाथद्वन्द्वस्यापि स्याद्गणानां न दोषः । खेटारित्वं नाशयेत्सद्भकूटं खेटप्रीतिश्चापि दुष्टं भकूटम् ॥ १ ॥

दोनों राशिन के स्वामिन ते मित्रता होय और राशि के नवांश के स्वामी से मित्रता होय तो गण का दोष नहीं है और जो दोनों राशिन के स्वामी ते शत्रुता होय तो शुभभकूटनाशक है और जो मित्रता होय तो दुष्टभकूटनाशक है ॥१॥

अथ नाडीदोष तथा गणदोषपरिहारः ॥

राश्यैक्ये चेद्भिन्नमृक्षं द्वयोः स्यान्नक्षत्रैक्ये राशियुग्मं तथैव । नाडीदोषो नो गणानां च दोषो नक्षत्रैक्ये पाद भेदे शुभः स्यात् ॥ १ ॥

जो वर कन्या की राशि एकही होय और नक्षत्र भिन्न होय तथा नक्षत्र दोनों का एकही होय राशि भिन्न होय तो नाड़ी वा गण का दोष नहीं है और जो दोनों का नक्षत्र एकही होय तो चरण का भेद होने से शुभ है ॥ १ ॥

अथ केचिन्मतेनवर्णादिदोषपरिहारः ॥

गणदोषो योनिदोषो वर्णदोषः षडष्टकम् । चत्वारि नैव दुष्यन्ति राशिमैत्री यदा भवेत् ॥ १ ॥

गणदोष, योनिदोष, वर्णदोष और षडष्टक ये चारो गुण ग्रहमैत्री होय तो दोष नहीं कर सक्के हैं ॥ १ ॥

अथ पुनःपरिहारः ॥

न वर्गवर्णौ न गणो न योनिर्द्विद्वादशे नैव षडष्टके वा । ताराविरुद्धे नवपञ्चमे वा मैत्री यदा स्याच्छुभदो विवाहः ॥ १ ॥

वर्ग, वर्ण, गण, योनि, द्विद्वादश, षडष्टक, तारा, नवपंचक ये सब दोष होयँ केवल ग्रहमैत्री बनती होय तो विवाह शुभदायक है ॥ १ ॥

अथ नवपञ्चकपरिहारः ॥

वरस्य पञ्चमे कन्या कन्याया नवमे वरः । एतत्त्रिकोणकं ग्राह्यं पुत्रपौत्रसुखावहम् ॥ १ ॥

वरके पञ्चम राशि में कन्या होय और कन्या की राशि से नवईं राशि वर की होय तो नवपञ्चक शुभ है पुत्र पौत्र का सुख देनेवाला है ॥ १ ॥

अथ मङ्गलीदोषज्ञानम् ॥

लग्ने व्यये च पाताले यामित्रे चाष्टमे कुजे । पत्नीं हन्ति स्वभर्त्तारं भर्त्तुर्भार्या न जीवति १ एवंविधे कुजे सख्ये विवाहो न कदाचन । कार्यो वा गुणबाहुल्ये कुजे वा तादृशे द्वयोः ॥ २ ॥

जन्मलग्न में वा बारहें वा सातयें वा चौथे वा आठयें मङ्गल होय तो पतिको हनै और जो पतिके होय तो स्त्रीको नाश करै १

इस तरह पर मङ्गल होय तो विवाह कभी न करै अथवा गुण बहुत मिलैं तव करै वा उसीतरह से मङ्गल होय तो करै ॥ २ ॥

अथ केचिन्मतेनभौमपरिहारः ॥

यामित्रे च यदा सौरिर्लग्ने वा हिबुकेऽथवा । नवमे द्वादशे चैव भौमदोषो न विद्यते ॥ १ ॥

जिसकी जन्मलग्न से सातयें तथा लग्न में वा चौथे वा नवयें तथा बारहें इन स्थानों में शनैश्चर होय तो मङ्गल का दोष नहीं मानना ॥ १ ॥

अथ नाड्यादिदानम् ॥

दोषापनुत्तये नाड्यां मृत्युञ्जयजपादिकम् । विधाय ब्राह्मणांश्चैव तर्पयेत्काञ्चनादिना १ हिरण्मयीं दक्षिणाञ्च दद्याद्वर्णादिकूटके । गावोन्नंवसनंहेमसर्वदोषापहारकाः ॥ २ ॥

नाड़ीदोष में मृत्युञ्जय का जप करना चाहिये और ब्राह्मण को सोना देना योग्य है १ अथ वर्णादिकूट में अर्थात् वर्णादि दोष में सोनादान देइ और गोदान अन्नदान वस्त्रदान वा सोनादान करने से सर्वदोष नाश होते हैं ॥ २ ॥

अथ गुणप्रमाणेन शुभाशुभज्ञानम् ॥

साम्ये च वर्णोत्तमजे वरेभू १ र्गुणोऽथवश्याशनके गुणार्द्धम् ०० । ३० । एको १ रिवश्ये द्वितयं २ सखित्वेस्याद्वैरभक्षे गुणहानि ० रेव १ ताराशुभेऽथोवरकन्ययोस्तु त्रय ३ स्तदर्द्धं ० १ । ३० सदसद्भसत्त्वे । महारिवैरे सममित्रतायाः खेन्द्रुत्रिकाम्बु ०० । ०१ । ०३ । ०४ प्रमिता गुणाः स्युः २ वैरे निसाम्येरिसुहृत्त्वकेपि द्वयोश्च साम्येसममित्रतायाम् । एकाधिपत्योभयमित्रतायां

खेकद्विवह्नयम्बुशरा ०० । ०१ । ०२ । ०३ । ०४ । ०५ गुणाः स्युः ३ साम्ये च षड्नामनुजश्चदेवीपतिशिराः ५ स्युः विपरीतकेषट् ६ । दैन्यङ्ग्नाराक्षसनात्र चैको १ गुणोऽन्यथा खं ० त्वथदुष्टकूटे ४ चेद्योनिमैत्री रमणी सुदूरं वेदानिचेत्खं ० त्वनयोः पदैकं १ भू १ रिक्षपादैक्यं अभावइष्टे चेत्कूटकेभारिनृदूरतेषट् ६ । ५ भिन्नर्क्ष राश्यैक्यइषून्मिताःस्युस्त्वन्यस्यसप्ता ७ थ च नाडि भेदे । गजा ८ गुणैक्यं धृतितोऽधिकं चेत्स्त्रीकान्तयोः सौख्यकरं प्रदिष्टम् ॥ ६ ॥

वर कन्या दोनों का वर्ण एकही होय तथा वर का वर्ण उत्तम होय तो एक गुण होताहै और वश्य जो भक्षक होय तो आधा गुण होता है और शत्रु वश्य होय तो एक गुण होता है और मित्र वश्य होय या सम वश्य होय तो दो गुण होतेहैं १॥ अथ तारागुणम् ॥ जो वर कन्या दोनों का तारा शुभ होय तो तीन गुण होते हैं और एकतारा शुभ एक अशुभ होय तो डेढ़ गुण होताहै अन्यथा शून्य जानिये २ ॥ अथ योनिगुणम् ॥ महावैर योनि होय तो शून्य गुण जानिये तथा वैर में एक गुण होताहैं समयोनि में तीन गुण होतेहैं और मित्रयोनि में चारगुण होतेहैं ३ ॥ अथ मैत्रीगुणम् ॥ दूनों वर कन्या की राशि से शत्रुता होय तो शून्य गुण होताहै और एकशत्रुहोय एक सम होय तो एक गुण होताहै तथा एक शत्रु एक मित्र होय तो दोगुण होते हैं और दोनों सामान्य होयँ तो तीनि गुण होतेहैं तथा एक सम होय एक मित्र होय तो चार गुण होते हैं तथा दोनों राशि का स्वामी एकही होय तथा दोनों राशिन ते मित्रता होय तो पांच गुण होतेहैं ४ ॥ अथ गणमैत्रीगुणम्॥ दोनों वर कन्या का समगण होय तो छःगुण होते हैं और वर

मनुष्यगण होय कन्या देवतागण होय तो पांच गुण होते हैं तथा वर देवतागण होय कन्या मनुष्यगण होय तो छः गुण होते हैं और कन्या देवतागण वर राक्षसगण होय तो एक गुण होताहै और अन्यथा होय अर्थात् मनुष्य राक्षसादि होय तो शून्यगुण जानिये ५ ॥ अथ भकूटगुणम् ॥ वर कन्या से दुष्टभकूट होय षडष्टकादिक परन्तु पुरुष की राशिसे स्त्री की राशि दूर होय और दोनोंसे योनि में मैत्री होय अर्थात् योनि-गुण में मित्रता होय तो चारगुण होते हैं और ये पदार्थ न होयँ तो शून्यगुण जानिये और जो दोनों वर कन्या का नक्षत्र एक होय और चरणभेद होय तो एक गुण होता है और दोनों का नक्षत्र वा चरण अभाव होय अर्थात् और २ होय तौभी एक गुण होता है और इष्टकूट होय राशीश ते शत्रुता होय और स्त्रीसे पुरुष दूर होय तो छःगुण होते हैं नक्षत्र भिन्न होय राशि एकही होय तौ पञ्चगुण होते हैं और इन पदार्थों के अन्य होय तो सात गुण जानिये ॥ अथ नाडीगुणम् ॥ नाड़ी दोनों वर कन्या की अन्य अन्य होय तो आठगुण जानिये और जो एक नाड़ी होय तो शून्यगुण जानिये ये ऊपर से लिखा है ये सबगुणों को जोरै जो अठारह से अधिक होय तो विवाह शुभ है स्त्री पुरुष को सुखदायक है और जो अठारह से हीन होय तो विवाह अशुभ है और जो अठारह पूरे होयँ तो मध्यम जानिये यह ऊपर से अनुमान लिखा है ॥ ६ ॥

अथ केचिन्मतेनवर्णदोषपरिहारः ॥

हीनवर्णो यदा राशी राशीशो वर्णमुत्तमम् । तदा राशीश्वरो ग्राह्यस्तस्य राशिं न चिन्तयेत् ॥ १ ॥

राशि करके जिसका वर्ण हीन होय और राशि का स्वामी वर्ण उत्तम होय तो विवाह शुभ है राशि की चिन्ता न करै स्वामी को ग्रहण करै ॥ १ ॥

अथ राशीश्वरवर्णचक्रम् ॥

१ । ८	२ । ७	३ । ६	६ । १२	१० । ११	४	५	राशि
मं.	शु.	बु.	बृ.	श.	चं.	सू.	स्वामी
क्षत्रिय	ब्राह्मण	शूद्र	ब्राह्मण	शूद्र	वैश्य	क्षत्रिय	वर्ण

अथ वधूप्रवेशमुहूर्त्तम् ॥

समादिपञ्चाङ्कदिने विवाहाद्वधूप्रवेशोष्टिदिनान्तराले। शुभःपरस्ताद्विषमाब्दमासदिनेक्षवर्षात्परतोयथेष्टम् १ ध्रुवक्षिप्रमृदुश्रोत्रवसुमूलमघानिले । वधूप्रवेशस्सन्नेष्टो रिक्तारार्कबुधेपरैः ॥ २ ॥

विवाह से सोलह दिनके भीतर समदिन में वधूप्रवेश शुभ है अर्थात् दूसरे चौथे छठे इस क्रम से समदिन जानना तथा सातयें पाँचयें नवयें दिन भी शुभ है उपरान्त सोलह दिनके विषमवर्ष विषममास विषमदिन होय अर्थात् पहिला तीसरा पांचवां इस क्रम से विषम जानना तथा पांच वर्ष के उपरांत जोई श्रेष्ठ मिले सोई लेना कोई सम विषमादि का विचार नहीं है १ ध्रुवसंज्ञक नक्षत्र तथा क्षिप्रसंज्ञक तथा मृदुसंज्ञक तथा श्रवण, धनिष्ठा, मूल, मघा, स्वाती ये नक्षत्र वधूप्रवेश में शुभ हैं तथा रिक्तातिथि वा मङ्गल एतवार बुधवार वर्जित हैं आचार्य कहते हैं ॥ २ ॥

अथ द्विरागमनमुहूर्त्तम् ॥

विवाहाद्विषमे वर्षे कुम्भमेषालिगे रवौ । बलिन्यर्के विधौ जीवे शुभाहे चाश्विनीमृगे १ रेवतीरोहिणीपुष्ये त्र्युत्तरे श्रवणत्रये । हस्तत्रये पुनर्वस्वौ तथा मूलानुराधयोः २ कन्यामीनतुले युग्मे वृषे प्रोक्तबलान्विते ।

लग्ने पद्मदलाक्षीणां द्विरागमनमिष्यते३ सम्मुखे दक्षिणे शुक्रे नो गच्छेत्तु कदाचन । गर्भिणी तु विगर्भा स्यान्न वोढा बन्ध्यतामियात् । बालकश्चेद्विपद्येत विगेहादपि चेद्व्रजेत् ॥ ४ ॥

विवाह से विषम वर्ष में द्विरागमन शुभ है कुम्भ, मेष, वृश्चिक के सूर्य होयँ और सूर्य, चन्द्रमा, बृहस्पति बली होयँ और शुभ दिन होयँ अश्विनी, मृगशिरा, रेवती, रोहिणी, पुष्य, तीनों उत्तरा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष, हस्त, चित्रा, स्वाती, पुनर्वसु तथा मूल, अनुराधा ये नक्षत्र द्विरागमन में शुभ हैं १ । २ तथा कन्या, मीन, तुला, मिथुन, वृष ये लग्नें स्त्रियन को द्विरागमन में शुभ हैं ३ तथा सम्मुख दक्षिण शुक्र में कभी न जाय अथवा गर्भिणी स्त्री जाय तो विना गर्भ होइ और जो नवीन अर्थात् विना गर्भवाली जाय तो बन्ध्या होय अथवा बालक जाय तो मृत्यु को प्राप्त होय ॥ ४ ॥

अथ शुक्रपरिहारः ॥

एकग्रामे चतुष्कोणे दुर्भिक्षे राजविग्रहे । विवाहे तीर्थयात्रायां प्रतिशुक्रो न विद्यते ॥ १ ॥

एक ग्राम में वा चारों कोणों में तथा दुर्भिक्ष में वा राजासे विगाड़ होने में वा विवाह में अर्थात् वधूप्रवेशादि में वा तीर्थयात्रादि में शुक्र के सम्मुख दक्षिण का दोष नहीं होता है ॥ १ ॥

अथ पुनर्गोत्रभेदेन परिहारः ॥

कश्यपेषु वशिष्ठेषु भृगावाङ्गिरसेषु च । भरद्वाजेषु वत्सेषु प्रतिशुक्रो न विद्यते ॥ १ ॥

कश्यपगोत्र, वशिष्ठगोत्र, भृगुगोत्र, आङ्गिरसगोत्र, भरद्वाज

गोत्र वा वत्सगोत्र इन गोत्रों में शुक्र का सम्मुख दक्षिण का दोष नहीं होता है ॥ १ ॥

पुनःशुक्रपरिहारः ॥

पित्र्येगृहे चेत्कुचपुष्पसम्भवः स्त्रीणां न दोषः प्रतिशुक्रसंभवः । भृग्वङ्गिरोवत्सवशिष्ठकश्यपात्रीणां भरद्वाजमुनेः कुले तथा ॥ १ ॥

पिता के घरमें जिस स्त्री के कुच उठें वा रजस्वला होय उस स्त्री को शुक्र के सम्मुख दक्षिण का दोष नहीं है भृगुगोत्र, अङ्गिरसगोत्र, वत्सगोत्र, वशिष्ठगोत्र, कश्यपगोत्र, अत्रिगोत्र, भरद्वाजगोत्र इन गोत्रों में सम्मुख दक्षिण शुक्र का दोष नहीं है ॥ १ ॥

अथ शुक्रान्धमतेन परिहारः ॥

रेवत्यादिमृगान्ते च यावत्तिष्ठति चन्द्रमाः । तावच्छुक्रो भवेदन्धः सम्मुखे दक्षिणे शुभः ॥ १ ॥

रेवती से मृगशिरातक चन्द्रनक्षत्र शुक्र अन्ध होता है सो सम्मुख दक्षिण शुभदायक है ॥ १ ॥

अथ द्वितीयप्रकारेण शुक्रान्धज्ञानम् ॥

यावच्चन्द्रः पूषभात्कृत्तिकाद्ये पादे शुक्रोऽन्धो न दुष्टोग्रदक्षे । मध्येमार्गे भार्गवास्तेऽपि राजा तावत्तिष्ठेत्सम्मुखत्वेऽपि तस्य ॥ १ ॥

चन्द्रनक्षत्र रेवती से कृत्तिका के पहले चरण तक शुक्र अन्ध रहता है तिसमें यात्रा करने से सम्मुख दहिने का दोष नहीं है ॥ तथा राजा की यात्रा में मध्यममार्ग में शुक्र अस्त होजाय तो राजा टिके जबतक उदय न होय तबतक वास करे अथवा सम्मुख रहै तबहूंतक वास करै ॥ १ ॥

अथ दानेन शुक्रपरिहारो दीपिकायाम् ॥

सितमश्वं सितं छत्रं हेममौक्तिकसंयुतम् । ततो द्विजातये दद्यात्प्रतिशुक्रप्रशान्तये ॥ १ ॥

सफ़ेद घोड़ा, सफ़ेद छतुरी, सोना, मोतीसंयुक्त ब्राह्मण को देइ तो शुक्र सम्मुख दक्षिण का दोष शान्त होय ॥ १ ॥

अथ त्रिरागमनमुहूर्त्तम् ॥

आदित्यहस्तेऽन्त्यमृगाश्विमैत्रे तथा श्रविष्ठास्वपि वातपित्रे । वध्वास्तृतीये गमने प्रशस्तं स्याद्योगिनी शूलतमोविशुद्धौ ॥ १ ॥

पुनर्वसु, हस्त, रेवती, मृगशिरा, अश्विनी, अनुराधा, धनिष्ठा, स्वाति, मघा इन नक्षत्रों में वधू का त्रिरागमन अर्थात् रवना शुभ है तथा योगिनी वा दिशाशूल वा राहुशुद्ध होय ॥१॥

अथ त्रिरागमने मासिकराहुविचारः ॥

आद्येऽर्के भ्रमते राहुः पूर्वाशादिक्चतुष्टये । सम्मुखे दक्षिणे त्याज्यस्तृतीयगमने स्त्रियाः ॥ १ ॥

मेषराशि के सूर्यनसे पूर्वादि चारों दिशा में राहु बसता है सो स्त्रियन को रवने में सम्मुख दहिने वर्जित है चक्र से प्रत्यक्ष जानना ॥ १ ॥

अथ मासिकराहुवासचक्रम् ॥

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	राहुदिशावासः
मेष सिंह धन	वृष कन्या मकर	मिथुन तुला कुम्भ	कर्क वृश्चिक मीन	सूर्यराशि

अथ राहुफलम् ॥

अग्रे राहौ च वैधव्यं दक्षिणे दुःखदो भवेत् । पृष्ठे पुत्रवती नारी वामे सौभाग्यशालिनी ॥ १ ॥

सम्मुख राहु होय तो वैधव्यकरै दहिने दुःख देइ पीछे पुत्र-वती स्त्री होय बायें सौभाग्यशालिनी होय ॥ १ ॥

अथ केचिन्मतेन त्रिमासिकराहुज्ञानम् ॥

गमोक्ततिथ्यादिषु कारयेद्बुधो बध्वास्तृतीयं पति वेश्मनोगमः । तत्रालितस्त्रित्रिभसंस्थिते रवौ प्रागादि राहुर्नशुभोग्रदक्षे ॥ १ ॥

यात्रा की तिथ्यादिकों में पति के घर में वधूप्रवेश तीसरी वार अर्थात् रवने में प्रवेशकरै तथा वृश्चिक के सूर्यांसे तीन ३ महीना राहु पूर्वादि चारों दिशा में वास करता है सो सम्मुख दहिने वर्जित है चक्र में प्रत्यक्ष देखना ॥ १ ॥

अथ त्रिमासिकराहुचक्रम् ॥

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	राहुदिशावासः
वृश्चिक धन मकर	कुम्भ मीन मेष	वृष मिथुन कर्क	सिंह कन्या तुला	सूर्यराशि

अथ गृहारम्भमुहूर्त्तम् ॥

मृगेधातृचित्रानुराधोत्तरान्त्ये धनिष्ठाकरस्वातिपुष्याम्बुपेषु । नभोमार्गवैशाखपौषे तपस्ये समन्दे शुभाहे गृहारम्भणंसत् ॥ १ ॥

मृगशिरा, रोहिणी, चित्रा, अनुराधा, ३ उत्तरा, रेवती, धनिष्ठा, हस्त, स्वाति, पुष्य, शतभिष ये नक्षत्र गृहारम्भ में

शुभ हैं तथा श्रावण, अगहन, वैशाख, पौष, फाल्गुन ये मास शुभ हैं तथा शनैश्चर के समेत शुभदिन होयँ ॥ १ ॥

अथ गृहारम्भेभूमिलक्षणम् ॥

श्वेता शस्ता द्विजेन्द्राणां रक्ता भूमिर्महीभुजाम् । विशां पीता च शूद्राणां कृष्णान्येषां तु मिश्रिता ॥ १ ॥

सफ़ेद भूमि ब्राह्मण को श्रेष्ठ है और क्षत्रिय को लालवर्ण भूमि श्रेष्ठ है वैश्य को पीतवर्ण श्रेष्ठ है और शूद्रों को कृष्णवर्ण श्रेष्ठ है और वर्णों को मिश्रित अर्थात् मिलीभई शुद्ध है ॥ १ ॥

अथ ग्रहविचारः ॥

भौमार्करिक्तामाद्यूने चरोनेऽङ्गे विपञ्चके । व्यष्ट्यान्त्यस्थैः शुभैर्गेहारम्भस्त्र्यायारिगैः खलैः ॥ १ ॥

मङ्गल, रविवार, रिक्तातिथि, चरलग्न, विवाहोक्तपञ्चक ये संपूर्ण वर्जित हैं तथा आठयें बारहें शुभग्रह अशुभ हैं और तीसरे ग्यारहें छठे पापग्रह शुभ हैं ॥ १ ॥

अथ गृहारम्भचक्रम् ॥

गेहाद्यारम्भेऽर्कभाद्वत्सशीर्षे रामैर्दाहो वेदभैरग्रपादे । शून्यं वेदैः पृष्ठपादे स्थिरत्वं रामैः पृष्ठे श्रीर्युगैर्दक्षकुक्षौ ॥ १ ॥ लाभो रामैः पुच्छगैः स्वामिनाशो वेदैर्नैःस्वं वामकुक्षौ मुखस्थैः । रामैः पीडा सन्ततं वार्कधिष्ण्याद्दस्रैरुद्रैर्दिग्भिरुक्तं त्वसत्सत् ॥ २ ॥

सूर्य के नक्षत्र से गृहारम्भ का वत्सचक्र विचारै तीन नक्षत्र वत्सके शीर्ष में देइ तिसका फल दाहकारक है और चार नक्षत्र अग्रपाद में देइ तिसका फल शून्य है और चार नक्षत्र पृष्ठपाद में देइ तिसका फल स्थिरत्व होय और तीन नक्षत्र पृष्ठ में देइ

तिसका फल लक्ष्मीप्रद है और चार नक्षत्र दहिनी कोख में देइ उसका फल लाभप्रद है और तीन नक्षत्र पुच्छ में देइ उसका फल स्वामिनाशक है और चार नक्षत्र वामकोख में देइ उसका फल निःस्वताकारक अर्थात् दरिद्रता होय और तीन नक्षत्र मुखमें देइ उसका फल सन्तानपीड़क है अथवा सूर्य के नक्षत्र से सातनक्षत्र अशुभ हैं फिर ग्यारह शुभ हैं फिर दश अशुभ हैं इसी क्रमसे जानना ॥ १ । २ ॥

अथ गृहारम्भचक्रन्यासःसूर्यभात् २८ ॥

शीर्ष	अग्र पाद	पृष्ठ पाद	पृष्ठ	दक्षिण कुक्षि	पुच्छ	वाम कुक्षि	मुख	अङ्ग
३	४	४	३	४	३	४	३	नक्षत्र
दाह	शून्य	स्थिरत्व	लक्ष्मी	लाभ	स्वामिनाश	निःस्वता	पीड़ा	फल

पुनश्चक्रम् ॥

७	११	१०	नक्षत्र
अशुभ	शुभ	अशुभ	फल

अथ ग्रामस्यऋणधनविचारः ॥

स्ववर्गं द्विगुणं कृत्वा परवर्गेण संयुतः । अष्टभिस्तु हरेद्भागं योऽधिकस्स ऋणी भवेत् ॥ १ ॥

अवर्गादि जो आठवर्ग विवाह में कहिआये हैं तिनसे ग्राम का ऋण धन विचारै अपने नाम का वर्ग दूनाकरै फिरि उसको ग्राम के वर्गाङ्कमें जोड़देइ उसमें आठ का भागदेइ जो शेष बचै सो अलग धरै फिरि ग्राम के वर्गाङ्क को दूना करके अपने वर्गाङ्क में जोड़देइ तिसमें आठका भागदेइ जो शेषाङ्क बचै उसे अलगधरै दोनों अङ्क में देखै जो अधिक होय सो ऋणी होता

है और जो कम होय सो धनी होताहै १ अब उदाहरण देखाते हैं कि जैसे ग्राम का नाम लखनऊ है और नाम है नवलकिशोरसाहब तो लखनऊका वर्ग सातवां अङ्क भया और नवलकिशोरसाहब का वर्गाङ्क पांचवां भया तो प्रथम ग्रामके अङ्क को दूना किया तो हुआ १४ इसमें नामके वर्गाङ्क जोड़ने से हुए १६ तिसमें आठका भागदिया तो शेषाङ्क रहा ३ ये ग्राम के अङ्कभये अब नामके वर्गाङ्कको दूना किया तो हुए १० तिस में ग्राम का वर्गाङ्क जोड़ा तो हुए १७ तिसमें आठ का भाग लिया तो शेषाङ्क बचा १ अब दोनों अङ्कों में ग्रामका अङ्क अधिक आया और मुंशीनवलकिशोर साहब का कम भया सो धनी जानिये और ग्राम ऋणी भया ॥ १ ॥

अथ राहुमुखचक्रं पूर्वोक्तम् ॥

ईशान	वायव्य	नैर्ऋत्य	आग्नेय	दिशा
सिंह कन्या तुला	वृश्चिक धन मकर	कुम्भ मीन मेष	वृष मिथुन कर्क	सूर्यराशि

जिस दिशा में मुख होय उसके पहिली दिशा में खात होता है तिसमें खोदना शुभ है तथा पूर्वोक्त भूमि सुप्त भी विचारना योग्य है ॥

अथ परहस्तगतयोगज्ञानम् ॥

द्यूनाम्बरे यदेकोऽपि परांसंथोग्रहोगृहम् । अब्दान्तः परहस्तस्थं कुर्याच्चेद्वर्णपोबलः ॥ १ ॥

लग्नसे सातयें दशयें कोई ग्रह होय तो गृह पराये हाथजाता रहै वर्षके भीतर ऐसा फल होय और जो अपने वर्ण का स्वामी बली होय तो शुभहै अर्थात् शुक्र बृहस्पति ब्राह्मण के स्वामी हैं मङ्गल सूर्य क्षत्रिय के स्वामी हैं और चन्द्रमा वैश्य का स्वामी है बुध शूद्र का स्वामी है ॥ १ ॥

अथ रक्षोभूतयुतयोगः ॥

अजैकपादहिर्बुध्न्यशक्रमित्रानलान्तकैः । समन्दैर्मन्दवारे स्याद्रक्षोभूतयुतं गृहम् ॥ १ ॥

पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, ज्येष्ठा, अनुराधा, कृत्तिका, भरणी ये नक्षत्र शनिवार के युक्त होयँ तो गृहारम्भ में राक्षस भूतयुक्त गृह होय ॥ १ ॥ अथ ग्रामवासफलम् ॥

ग्रामोयत्र भवेदृक्षे तदाद्याः सप्त मस्तके । पृष्ठे सप्त हृदि सप्त सप्त पादे च तारकाः १ मस्तके च धनी मान्यः पृष्ठे हानिश्च निर्धनम् । उदरे सुखसंपत्तिः पादे पर्यटनं फलम् ॥ २ ॥

ग्राम के नक्षत्र से सात नक्षत्र ग्राम के मस्तकपर दीजिये और सात नक्षत्र पीठ में देना और सात हृदय में स्थापित करना और सात नक्षत्र चरण में देना १ ॥ अथ फलम् ॥ अपना नक्षत्र देखना जो ग्राम के मस्तक में परै तो धनी होय पीठ में परै तो हानि होय निर्धन होय उदर में परै तो सुख सम्पदा होय और चरण में परै तो घुमावै ॥ २ ॥

अथ ग्रामराशिविचारः ॥

एकभे सप्तमे व्योमगृहहानिस्त्रिषष्ठगे । तूर्याष्टद्वादशे रोगाः शेषस्थाने भवेत्सुखम् ॥ १ ॥

अपने नामराशि ते ग्राम की राशि एकही होय वा सातईं होय तो शून्यता रहै तथा तीसरे छठे होय तो घर की हानि होय और चौथे आठयें बारहें होय तो रोग करै और शेषस्थान सुखकारक जानिये ॥ १ ॥

अथ ग्रामेनिवासदिग्विचारः ॥

मध्येग्रामस्यगोद्वन्द्वनक्रसिंहाख्यराशयः । मीनालिकन्यकाः पूर्वे दक्षिणे कर्कराशिकः १ धन्विनः पश्चिमेमे

षस्तुलाकुम्भस्तथोत्तरे । नोवसेयुर्नराः सौख्यधनलाभा त्मजार्थिनः २ वैनतेयमुखावर्गा बलिष्ठाः पूर्वतः क्रमात् । स्वदिशास्यगृहं श्रेष्ठं पञ्चम्यां दिशि मृत्युदम् ॥ ३ ॥

वृष, मिथुन, मकर, सिंह इन राशिन को नगर के मध्य में वास वर्जित है तथा मीन कन्या राशि को पूर्वदिशा त्याज्य है और कर्क राशि को दक्षिण दिशा अशुभ है १ धनराशि को पश्चिम दिशा वर्जित है तथा मेष तुला कुम्भराशि को उत्तर दिशा त्याज्य है जे मनुष्य सुख धन लाभ चाहैं वे वास त्याज्य करें २ गरुड़ादिक जो आठवर्गहैं सो पूर्वादि आठों दिशा क्रम से बली हैं चक्र से जानना सो जिस वर्ग की जो दिशा होय वही श्रेष्ठ तथा अपने से पांचईं दिशा मृत्युकारक जानिये ॥ ३ ॥

अथ वर्गदिशाश्रेष्ठचक्रम् ॥

गरुड़	विडाल	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	मृग	मेष	वर्ग
पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैर्ऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	दिशा
अ	क	च	ट	त	प	य	श	वर्ण
इ	ख	छ	ठ	थ	फ	र	ष	वर्ण
उ	ग	ज	ड	द	ब	ल	स	वर्ण
ए	घ	झ	ढ	ध	भ	व	ह	वर्ण
०	ङ	ञ	ण	न	म	०	०	वर्ण
१	२	३	४	५	६	७	८	वर्गांक
०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ पिण्डज्ञानम् ॥

एकोनि १ तेष्टर्क्षहताद्वितिथ्यो १५२ रूपो १ नितेष्टा यहतेन्दुनागैः८१ ।युक्ताघनै १७श्चापियुताविभक्ताभूपा

रिवभिः २१६ शेषमितो हि पिण्डः १ स्वेष्टायनक्षत्रभ वोर्यदैर्घ्यहत्स्याद्विस्तृतिर्विस्तृतिहृच्च दीर्घता। आया ध्वजोधूम्रहरिश्वगोखरेभध्वांक्षकाःपिण्डइहाष्टशेषिते॥२॥

अपने नाम से जो नक्षत्र इष्टर्क्ष होय अश्विनीआदि देके तिस में एक घटाय देइ उसको एकसैबावन से गुणाकरै फिर उसे अलग रखदेना और अपनी इष्टाय में एक घटाय देना उसे इक्यासी से गुणाकरना फिर दोनों अङ्कों को जोड़ देना तिसमें सत्रह और जोड़ देना उसमें दोसौसोलह का भाग देना शेष पिण्ड होता है १ पिण्ड के अङ्क में वा इष्टाय नक्षत्र के अङ्क में अर्थात् जिस में दोसौसोलह का भाग दिया है वही अङ्क इष्टाय इष्टर्क्ष का है तिसमें कल्पित हाथों की लम्बाई से भाग लेइ तो लब्ध चौड़ाई स्पष्ट आवैगी तथा स्पष्ट चौड़ाई का भाग लेनेसे उसी अङ्क में स्पष्ट लम्बाई बनैगी शेषाङ्क को चौबिस से गुणाकरके पूर्वप्रकार भाग लेनेसे लम्बाई चौड़ाईके अंगुल स्पष्ट निकलैंगे औरकसती बढ़ती लम्बाई चौड़ाई किया-चाहे तो पूर्वोक्त अङ्कमें दोसौ सोलह घटाय बढ़ाय लेइ उसमें भाग देकर अपने कार्यार्थ लम्बाई चौड़ाई निकाललेय यह ऊपर से अनुमान विदित है तथा और पिण्डमें आठका भाग लेनेसे लब्ध ध्वजादिक आठ आय होती हैं यथा क्रमः ध्वज १ धूम्र २ हरि ३ श्वान ४ गो ५ खर ६ हाथी ७ काक ८ इस क्रम से शेषाङ्क में आठ आय जानना ॥ २ ॥

अथायप्रकारस्तथाद्वारप्रकारः ॥

ध्वजादिकाः सर्वदिशि ध्वजे मुखं कार्यं हरौपूर्वयमोत्तरेतथा। प्राच्यांवृषे प्राग्यमयोर्गजेऽथवा पश्चादुदक्पूर्वयमेद्विजादितः॥ १ ॥

ध्वजायका चारों दिशामें द्वार प्रसिद्ध है तथा सिंहाय का

सुख पूर्व दक्षिण उत्तर प्रसिद्ध है और वृषाय का पश्चिममुख द्वार प्रधान है और गजाय का पूर्व दक्षिण सुख प्रधान है अथवा ब्राह्मण को पश्चिममुख द्वार करना योग्य है क्षत्रिय को उत्तरमुख वैश्य को पूर्वमुख शूद्र को उत्तरमुख श्रेष्ठ है ॥ १ ॥

अथ द्वितीयप्रकारेणायज्ञानम् ॥

विस्तारगुणितं दैर्घ्यं गृहं क्षेत्रफलं लभेत् । तत्पृथग्वसुभिर्भक्तं शेष आयो ध्वजादितः १ ध्वजो धूम्रोऽथ सिंहः श्वासौरभेयः खरो गजः । ध्वांक्षश्चैव क्रमेणैतदायाष्टकमुदीरितम् २ ध्वजे कृतार्थो मरणञ्च धूम्रे सिंहे जयश्चैव शुनि प्रकोपः । वृषे च राज्यं च खरे च दुःखं ध्वांक्षे मृतिश्चैव गजे सुखं स्यात् ३ ब्राह्मणस्य ध्वजो ज्ञेयो सिंहो वै क्षत्रियस्य च । वृषभश्चैव वैश्यस्य सर्वेषान्तु गजस्स्मृतः ॥ ४ ॥

कल्पित लम्बाई और चौड़ाई को परस्पर गुणने से क्षेत्रफल होता है उसी में आठ का भागदेने से ध्वजादि आय होती हैं १ ध्वज १ धूम्र २ सिंह ३ श्वान ४ बैल ५ खर ६ हाथी ७ काक ८ ये आठ आय क्रमसे जानिये २ ॥ अथ फलम् ॥ ध्वजसंज्ञक आय का कृतार्थ अर्थात् प्रसन्नता होय धूम्रका फल मरण जानिये और सिंहाय का फल जयकारक है श्वान आय में कोप जानिये वृष का राज्यफल मिलै खरमें दुःख प्राप्त होय ध्वांक्षमें मृत्यु होय और गजाय में सुख प्राप्त होताहै ३ ब्राह्मणवर्ण को ध्वजाय श्रेष्ठ है सिंहाय क्षत्रिय को श्रेष्ठ है वृषाय वैश्य को शुभ है और सम्पूर्ण वर्णों को गजाय शुभ है ॥ ४ ॥

अथेष्टर्क्षज्ञानम् ॥

पुष्याश्विनीवारुणपूर्वभाद्रमित्राणि पूर्वोत्तरहस्त

चित्रा । ज्येष्ठार्यमामित्रशशाङ्कमूलकर्णोधनिष्ठाभगभं मघा च १ श्लेषान्त्यपूभान्त्यमथाम्बुपेशमूलेन्दुपौष्णोत्तरभाद्रभानि । अश्वादिनक्षत्रसमुद्भवानामिष्टर्क्षभानां क्रमशो गृहेषु॥२॥

अश्विन्यादि सत्ताइसों नक्षत्रों का इष्टर्क्ष इसचक्रके क्रमसे जानिये यथा अश्विनी जिसका नाम नक्षत्र होय उसका इष्टर्क्ष पुष्य भया अङ्क उसका आठ ८ भया भरणी का अश्विनी १ इष्टर्क्ष है शेष चक्र से अर्थ जानना ॥ १ । २ ॥

अथेष्टर्क्षचक्रम् ॥

अ.	भ.	कृ.	रो.	मृ.	आ.	पुन.	पुष्य	श्ले.	मघा.	पू. फा.	उ. फा.	हस्त	चित्रा	नक्षत्र
पुष्य ८	अ. १	श. २४	पू. भा. २५	अनु. १७	पू. फा. ११	उ. फ. १२	हस्त १३	चित्रा १४	ज्ये. १८	उ.फा. १२	अनु. १७	मृ. ५	मूल १९	इष्टर्क्ष
स्वा.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू. षा.	उ. षा.	श्र.	ध.	श.	पू. भा.	उ. भा.	रेवती	०	नक्षत्र
श्र. २२	ध. २३	पू. फा. ११	म. १०	श्ले. ९	रेवती २७	पू. भा. २५	रेवती २७	श. २४	मूल १९	मृ. ५	रेवती २७	उ. भा. २६	० ०	इष्टर्क्ष

अथ खननप्रकारः ॥

जलान्तं प्रस्तरान्तं वा पुरुषान्तमथापि वा । क्षेत्रसं शोध्य चोद्धृत्य शल्यं सदनमारभेत् ॥ १ ॥

जलान्ततक खोदना अथवा जहां पत्थर मिलै वहांतक खोदना अथवा एकपुरुषतक गहिरा खोदना जगह शुद्धकरना शल्य अर्थात् हाड़ निकालना तब मकान बनाना योग्यहै ॥१॥

अथ शुभाशुभभूमिज्ञानम् ॥

खन्यमाने यदा क्षेत्रे पाषाणः प्राप्यते तदा । धनायुश्चिरता वै स्यादिष्टकासु धनागमः । कपालाङ्गारकेशाद्यै व्याधिना पीडितो भवेत् ॥ १ ॥

खोदनेपर क्षेत्र के पत्थर निकलैं तो धन आयु की वृद्धि जानना तथा ईंट निकलैं तो धन प्राप्तिहोय और कपाल कोइला केश निकलैं तो रोग पीड़ा जानना ॥ १ ॥

अथ गृहस्थानविचारः ॥

स्नानस्य पाकशयनास्त्रभुजेश्च धान्यभाण्डारदैवतगृहाणि च पूर्वतः स्युः । तन्मध्यतस्तु मथनाज्यपुरीषविद्याभ्यासाख्यरोदनरतौषधसर्वधाम ॥ १ ॥

पूर्वदिशा में स्नानगृह बनावे आग्नेय में पाकगृह अर्थात् रसोंई गृह बनावे दक्षिण में शयनगृह बनावे नैर्ऋत्य में शस्त्रगृह बनावे पश्चिम में भोजनगृह शुभ है वायव्य में धान्यसंग्रह गृह बनाना शुभ है उत्तरमें भाण्डारगृह अर्थात् बर्तनरखना शुभ है ईशान में देवता गृह बनावै तिनके बीच में क्रमसे दधिमथन गृह वा घृत संग्रहगृह वा पुरीषगृह अर्थात् विष्ठा त्यागकरना वा विद्याभ्यास करना वा रोदनगृह वा रतिगृह तथा औषध गृह वा सर्वधामगृह ये बीचमें बनावे गृहोंके चक्रसे जानलेना ॥

पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैर्ऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान्य	पूर्व	दिशा
स्नान गृह	पाक गृह	शयन गृह	शस्त्र गृह	भोजन गृह	धान्य संग्रह गृह	भाण्डार गृह	देवता गृह	००	स्थान
दधिमथन	घृत	पुरीष	विद्या	रोदन	रति	औषध	सर्वधाम		मध्यस्थान गृह

अथ गृहायुर्ज्ञानम् ॥

जीवार्कविच्छुक्रशनैश्चरेषु लाभारियामित्रसुखत्रिगेषु । स्थितः शतं स्याच्छरदां सितार्केज्येतनुत्र्यङ्गसुते शतद्वे १ लग्नाम्बरायेषु भृगुज्ञभानुभिः केन्द्रे गुरौ वर्ष शतायुरालयम् । बन्धौ गुरुर्व्योम्नि शशीकुजार्कजौ लाभे तदा शीतिसमायुरालयम् २ स्वोच्चे शुक्रे लग्नगे वा गुरौ वेश्मगतेथवा । शनौ स्वोच्चेलाभगे वा लक्ष्म्यायुक्तं चिरं गृहम् ॥ ३ ॥

बृहस्पति ग्यारहें होय सूर्य छठे होय बुध सातयें होय शुक्र चौथे होय शनि तीसरे होय ऐसा योग होय तो गृह की आयुर्बल सौ वर्षकी होय ॥ अथ द्वितीययोगः ॥ शुक्र लग्न में होय सूर्य तीसरे होय मङ्गल छठे होय बृहस्पति पांचयें होय ऐसा योग होने से गृहारम्भकी लग्न में दोसौ वर्ष की आयुर्दाय मकान की होतीहै १ लग्न में शुक्र होय दशयें बुध होय सूर्य ग्यारहवें होय बृहस्पति केंद्र १ । ४ । ७ । १० में होय तो सौ वर्ष

की आयुर्दाय होय ॥ अथ तृतीययोगः ॥ बृहस्पति चौथे होय चन्द्रमा दशयें होय मङ्गल शनैश्चर ग्यारहें होय तो अस्सी वर्षकी आयुर्दाय होतीहै २ उच्च का शुक्र अर्थात् मीनराशि का होकर लग्न में परै और बृहस्पति चौथे होय और शनैश्चर उच्च का अर्थात् तुला का होकर ग्यारहें होय तो लक्ष्मीयुक्त चिरंजीवी गृह होय ॥ ३ ॥

अथ नाशयोगः ॥

गृहेशतत्स्त्रीसुखवित्तनाशोर्केन्द्वीज्यशुक्रे विबलेऽस्त नीचे। कर्तुः स्थितिर्नो विधुवास्तुनोर्भे पुरःस्थिते पृष्ठगते खनिः स्यात् ॥ १ ॥

सूर्य, चन्द्रमा, बृहस्पति, शुक्र निर्बल वा अस्त वा नीचके होयँ तो गृहेश वा गृहेश की स्त्री वा सुख तथा धन को क्रम से नाश करैं तथा चन्द्रनक्षत्र द्वारके सम्मुख परै तो कर्ता की स्थिति न रहै तथा पीछे परै तो खुदिजाय १ अब चन्द्र नक्षत्र का ज्ञान लिखते हैं ॥ कृत्तिकादि सात २ नक्षत्र पूर्वादि चारों दिशामें वास करते हैं सो जानना गृहका द्वार पहले निश्चित करके विचारलेना नींव देने के समय विचारना कि नींवका नक्षत्र किस दिशा में है सो द्वार के सम्मुख पीछे त्याज्य करना अशुभ है तथा दहिने पीछे शुभ है यह अर्थ टीका प्रमिताक्षरासे लिखा है ग्रन्थ मुहूर्त्तचिन्तामणि वास्तुप्रकरण है ॥

अथ गृहनामज्ञानम् ॥

दिक्षु पूर्वादितःशालाध्रुवाभू १ द्वौ २ कृता ४ गजाः ८। शालाध्रुवाङ्कसंयोगः सैको १ वेश्मध्रुवादिकम् १ ध्रुव धान्येजयनन्दौ खरकान्तमनोरमम्। सुमुखं दुर्मुखोग्रं च रिपुदं धनदं क्षयम् २ आक्रन्दं विपुलं ज्ञेयं विजयं चेति षोडश। गृहं ध्रुवादिकं ज्ञेयं नामतुल्यफलप्रदम् ॥ ३ ॥

पूर्वादि चारोंदिशों में शाला के अङ्क क्रमसे जोड़देना पूर्व में १ दक्षिण में २ पश्चिममें ४ उत्तरमें ८ जिस २ दिशा में शाला होय तिस २ दिशा के अङ्क जोड़कर एक और जोड़देना जै अङ्क होयँ सोई ध्रुवादिक गृह के नाम होतेहैं १ ॥ यथाक्रमः ॥ ध्रुव १ धान्य २ जय ३ नन्द ४ खर ५ कान्त ६ मनोरम ७ सुमुख ८ दुर्मुख ९ उग्र १० रिपुद ११ धनद १२ क्षय १३ आक्रन्द १४ विपुल १५ विजय १६ ये सोलह प्रकार के नाम हैं नामतुल्य फल जानना ॥ २ । ३ ॥

अथ गृहाख्यशुभाशुभफलचक्रम् ॥

ध्रुव १	धान्य २	जय ३	नन्द ४	खर ५	कान्त ६	मनोरम ७	सुमुख ८	गृह नाम
शुभ	शुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	शुभ	शुभ	फल
दुर्मुख ९	उग्र १०	रिपुद ११	धनद १२	क्षय १३	आक्रन्द १४	विपुल १५	विजय १६	गृह नाम
अशुभ	अशुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ	शुभ	शुभ	फल

अथांशफलज्ञानम् ॥

भंनाग ८ तष्टं व्ययईरितोसौ ध्रुवादिनामाक्षरयुक्सपिण्डः । तष्टोगुणै ३ रिन्द्रकृतान्तभूपाह्यंशाभवेयुर्न शुभोन्तकोऽत्र ॥ १ ॥

पूर्वोक्त इष्टर्क्ष को आठगुणा करना तिसकी व्यय अर्थात् खर्च संज्ञा होती है तिसमें ध्रुवादिकों के नाम के अक्षर जोड़ना उस अङ्क में पिण्ड जोड़देना तिसमें तीन का भागदेना एक शेष रहै तो इन्द्र का अंश जानिये दो शेष बचैं तो यमराज का अंश होताहै तीन बचैं तो राजा का अंश होता है तिसमें यमका अंश शुभ नहीं है १ अब ध्रुवादिकों की नामाक्षर जानने की संख्या लिखते हैं ॥ ध्रुव । धान्य । जय । नन्द । खर । कान्त इनके नाम

के दो दो अक्षर हैं और मनोरम के चार अक्षर हैं सुमुख वा दुर्मुखके तीन तीन अक्षर हैं उग्र के दो अक्षरहैं रिपुद के तीन अक्षरहैं और धनद के भी तीन अक्षर हैं क्षयके दो अक्षर हैं आक्रन्द । विपुल वा विजय । इनके तीन तीन अक्षर होतेहैं॥१॥

अथ पृथ्वीशोधनप्रकारः ॥

कुण्डार्थपृथ्वीपरिशोधहेतवे प्रष्टुर्मुखाद्यः प्रथमं स्फुटाभवेत् । वर्गादिवर्णः किल तद्दिशि स्मृतं शल्यं मुनीन्द्रैर्हयपैस्तु मध्यतः १ स्मृत्वेष्टदेवतां प्रष्टुर्वचनस्याद्यमक्षरम् । गृहीत्वा तु ततः शल्यं शल्यं सम्यग्विचार्यते २ पृच्छायां यदि अः प्राच्यां नरशल्यं तदा भवेत् । सार्द्धहस्तप्रमाणेन तच्च मानुष्यमृत्युकृत् ३ आग्नेय्यां दिशि कः प्रश्ने खरशल्यं करद्वये । राजदण्डो भवेत्तत्र भयं चैव निवर्त्तते ४ याम्यायां दिशि चः प्रश्ने तदा स्यात्कटिसंस्थितम् । नरशल्यं गृहे तस्य मरणं चिररोगतः ५ नैर्ऋत्यां यदि टः प्रश्ने सार्द्धहस्ते तु तत्स्थले । शुनोस्थि जायते तत्र बालानां जायते मृतिः ६ तः प्रश्ने पश्चिमायां तु शिशोः शल्यं प्रजायते । सार्द्धहस्ते गृहे स्वामी न तिष्ठति तदा गृहे ७ वायव्यां दिशि पः प्रश्ने तुषाङ्गाराश्चतुस्करे । कुर्वन्ति मित्रनाशं च दुःस्वप्नं दर्शनं सदा ८ उदीच्यां दिशि यः प्रश्ने विप्रशल्यं कराद्धः । तच्छीघ्रं निर्द्धनत्वाय कुबेरसदृशस्य हि ९ ईशान्यां यदि शः प्रश्ने गोशल्यं सार्द्धहस्ततः । तद्गोधनस्य नाशाय जायते गृहमेधिनः १० हयपाः कोष्ठमध्ये च वक्षोमात्रं भवेदधः।नृकपालमथो भस्मलोहन्तत्कुलनाशकृत् ११॥

नवीन मकान के अर्थ प्रथम पृथ्वीशोधन करै प्रश्नकर्त्ता के मुख से जो आदि अक्षर निकले उसी से प्रश्न विचारै अवर्गादिक जो आठ वर्ग हैं तिनसे पूर्वादि आठों दिशा में शल्य क्रम से जानिये मध्य में (ह य प) अक्षर जानिये १ प्रथम प्रश्नकर्ता इष्टदेवता का स्मरण करके प्रश्न करे प्रश्न के आदि अक्षर से शल्याशल्य विचारै २ प्रच्छक के मुख से आदि अक्षर अवर्ग का निकलै तो पूर्वदिशा में डेढ़ हाथ गहिरा खोदने से मनुष्य का हाड़ निकलैगा सो मृत्युकारक जानिये ३ और आदि अक्षर कवर्ग का निकलै तो आग्नेयकोण में दो हाथ खोदने से गदहा का हाड़ निकलैगा सो उससे राजदंडका भय कभी शान्त न होय ४ और आदि अक्षर चवर्ग निकलै तो दक्षिणदिशा में कमर के बराबर गहिरे में नरका हाड़ निकलै सो चिरकाल के रोगसें मरण होय ५ और आदि में टवर्ग निकलै तो नैर्ऋत्यदिशा में डेढ़ हाथ खोदने से कुत्ते का हाड़ निकलै तिसका फल बालकों की मृत्युकारक है ६ तवर्ग का उच्चारण करै तो पश्चिमदिशा में डेढ़ हाथ गहिरे में बालक का हाड़ निकलैगा तिसका फल गृहस्वामी गृह में न तिष्ठै ७ पवर्ग का उच्चारण होय तो वायव्यदिशा में चार हाथ गहिरे में जरी हुई भूसी का कोइला निकलै तिसका फल मित्रनाशक है तथा दुःस्वप्नदर्शन होय ८ यवर्ग का उच्चारण होय तो उत्तरदिशा में एक हाथ गहिरे में ब्राह्मण का हाड़ निकलै तिसका फल निर्द्धनी होय चाहे कुबेरके सदृश होय तौभी निर्द्धनी होजाय ९ शवर्ग का उच्चारण होय तो ईशान्य दिशा में डेढ़ हाथ खोदने से गौका हाड़ निकलै तिसका फल गोधन नाश करै १० (ह य प) इन अक्षरों का उच्चारण आदि प्रश्नमें होय तो गृहके बीचमें छाती के बराबर गहिरे में मनुष्यकी खोपड़ी वा भस्म वा लोह निकलै तिसका फल कुलनाशक है ॥ ११ ॥

अथ द्वारमुहूर्त्तम् ॥

अश्विनीचोत्तराहस्तपुष्यश्रुतिमृगाः शुभाः । स्वातीपौष्णि च रोहिण्यां द्वारशाखावरोपणम् ॥ १ ॥

अश्विनी, तीनों उत्तरा, हस्त, पुष्य, श्रवण, मृगशिरा, स्वाति, रेवती, रोहिणी इन नक्षत्रों में द्वाररखना शुभ है ॥ १ ॥

अथ द्वारचक्रम् ॥

सूर्यभाद्वेदभैः ४ शीर्ष संस्थितैर्धनसम्पदः । गृहस्योद्वासनं तस्मादष्टभिः कोणसंस्थितैः १ शाखास्वष्टमितैस्तस्माद्धनं सौख्यं भवेद्गृहे । देहल्यां तु त्रिभिर्धिष्ण्यैर्मृत्युर्गृहपतेर्भवेत् २ चतुर्भिर्मध्यगैस्तस्माद्द्रव्यलाभं सुखं भवेत् । एतच्चक्रं विचार्यादौ द्वारं कुर्य्यात्स्वमन्दिरे ॥ ३ ॥

सूर्यनक्षत्र से दिन नक्षत्रतक द्वारचक्र गिनै चार नक्षत्र द्वार के शीर्ष में देइ तिसका फल लक्ष्मीदायक है और आठ नक्षत्र कोणमें देइ तिसका फल उजार होय १ तथा आठ नक्षत्र शाखा में देइ तिसका फल धन सुखदायक है और तीन नक्षत्र देहली में देइ तिसका फल गृहेश की मृत्युकारक है और चार नक्षत्र मध्य में देइ तिसका फल द्रव्यलाभकारक है तथा सुखदायक है इस प्रकार मकान के द्वार को विचारै ॥ ३ ॥

अथ सूर्यभाद्द्वारचक्रन्यासः २७ ॥

शीर्ष	कोण	शाखा	देहली	मध्य	स्थान
४	८	८	३	४	नक्षत्र
लक्ष्मी	उद्वसनम्	सुखम्	गृहपतिमरणम्	सुखम्	फलम्

अथ कपाटचक्रम् ॥

कृता ४ करा २ ब्धि ४ युग्म २ राम ३ मन्तकाश्च वारिधौ ४ करौ २ समुद्र ४ सूर्यभाद्दिनर्क्षकं फलं वदेत् । धनागमं विनाशसौख्यबन्धनं मृतिः क्षतिः शुभं च मन्दमङ्गलं शुभं कपाटचक्रयोः ॥ १ ॥

सूर्य के नक्षत्र से दिन नक्षत्रतक केवाड़े का चक्र विचारै प्रथम चार नक्षत्र धनागम करते हैं फिर दो नक्षत्र विनाश करते हैं फिर चार नक्षत्र सुखकारी हैं फिर दो नक्षत्र बन्धन करते हैं फिर तीन नक्षत्र मृत्युदायक हैं फिर दो नक्षत्र घात देते हैं फिर चार नक्षत्र शुभदायक हैं फिर दो नक्षत्र मङ्गलकारक हैं फिर चार नक्षत्र शुभ के देनेवाले हैं ॥ १ ॥

अथ कपाटचक्रन्यासः ॥

४	२	४	२	३	२	४	२	४	नक्षत्र
शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ	अशुभ	शुभ	शुभ	शुभ	फल

अथ सूर्यराशिमध्ये द्वारसुखविचारः ॥

कर्के कुम्भे च सिंहे च मकरे च दिवाकरे । पूर्वे वा पश्चिमे वापि द्वारं कुर्याच्च वेश्मनः १ मेषे वृषे वृश्चिके च तुले चापि यदा रविः । गृहद्वारं तदा कुर्यादुत्तरं वापि दक्षिणम् २ धनुर्मिथुनकन्यासु मीने च यदि भानुमान् । न कर्त्तव्यं तदा गेहं कृते दुःखमवाप्नुयात् ॥ ३ ॥

कर्क, कुम्भ, सिंह, मकर इन राशियों के सूर्य होयँ तो पूर्व वा पश्चिम दिशा में द्वार करना चाहिये १ मेष, वृष, वृश्चिक, तुला इन राशियों के सूर्य होयँ तो उत्तर दक्षिण मुख द्वार शुभ है २ धन, मिथुन, कन्या, मीन इनके सूर्य में गृह न बनावै अथवा बनावै तो दुःख पावे ॥ ३ ॥

अथ राशिमध्येद्वारविचारः ॥

द्विजोवैश्यस्तथा शूद्रः क्षत्रियो राशिजो नरः । द्वारं च पूर्वतः कुर्याद्दिशानां च चतुष्टयम् ॥ १ ॥

ब्राह्मणवर्ण जो राशि है अर्थात् मीन वृश्चिक कर्क राशि का द्वार पूर्वमुख शुभ है वैश्यवर्ण जो राशि हैं अर्थात् कन्या, वृष, मकर राशि का द्वार दक्षिणमुख श्रेष्ठ है और शूद्रवर्ण जो राशि अर्थात् मिथुन, तुला, कुम्भराशि का द्वार पश्चिममुख शुभ है और क्षत्रीवर्ण जो राशि अर्थात् मेष, सिंह, धन राशिका द्वार उत्तर मुख शुभदायक है ॥ १ ॥

अथ राशिमध्ये द्वारविचारचक्रम् ॥

ब्राह्मण	वैश्य	शूद्र	क्षत्री	वर्ण
मीन वृश्चिक कर्क	मकर कन्या वृष	मिथुन तुला कुम्भ	मेष सिंह धन	राशि
पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	द्वार दिशा

अथ प्लवविचारः ॥

पूर्वे प्लवो वृद्धिकरो धनदश्चोत्तरे प्लवः । दक्षिणे मृत्यु दश्चैव धनहा पश्चिमे प्लवः १ ईशाने प्रागुदक्प्लवस्त्व त्यन्तवृद्धिदो नृणाम् । अन्यदिक्षु प्लवो नेष्टः शश्वदत्य न्तहानिदः ॥ २ ॥

अब पनारे का विचार लिखते हैं पूर्वदिशा में पनारा नि-काले तो वृद्धि करै उत्तरदिशा में धन देइ दक्षिणदिशा में मृत्यु देइ पश्चिमदिशा में धनहानि होय १ ईशान व पूर्व तथा उत्तर दिशामें पनारा शुभ है अत्यन्त वृद्धिदायक है अन्य दिशों में अशुभ है हानिदायक है ॥ २ ॥

अथ गृहप्रवेशमुहूर्त्तम् ॥

तपः फाल्गुणे ज्येष्ठराधेषु पौष्णे मृगे ब्राह्मचित्रानु

राधोत्तरासु । सिते रोहिणीये शनौ शीतभानौ सुरेज्ये प्रवेशः शुभः सद्मनि स्यात् ॥ १ ॥

माघ, फाल्गुन, ज्येष्ठ, वैशाख इन महीनों में गृहप्रवेश शुभ है तथा रेवती, मृगशिरा, रोहिणी, चित्रा, अनुराधा, उत्तरा ३ ये नक्षत्र शुभ हैं तथा शुक्र, बुध, शनैश्चर, सोमवार, गुरुवार शुभ हैं ॥ १ ॥

अथ गृहादिविचारः ॥

त्रिकोणकेन्द्रायधनत्रिगैः शुभैर्लग्नेत्रिषष्ठायगतैश्च पापकैः । शुद्धाम्बु ४ रन्ध्रेविजनुर्भमृत्यौ व्यर्कारिरिक्ताचरदर्शचैत्रे ॥ १ ॥

त्रिकोण ६ । ५ वा केन्द्र १ । ४ । ७ । १० में तथा ग्यारहवें वा दूसरे तीसरे शुभग्रह होयँ तथा लग्न में तीसरे छठे ग्यारहें पापग्रह भी शुभ हैं और चौथा वा आठवां गृह शुद्ध होय अर्थात् कोई ग्रह न होय और जन्म की लग्न वा जन्म की राशि से आठईं लग्न वर्जित है तथा रविवार भौमवार रिक्तातिथि वा चर लग्नैं वा अमावस्या वा चैत्रमास ये प्रवेश में वर्जित हैं ॥ १ ॥

अथ गृहप्रवेशेकुम्भचक्रम् ॥

वक्रेभू १ रविभात्प्रवेशसमये कुम्भेग्निदाहःकृताः ४ प्राच्यामुद्वसनं कृता ४ यमगता लाभःकृताः पश्चिमे । श्रीर्वेदाः ४ कलिरुत्तरेयुग ४ मिता गर्भे विनाशो गुदे रामाः ३ स्थैर्यमतः स्थिरत्वमनलाः ३ कण्ठे भवेत्सर्वदा ॥ १ ॥

सूर्य के नक्षत्र से दिन नक्षत्रतक गृहप्रवेश का कुम्भचक्र विचारै एक नक्षत्र कुम्भ के मुख में देइ तिसका फल अग्नि लगै और चार नक्षत्र कुम्भके पूर्व में देइ तिसका फल उजार

होय और चार नक्षत्र दक्षिण में देइ तिसका फल लाभकारी है और पश्चिमदिशा में चार नक्षत्र देइ तिसका फल लक्ष्मी-दायक है उत्तरदिशा में चारनक्षत्र देइ तिसका फल कलह-कारक है और चारनक्षत्र गर्भ में देइ तिसका फल विनाश-कारक है और तीननक्षत्र गुदा में देइ तिसका फल स्थिरता रहै और तीन नक्षत्र कण्ठ में देइ तिसका फल सर्वदा स्थिर रहै ॥ १ ॥ अथ कुम्भचक्रन्यासःसूर्य्यभात् २७ ॥

मुख	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	गर्भ	गुदा	कण्ठ	अङ्ग
१	४	४	४	४	४	३	३	नक्षत्र
अग्नि दाहः	उद्वसनं	लाभः	श्रीलाभः	कलि-प्रदः	विनाश-कारकः	स्थिरत्वं	सर्वदा स्थिरत्वं	फल

अथ वासेरविज्ञानम् ॥

वामोरविर्मृत्यु ८ सुता ५ र्थ २ लाभतो ११ कैपञ्च मे प्राग्वदनादिमन्दिरे । पूर्णातिथौ प्राग्वदने गृहे शुभो नन्दादिके याम्यजलोत्तराननें ॥ १ ॥

प्रवेश की लग्न से आठयें स्थान से पांचयें स्थानतक सूर्य होयँ तो पूर्वदिशाके द्वारेवाले को वाम सूर्य होते हैं सो शुभ हैं और पांचयें स्थान से पांचयें स्थानतक सूर्य होयँ तो दक्षिण-दिशा के द्वारवाले को वाम सूर्य होतेहैं शुभहैं और दूसरे स्थान से पांचयें स्थान तक सूर्य होयँ तो पश्चिमदिशा के द्वारवाले को वाम सूर्य होते हैं सो शुभ हैं और ग्यारहें स्थान से पांचयें स्थानतक सूर्य होयँ तो उत्तर के द्वारवाले को वामार्क होते हैं शुभ हैं और पूर्णातिथि में पूर्वदिशा के द्वारमें प्रवेश शुभ है और नन्दादिक तिथियों में क्रमसे दक्षिण वा पश्चिम वा उत्तर द्वार में प्रवेश शुभ है यथाक्रमः नन्दा दक्षिणद्वार में भद्रा पश्चिमद्वार में जया उत्तरद्वार में प्रवेश शुभ है ॥ १ ॥

अथ ग्रहबलाबलज्ञानम् ॥

गज ८ शर ५ र्तु ६ युगा ४ श्व ७ मही १ गुणा ३ द्वि २ सहितामघवादिदिशः क्रमात् । गृहपतेरवधापुर दिङ्मितिर्वसुहृतास्य ग्रहस्य दशा भवेत् ॥ १ ॥

पूर्वादि आठों दिशों के अङ्क स्थापितकरै क्रमसे पूर्व में आठ ८ आग्नेय में पांच ५ दक्षिण में छः ६ नैर्ऋत्य में चार४ पश्चिम में सात ७ वायव्य में एक १ उत्तर में तीन ३ ईशान में दो २ ये अङ्क पूर्वादि दिशोंके होते हैं जिस दिशा का मकान विचारै उस दिशा का अङ्क धरै और गृहपति के नामोद्भव वर्ग का अङ्कधरै क्रमसे अवर्गादि आठ वर्ग हैं सोई आठ अङ्क हैं तिसका क्रम लिखते हैं अवर्ग में आठ ८ कवर्ग में पांच ५ चवर्ग में छः ६ टवर्ग में चार ४ तवर्ग में सात ७ पवर्ग में एक १ यवर्ग में तीन ३ शवर्ग में दुइ २ इसी प्रकार से पुरका नाम जिस वर्ग का होय वह अङ्क धरै ये तीनों अङ्कों को जोड़ देइ आठ का भाग लेइ शेष जो बचै सो अष्टोत्तरी दशा के क्रमसे दशा होती है तिसका फल शुभग्रह की दशा होय तो शुभ है पापग्रह की दशा अशुभ है और अपनी राशि के स्वामी की होय तो शुभ जानना इसी प्रकार से सब दिशों की शाला विचार लेना ॥ १ ॥

अथ दशाचक्रम् ॥

१	२	३	४	५	६	७	८	शेषाङ्क
सू०	चं०	मं०	बु०	श०	बृ०	रा०	शु०	दशा

अथ देवालयमठाद्यारम्भमुहूर्त्तम् ॥

गृहारम्भोक्तनक्षत्रैर्मठं कुर्यात्तु साशिवभैः । सर्वदेवालयं तैस्तु पुनर्भश्रवणान्वितैः ॥ १ ॥

गृहारम्भ में जो नक्षत्र कहे हैं सोई मठ अर्थात् शिवालय

वा ठाकुरद्वारादि के प्रारम्भ में शुभ हैं तथा अश्विनी,पुनर्वसु, श्रवण इन नक्षत्रों के समेत भी सर्वदेवालयारम्भ शुभ है ॥१॥

अथ यात्रामुहूर्त्तविचारः ॥

धनुर्मेषसिंहेषु यात्रा प्रशस्ता शनिज्ञोशनोराशिगे चैवमध्या । रवौ कर्कमीनालिसंस्थेऽतिदीर्घा जनुः पञ्च सप्तत्रितारा च नेष्टा १ न षष्ठी नच द्वादशी नाष्टमी नो सिताद्या तिथिः पूर्णिमामा न रिक्ता । हयादित्यमैत्रेन्दु जीवान्त्यहस्तश्रवोवासवैरेव यात्रा प्रशस्ता ॥ २ ॥

धन, मेष, सिंहके सूर्य होयँ तो यात्रा शुभ है और शनि,बुध, शुक्रकी राशि के सूर्य होयँ अर्थात् मकर,कुम्भ, मिथुन,कन्या, वृष, तुला के सूर्य में यात्रा मध्यम जानिये और कर्क, मीन, वृश्चिक के सूर्य होयँ तो दीर्घयात्रा जानिये अर्थात् यात्रा में बहुत दिन लगें १ छठि, द्वादशी, अष्टमी और शुक्लपक्ष की परेवा तथा पूर्णमासी वा अमावास्या वा रिक्ता तिथि यात्रा में वर्जित हैं अश्विनी,पुनर्वसु, अनुराधा, मृगशिरा,पुष्य,रेवती, हस्त, श्रवण, धनिष्ठा इन नक्षत्रों में यात्रा शुभ है ॥ २ ॥

अथ दिक्शूलज्ञानम् ॥

शनौ चन्द्रे त्यजेत्पूर्वां दक्षिणां च दिशं गुरौ । सूर्ये शुक्रे पश्चिमां च बुधे भौमे तथोत्तराम् ॥ १ ॥

पूर्वदिशा में शनैश्चर सोमवार को दिशाशूल होता है सो त्याज्य है तथा दक्षिण दिशा को बृहस्पति के दिन होता है एतवार शुक्रवार को पश्चिम दिशा में होता है बुध मङ्गल को उत्तर दिशाशूल जानना ॥ १ ॥

अथ नक्षत्रशूलचक्रम् ॥

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	दिशा
ज्ये.	पू. भा.	रो.	उ. फा	नक्षत्रशूलम्
श. चं.	बृ.	शु. र.	मं. बु.	वारशूलम्

अथ विदिक्शूलचक्रम् ॥

आग्नेय्याञ्च गुरौ चन्द्रे नैर्ऋत्यां रविशुक्रयोः । ईशा न्याञ्चन्द्रजे वायौ मङ्गले गमनं त्यजेत् ॥ १ ॥

बृहस्पति वा सोमवार को आग्नेय में दिक्शूल होता है नैर्ऋत्य में एतवार वा शुक्रवार को दिक्शूल होता है और बुध को ईशान में दिशाशूल जानिये तथा वायव्य में मङ्गलवार को दिक्शूल जानना ॥ १ ॥

अथ शूलदोषनिवारणभक्ष्यः ॥

सूर्यवारे घृतं प्राश्यं सोमवारे पयस्तथा । गुडमङ्गार केवारे बुधवारे तिलानपि १ गुरुवारे दधि ज्ञेयं शुक्र वारे यवानपि । माषान्भुक्त्वा शनेर्वारे गच्छेच्छूले न दोषकृत् ॥ २ ॥

एतवार को घी खाय सोमको दूध, मङ्गल को गुड़, बुधको तिल, बृहस्पतिको दही, शुक्र को जव, शनैश्चर को उड़द ये भक्षण करके यात्रा करै तो शूल दोष न करै ॥ १ । २ ॥

अथ सर्वदिग्गमननक्षत्रज्ञानम् ॥

सर्वदिग्गमनेहस्तः पूषाश्वौश्रवणो मृगः । सर्वसिद्धि करः पुष्यो विद्यायां च गुरुर्यथा ॥ १ ॥

हस्त, रेवती, अश्विनी, श्रवण, मृगशिरा ये नक्षत्र सर्व दिशा की यात्रा में शुभ हैं और पुष्य सर्वसिद्धिकारक है जैसे विद्यारम्भ में बृहस्पति सिद्ध है वैसे यात्रा में पुष्य सिद्ध है॥१॥

अथ योगिनीविचारः ॥

नवभूम्यः शिववह्नयोक्षविश्वेर्केकृताशक्ररसास्तुरङ्ग तिथ्यः । द्विदिशोमावसवश्च पूर्वतः स्युस्तिथयस्संमुख वामगा न शस्ताः ॥ १ ॥

नवमी परेवा को योगिनीवास पूर्वदिशा में होता है एकादशी वा तीज को आग्नेयदिशा में बसती है तेरसि वा पञ्चमी को दक्षिणदिशा में वास होताहै द्वादशी वा चौथिको नैर्ऋत्य दिशा में बसती है चौदसि वा छठिको पश्चिमदिशा में बसती है पूर्णमासी वा सप्तमी को वायव्यदिशा में वास होता है तथा दशमी वा द्वीज को उत्तर में बसती है अमावस वा अष्टमी को ईशान में वास जानिये सो यात्रा में सम्मुख बायें अशुभ है ॥ १ ॥ अथ योगिनीचक्रम् ॥

पू.	आ.	द.	नै.	प.	वा.	उ.	ई.	दिशा
९।१	३।११	१३।५	१२।४	१४।६	१५।७	१०।२	३०।८	तिथि

अथ कालविचारः ॥

कौबेरीतो वैपरीत्येन कालो वारेऽर्काद्ये संमुखे तस्य पाशः । रात्रावेतौ वैपरीत्येन गण्यौ यात्रायुद्धे संमुखे वर्जनीयौ ॥ १ ॥

उत्तरदिशा से विलोममार्ग होकर काल बसता है एतवार से आदि देकर जानिये और उसके सम्मुख पाश बसता है और रात्रि को विलोम होजाता है अर्थात् कालकी दिशा में पाश बसता है और पाश की दिशा में काल बसता है चक्र से समझलेना यात्रा वा युद्ध में सम्मुख वर्जित है ॥ १ ॥

अथ कालचक्रम् ॥

पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैर्ऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान
श.	शु.	बृ.	बु.	मं.	चं.	र.	कालो नास्ति

अथार्थनाशयोगज्ञानम् ॥

कुम्भकुम्भांशकौ त्याज्यौ सर्वथा यत्नतो बुधैः । तत्र प्रयातुर्नृपतेरर्थनाशः पदे पदे ॥ १ ॥

कुम्भलग्न वा कुम्भ का नवांश यत्नपूर्वक वर्जित करै अथवा जो राजा यात्रा करै तो पद पद में अर्थ नाश होय ॥ १ ॥

अथ मृत्युयोगः ॥

जन्मराशितनुतोऽष्टमेऽथवा स्वारिभाच्च रिपुभे तनुस्थिते । लग्नगास्तदधिपा यदाथवा स्युर्गतं हि नृपतेर्मृतिप्रदम् ॥ १ ॥

जन्मराशि वा जन्मलग्न से अठई लग्न यात्रा की होय अथवा शत्रुकी राशि से छठी लग्न यात्रा की होय अथवा उसका स्वामी लग्न में होय जो राजा यात्राकरै तो मृत्यु होय ॥ १ ॥

अथ वाञ्छितयोगः ॥

लग्ने चन्द्रे वापि वर्गोत्तमस्थे यात्रा प्रोक्ता वाञ्छितार्थप्रदात्री । अम्भोराशौ नो तदंशे प्रशस्तं नौकायानं सर्वसिद्धिं प्रयाति ॥ १ ॥

लग्न में चन्द्रमा होय वा वर्गोत्तम में होय अर्थात् जिस राशिका चन्द्रमा होय उसी राशिका नवांश होय तो यात्रा वाञ्छित फल को देती है और जलराशि वा जलराशि का नवांश नहीं प्रशस्त है अर्थात् कुम्भ मीन वर्जित हैं तथा नौका चलाने में जललग्नैं प्रसिद्ध हैं ॥ १ ॥

अथ लग्नफलम् ॥

दिग्द्वारभे लग्नगते प्रशस्ता यात्रार्थदात्री जयकारिणी च । हानिं विनाशं रिपुतो भयञ्च कुर्यात्तथा दिक्प्रतिलोमलग्ने ॥ १ ॥

दिग्द्वार की लग्न में यात्रा करै तो शुभ है अर्थात् जिस दिशा को जानेवाला होय उसी दिशा की लग्न होय तो दिग्द्वार जानिये तथा दहिने होय सो भी शुभ है चक्रसे जानना उस लग्न में यात्रा करने से अर्थ जय प्राप्ति होय तथा विलोम अर्थात् पीछे बायें लग्नवास होय तो हानि विनाश शत्रुभय करै इसीतरह से चन्द्रमा भी विचारना ॥ १ ॥

अथ लग्नवासतथाचन्द्रवासचक्रम् ॥

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	दिशा
मेष सिंह धन	वृष कन्या मकर	मिथुन तुला कुम्भ	कर्क वृश्चिक मीन	राशि

अथ कालवर्ज्यज्ञानम् ॥

उषःकालोविना पूर्वांगोधूलिः पश्चिमां विना । विनो त्तरां निशीथः सन् याने याम्यां विनाभिजित् ॥ १ ॥

प्रातःकाल पूर्वदिशाको न जाय सायंकाल पश्चिमदिशा को न जाय अर्द्धरात्रिको उत्तरदिशा न जाय अभिजित् मुहूर्त्त में दक्षिणादिशा को जाय अभिजित् पहले प्रकरण में लिखिआये हैं जहां दिनके मुहूर्त पन्द्रह लिखे हैं उसीमें अभिजित् है अर्थ खुलासा यह है कि दिनके आठयें मुहूर्त्त में अभिजित् मुहूर्त्त होता है और दिनके पन्द्रहें भागका एक मुहूर्त्त होता है ॥ १ ॥

अथ वर्णनिर्णयः ॥

योगात्सिद्धिर्धरणिपतीनामृक्षगुणैरपि भूदेवानाम् । चौराणामपिशकुनैरुक्ता भवति मुहूर्त्तादपि मनुजानाम् १

राजों को योगासिद्धि है और ब्राह्मणों को नक्षत्रगुण है चोरों को शकुनबल है और मनुष्यों को मुहूर्त्तबल लेनाचाहिये ॥ १ ॥

अथ पूर्वादियात्रायांवाहनानि ॥

प्राच्यां गच्छेद् गजेनैव दक्षिणस्यां रथेन हि ।
दिशिप्रतीच्यामश्वेन तथोदीच्यां नरैर्नृपः ॥ १ ॥

पूर्वदिशा में हाथी की सवारीपर जाय दक्षिणदिशा में रथ पर जाय पश्चिम में घोड़ेपर जाय उत्तरमें नरों की सवारी पर जाय अर्थात् सियाना पालकी इत्यादि पर यात्रा करना चाहिये ॥ १ ॥ अथावश्यके यात्रायांदिशादोहदम् ॥

आज्यं तिलौदनं मत्स्यं पयश्चापि यथाक्रमम् । भक्षयेद्दोहदं दिश्यमाशां पूर्वादिकां व्रजेत् ॥ १ ॥

पूर्वदिशा में घी खायके यात्रा करै दक्षिण में तिलोदन अर्थात् तिल चावल खाय पश्चिममें मछरी खाके यात्राकरै उत्तर में दूधपिये ॥ १ ॥ अथ दिशादोहदचक्रम् ॥

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	दिशा
घृत	तिलौदन	मीन	दुग्ध	भक्ष्य

अथ चन्द्रवासज्ञानम् ॥

मेषे च सिंहे धनुपूर्वभागे वृषे च कन्यामकरे च याम्ये । तुले च कुम्भे मिथुने प्रतीच्यां कर्कालिमीने दिशि चोत्तरस्याम् ॥ १ ॥

मेष, सिंह, धनु राशिका चन्द्रमा पूर्वदिशा में बसता है वृष, कन्या, मकर राशिका चन्द्रमा दक्षिणदिशा में बसता है तुला, मिथुन, कुम्भ का चन्द्रमा पश्चिम में वसता है कर्क, वृश्चिक, मीन का चन्द्रमा उत्तरदिशा में वास करता है ॥ १ ॥

अथ चन्द्रवासचक्रम् ॥

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	दिशा
१	२	३	४	राशि
५	६	७	८	
९	१०	११	१२	

अथ चन्द्रफलम् ॥

सम्मुखे त्वर्थलाभाय दक्षिणे सुखसम्पदः । पृष्ठे शोकश्च सन्तापो वामे चन्द्रे धनक्षयः ॥ १ ॥

सम्मुख चन्द्रमा अर्थलाभकारकहै दाहिने सुखसम्पदा-दायक है पीछे शोकसंतापदाता है और बायें धनकी क्षय करताहै ॥ १ ॥

अथ प्रस्थानप्रकारः ॥

कार्याद्यैरिहगमनस्यचेद्विलम्बो भूदेवादिभिरुपवीत मायुधं च । क्षौद्रं चामलफलमाशु चालनीयं सर्वेषां भवति यदेव हृत्प्रियं वा ॥ १ ॥

जो यात्रा को विलम्ब होय तो प्रस्थानकरै ब्राह्मण जनेऊ प्र-स्थानमें धरै, क्षत्रिय हथियार धरै, वैश्य मिठाई धरै, शूद्र फल प्रस्थान में धरै अथवा जो वस्तु प्रियहोय सो सब वर्ण धरें॥१॥

अथ प्रस्थानदिनप्रमाणम् ॥

पूर्वे दिनानि सप्तैव याम्ये पञ्च दिनानि च । पश्चिमे दिवसत्रीणि दिनानां द्वयमुत्तरे ॥ १ ॥

पूर्व दिशाका प्रस्थान सातदिनतक स्थित राखै दक्षिण दिशा का पांच दिनतक धरै पश्चिमदिशाका तीन दिनतक राखै उत्तरदिशाका दो दिनतक रखना योग्य है ॥ १ ॥

अथ प्रस्थानप्रमाणज्ञानम् ॥

प्रस्थानमत्र धनुषां हि शतानि पञ्च केचिच्छतद्वय मुशन्ति दशैव चान्ये । संप्रस्थितो य इहमन्दिरतः प्रयाणे गन्तव्यदिक्षु तदपि प्रयतेन कार्यम् ॥ १ ॥

पांचसै धनुषपर्यन्त प्रस्थान धरै धनु अर्थात् चार हाथ लम्बा होता है और कोई आचार्य कहते हैं कि दोसौ धनुषपर प्रस्थान करै और किसी का मत यह है कि दशधनुषपर्य्यंत

प्रस्थान करना योग्यहै अपने मकानसे यात्रा करनेवाली दिशा में प्रस्थानकरै ॥१॥ अथ दुग्धादित्याज्यम् ॥

दुग्धं त्याज्यं पूर्वमेव त्रिरात्रात्क्षौरं त्याज्यं पञ्चरात्राच्च पूर्वम् ॥ क्षौद्रं तैलं वासरेऽस्मिंश्च राज्ञा त्याज्यं यत्नाद्भूमिपालेन नूनम् ॥ १ ॥

पूर्वही यात्राके तीन दिन दूध वर्जित है और क्षौर पांचरोज पहिले वर्जित है तथा शहद वा तेल यात्राके दिन यत्नपूर्वक राजा वर्जितकरै ॥ १ ॥ अथ वारदोहदम् ॥

रसालां पायसं काञ्जीं शृतं दुग्धं तथा दधि ॥ पयोऽशृतं तिलान्नं च भक्षयेद्वारदोहदम् ॥ १ ॥

शक्कर पायस कांजी पक्वदुग्ध दही कच्चा दुग्ध तिलान्न येवार दोहद रविवारादिक्रमसे होते हैं यथायोग्य भक्षण करै चक्रसे समझ लेना ॥ १ ॥ अथ वारदोहदम् ॥

र.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	वार
शक्कर	पायस	कांजी	पक्का दूध	दही	कच्चा दूध	तिलान्न	दोहद

अथ नक्षत्रदोहदम् ॥

कुल्माषांस्तिलतन्दुलानपि तथा माषांश्च गव्यं दधि त्वाज्यं दुग्धमथैणमांसमपरन्तस्यैव रक्तं तथा । तद्वत्पायसमेव चाषपललं मार्गं च शाशं तथा षाष्टिक्यं च प्रियंगुपूपमथवा चित्राण्डजात्सत्फलम् १ कौर्म्यं सारिकगौधिकं च पललं शाल्यं हविष्यं हयाद्घृक्षेस्यात्कृशरान्नमुद्गमपि वा पिष्टं यवान्नं तथा । मत्स्यान्नं खलु चित्रितान्नमथवा दध्यन्नमेवक्रमाद्भक्ष्याभक्ष्यमिदं विचार्य्य मतिमान्भक्षेत्तथा लोकयेत् ॥ २ ॥

नक्षत्र दोहदादि अश्विन्यादि नक्षत्र के क्रम से समझ-लेना भक्ष्याभक्ष्य का विचार करके मति से यथायोग्य भक्षण करना वा देख लेना ॥ १ । २ ॥

अथ नक्षत्रदोहदचक्रम् ॥

नक्षत्र	दोहद	नक्षत्र	दोहद
चि.	काकुनि	रे.	दधिभक्त
ह.	साठी	उ. भा.	चित्रान्न
उ. फा.	शशामांस अर्थात् खरगोश	पू. भा.	मत्स्यान्न
पू. फा.	मृगमांस	श.	यवपिष्ट
मघा	नीलकण्ठपक्षी	ध.	मुद्गान्न
श्लेषा	पायस	श्र.	कृशरान्न
पुष्य	हरिणरुधिर	अभिजित्	मुद्गान्न
पुन.	हरिणमांस	उ. षा.	शल्यमांस
आ.	गोदुग्ध	पू. षा.	गोहमांस
मृ.	गोघृत	मू.	सारिकमांस
रो.	गोदधि	ज्ये.	कौर्म्यमांस अर्थात् कछुवा
कृ.	उरद	अनु.	उत्तमफल
भ.	तिलचावल	वि.	चित्रविचित्रपक्षी के अण्डा
अ.	कुरथी माषान्न	स्वा.	पूप अर्थात् पुवा

अथ तिथिदोहदम् ॥

पक्षादितोर्कदलतण्डुलवारिसर्पिः श्राणाहविष्यमपि हेमजलञ्च पूपम् । भुक्त्वा व्रजेद्द्रजकमम्बुजधेनुमूत्रं यावान्न पायसगुडान्नमृगञ्च मुद्गान् ॥ १ ॥

तिथिदोहद प्रतिपदादि क्रम से चक्र से समझलेना १ ॥

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५ ३०
मंदारदल	शाक का जल	घी	यवागू अर्थात् गोलामात वा लपसी	हविष्यान्न	हेमजल	दूध	बीजपूर नींबू	कमल जल	गोमूत्र	यव	पायस	गुड़	शक्कर	अन्नाद्य

अथ परिघदण्डज्ञानम् ॥

पूर्वादिषु चतुर्दिक्षु सप्तसप्तानलर्क्षतः । वायव्याग्नेय दिक्संस्थस्पारिघं नैव लंघयेत् ॥ १ ॥

पूर्वादि चारों दिशों में कृत्तिकादि सात २ नक्षत्र वास करते हैं और वायव्यदिशा से आग्नेय दिशा तक परिघदण्ड बसता है उसे यात्रा में नांघना वर्जित है चक्र से जानना ॥ १ ॥

अथ परिघदण्डचक्रम् ॥
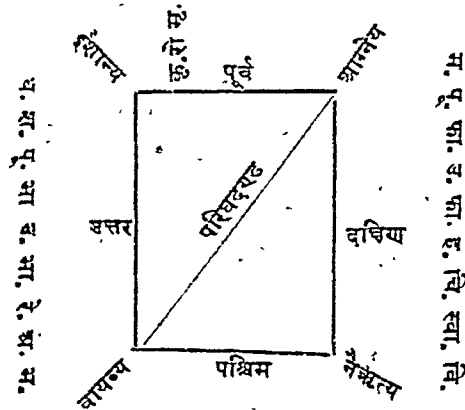
अथ होराफलं तत्रादौ सूर्यहोराफलानि ॥

काकत्रयं विप्रचतुष्टयं च बभ्रुद्वयञ्चाष्टवृषाम्बराणि ।

मिलन्ति मार्गे रजकीकुमारी सूर्यस्य होरा चलितस्य पुंसः ॥ १ ॥

सूर्यकी होरामें यात्रा करै तो तीन कौवा और चार ब्राह्मण तथा दो नेउले वा आठ बैल रास्ता में मिलैं वा वस्त्र मिलैं वा धोबी की कन्या मिलै ॥ १ ॥

अथ चन्द्रहोराफलम् ॥

गोपुष्पमेषाश्च मृदङ्गभेरी नारीद्वयं बभ्रुखगः क्रमेण। काकस्तुरङ्गोद्विजयुग्ममिन्दोर्होराप्रयाणे चलितस्य पुंसः ॥ १ ॥

गऊ, फूल, मेढ़ा, मृदङ्ग बाजा वा नफीरीबाजा तथा दो स्त्री वा नेउला वा पक्षी तथा कौवा तथा घोड़ा वा दो ब्राह्मण इतने जीव चन्द्रमा की होरा में यात्रा करने से मार्ग में मिलते हैं ॥ १ ॥

अथ भौमहोराफलम् ॥

मार्जारयुद्धं कलहं कुटुम्बे रजस्वलानारित्रयं च षण्ढः । रण्डाग्निनग्नं भवनस्य दाहः कुजस्य होरा चलितस्य पुंसः ॥ १ ॥

बिलारयुद्ध होय वा कुटुम्ब में कलह देखै वा तीन रजस्वला स्त्री मिलैं वा नपुंसक मिलै तथा विधवा स्त्री मिलै वा अग्नि मिलै तथा नङ्गा मिलै वा जलता हुआ मकान देखै इतने पदार्थ मङ्गल की होरा में यात्रा करने से मार्ग में मिलैं ॥ १ ॥

अथ बुधहोराफलम् ॥

बालासलज्जाजलपूर्णकुम्भं पुष्पान्नवामे खलु चाषपक्षी । श्रीमान् कुमारो विधुनन्दनस्य होराप्रयाणे शकुना मिलन्ति ॥ १ ॥

पुत्रसमेत स्त्री मिलै वा जलपूर्ण कलश मिले फूल वा अन्न मिलै और वाममार्ग में नीलकण्ठ पक्षी मिलै वा धनवान् बालक मिलै इतने पदार्थ बुध की होरा में मिलैं ॥ १ ॥

अथ गुरुहोराफलम् ॥

दैवज्ञधेनुर्द्विजबभ्रुवाहा राजाकुमारं खलु पुष्पकं च । सपुत्रयोस्त्रीचघटोऽम्बुपूर्णःसुरेज्यहोराशकुनंकरोति॥१॥

ज्योतिषी पण्डित वा गऊ वा ब्राह्मण वा नेउला वा सवारी वा राजा का बालक वा फूल तथा पुत्रसमेत स्त्री मिलै और जल भरा घट मिलै इतने शकुन बृहस्पति के होरा में मिलते हैं॥१॥

अथ शुक्रहोराफलम् ॥

धेनुर्द्विजः काकचतुष्टयञ्च नपुंसको वा गणितागमज्ञः । मद्यञ्च मांसं गणिका च शूद्रा मिलन्ति मार्गे यदि शुक्रहोरा ॥ १ ॥

गऊ, ब्राह्मण, चार कौवा तथा नपुंसक वा ज्योतिषी वा मदिरा मांस वा वेश्या वा शूद्र इतने पदार्थ शुक्र की होरा में मिलैं ॥ १ ॥

अथ शनिहोराफलम् ॥

खरः पिशाचो यदि वाथ वह्निर्नपुंसको वा पुरुषः प्रमत्तः । रजस्वलाभानुसुतस्य होरा प्रस्थानकाले शकुनं करोति ॥ १ ॥

गदहा वा पिशाच वा अग्नि तथा नपुंसक वा मतवार पुरुष वा रजस्वला स्त्री इतने पदार्थ शनैश्चर की होरा में यात्रा करने से मार्ग में मिलैं ॥ १ ॥

अथ मार्गमध्ये शुभशकुनयोगः (प्रमिताक्षरायाम्)

लग्ने गीष्पतिशुक्राणां ब्राह्मणः सम्मुखस्त्रियः । बुध

शुक्रौ च केन्द्रस्थौ सवत्सा गौः प्रदृश्यते १ चन्द्रसूर्यश्च भवति दशमस्थो यदा तदा । दीपदर्शो सुमनसो रजको धौतवाससः २ सुतस्थाने च सौम्ये च वृषो बद्धस्तु सम्मुखः । चन्द्रो गुरुश्च सहजे श्वानो वामाङ्गभागतः ३ सर्वेकर्मायनवमे भारद्वाजोऽथ नाकुलः । चाषश्च दर्शनं वा स्याद्वामाङ्गेत्यन्तदुर्लभम् ४ आदित्यो राहुसौरी च सहजस्थौ कुमारिका । प्रौढानां सुभगानां वा दर्शनं सर्वकामदम् ५ षष्ठेतृतीयकर्मस्थे भौमे चैतत्फलं लभेत् । दासीवेश्यासुरामांसं लाभश्चैव सुनिश्चितः ६ सप्ताष्ट पञ्चमे यस्य जीवोज्ञो चात्र वर्तते । आदर्शपुष्पमांसानि सुरादर्शश्च लाभदः ७ राहुभौमश्च मन्दश्च लग्नाद्यदि तृतीयगः । उद्धृतं गोमयं पश्येच्छीघ्रं लाभ धनं दिशेत् ॥ ८ ॥

यात्रा की लग्न बृहस्पति शुक्र होयँ तो सम्मुख ब्राह्मण मिलै और स्त्री मिलै तथा बुध शुक्र केन्द्र में होयँ तो सहित बछड़ा के गौ मिलै १ चन्द्रमा सूर्य दशयें होयँ तो दीपदर्शन होय वा फूल नज़र में आवै वा कपड़ा धोते धोबी मिलै २ पञ्चमस्थान में बुधहोय तो सम्मुख बँधा बैल मिलै तथा चन्द्रमा बृहस्पति तीसरे स्थान में होयँ तो वामभाग में कूकुर मिलै ३ सम्पूर्णग्रह दशयें ग्यारहें नवयें होयँ तो भरदूल पक्षी मिलै वा नेउला मिलै तथा नीलकण्ठ पक्षी वाममार्ग में मिलै सो अत्यन्तदुर्लभ है ४ सूर्य, राहु, शनैश्चर तीसरे होयँ तो कुमारिका मिलै तथा युवती स्त्री वा सौभाग्यवती स्त्री मिलै इनका दर्शन सर्वकामनादायक है ५ तथा छठे, तीसरे, दशयें मङ्गल होय तौभी यही फल लाभ होय तथा दासी वा वेश्या वा मदिरा मांस देखै सो लाभदायक है ६ सातयें, आठयें, पांचयें बृहस्पति वा बुध होयँ

तो दर्पण फूल मांस मदिरा देखै सो लाभकारी हैं ७ राहु मङ्गल शनैश्चर लग्नसे तीसरे स्थान में होयँ तो उद्धृत गोबर दृखपड़े अर्थात् पशु गोबर करते देखै सो शीघ्रही धनलाभ कराताहै॥८॥

अथ शकुनज्ञानम् ॥

विप्राश्वेभफलान्नदुग्धदधिगोसिद्धार्थपद्माम्बरं वेश्यावाद्यमयूरचाषनकुलाबध्वैकपश्वामिषम् । सद्वाक्यं कुसुमेक्षुपूर्णकलशं छत्राणि मृत्कन्यका रत्नोष्णीषसितोक्षमद्यससुतस्त्रीदीप्तवैश्वानराः १ आदर्शाञ्जनधौतवस्त्ररजकोमीनाज्यसिंहासनं शावं रोदनवर्जितध्वजमधुच्छागास्त्रगोरोचनम् । भारद्वाजनृयानवेदनिनदाः माङ्गल्यगीतांकुशाद्दष्टास्सत्फलदाः प्रयाणसमये रिक्तो घटः स्वानुगः ॥ २ ॥

ब्राह्मण, घोड़ा, हाथी, फल, अन्न, दूध, दही, गौ, सरसों, कमल, वस्त्र, वेश्या, बाजा, मोर, नीलकण्ठ, नेउला, बँधापशु, मांस, शुभवचन, कुसुम, ऊंख, पूर्णकलश, क्षत्र, माटी, कन्या, रत्न, पगड़ी, सफेदबैल, मदिरा, स्त्री बालकसमेत, दीपक, सधूम अग्नि १ दर्पण, अञ्जन, धोयेवस्त्र लिये धोबी मिलै, मछली, घी, सिंहासन, मुरदारोदनरहित, पताका, शहद, छाग, अस्त्र, गोरोचन, भरदूलपक्षी, पालकी, वेदशब्द, मांगल्यगीत और अंकुश इतने शकुन यात्रा के समय में मिलैं तो शुभफलदेइँ और छूंछा घड़ा अपनेपीछे मिलै तो भी शुभ है ॥ २ ॥

बन्ध्याचर्मतुषास्थिसर्पलवणाङ्गारेन्धनक्लीबविट्तैलोन्मत्तवसौषधारिजटिलप्रावृट्तृणव्याधिताः । नग्नाभ्यक्तविमुक्तकेशपतितव्यङ्गच्छुधार्त्ताअसृक् स्त्रीपुष्पं शरटस्वगेहदहनं मार्जारयुद्धं क्षुतम् १ काषायीगुडतक्रप

ङ्कविधवाकुब्जाः कुटुम्बे कलिर्वस्त्राद्यैः स्खलनं लुलायस्य रं कृष्णानिधान्यानि च । कार्पासं वमनं च गर्दभरवो दक्षेतिरुट्गर्भिणी मुण्डार्द्राम्बरदुर्वचोन्धबधिरोदक्या न दृष्टाः शुभाः ॥ २ ॥

बन्ध्यास्त्री, चमड़ा, भूसी, हाड़, सर्प, लोन, अङ्गार अर्थात् निर्धूमअग्नि, इन्धन, नपुंसक, विष्ठा, तैल, मतवार, चर्वी, औषध, शत्रु, जटावान् संन्यासी, तृण, व्याधिमान्, नंगा, उबटन लगाये, बालछूटेहुए, अङ्गरहित, क्षुधावान्, रुधिर, रजस्वलास्त्री, गिरदान अपना घरजरै, बिलारयुद्ध, छींक १ लाल वस्त्र पहिने मिलै, गुड़, माठा, कीचड़ भरजाय, विधवास्त्री, कुबरीस्त्री, कुटुम्बविषे कलह होय, वस्त्रादिक गिरपड़ैं, भैंसे लड़ैं, कालाअन्न, कपास, वमन होय अर्थात् क्रय होय, गदहा का शब्दहोय, दहिने गर्भिणी रोवै, मुण्डा अर्थात् मूड़मुड़ाये, ओदेवस्त्र पहिने, कोई दुर्वचन कहै, अन्धा, बहिरा, रजस्वला स्त्री इतने दुःशकुन हैं सो यात्रा में नहीं शुभ हैं ॥ २ ॥

अथ दुःशकुनपरिहारः ॥

आद्येपशकुने स्थित्वा प्राणानेकादशं व्रजेत् । द्वितीये षोडशप्राणास्तृतीये न क्वचिद् व्रजेत् ॥ १ ॥

पहिले दुःशकुन होय तो स्थिर होकर ग्यारह श्वासा लेकर चलै दूसरीबेर फिर दुःशकुन होय तो स्थिर होकर सोलह श्वासा लेकर चलै तथा तीसरीबेर फिर दुःशकुन होय तो यात्रा कभी न करै लौटि आवै ॥ १ ॥

अथ चन्द्रघातविचारः ॥

भूपञ्चाङ्कद्व्यङ्गदिग्वह्निसप्तवेदाष्टेशार्काश्च घाताख्य चन्द्रः । मेषादीनां राजसेवाविवादे वर्ज्यो युद्धाद्ये च नान्यत्रवर्ज्यः ॥ १ ॥

मेषराशि को जन्म का चन्द्रमा घात होता है वृष को पांचवां मिथुन को नवां कर्क को दूसरा घात जानिये तथा सिंह को छठा कन्या को दशवां तुला को तीसरा घात जानना और वृश्चिक को सातवां धन को चौथा मकर को आठवां घात होता है कुम्भराशि को ग्यारहवां मीन को बारहवां घात जानिये ॥१॥

अथ घातचन्द्रचक्रम् ॥

मेष	वृष	मि.	कर्क	सिंह	क.	तुला	वृ.	धन	म.	कुम्भ	मीन	रा.
१	५	६	२	६	१०	३	७	४	८	१	१२	घात

अथ तिथिघातज्ञानम् ॥

गोस्त्रीझषेघाततिथिस्तु पूर्णा भद्रा नृयुक्कर्कटकेऽथ नन्दा । कौर्याजयोर्नक्रघटे च रिक्ता जया धनुः कुम्भहरौ न शस्ता ॥ १ ॥

वृषराशि कन्याराशि मीनराशि को पूर्णातिथि घात है मिथुन वा कर्कको भद्रा घात है वृश्चिक वा मेषको नन्दाघात है मकर वा तुला को रिक्ता घात है धनु, कुम्भ, सिंह को जया घात है सो नहीं शुभ हैं ॥ १ ॥ अथ तिथिघातचक्रम् ॥

पूर्णा ५।१०।१५	भद्रा २।७।१२	नन्दा १।६।११	रिक्ता ४।६।१४	जया ३।८।१३	तिथि
वृष कन्या मीन	मिथुन कर्क	वृश्चिक मेष	मकर तुला	धन कुम्भ सिंह	घात राशिः

अथ नक्षत्रघातज्ञानम् ॥

मघाकरस्वातिमैत्रमूलश्रुत्यम्बुपान्त्यभम् । याम्यब्राह्मेशसार्पञ्च मेषाद्ये घातभं न्यसेत् ॥ १ ॥

मेषराशिवाले मनुष्य को मघानक्षत्र घात है वृषराशि को हस्त घात है मिथुनराशि को स्वाति घात है कर्कको अनुराधा

घात है सिंहको सूल घात है कन्या को श्रवण घात है तुला को शतभिष घात जानिये वृश्चिक को रेवती घात है धनको भरणी घात जानना मकरराशिवाले को रोहिणी नक्षत्र घात है कुम्भ को आर्द्राघात है मीन को श्लेषा घात जानिये सो यात्रा में अशुभ है ॥ १ ॥ अथ नक्षत्रघातचक्रम् ॥

मेष	वृष	मि.	कर्क	सिंह	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशि
म.	ह.	स्वा.	ऽनु	मू.	श्र.	श.	रे.	भ.	रो.	आ.	श्ले.	नक्षत्रघात

अथ घातलग्नम् ॥

भूमिद्वयब्ध्यद्रिदिक्सूर्याङ्गाष्टाङ्केशाग्निशायकाः । मेषादिघातलग्नानि यात्रायां वर्जयेत्सुधीः ॥ १ ॥

मेषराशिवाले को मेषलग्न घात है वृषराशि को वृषलग्न घात है मिथुनराशिवाले को कर्कलग्न घात है कर्कराशि को तुलालग्न घात है सिंह राशिवालेको मकरलग्न घात है कन्याराशि को मीन लग्न घात है तुलाराशिको कन्या लग्न घात है वृश्चिकराशि को वृश्चिक लग्न घात है धनराशि को धनलग्न घात है मकरराशिको कुम्भ लग्न घात है कुम्भराशि को मिथुन लग्न घात है मीन राशि को सिंह लग्न घात है सो यात्रा में त्याज्य है ॥ १ ॥ अथ घातलग्नचक्रम् ॥

मेष	वृष	मि.	कर्क	सिंह	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशि
मेष	वृष	कर्क	तु.	म	मीन	क.	वृ.	ध.	कुं.	मि.	सिं.	लग्न घात

अथ सर्वाङ्कविचारः ॥

तिथ्यर्क्षवारयुतिरद्रिगजाग्नितष्टा स्थानत्रयेऽत्रवियतिप्रथमेऽतिदुःखी । मध्ये धनक्षतिरथो चरमे मृतिः स्यात्स्थानत्रयेङ्कयुजि सौख्यजयौ निरुक्तौ ॥ १ ॥

यात्रा की शुक्लादि तिथि वा नक्षत्र वा वार जोड़देइ तीन जगह रक्खे पहले अङ्क में सात का भाग देइ दूसरे अङ्कमें आठ का भाग देइ तीसरे अङ्क में तीन का भाग देइ शेष जो शून्यबचे तिसका फल जानिये पहले स्थान में जो शून्य बचै तो दुःख पावै दूसरे स्थान में जो शून्यबचै तो धनकी क्षय होय तीसरे स्थान में शून्यबचै तो मृत्यु होय और तीनों स्थानोंमें जो अङ्कबचै तो सुख प्राप्त होय वा जय होय ॥ १ ॥

अथ नक्षत्रनाडीनिषिद्धज्ञानम् ॥

पूर्वाग्निपित्र्यन्तकतारकाणां भूपप्रकृत्युग्रतुरङ्गमाः स्युः । स्वातीविशाखेन्द्रभुजङ्गमानां नाड्योनिषिद्धा मनुसम्मिताश्च ॥ १ ॥

तीनों पूर्वा की सोलह घड़ी आदि की निषिद्ध हैं तथा कृत्तिका की इक्कीस घड़ी निषिद्धहैं मघा की ग्यारह घड़ी निषिद्ध जानिये तथा भरणीकी सात घड़ी निषिद्ध हैं स्वाती विशाखा ज्येष्ठा श्लेषा इन नक्षत्रों की चौदह २ घड़ी निषिद्ध जानना ॥१॥

अथ नक्षत्रनाडीनिषिद्धचक्रम् ॥

पू. ३	कृ.	मघा	भ.	स्वाती	वि	ज्येष्ठा	श्लेषा	नक्षत्र
१६	२१	११	७	१४	१४	१४	१४	घटी त्याज्यम्

अथ महाडलयोगः ॥

रवेर्भतोऽब्जभोन्मितिर्नगावशेषिताद्व्यगाः । महाडलो न शस्यते त्रिषण्मिते भ्रमो भवेत् ॥ १ ॥

सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्रतक गिनै सातका भाग-देइ शेष सात वा दो बचैं तो महाडल योग होता है सो यात्रा में नहीं शुभहै और तीन वा छः बचैं तो भ्रम होताहै ॥ १ ॥

अथ हिम्वरयोगः ॥

शशाङ्कभं सूर्यभतोऽत्रगण्यं पक्षादितिथ्यादिनवास रेण । युतं नवाप्तं नगशेषकं चेत्स्याद्धिम्वरं तद् गमनेति शस्तम् ॥ १ ॥

सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्रतक गिनै पक्षादितिथि जोड़े वा वार जोड़े तिससें नवका भाग दे शेषाङ्क जो सात बचें तो हिम्वरसंज्ञक योग होता है सो यात्रामें अत्यन्त शुभ है॥१॥

अथ पन्थाराहुज्ञानम् ॥

स्युर्धर्मे दस्रपुष्योरगवसुजलपद्वीशमैत्राण्यथार्थे या म्याजांघ्रीन्द्रकर्णादितिपितृपवनोडून्यथो भानि कामे । वह्न्याद्राबुध्न्यचित्रानिर्ऋतिविधिभगाख्यानि मोक्षेथ रोहिण्याप्येन्द्वन्त्यविश्वार्यमभदिनकरर्क्षाणि पथ्यादि राहौ ॥ १ ॥

अश्विनी, पुष्य, श्लेषा, धनिष्ठा, शतभिष, विशाखा और अनुराधा इन नक्षत्रोंकी धर्मसंज्ञा है भरणी, पूर्वाभाद्रपद, ज्येष्ठा, श्रवण, पुनर्वसु, मघा, स्वाती इनकी अर्थसंज्ञा है कृत्तिका, आर्द्रा, उत्तराभाद्रपद, चित्रा, मूल, अभिजित्, पूर्वा-फाल्गुनी इनकी कामसंज्ञा है रोहिणी, पूर्वाषाढ़, मृगशिरा, रेवती, उत्तराषाढ़, उत्तराफाल्गुनी, हस्त इनकी मोक्षसंज्ञा है यह पन्थाराहुचक्र है यात्रा में विचारना चाहिये ॥ १ ॥

अथ पन्थाराहुचक्रम् ॥

अ.	पुष्य	श्ले.	वि.	अनु.	ध.	श.	अर्थ
भ.	पुन.	मघा	स्वाती	ज्येष्ठा	श्र.	.भा.	धर्म
कृ.	आ.	पू.फा.	चित्रा	मूल	अभि.	उ.भा.	काम
रोहिणी	मृ.	उ.फा.	हस्त	पू.षा.	उ.षा.	रेवती	मोक्ष

अथ पन्थाराहुफलम् ॥

धर्मगे भास्करे वित्तमोक्षे शशी वित्तगे धर्ममोक्षे स्थितः शस्यते । कामगे धर्ममोक्षार्थगः शोभनो मोक्षगे केवलं धर्मगः प्रोच्यते ॥ १ ॥

धर्मसंज्ञक नक्षत्र में सूर्य होय और अर्थ वा मोक्ष में चन्द्रमा होय तो यात्रा शुभ है तथा अर्थ में सूर्य होय धर्म वा अर्थ में चन्द्रमा होय तौभी शुभ जानिये यथा काम में सूर्य होय धर्म मोक्ष अर्थ में चन्द्रमा होय तौ शुभ यात्रा जानना तथा मोक्ष में सूर्य होय तथा धर्मसंज्ञक नक्षत्र में चन्द्रमा होय तौभी शुभ जानिये अन्यथा अशुभ जानिये ॥ १ ॥

अथ द्वितीयप्रकारेण पन्थाराहुफलम् ॥

धर्ममार्गगते सूर्ये अर्थांशे चन्द्रमा यदि । तदा शत्रुभयं तस्य ज्ञेयन्तु विविधैः शुभैः १ धर्ममार्गगते सूर्ये चन्द्रे तत्रैव संस्थिते । संहारश्च भवेत्तत्र भङ्गो हानिः प्रजायते २ अर्थमार्गगते सूर्ये चन्द्रे धर्मस्थिते यदि । गजलाभो भवेत्तस्य तत्र श्रीःसर्वतोमुखी ३ अर्थमार्गगते सूर्ये चन्द्रे तत्रैव संस्थिते । प्रथमं जायते कार्यं पुनर्भङ्गो भविष्यति ४ अर्थमार्गस्थिते सूर्ये चन्द्रे मोक्षस्थिते यदि । भूमिलाभो भवेत्तस्य हर्षयुक्तः सुखी भवेत् ५ काममार्गगते सूर्ये चन्द्रे धर्मे च संस्थिते । गजाश्वाश्च विलभ्यन्ते राजसम्मानसंभवात् ६ काममार्गगते सूर्ये चन्द्रे चैवार्थसंस्थिते । सकलं जायते तस्य विघ्नभङ्गं विनिर्दिशेत् ७ काममार्गगते सूर्ये चन्द्रे तत्रैव संस्थिते ।

विग्रहं दारुणं चैव कार्यनाशं विनिर्दिशेत् ८ काममार्ग गते सूर्ये चन्द्रे मोक्षगतेऽपि वा । राजलाभो भवेत्तस्य स्वर्णलाभं विनिर्दिशेत् ९ मोक्षमार्गगते सूर्ये चन्द्रे धर्मस्थिते यदि । हेमलाभो भवेत्तस्य सर्वकार्यं प्रसिद्ध्यति १० मोक्षमार्गगते सूर्ये अर्थांशे चन्द्रमा यदि । विफलं तस्य कार्यं च चौरराजरिपोर्भयम् ११ मोक्षमार्ग गते सूर्ये चन्द्रे कामस्थिते यदि । सर्वसिद्धिमवाप्नोति कार्यं च जयमेव च १२ मोक्षमार्गगते सूर्ये चन्द्रे तत्रैव संस्थिते । विग्रहं दारुणं चैव विघ्नं तस्य भविष्यति १३ यात्रायुद्धे विवादे च प्रवेशनगरादिषु । व्यापारेषु च सर्वेषु पन्थाराहुः प्रशस्यते ॥ १४ ॥

धर्ममार्ग में सूर्य होय अर्थमार्ग में चन्द्रमा होय तो यात्रा करने से शत्रुभय होय १ धर्ममार्ग में सूर्य होय और धर्ममार्ग में चन्द्रमा होय तो संहार होय तथा भङ्ग वा हानि होय २ अर्थमार्ग में सूर्य होय धर्ममार्ग में चन्द्रमा होय तो यात्रा करने से हाथी मिलै वहुत सुखप्राप्त होय ३ अर्थमार्ग में सूर्य होय और अर्थ-मार्ग में चन्द्रमा होय तो यात्रा करने से पहले कार्य होय फिर भङ्ग होय ४ अर्थमार्ग में सूर्य होय मोक्षमार्ग में चन्द्रमा होय तो यात्रा करने से भूमि लाभ होय हर्षयुत सुखी होय ५ काममार्ग में सूर्य होय धर्ममार्ग में चन्द्रमा होय तो यात्राकरने से हाथी घोड़ा मिले राजसन्मान पावै ६ काममार्ग में सूर्य होय और चन्द्रमा अर्थमार्गी होय तो सर्वकार्य सिद्ध होय विघ्नभङ्ग होय ७ काममार्ग में सूर्य होय और चन्द्रमा मोक्षमार्गी होय तो दारुण विग्रह होय कार्य नाश देखै ८ काममार्गी सूर्य होय मोक्षमार्गी चन्द्रमा होय तो राज्यलाभ होय और सोनालाभ होय ९ मोक्षमार्ग में सूर्य होय व धर्ममार्ग में चन्द्रमा होय तो

सोनालाभ होय तथा सर्वकार्य सिद्ध होय १० मोक्षमार्ग में सूर्य होय अर्थमार्ग में चन्द्रमा होय तो कार्य निष्फल होय चोर राजा वा शत्रु से भय होय ११ मोक्षमार्ग में सूर्य होय काममार्ग में चन्द्रमा होय तो यात्रा करने से सर्व कार्यसिद्ध होय कार्यमें जय जानना १२ मोक्षमार्ग में सूर्य होय और मोक्षमार्गी चन्द्रमा होय तो यात्रा करने से विग्रह दारुण होय तथा विघ्न हो १३ यात्रा युद्ध विवाद में ग्रामादि प्रवेश में व्यापार में पन्थाराहु विचारना योग्य है ॥ १४ ॥

अथ ग्रहाधीनेनशुभयोगज्ञानम् ॥

स्थाने यदा स्युर्गुरुसौम्यशुक्राः सिद्धन्ति कार्याणि च पञ्चमेऽह्नि । राज्यास्पदं वा सुखदेशलाभं मासस्य मध्ये ग्रहभावयुक्तम् ॥ १ ॥

यात्रा की लग्न में गुरु, बुध, शुक्र स्थित होयँ तो पांचवेंदिन कार्य सिद्ध करैं और राज्य, सुख व देश का लाभकरैं अथवा एक मास में ग्रह भाव के युक्त होनेसे फल जानना ॥ १ ॥

अथ योगाधियोगयोगाधियोगाः ॥

बुधेज्यभृगुपुत्राणामेकश्चेत्केन्द्रकोणगः । तदा योगोऽत्रगमने क्षेमो भवति भूभुजाम् १ अधियोगो भवेद्द्वाभ्यामत्रक्षेमजयो ध्रुवम् । त्रिभिर्योगाधियोगोऽत्र यशः क्षेमधनागमः ॥ २ ॥

बुध बृहस्पति शुक्र इन तीन ग्रहों में से एक ग्रह केन्द्र १।४। ७। १० वा त्रिकोण ९। ५ में होय तो योगसंज्ञक योग होता है उसमें यात्रा करने से राजाओं को क्षेम अर्थात् कल्याण होता

है और इन तीनों ग्रहों में से दो ग्रह केन्द्र वा त्रिकोणमें होयँ तो अधियोगसंज्ञक योग होता है तिसमें यात्रा करने से क्षेम वा जय होय तथा तीनों ग्रह केन्द्र वा त्रिकोण में होयँ तो योगाधियोग संज्ञक योग होता है उसमें यात्रा करने से यश, क्षेम, धन, लाभ होता है तथा किसी आचार्य के मतसे योगाधियोग में भूमिकाभी लाभ होता है ॥ १ । २॥

अथ यात्रायांमासमध्येतिथिफलंदिशायाम् ॥

पौषे पक्षस्यादिका द्वादशैव तिथ्यो माघादौ द्वितीयादिकास्ताः । कामात्तिस्रस्स्युस्तृतीयादिवच्च याने प्राच्यादौ फलं तत्र वक्ष्ये १ सौख्यं क्लेशो भीतिरर्थागमश्च शून्यन्नैस्वन्निस्वता मिश्रता च । द्रव्यक्लेशो दुःखमिष्टाप्तिरर्थो लाभः सौख्यं मङ्गलं वित्तलाभः २ लाभो द्रव्याप्तिर्धनंसौख्यमुक्तं भीतिर्लाभो मृत्युरर्थागमश्च । लाभः कष्टं द्रव्यलाभः सुखञ्च कष्टं सौख्यं क्लेशलाभं सुखञ्च ३ सौख्यं लाभं कार्यसिद्धिश्च कष्टं क्लेशं कष्टात्सिद्धिरर्थो धनञ्च । मृत्युर्लाभो द्रव्यनाशश्च शून्यं शून्यं सौख्यं मृत्युरत्यन्तकष्टम् ॥४ ॥

पौषमास से बारह महीनों का चक्र लिखै उसके नीचे पौष महीने से बारह तिथी खड़ी परेखा से लिखै और माघ से द्वीज आदि देकर बेंड़ी तिथी लिखै इसीप्रकार सब चक्र भरै अर्थात् फाल्गुनमें तीज से खड़ी तिथि लिखै तथा चैत्र में चौथि से लिखै इसीतरह से सब महीनों में लिखै और तेरसि तीज का एक फल जानिये चौथि चतुर्दशी का एक फल जानिये पञ्चमी पूर्णमासी का एक फल जानिये और एकपंक्ति में पूर्वादि चारों दिशों का फल चक्र के क्रमसे जानना ॥ १ । २ । ३ । ४ ॥

अथ तिथिचक्रम् ॥

मास	पौष	मा.	फा.	चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.	का.	मा.	दिशा पूर्व	दिशा दक्षिण	दिशा पश्चिम	दिशा उत्तर
ति.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	सुखलाभः	क्लेशलाभः	भयदः	अर्थागमः
ति.	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	शून्यम्	दरिद्रता	दरिद्रता	मिश्रता अर्थात् मिलाप
ति.	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	द्रव्यलाभः	क्लेशलाभः	दुःखप्राप्तिः	इष्टाप्तिः
ति.	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	अर्थलाभः	सुखप्राप्तिः	मङ्गललाभः	धनलाभः
ति	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	लाभः	द्रव्याप्तिः	धनप्राप्तिः	सुखप्राप्तिः
ति.	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	भयदः	लाभदः	मृत्युः	अर्थागमः
ति.	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	लाभः	कष्टम्	द्रव्यलाभः	सुखंच
ति.	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	कष्टम्	सौख्यम्	क्लेशलाभम्	सुखंच
ति.	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	सौख्यम्	लाभम्	कार्यसिद्धिः	कष्टम्
ति.	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	क्लेशलाभः	कष्टदः	अर्थसिद्धिः	धनलाभः
ति.	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	मृत्युः	लाभः	द्रव्यनाशः	शून्यम्
ति.	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	शून्यम्	सौख्यम्	मृत्युः	अत्यन्तकष्टम्

अथ युद्धयात्रा कथ्यते ॥

राहुभुक्तानि ऋक्षाणि जीवपक्षस्त्रयोदश । मृतपक्ष स्तु भोग्यानि कर्तरी तदधिष्ठितम् १ ततः पञ्चदशे ग्रस्तं चिन्त्यं युद्धे गमादिषु । जीवपक्षः शुभो ज्ञेयो मृतपक्ष स्त्वशोभनः२मृतपक्षाच्छुभं ग्रस्तं ग्रस्तभात्कर्तरी शुभा। मृतपक्षे सहस्रांशौ जीवपक्षे विधौ स्थिते ३ यात्रायां विजयस्तत्र विपरीते पराजयः । उभौचेज्जीवपक्षस्थौ यात्रा तत्रापि शोभना ४ चेन्दुभौमृत्युपक्षस्थौ रवीन्दू तत्र कष्टदौ । यायिनो जयदश्चन्द्रो जीवपक्षे व्यवस्थि तः । भानुमान् जीवपक्षस्थः स्थायिनो विजयावहः ॥५॥

राहु के नक्षत्र से भुक्त अर्थात् प्रथमवाले तेरहनक्षत्र जीव-पक्ष संज्ञक हैं और भोग अर्थात् आगेवाले तेरह नक्षत्र मृतपक्ष संज्ञक हैं १ और जिसनक्षत्र में राहु स्थित होय वह नक्षत्र कर्तरीसंज्ञक है और राहु के नक्षत्र से पन्द्रहवां नक्षत्र ग्रस्त संज्ञक है सो युद्ध यात्रादि में चिन्तवन करना योग्य है जीव-पक्ष शुभ जानिये मृतपक्ष अशुभ है २ तथा मृतपक्ष से ग्रस्त शुभ है और ग्रस्त से कर्तरी शुभ है मृतपक्ष में सूर्य होय जीव-पक्ष में चन्द्रमा होय तौ यात्रा करने से युद्ध में जय होय और विपरीत अर्थात् मृतपक्ष में चन्द्रमा होय जीवपक्ष में सूर्य होय तो यात्रा में पराजय होय और दोनों सूर्य चन्द्रमा जीवपक्ष में होयँ तो यात्रा शुभ है ३ । ४ तथा चन्द्रमा मृत्युपक्ष में होय तो कष्टदेइ तथा सूर्य चन्द्रमा दोनों मृत्युपक्ष में होयँ तौ भी कष्टदायक हैं और जीवपक्ष में चन्द्रमा होय तौ युद्ध में जाने-वाले को अर्थात् युद्धपर चढ़जानेवाले को जयदायक है तथा सूर्य जीवपक्ष में होय तो स्थायी अर्थात् जो अपने क़िले में बैठाहै उसकी जीत होय॥ ५ ॥

अथ यामराहुविचारः ॥

अष्टासु प्रहरार्द्धेषु प्रथमाद्येष्वहर्निशम्। पूर्वस्यां वामतो राहुस्तूर्यां तूर्यां दिशं व्रजेत् १ यात्रायां दक्षिणे राहुर्युद्धकाले जयी भवेत्। पृष्ठे च समता ज्ञेया सम्मुखे वामस्मृत्युदः ॥ २ ॥

आठ प्रहरार्द्ध अर्थात् आधे २ पहरसे पूर्वादि चौथी २ दिशा में राहु चलता है १ सो युद्धयात्रा में दहिने राहु जीत को देने वाला है तथा पीछे सामान्य जानना और सम्मुख बायें मृत्यु- दायक है ॥ २ ॥

अथ राहुचक्रम् ॥

पू.	वा.	द.	ई.	प.	आ.	उ.	नै.	दिशा
॥	१	१॥	२	२॥	३	३॥	४	दिनप्रहरार्द्धः
४॥	५	५॥	६	६॥	७	७॥	८	रात्रिप्रहरार्द्धः

अथ पञ्चस्वरचक्रज्ञानम् ॥

कादिहांताँल्लिखेद्वर्णान् स्वराधोङञणोज्झितान् । तिर्यक्पंक्तिक्रमेणैव पञ्चत्रिंशत्प्रकोष्ठके १ नरनामादिमो वर्णो यस्मात्स्वरादधः स्थितः । सस्वरस्तस्य वर्णस्य वर्णस्वर इहोच्यते २ नप्रोक्ताङञणावर्णा नामादौ सन्ति ते नहि । चेद्भवन्ति तदा ज्ञेया गजडास्ते यथा क्रमम् ३ यदि नाम्नि भवेद्वर्णः संयुक्ताक्षरलक्षणः । ग्राह्यस्तदादिमो वर्णइत्युक्तं ब्रह्मयामले ४ अस्वरो मेष सिंहालिरिःकन्यायुग्मकर्कटाः । धनुर्मीनावुकारःस्यादे

कारश्च तुलावृषौ ५ ओस्वरो मृगकुम्भौ च राशी शास्तु ग्रहस्वराः । स्वराधःस्थापयेत्खेटान् राशेर्यो यस्य नायकः ६ अकारे सप्तऋक्षाणि रेवत्यादिक्रमेण च । तथा पञ्चइकाराद्यावेवमृक्षस्वरोदयः ७ अकारादिक्रमान्न्यस्य नन्दादितिथिपञ्चकम् । दिनस्वरोदयो नित्यं स्वस्वतिथ्यादिजायते ७ नभस्यमार्गवैशाखेष्वकारस्योदयो भवेत् । आश्विनश्रावणाषाढेष्विकारो नायकः स्मृतः ९ उकारश्चैत्रपौषे स्यादेकारो ज्येष्ठकार्त्तिके । ओकारउदयं याति माघफाल्गुनमासयोः १० आद्यो बालः कुमारोन्यो युवा वृद्धस्तथा मृतिः । किञ्चिल्लाभकरस्त्वाद्यः कुमारस्त्वर्धलाभदः ११ सर्वां सिद्धिं युवा कुर्याद् वृद्धो मध्योऽधमोन्तिमः । युद्धकालेविचिन्त्येषु तिथिमार्गेण निश्चितम् ॥ १२ ॥

स्वरों के नीचे का आदि अक्षर लिखै ङ ञ ण इन अक्षरों को छोड़ कर लिखै तिरछी पंक्ति केक्रम से पैंतिस कोठेका चक्र भरै १ नरके नाम का आदि अक्षर जिस स्वरके नीचे होइ वही उसका वर्णज स्वर अर्थात् बालस्वर जानिये २ ङ ञ ण ये अक्षर स्वर में नहीं कहे हैं परन्तु जिसके नामादि में होयँ तो ग ज ड इस क्रमसे जानलेइ अर्थात् ङ के जगह में गा लेनै और ञ के जगहमें जा लेना तथा ण के जगह में डा अक्षर ग्रहण करना ३ तथा नामके अक्षरमें दो अक्षर मिले होयँ तो आदिका अक्षर ग्रहण करना ब्रह्मयामल में कहाहै ४ अकार स्वर में मेष सिंह वृश्चिक लग्न स्थापितकरै तथा कन्या मिथुन कर्क इकारस्वर के नीचे लिखै तथा धन मीन उकार स्वर के नीचे लिखै वा तुला वृष एकार स्वर में लिखै तथा मकर कुम्भ ओकार स्वरके नीचे लिखै तिसके नीचे ग्रह स्थापित करै

इसीक्रम से जिस राशि का स्वामी जौन ग्रह होइ उसी ग्रह को उसी राशि के संग स्थापित करना अकारादि स्वरों में चक्रसे जानना ५ । ६ तथा अकारस्वर के नीचे रेवत्यादि सात नक्षत्र स्थापित करना और पुनर्वसु से पांच नक्षत्र इकारस्वर में लिखना तथा उत्तराफाल्गुनी से पांच नक्षत्र उकारस्वर में लिखदेना तथा अनुराधा से पांच नक्षत्र एकार स्वर में स्थापित करना वा श्रवण से पांच नक्षत्र ओकार स्वर में लिखना ७ अकारादि स्वरों में नन्दादि पांच तिथि क्रमसे लिखना सो नित्य दिन स्वरोदय है अपने२ स्वरसे चक्र में जानना ८ भाद्र, अगहन, वैशाख ये महीना अकार स्वर के नीचे लिखै तथा कुँवार, श्रावण, आषाढ़ इकारस्वर में लिखना ९ और चैत्र, पौष, उकारस्वर में स्थापित करना वा ज्येष्ठ कार्त्तिक एकारस्वर में लिखना वा माघ फाल्गुन महीना उकार स्वर में स्थापित करना १० प्रथम कोठा में बालस्वर है दूसरे में कुमार है तीसरे में युवा है चौथे में वृद्धा पांचवेंमें मृता जानिये बालस्वर थोड़ा लाभ करता है कुमारसंज्ञक आधा लाभ करता है ११ और युवास्वर सर्वसिद्धिकारक है तथा वृद्धास्वर मध्यम है मृता स्वर अधम जानिये युद्धकाल में विशेष विचारना योग्यहै तिथि से जानना तथा युद्धकाल में नामादि अक्षर से लेना तथा गोचर में जन्मनामाक्षर से विचारना योग्य है ॥ १२ ॥

अथ पञ्चस्वरचक्रन्यासः ॥

बाल	कुमार	युवा	वृद्धा	मृता	स्वर
अ	इ	उ	ए	ओ	वर्ण
क	ख	ग	घ	च	वर्ण
छ	ज	झ	ट	ठ	वर्ण
ड	ढ	त	थ	द	वर्ण
ध	न	प	फ	ब	वर्ण
भ	म	य	र	ल	वर्ण
व	श	ष	स	ह	वर्ण
नन्दा १।६।११	भद्रा २।७।१२	जया ३।८।१३	रिक्ता ४।९।१४	पूर्णा५।१०।१५	तिथि
र, मं.	बु. चं.	बृ.	शु.	श.	वार
रेवत्यादि ७	अदित्यादि ५	अर्यमादि५	मित्रादि ५	श्रवणादि ५	नक्षत्र
मे.सिं.वृश्चिक	कन्या मि.कर्क	ध. मी.	तु. वृषं	म. कुं.	लग्न
मार्ग वै. भाद्र.	आ.श्रा.आश्वि	चैत्र पौष	ज्ये. फा.	मा. फा.	मास

अथ युद्धसमये अकुलादिनक्षत्रज्ञानम् ॥

स्वात्यन्तकाहिवसुपौष्णाकरानुराधादित्यध्रुवाणिविषमास्तिथयोऽकुलाः स्युः । सूर्येन्दुमन्दगुरवश्च कुलाकुलाख्यो मूलाम्बुपेशविधिभं दशषड्द्वितिथ्यः १ पूर्वास्वीज्यमघेन्दुकर्णदहनाद्रीशेन्दुचित्रास्तथा शुक्रारीकुलसंज्ञकाश्च तिथयोर्काष्टेन्द्रवेदैर्मिताः । यायीस्यादकुले जयी च समरे स्थायी च तद्वत्कुले सन्धिः स्यादुभयोः कुलाकुलगणे भूमीशयोर्युध्यतोः ॥ २ ॥

स्वाती, भरणी, श्लेषा, धनिष्ठा, रेवती, हस्त, अनुराधा, पुनर्वसु वा ध्रुवसंज्ञक नक्षत्र तथा विषमतिथि १।३।५।७।९।११।१३ वार शनि, चन्द्र, गुरु, सूर्य इन नक्षत्रादिकों की अकुलगणसंज्ञा है मूल, शतभिष, आर्द्रा, अभिजित् ये नक्षत्र तथा दशमी, छठि, द्वीज तिथि वा बुधवार इनकी कुलगणसंज्ञा है तीनोंपूर्वा, अश्विनी, पुष्य, मघा, मृगशिरा, श्रवण, कृत्तिका, विशाखा, ज्येष्ठा, चित्रा ये नक्षत्र वा शुक्र मङ्गलवार तथा द्वादशी, अष्टमी, चतुर्दशी, चौथि तिथि इनकी कुलाकुलगणसंज्ञा है यायी अर्थात् जानेवाले को अकुलसंज्ञक नक्षत्रादिकों में जीत होती है युद्धसमय में तथा स्थायी अर्थात् स्थिरहोनेवाले को कुलगण के नक्षत्रादिकों में जीत होती है और कुलाकुलगण में राजों के युद्ध में दोनों से मिलाप होताहै ॥ १ । २ ॥

अथ वारघातविचारः ॥

मेषे रविर्बुधः कर्के मिथुने चन्द्रएव च। कन्यावृषभसिंहेषु शनिः स्यान्मकरे कुजः १ धनुर्वृश्चिकमीनेषु शुक्रोऽथ तुलकुम्भयोः। जीवश्चैते जन्मराशौ घातवारा बुधैः स्मृताः ॥ २ ॥

मेषराशिवाले को एतवार घात है और कर्क को बुधवार घात है मिथुन को चन्द्रवार घात है तथा कन्या वृष सिंह को शनिवार घात है और मकर को मङ्गलवार धनु, वृश्चिक, मीन को शुक्रवार घात है तथा तुला वा कुम्भ को बृहस्पतिवार घात है ये जन्मराशि पर पण्डित घातवार कहते हैं ॥ १ । २ ॥

अथ घातवारचक्रम् ॥

मेष	वृष.	मि.	कर्क	सिंह	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशि
र.	श.	चं.	बु.	श.	बृ.	बृ.	शु.	शु.	मं.	बृ.	शु.	वार

अथ ग्रहयोगज्ञानम् ॥

तनौ जीव इन्दुर्मृतौ वैरिगोऽर्कः प्रयातो महीन्द्रो जयत्येव शत्रुम् १ लग्ने गुरौ रिपौ भौमे लाभेऽर्के सहजे शनौ । जयत्याशु रिपून् यानेनुकूलो यदि भार्गवः २ गुरौ लग्नेऽष्टमे चन्द्रे षष्ठे सूर्ये जयत्यरीन् । तनौ जीवेऽथवा शेषैर्वित्तायस्थैर्जयोगमे ३ लग्ने सूर्ये विधौ द्यूने धनस्थैरीज्यभार्गवैः । प्रयाति नृपतिः सोरीञ्जयेत्ताक्ष्र्य इवोरगान् ४ मन्दारौ त्रिषडायस्थौ बलिनो ह्रीज्यभार्गवाः । प्रयाणे भूपतेर्यस्य वसुधा तस्य हस्तगा ५ लग्ने जीवे विधौ द्यूने चतुर्थे ज्ञे तथा भृगौ । पापैस्त्रिगैर्महीपालः प्रस्थितो लभते श्रियम् ६ लाभेऽर्के खे बुधे शुक्रे दुश्चिक्ये भूमिजे शनौ । द्यूनेऽब्जे तनुगे जीवे प्रस्थितस्य भवेज्जयः ७ लग्नेऽब्जे वा गुरौ षष्ठे सूर्ये व्योमगते शनौ । सुतेज्ये हिबुके शुक्रे राजा हन्ति गमे रिपून् ८ शुक्रे तूर्ये त्रिलाभस्थे केन्द्रस्थगुरुवीक्षते । सप्ताष्टाङ्कगतैः पापैर्योगोऽयं बहुलाभदः ९ शुक्रार्केज्यैस्त्रितुर्यस्थैः शत्रुस्थे मन्दभूमिजे । यात्रा भूमिभुजां शस्ता शत्रुवृन्दविदारिणी ॥ १० ॥

लग्न में बृहस्पति, चन्द्रमा होय छठे, आठयें सूर्य होय ऐसे योग में यात्रा करने से राजा शत्रु को जीतै १ लग्न में बृहस्पति होय और छठे मङ्गल होय ग्यारहें सूर्य होय तीसरे शनैश्चर होय ऐसे योग में यात्रा करने से शत्रुको जीतै परन्तु शुक्र बायें पीछे होय २ बृहस्पति लग्न में होय आठयें चन्द्रमा होय छठे सूर्य होय तो शत्रु को जीतै अथवा लग्न में बृहस्पति होय वा

शेषग्रह राहु केतु छोड़कर दूसरे ग्यारहें होयँ तो जीत होय ३ लग्नमें सूर्य होय चन्द्रमा सातयें होय तथा दूसरे बुध, बृहस्पति, शुक्र होयँ ऐसे योग में राजा यात्रा करै तो जिस प्रकार गरुड़ सर्पों को जीतते हैं उसी प्रकार शत्रुको जीते ४ शनैश्चर मङ्गल तीसरे छठे ग्यारहें होयँ और बुध बृहस्पति शुक्र बली होयँ ऐसे योग में राजा यात्राकरै तो पृथ्वी लाभहोय ५ लग्न में बृहस्पति होय चन्द्रमा सातयें होय चौथे बुध शुक्र होयँ पापग्रह तीसरे होयँ ऐसे योगमें यात्राकरै तो लक्ष्मी प्राप्त होय ६ ग्यारहें सूर्य होय दशयें बुध व शुक्र होयँ तीसरे मङ्गल व शनैश्चर होयँ सातयें चन्द्रमा होय बृहस्पति लग्नमें होय तो यात्रा करने से जय होय ७ लग्न में चन्द्रमा होय वा गुरु होय तथा छठे सूर्य होय दशयें शनैश्चर होय पांचयें चौथे शुक्र होय ऐसे योग में राजा यात्रा करै तो शत्रु को जीते ८ शुक्र चौथे तीसरे ग्यारहें होय और केन्द्र में होकर बृहस्पति शुक्र को देखता होय और सातयें आठयें नवयें पापग्रह होयँ तो यात्राकरने से बहुतलाभ होइ ९ शुक्र, सूर्य, बृहस्पति तीसरे चौथे होयँ और शनैश्चर मङ्गल छठे होयँ तो यात्रा राजों को शुभ है और शत्रु का समूह नाश करनेवाली है ॥ १० ॥

अथ पुनःशत्रुजययोगः ॥

सिते लग्नगते सूर्ये लाभगे हिबुके विधौ । ततो राजा रिपून् हन्ति केशरीवेभसंहतिम् ॥ १ ॥

लग्न में शुक्र होय सूर्य लाभस्थान में होय तथा चन्द्रमा चौथे होय ऐसे योगमें राजा यात्राकरै तो जिसप्रकार सिंह हाथी को मारडालता है उसी प्रकार शत्रु को मारै ॥ १ ॥

अथ शत्रुञ्जययोगचक्रम् ॥

अथ पुण्डरीकयोगः ॥

गुरौ कर्कटगे लग्ने भानावेकादशस्थिते । पुण्डरीकोमहायोगः शत्रुपक्षविनाशकृत् ॥ १ ॥

कर्कराशि का बृहस्पति लग्न में होय ग्यारहें सूर्य होयँ तो पुण्डरीक महायोग होताहै सो शत्रुपक्षनाशकारक है ॥ १ ॥

अथ पुण्डरीकयोगचक्रम् ॥

अथ कामदो योगः ॥

वृषराशिगते चन्द्रे लाभस्थे केन्द्रगे गुरौ । कामधेनुरयं योगः कामदो यायिनोरणे ॥ १ ॥

वृषराशि का चन्द्रमा होकर ग्यारहें होय और केन्द्र में बृहस्पति होय तो कामधेनुसंज्ञक योग जानिये जानेवालों को रण में कामना देनेवाला है ॥ १ ॥

अथ कामदोयोगचक्रम् ॥

५
३
६
चं. २
बृ. ४
७ बृ.
बृ. १
८
बृ. १०
१२
९
११

अथ पूर्णचन्द्रयोगः ॥

त्रिषष्ठलाभगेष्वेषु रविमन्दकुजेषु च । पूर्णचन्द्रोमहायोगः पूर्णराज्यप्रदः सदा ॥ १ ॥

तीसरे सूर्य, छठे शनैश्चर, ग्यारहें मङ्गल होयँ तो पूर्णचन्द्र महायोग होता है सो यात्रा करने से राज्यदायक है ॥ १ ॥

अथ पूर्णचन्द्रयोगचक्रम् ॥

अथ मृगेन्द्रयोगज्ञानम् ॥

लग्ने शुक्रे शशी बन्धौ कर्मस्थाने गुरुर्यदा । मृगेन्द्र योगो विख्यातो यातुः सर्वार्थसाधकः ॥ १ ॥

लग्न में शुक्र होय चन्द्रमा चौथे होय और दशयें बृहस्पति होय तो मृगेन्द्रसंज्ञकयोग होताहै जानेवालेको सर्वार्थसाधकहै १॥

अथ मृगेन्द्रयोगचक्रम् ॥
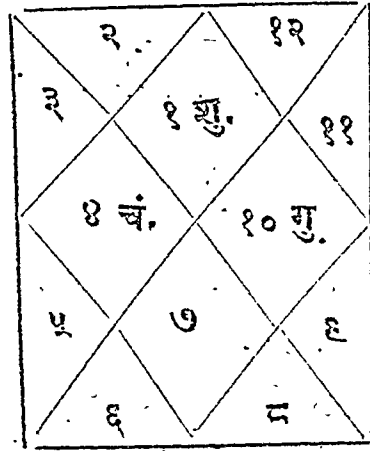
अथ चन्द्रकालानलचक्रम् ॥

पूर्वत्रिशूलमध्यान्तं दिनऋक्षादि गण्यते । त्रिशूला नां भवेन्मृत्युर्मध्यमं बहिराष्टकम् १ लाभक्षेमं विजानी याच्चन्द्रगर्भे न संशयः । चन्द्रकालानलं चक्रं नामभं दृश्यते रणः । गर्भे द्वयं द्वयं दद्यादन्यत्रैकैकमेव च ॥२॥

पूर्व के त्रिशूलसे मध्य के अन्ततक चक्र लिखै अभिजित्समेत चन्द्रमा के नक्षत्र से अपने नाम नक्षत्रतक विचारै नामनक्षत्र त्रिशूलमें परै तो युद्ध में मृत्यु होय और बहिमें अर्थात् त्रिशूल के पास जो एकशूली है तिसमें परै तो मध्यम जानिये १ औ चन्द्रगर्भ में नामनक्षत्र परै तो लाभ क्षेम जानिये इस चन्द्र-कालानलचक्र में नामनक्षत्र युद्ध में देखना योग्यहै गर्भ में दो २ नक्षत्र देइ अन्यत्र एक २ देइ ॥ २ ॥

अथ चन्द्रकालानलचक्रन्यासः ॥
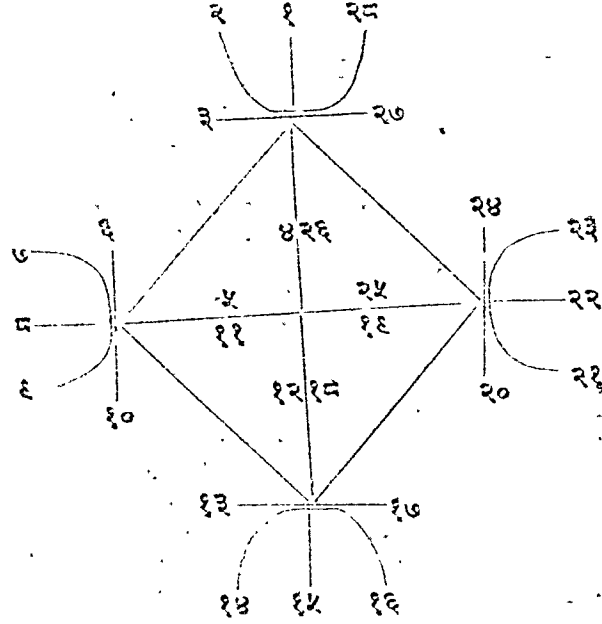
अथ युद्धनाडीज्ञानम् ॥

आर्द्रादौ मृगपर्यन्तं मध्ये मूलं प्रतिष्ठितम् । रवीन्दु नामनक्षत्रं यद्येको नाडिको भवेत् । तस्य मृत्युर्न सन्देहो रोगाद्वाथ रणेऽपि वा ॥ १ ॥

आर्द्रानक्षत्र को आदि देकर मृगशिरा के अन्ततक त्रिनाड़ी चक्र लिखै तथा बीचोंबीच में मूलनक्षत्र स्थापितकरै क्रम से चक्र लिखै ॥ फलम् ॥ सूर्य चन्द्रमा का नक्षत्र तथा नामनक्षत्र एक नाड़ी में परै तो मृत्यु होय युद्ध वा रोग में नाड़ीचक्र विचारना चाहिये ॥ १ ॥

अथ युद्धनाड़ीचक्रम् ॥

आ.	पू. फा.	उ. फा.	अनु.	ज्ये.	ध.	श.	भ.	कृ.
पुन.	म.	ह.	वि.	मू.	श्र.	पू. भा.	अ.	रो.
पुष्य.	श्ले.	चि.	स्वा.	पू. षा.	उ. षा.	उ. भा.	रे.	मृ.

अथ भूमिबलाबलज्ञानम् ॥

भूम्यक्षरंचतुर्गुण्यं तिथिवारसमन्वितम् । शिवनेत्रैर्हरेद्भागं शेषं भूमिबलावलम् १ चन्द्रशेषेबलाभूमिः शून्या नेत्रे च शेषके । वह्निशेषे भवेन्मृत्युर्युद्धकाले विचिन्तयेत् ॥ २ ॥

भूमिनाम के अक्षर चौगुनेकरै तिथिवार जोड़देइ तीनका भाग देइ जो शेषवचे उससे भूमिवलावल विचारै १ एक वचै तो भूमिवल जानिये दो शेष वचें तो शून्यभूमि जानिये तीन वचें तो भूमि मृत्युकारक जानिये ॥ २ ॥

अथ युद्धसमयेनारदविचारः ॥

तिथिवारयुतं कार्यं त्रिभिर्भागो विधीयते । स्वर्गपातालमृत्युश्च क्रमतो याति नारदः । मृत्युलोके यदा तिष्ठेत्तदा युद्धं न संशयः ॥ १ ॥

तिथिवार जोड़देइ उसमें तीन का भागदेइ शेष क्रमसे नारद जानिये एक वचै तो स्वर्गमें जानिये दो बचैं तो पाताल में जानना तीन बचैं तो मृत्युलोक में जानिये उसका फल यह है कि मृत्युलोक में जब नारद आवैं तब युद्ध जानियें इसमें कुछ संशय नहीं है ॥ १ ॥

अथ युद्धकालज्ञानम् ॥

जन्मभाद्दिनभं यावद्गणनीयं यथाक्रमात् । तिथियुक्तं च वेदघ्नं त्रिभिर्भागो विधीयते १ एको मृत्युर्द्वयोर्घातं शून्ये सुखसमन्वितम् । कालज्ञानमितिख्यातं युद्धकाले विचिन्तयेत् ॥ २ ॥

जन्मनक्षत्र से दिन नक्षत्रतक गिनै उसमें तिथि जोड़देइ

उसे चार से गुणाकरै तिस अङ्क में तीन का भागदेइ १ एकशेष बचै तो मृत्यु होय दो बचैं तो घात होय शून्य बचै तो सुखयुक्त जानना यह कालज्ञान युद्धसमय में चिन्तवन करना शुभहै ॥२॥

अथ शस्त्रघट्टनयुक्तिज्ञानम् ॥

कृत्तिका च विशाखा च भौमवारेण संयुता । तद्योगे घटितं शस्त्रं संग्रामे सिद्धिदायकम् ॥ १ ॥

कृत्तिका वा विशाखानक्षत्र मङ्गलवार से युक्त परै तो उसी दिन शस्त्र अर्थात् हथियार गढ़ा जाय तो युद्धमें सिद्धिदायक होय ॥ १ ॥

अथ शस्त्रलेपनम् ॥

अपामार्गरसेनैव यानि शस्त्राणि लेपयेत् । जायन्ते यानि संग्रामे वज्रसारा विनिश्चितम् ॥ १ ॥

लटजीरे के रस से शस्त्र लेपनकरै तो युद्ध में वज्रसमान होजाय ॥ १ ॥

अथ यात्रान्ते गृहप्रवेशमुहूर्त्तम् ॥

हरेर्वासरं चाष्टषष्ठीञ्चरिक्तां विहाय प्रभुः सन्निवृत्तः प्रयाणात् । शुभाहे विशेन्मन्दिरं मित्रचित्रामृगात्र्युत्तरारेवतीरोहिणीषु १ प्रवेशान्निर्गमस्तस्मात्प्रवेशं नवमे तिथौ। नक्षत्रे च तथा वारे नैव कुर्यात्कदाचन ॥ २ ॥

द्वादशी, अष्टमी, छठि और रिक्ता ४ । ६ । १४ इन तिथियों को जब राजा यात्रा से लौट आवै तब गृहप्रवेश में वर्जित करै तथा शुभदिन में होयँ तिनविषे मन्दिर में प्रवेशकरै अनुराधा, चित्रा, मृगशिरा, तीनों उत्तरा, रेवती, रोहिणी ये नक्षत्र शुभ हैं १ प्रवेश से यात्रा वा यात्रा से प्रवेश नवयें दिन वा नवयें नक्षत्र तथा नवईं तिथि वर्जित है ॥ २ ॥

अथ द्विघटिकामुहूर्त्तं रुद्रयामले ॥

त्रिपुरहरमुहूर्त्तं केन दृष्टं श्रुतं वा सकलमपि हृदृष्टं शम्भुना भूतहेतोः । यदि शुभमशुभं वा यादृशन्तादृशं वा तदिदमपि नरेन्द्रैः सर्वदा चिन्तनीयम् ॥ १ ॥

श्रीमहादेवजी का मुहूर्त्त द्विघटिका है सो किसने देखा व सुना है सम्पूर्ण निश्चय से श्रीमहादेवजीही से देखागया है अर्थात् प्राणियों के हेतु श्रीमहादेवजीने कल्पित किया है शुभ होय वा अशुभ कार्य होय चहै जैसा तैसा होय सम्पूर्ण मुनीन्द्रों के सदा निश्चय से चिन्तवन के योग्य है ॥ १ ॥

श्रीपार्वत्युवाच ॥

श्रीशम्भो प्राणनाथेश वद मे करुणानिधे । त्रिपुरस्य वधे प्रोक्ता मुहूर्त्ता ये शुभप्रदाः २ भूतानामुपकारार्थं सर्वकालेष्टसिद्धिदम् । पुरुषार्थप्रदं ब्रूहि करुणाकर शङ्कर ॥ ३ ॥

श्रीपार्वतीजी श्रीमहादेवजीसे प्रश्न करती हैं कि हे प्राणनाथ, दयाके समुद्र, हे श्रीशम्भो ! जे मुहूर्त्त त्रिपुर दैत्य के वध में कहे गये हैं और शुभ के देनेवाले हैं सो हमसे वर्णन करौ २ और प्राणियों का उपकारार्थ जिसमें है तथा सम्पूर्णकाल में सिद्धि के देनेवाले हैं और पुरुषार्थ के देनेवाले हैं ऐसे जो हैं मुहूर्त्त सो हे दया के खानि शंकरजी ! वर्णन करौ ॥ ३ ॥

ईश्वर उवाच ॥

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि ज्ञानं त्रैलोक्यदीपनम् । ज्योतिस्सारस्य यत्सारं देवानामपि दुर्लभम् ४ न तिथिर्न च नक्षत्रं न योगं करणं तथा । कुलिकं यमयोगञ्च न कालं न च चन्द्रमाः ॥ ५ ॥

श्रीमहादेवजी उत्तर देते भये कि हे देवि ! सुनौ तीन लोक के प्रकाश का ज्ञान कहताहूं ज्योतिस्सारके सारका सारहै अर्थात्

ज्योतिश्शास्त्र के सारांश का सारांश अर्थात् उससे भी महीन है और निश्चय करिके देवतों को भी दुर्लभ है ४ इस मुहूर्त्त में तिथि, नक्षत्र, योग, करण, कुलिक, यमयोग, काल, चन्द्रमा ॥ ५ ॥

न शूलं योगिनी राशिर्न होरा न तमोगुणः । व्यतीपाते च संक्रान्तौ भद्रायामशुभे दिने ६ शिवालिखितमित्येतत्सर्वविघ्नोपशान्तये । कदाचिच्चलते मेरुः सागराश्च महीधराः ॥ ७ ॥

तथा दिशाशूल, योगिनी, राशि अर्थात् लग्न, कालहोरा, तमोगुण, व्यतीपात, संक्रान्ति, भद्रा, अशुभदिन ६ इतने कुयोग इस मुहूर्त्त में नहीं विचारने योग्य हैं शिवकरिकै लिखित है सर्वविघ्न शान्तिकारक है कदाचित् सुमेरुपर्वत चलायमान हो वा समुद्र पर्वत चलैं ॥ ७ ॥

सूर्यः पतति वा भूमौ वह्निर्वा याति शीतताम् । निश्चलश्च भवेद्वायुर्नान्यथा मम भाषितम् ८ तन्त्रादौ कथयिष्यामि मुहूर्त्तानि च षोडश । गुणत्रयप्रयोगे न चालनीया अहर्निशम् ॥ ९ ॥

वा सूर्य पृथ्वीपर गिरैं वा अग्नि ठंढी होय वा वायु निश्चल होय ऐसे कर्म होयँ परन्तु हमारा वाक्य अन्यथा न होगा महादेवजी कहते हैं ८ आदि में सोलह मुहूर्त्त हैं सो तीन गुणों के प्रयोग करिकै दिन रात्रि में चलते हैं ॥ ९ ॥

अथ मुहूर्त्तज्ञानम् ॥

रौद्रं श्वेतं तथा मैत्रश्चार्वटश्च चतुर्थकम् । पञ्चमं जयदेवञ्च षष्ठं वैरोचनं तथा १० तुरगं सप्तमश्चैव ह्यष्टमं चाभिजित्तथा । रावणं नवमं प्रोक्तं बालवं दशमं तथा ॥ ११ ॥

रौद्र १ श्वेत २ मैत्र ३ चार्वट ४ जयदेव ५ वैरोचन ६ । १० तुरदेव ७ अभिजित् ८ रावण ९ बालव १० । ११ ॥

विभीषणं रुद्रसंज्ञं द्वादशञ्च सुनन्दनम् । याम्यं त्रयोदशं ज्ञेयं सौम्यं प्रोक्तश्चतुर्दशम् १२ भार्गवं तिथिसंज्ञञ्च सावित्र्यं षोडशं तथा । एतानि प्रोक्तकार्येषु नियोज्यानि यथाक्रमात् ॥ १३ ॥

विभीषण ११ नन्दन १२ याम्य १३ सौम्य १४ । १२ भार्गव १५ सावित्र १६ ये सोलह मुहूर्त्त उक्त कार्य में क्रम से योजित करै ॥ १३ ॥

अथ मुहूर्त्तकर्मज्ञानम् ॥

रौद्रे रौद्रतरं कार्यं श्वेते कुञ्जरबन्धनम् । स्नानदानादिकं मैत्रे चार्वटे स्तम्भनं भवेत् १४ कार्यं यज्जयदेवसंज्ञकवरे सर्वार्थकं साधयेत् तद्वैरोचनसंज्ञके प्रभवति पट्टाभिषेकं क्रमात् । ज्ञात्वैवं तुरदेवनाम्नि विदितं शस्त्रास्त्रकं साधयेत् स्यात्कार्यमभिजिन्मुहूर्त्तकवरे ग्रामप्रवेशं सदा ॥ १५ ॥

रौद्र मुहूर्त्त में रौद्रतर अर्थात् घोरकार्य शुभ है तथा श्वेत में हाथी बन्धन शुभ है मैत्र में स्नानदानादिक श्रेष्ठ है तथा चार्वट में स्तम्भन प्रतिष्ठादिक शुभ हैं १४ जयदेव में सब कार्य शुभ हैं तथा वैरोचन में राजगद्दी शुभ है तुरदेव में शस्त्राभ्यास शुभ होता है तथा अभिजित् मुहूर्त्त में ग्रामप्रवेश सदा शुभ है ॥ १५ ॥

रावणे साधयेद्वैरं युद्धकार्यं च बालवे । विभीषणे शुभं कार्यं यन्त्रकार्यं सुनन्दने १६ याम्ये भवेन्मारणकार्यमुग्रं सौम्ये सभायामुपवेशनं स्यात् । स्त्रीसेवनं भार्गवके मुहूर्ते सावित्र्यनाम्नि प्रपठेत् सुविद्याम् ॥ १७ ॥

रावण में वैरसाधन करै बालव में युद्धकार्य करै विभीषण में

शुभकार्य करै नन्दन में यन्त्र अर्थात् पेंच चलावे १६ याम्य में मारण कार्य करै सौम्य में सभाप्रवेश करै तथा भार्गव में स्त्री प्रसङ्ग करै वा सावित्र मुहूर्त में विद्या पढ़ै ॥ १७ ॥

अथ वारपरत्वेन मुहूर्तोदयज्ञानम् ॥

उदये रौद्रमादित्ये मैत्रं सोमे प्रकीर्तितम् । जयदेवं कुजे वारे तुरदेवं बुधे स्मृतम् १८ रावणञ्च गुरौ ज्ञेयं भार्गवे च विभीषणम् । शनौयाम्यं मुहूर्त्तञ्च दिवारात्रि प्रयोगतः १९ दिनादौ यत्प्रवर्त्तेत रात्र्यादौ तदनन्तरम् । दिनान्ते यः समायाति तस्मादेकान्तरेण वै ॥ २० ॥

रविवार के उदय में प्रथम रौद्रमुहूर्त्त प्रवेश होता है तथा सोमवार के उदय में मैत्र मुहूर्त्त होता है मङ्गलवारके उदय में जयदेव होता है तथा बुधवार के उदय में तुरदेव होता है १८ बृहस्पति के उदय में रावण मुहूर्त्त होता है तथा शुक्र के उदय में विभीषणसंज्ञक होता है वा शनैश्चरके उदय में याम्यमुहूर्त्त होता है इसी क्रम से दिन रात्रि के क्रम से मुहूर्त्तवास जानिये दिनमान में सोलह का भाग देना जो लब्ध मिलै वही मुहूर्त्त का प्रमाण जानिये और दिनमान को साठ में घटायदेना जो शेष रहै वही रात्रिमान है उसमें सोलह का भाग देकर लब्ध मिलै तो वही प्रमाण से रात्रि में भी सोलह मुहूर्त्त होते हैं दिन रात्रि के प्रयोग से १९ दिनके आदि में जो मुहूर्त्त हो उससे दूसरा रात्रि को होता है और जो मुहूर्त्त दिनके अन्तमें होता है सो एक मुहूर्त्त छोड़कर रात्रि के अन्त में होता है ॥ २० ॥

अथ गुणोदयज्ञानम् ॥

गुरुसोमदिने सत्त्वं रजश्चाङ्गारके भृगौ । रवौ मन्दे बुधे वारे तमो नाडीचतुष्टयम् ॥ २१ ॥

अब गुणों का वास लिखते हैं ॥

बृहस्पति और सोमवारके उदय में दो मुहूर्त्ततक सतोगुण

वास करता है मङ्गल वा शुक्र को दो मुहूर्त्त रजोगुण का वास होता है तथा एतवार शनैश्चर बुधवार को दो मुहूर्त्त तक तमोगुण का वास जानना ॥ २१ ॥

अथ गुणानां वर्णज्ञानम् ॥

सत्त्वं गौरं रजः श्यामं तामसं कृष्णमेव च । इमं वर्णं विजानीयात्सत्त्वादीनां यथोदितम् ॥ २२ ॥

अब गुणों के वर्ण कहते हैं ॥

सतोगुण गौर अर्थात् गोरा बदन है रजोगुण श्यामवर्ण है तमोगुण कृष्णवर्ण है. ये वर्ण सत्त्वादि अर्थात् सतोगुणादिक जानिये ॥ २२ ॥

अथ गुणानां फलम् ॥

सत्त्वेन साधयेत्सिद्धिं रजसा धनसम्पदाम् । तमसा छेदभेदादि साधयेन्मोक्षमार्गकम् ॥ २३ ॥

अब गुणों का फल कहते हैं ॥

सतोगुण में सिद्धिसाधनकरै रजोगुण में धन सम्पदा साधन करै तमोगुण में छेद भेदादि अर्थात् काटना शुभ है तोड़ फोड़ करना शुभ है तथा मोक्षमार्ग शुभ है ॥ २३ ॥

अथ मुहूर्त्ताङ्गरेखाज्ञानम् ॥

शून्यं नभः खादिभिरेव वर्णैर्विघ्नं धनुर्युग्मगणाधिपाद्यैः । मृत्युस्तथा पादयमादिवर्णैः श्रीविष्णुनामामृतसंज्ञसिद्धिः ॥ २४ ॥

अब मुहूर्त्तों की रेखा कहते हैं ॥

शून्य तथा नभ व खसंज्ञा तथा अभ्रसंज्ञा ये नाम शून्य रेखा के हैं तथा विघ्न धनु युग्म गणाधिप ये विघ्न रेखा के नाम हैं मृत्युपाद यम ये नाम कालरेखा के हैं वा श्रीविष्णु अमृतसिद्धि ये अमृतरेखा के नाम हैं ॥ २४ ॥

अथ रेखास्वरूपम् ॥

अमृतश्चोर्ध्वरेखैका कालरेखात्रयं भवेत् । विघ्नमाव र्त्तकं ज्ञेयं शून्ये शून्यमितिक्रमः ॥ २५ ॥

अब रेखाका स्वरूप कहते हैं ॥

एकरेखा ऊर्ध्व करने से अमृतरेखा का स्वरूप होता है तथा तीन रेखा ऊर्ध्व करने से कालसञ्ज्ञक अर्थात् मृत्युसञ्ज्ञक जानिये वा गोलरेखा करनेसे विघ्नसञ्ज्ञक होती है इसीको घन भी जानना और शून्य का स्वरूप लिखने से शून्यसंज्ञक जानिये ॥ २५ ॥

अथ रेखाफलम् ॥

शून्येनैव भवेत्कार्यं विघ्नमावर्त्तके भवेत् । स्यान्मृत्युः कालरेखायां सर्वसिद्धिस्तथामृते ॥ २६ ॥

अब रेखों का फल कहते हैं ॥

शून्य में कार्य न होय और गोल अर्थात् विघ्नरेखा में विघ्न होय तथा कालरेखा में मृत्यु जानिये तथा अमृतरेखा में सर्व सिद्धि जानिये ॥ २६ ॥

अथ राशीनां घातगुणाः ॥

धनुर्मीनकर्कटानां सत्त्वे घातो विनिर्दिशेत् । तुलालिवृषमेषानां घातो रजसि निश्चितम् २७ कन्यामिथुनसिंहानां कुम्भस्य मकरस्य च । घातस्तमसि वेलायां विपरीतं शुभावहम् ॥ २८ ॥

अब राशियों के घातगुण कहते हैं ॥

धनु मीन कर्क राशियों को सतोगुण घात है तुला वृश्चिक वृष मेष इनको रजोघात है २७ कन्या, मिथुन, सिंह, कुम्भ, मकर इनको तमोगुण घात है इनके विपरीत अर्थात् छोड़कर शुभ है ॥ २८ ॥

अथ राशीनां वर्णाः ॥

धनुष्कर्कटमीनाख्या गौरवर्णाः प्रकीर्तिताः । वृष मेषतुलाश्चैव वृश्चिकः श्यामवर्णकः २९ मिथुनो मकरः कुम्भः कन्या सिंहश्च कृष्णकः । गौरश्च म्रियते सत्त्वे श्यामवर्णो रजोगुणे ३० कृष्णास्तामसवेलायां म्रियते नात्र संशयः ॥

अब राशियों के वर्ण कहते हैं ॥

धनु, कर्क, मीन, राशि का गौरवर्ण है तथा वृष, मेष, तुला, वृश्चिक का श्यामवर्ण है २९ मिथुन, मकर, कुम्भ, कन्या, सिंह का कृष्णवर्ण है (फलम्) गौरवर्ण राशि को सतोगुण मृत्युकारक है तथा श्यामवर्ण को रजोगुण मृत्यु जानिये ३० वा कृष्णवर्ण को तमोगुण मृत्युकारक जानिये ॥

अथ मासेषु मुहूर्त्तव्यवस्थाज्ञानम् ॥

माघफाल्गुनचैत्रेषु वैशाखे श्रावणे तथा । नभस्य मासिवाराणां मुहूर्त्तानि यथा क्रमात् ॥ ३१ ॥

अब महीनों में मुहूर्त्तव्यवस्था कहते हैं ॥

माघ, फाल्गुन, चैत्र, वैशाख, श्रावण तथा भाद्रपद इन महीनों में रविवारादि मुहूर्त्त यथाक्रम से पूर्वोक्त प्रकार जानना ॥ ३१ ॥

अथ प्रोक्तमासेषु रव्यादिवारे क्रमेण दिनरात्रिरेखा ॥

रवौ नभःकेशवविघ्नराजो गोविन्दनामा नभश्चाखुगामी । रात्रौ नृसिंहो युगलं नभः पद्मलक्ष्मीशलम्बोदर रामसंज्ञो ३२ सोमे हरिर्विघ्नपतिः सुरेशः शून्यश्च गौरीसुतविष्णुसंज्ञौ । पद्मश्रिशायां खखविष्णुशून्यं युग्मं च नारायणविघ्ननाथौ ॥ ३३ ॥

अब इन महीनों में रव्यादिवारों में क्रम से रेखा कहते हैं दिन रात्रि विषय में ॥

एतवार के दिन प्रथम मुहूर्त्त में शून्यरेखा होती है फिर अमृतरेखा तीन मुहूर्त्ततक जानिये फिर चार मुहूर्त्ततक विघ्न-रेखा होती है फिर तीन मुहूर्त्ततक अमृतरेखा होती है फिर एक मुहूर्त्त में शून्यरेखा जानना शेष में विघ्नरेखा जानना तथा रात्रि को प्रथम तीन मुहूर्त्त में अमृतरेखा जानिये फिर दो मुहूर्त्ततक विघ्नरेखा जानना फिर एक मुहूर्त्त शून्यरेखा होतीहै बाद उसके एक मुहूर्त्त काल रेखा है फिर तीन मुहूर्त्त अमृत रेखा जानिये बाद उसके चार मुहूर्त्त तक विघ्नरेखा होती है फिर दो मुहूर्त्त तक अमृतसंज्ञा जानिये ३२(तथा) सोमवार के दिन प्रथम दो मुहूर्त्त अमृतरेखा है फिर चार मुहूर्त्त तक विघ्नरेखा जानिये फिर तीन मुहूर्त्त अमृतरेखा है बाद उसके एक मुहूर्त्त शून्य-रेखा है फिर चार मुहूर्त्ततक विघ्नरेखा जानना फिर दो मुहूर्त्त अमृतरेखा जानना (तथा) रात्रि को प्रथम मुहूर्त्त कालरेखा होती है फिर दो मुहूर्त्त शून्यरेखा जानना फिर दो मुहूर्त्त अ-मृतरेखा है फिर एक मुहूर्त्त शून्यरेखा होती है बाद उसके दो मुहूर्त्ततक विघ्नरेखा जानिये फिर चार मुहूर्त्ततक अमृतरेखा होती है शेष विघ्नरेखा जानना ॥ ३३ ॥

भौमे यमौ मारमणोऽथ युग्मं युग्मं हरिश्चैव गजान नश्च । नक्तं च विघ्नो द्विपदंमुकुन्दः पदत्रयं श्रीपतिख ज्ञभश्रीः ३४ बुधे धनुः कृष्णयमौ च सौरिः सिद्धिर्धनुः सौरियमौ च सिद्धिः । रात्रौ सुपर्णध्वज एव युग्मं नभो ऽथ दामोदरकुञ्जरास्यौ ॥ ३५ ॥

(तथा) मङ्गल के दिन प्रथम दो मुहूर्त्त कालरेखा है फिर चार मुहूर्त्त अमृतरेखा है फिर चार मुहूर्त्त विघ्नसञ्ज्ञा जानना फिर दो मुहूर्त्त अमृतरेखा जानना शेष विघ्नरेखा हैं (तथा)

रात्रि को प्रथम दो मुहूर्त्ततक विघ्नरेखा होती है फिर दो मुहूर्त्त कालरेखा जानना फिर तीन मुहूर्त्त अमृतरेखा है बाद उसके तीन मुहूर्त्ततक कालरेखा जानना फिर तीन मुहूर्त्ततक अमृत-रेखा है फिर दो मुहूर्त्ततक शून्यरेखा जानना फिर एक मुहूर्त्त अमृतरेखा होती है ३४ (तथा) बुधके दिन प्रथम दो मुहूर्त्त विघ्नरेखा होती है फिर दो मुहूर्त्त अमृतरेखा है फिर दो काल-रेखा है फिर तीन अमृतरेखा है फिर दो मुहूर्त्ततक विघ्नसञ्ज्ञा है फिर दो मुहूर्त्त अमृत जानिये बाद उसके दो मुहूर्त्ततक कालरेखा है शेष अमृतरेखा जानना (तथा) रात्रिको प्रथम पांच मुहूर्त्ततक अमृतरेखा होती है फिर दो मुहूर्त्त तक विघ्नरेखा जानना फिर एक मुहूर्त्त शून्यका होता है फिर चार मुहूर्त्त अमृतरेखा होती है शेष विघ्नरेखा जानना ॥ ३५ ॥

गुरौ गोपिनाथस्तथा विघ्नराजो नभः केशवःकुञ्जरा स्यस्तथैव । निशायां पदं नन्दजः सूर्यसूनुर्नभोमाधव श्चापमेकं हरिश्च ३६ शुक्रे कृष्णः स्याद्यमः खम्मुरारिर्गौ रीपुत्रः श्रीपतिः शून्यमेकम् । नक्तंकालः कंसहा खञ्च युग्मं पादद्वन्द्वोवामनः खञ्च पादौ ॥ ३७ ॥

बृहस्पतिके दिन प्रथम चार मुहूर्त्त अमृतरेखा है फिर चार विघ्नरेखा फिर एक मुहूर्त्त शून्यरेखा है फिर तीन मुहूर्त्त अमृत रेखा है शेष विघ्नरेखा जानिये (तथा) रात्रि को प्रथम एकमुहूर्त्त कालरेखा है फिर तीन मुहूर्त्त अमृतरेखा है फिर चार मुहूर्त्त काल-रेखा जानिये (तथा) फिर एक मुहूर्त्त शून्यसञ्ज्ञक है फिर तीन मुहूर्त्त अमृतरेखा जानना फिर दो मुहूर्त्ततक विघ्न है शेष अमृत जानना ३६ शुक्रके दिन प्रथम दो मुहूर्त्त अमृतरेखा है फिर दो मुहूर्त्त कालरेखा है फिर एक मुहूर्त्त शून्यरेखा है फिर तीन मुहूर्त्त अमृतरेखा जानना फिर चार मुहूर्त्त विघ्नसंज्ञक है फिर तीन मुहूर्त्त अमृतसंज्ञक है शेष शून्य जानिये (तथा) रात्रि को प्रथम

दो मुहूर्त्त कालरेखा है फिर तीन मुहूर्त्त अमृतरेखा है फिर एक शून्यहै फिर दो मुहूर्त्त विघ्नसञ्ज्ञक रेखा जानना फिर दो मुहूर्त्त कालरेखा होती है बाद इसके तीन मुहूर्त्ततक अमृतरेखा जानना फिर एक शून्यहै शेष कालरेखा जानिये ॥ ३७ ॥

शनौ पदं श्रीःखनभोनभःखं नारायणः खंहरिखं हरिश्च । रात्रौ च शून्यं यमयुग्ममाधवो खविघ्नराजौ नृहरिश्च पादौ ॥ ३८ ॥

शनैश्चर के दिन प्रथम एक मुहूर्त्त कालरेखा है फिर एक अमृतहै फिर चारतकशून्यहै फिर चार अमृतरेखाजाननाबाद उसके फिर एक शून्यसञ्ज्ञक है फिर दो मुहूर्त्त अमृतरेखा है फिर एक शून्यरेखा होती है शेष अमृतरेखा का वास जानना (तथा) रात्रि को प्रथम शून्यरेखा होती है फिर दो कालरेखा जानिये फिर तीन अमृतरेखा होती हैं बाद उसके एक शून्यरेखा जानिये फिर चारतक विघ्नसञ्ज्ञक जानिये फिर तीन अमृतरेखा होती हैं शेष कालरेखा जानना ॥ ३८ ॥

अथ प्रोक्तआश्विनकार्त्तिकादिमासेऽर्कादिवारेषुरेखाः ॥

अथाश्विने कार्त्तिकमार्गपौषे सूर्यादिवारेषु मुहूर्त्तरेखाः । नामाक्षराणां वचनप्रवृत्त्या विचारपूर्वं विबुधैर्विचिन्त्यम् ३९ सूर्ये नृसिंहो द्विपदश्चचापो हरिर्नभः खं पदमच्युतोंघ्रिः । रात्रौ पदश्चापखमच्युतश्च युग्मं यमौ विष्णुखसिद्धिसंज्ञौ ॥ ४० ॥

अब आश्विनकार्त्तिकादि महीनों के रविवारादि
दिन रात्रि में रेखा लिखते हैं ॥

आश्विन, कार्त्तिक, अगहन, पूष इन महीनों के रविवारादि मुहूर्त रेखा का विचार पूर्वाचार्य चिन्तवन करते हैं नाम के तथा वचन के प्रमाण से रेखा जानना अर्थात् रेखा के दूसरे

नाम में जे अक्षर होयँ तितने मुहूर्त तक वही रेखा जानिये तथा वचन अर्थात् जे प्रथम प्रधान नाम रेखों के कहि आये हैं उनमें से किसीका नाम पाठ में आवै तो एक मुहूर्त तक वही रेखा जानना तथा विघ्नरेखा धन्वाकार होती है इससे दो मुहूर्त तक वास करती हैं अर्थात् धन्वा की प्रत्यंचा दोनों असर अर्थात् दोनों तरफ से जुड़ा होता है इससे दो कोठों में स्थापित है ये व्याख्यान ऊपर से जानना ३६ रविवार के दिन जो प्रथम तीन मुहूर्त्त तक अमृतरेखा है फिर दो मुहूर्त्त तक कालरेखा है फिर दो मुहूर्त तक विघ्नरेखा जानिये फिर दो अमृतरेखा हैं बाद उसके दो मुहूर्त्त शून्यरेखा वास करती हैं फिर एक मुहूर्त्त कालरेखा है फिर तीन मुहूर्त अमृतरेखा होती है शेष कालरेखा जानिये ॥ तथा रात्रि को प्रथम कालरेखा एक मुहूर्त्त तक होती है फिर दो मुहूर्त्त तक विघ्नरेखा है फिर एक मुहूर्त्त शून्यरेखा का होता है फिर तीन मुहूर्त अमृतरेखा जानना फिर दो मुहूर्ततक विघ्नरेखा जानिये फिर दो मुहूर्त तक कालरेखा है फिर दो मुहूर्त अमृतरेखा है फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा का होता है शेष अमृत जानिये ॥ ४० ॥

सोमेंग्निचापङ्क्तनभोमुकुन्दोनभश्च युग्मं हरिखं हरिश्च । पदं निशायां खयुगं मुरारिर्विनायको विष्णुनभश्च विष्णुः ४१ भौमे तथेभास्यनभोऽथविष्णुर्नभोयुगं गोपतिखं गणेशः । नक्तं गजेन्द्रास्यखमच्युतञ्च युग्मञ्च शून्यं नृहरिश्च शून्यम् ॥ ४२ ॥

सोमवार के दिन प्रथम कालरेखा होती है फिर दो मुहूर्त तक विघ्नरेखा जानिये फिर दो मुहूर्ततक शून्यरेखा जानना फिर तीन मुहूर्ततक अमृत रेखा जानना फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा है फिर दो मुहूर्ततक विघ्न रेखा जानना फिर दो मुहूर्त अमृतरेखा होती है फिर एकमुहूर्त शून्यरेखा है शेष अमृतरेखा

जानना ४१ मङ्गल के दिन प्रथम चार मुहूर्त तक विघ्न रेखा जानिये फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा होती है फिर दो मुहूर्त अमृत संज्ञक है फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा मानिये फिर दो मुहूर्त विघ्नरेखा है बाद उसके तीन मुहूर्त अमृतरेखा के होते हैं फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा जानिये शेष विघ्नरेखा होती हैं ॥ तथा रात्रि को प्रथम चार मुहूर्त तक विघ्नरेखा होती है फिर एक मुहूर्त शून्य है फिर तीन मुहूर्त तक अमृतरेखा होती है फिर दो मुहूर्त तक विघ्नरेखा जानिये फिर एक मुहूर्त शून्य रेखा होती है फिर तीन मुहूर्त अमृतरेखा के होते हैं शेष विघ्न-रेखा जानना ॥४२॥

बुधे धनुः श्रीपतिपादयुग्मं नारायणः स्याद्गणनाथ सिद्धिः । रात्रौ तु कालौ हरिशून्यकाला गोविन्दगौरी सुतशून्यसिद्धिः ४३ गुरौ हरिः शून्ययुगं सुरेशाः श्रीविघ्न राजो गगनन्तथाश्रीः । निश्यङ्घ्रिदैत्यारिखकार्मुकञ्च पदे मुरारिः खयुगं पुनः श्रीः ॥४४॥

बुधके दिन प्रथम दो मुहूर्त विघ्नरेखा है फिर तीन अमृत जानिये फिर दो मुहूर्त कालरेखा जानना फिर चार मुहूर्त अमृत-रेखा के होतेहैं बाद उसके चार मुहूर्ततक विघ्नसंज्ञक जानिये शेष शून्यरेखा होती है ॥ तथा रात्रि को प्रथम दो मुहूर्त काल-रेखा के होते हैं फिर दो मुहूर्त अमृतरेखा के जानिये फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा का होता है फिर दो मुहूर्त कालरेखा जानिये फिर तीन मुहूर्ततक अमृतरेखा जानना फिर चार मुहूर्ततक विघ्नरेखा जानना फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा का होता है शेष अमृतरेखा जानिये ४३ बृहस्पति के दिन प्रथम दो मुहूर्त अमृतरेखा जानना फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा होती है फिर दो मुहूर्त तक विघ्नरेखा जानना फिर चार मुहूर्त अमृतरेखा होती है फिर चार मुहूर्ततक विघ्नरेखा जानिये बाद उसके दो मुहूर्त

शून्यरेखा के होते हैं शेष अमृत मानिये ॥ तथा रात्रि को प्रथम एक मुहूर्त तक काल का वास होताहै फिर तीन मुहूर्ततक अमृतरेखा होती है फिर एक शून्यसंज्ञक होताहै फिर दो मुहूर्त तक विघ्नरेखा होती है बाद उसके दो मुहूर्ततक कालरेखा मानिये फिर तीन मुहूर्त तक अमृतरेखा वास करती है फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा का होता है फिर दो मुहूर्त विघ्नसंज्ञक जानिये शेष अमृतसंज्ञक रेखा वास करती है ॥ ४४ ॥

शुक्रे मृतश्चापमरिन्दमश्च लम्बोदरः केशवशून्यपादम्। नक्रश्च युग्मं नृहरिः खयुग्मं नृसिंहयुग्मं गगनश्च युग्मम् ४५ शनौपदंश्रीर्नभोनकृष्णः खंश्रीपदं विष्णु नभोहरिः पत् । रात्रौ पदं खं पदनन्दसूनुर्गजाननौ गोपतिशून्यपादाः ॥ ४६ ॥

शुक्र के दिन प्रथम एक मुहूर्त अमृतरेखा होती है फिर दो मुहूर्त विघ्नरेखा जानिये फिर चार मुहूर्ततक अमृतरेखा वास करती है फिर चार मुहूर्ततक विघ्नसंज्ञक जानिये फिर तीन मुहूर्त अमृतरेखा जानिये फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा होती है शेष कालसंज्ञक जानिये ॥ तथा रात्रि को प्रथम दो मुहूर्त तक विघ्नसंज्ञकरेखा वासकरती है फिर तीन मुहूर्ततक अमृतरेखा होती है फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा जानिये फिर दो मुहूर्त विघ्नसंज्ञक होते हैं फिर तीन मुहूर्ततक अमृतरेखा वास करती है फिर दो मुहूर्त विघ्नरेखा जानना फिर एक मुहूर्ततक शून्यरेखा होतीहै शेष विघ्नरेखा जानिये ४५ शनैश्चर के दिन प्रथम एक मुहूर्त कालरेखा का होता है फिर एक मुहूर्त अमृत रेखा होती है फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा होती है फिर एक मुहूर्त अमृतरेखा जानना फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा जानना फिर दो मुहूर्त अमृतरेखा के होते हैं फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा जानिये फिर एक मुहूर्त अमृतरेखा होती है फिर एक मुहूर्त कालरेखा

का होताहै बाद इसके दो मुहूर्त अमृतरेखा होती है फिर एक मुहूर्त शून्यरेखाका होताहै फिर दो मुहूर्त अमृतरेखा मानिये शेष कालरेखा जानिये ॥ तथा रात्रि को प्रथम एक मुहूर्त कालरेखा वास करती है फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा का होता है फिर एक मुहूर्त कालरेखा जानना फिर चार मुहूर्त अमृतरेखा वास करती है फिर चार मुहूर्त विघ्नरेखा के होते हैं फिर तीन मुहूर्त अमृतरेखा जानियें फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा का होताहै शेष कालरेखा जानिये ॥ ४६ ॥

अथ ज्येष्ठाषाढमलमासेषुरव्यादिवारेमुहूर्त्तरेखाः ॥

ज्येष्ठमासे तथाषाढे तथा वै मलमासके । सूर्यादिवारे संशोध्याः क्रमशो नामभादिमे ४७ अर्के शून्ये च कृष्णो युगपदयुगलं खं हरिर्विष्णुचापं रात्रौ लक्ष्मीशयुग्मं युगलहरियुगंयुग्मकृष्णाश्चशून्यम् । सोमे चापद्वयंनोन्हरिखयुगलंपीतवासाश्चशून्यं चापं द्वन्द्वं निशायामजपद्खमजं चापपद्मेशपादाः ॥ ४८ ॥

अब ज्येष्ठ आषाढ़ तथा मलमासमें कार्य्य के निमित्त रेखा लिखते हैं ॥

ज्येष्ठमास तथा आषाढ़मास वा मलमास में रविवारादि क्रम से नाम की राशि से द्विघटिका मुहूर्त शोधन करै ४७ एतवारके दिन प्रथम दो मुहूर्ततक शून्यरेखा है फिर दो मुहूर्त अमृतरेखा जानिये फिर दो मुहूर्त तक विघ्नरेखा होती है फिर एक मुहूर्त कालरेखा है फिर दो मुहूर्त तक विघ्नरेखा जानिये फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा का होता है फिर चार मुहूर्त अमृतरेखा है शेष विघ्नसंज्ञक जानिये ॥ तथा रात्रि को प्रथम तीन मुहूर्ततक अमृतरेखा बसती है फिर चार मुहूर्ततक विघ्नसंज्ञक जानिये फिर दो मुहूर्त अमृतरेखा होती है फिर चार मुहूर्ततक विघ्नसंज्ञक मानिये उपरान्त इसके दो मुहूर्ततक अमृतरेखा

है शेष शून्यरेखा जानना ॥ तथा सोमवार के दिन प्रथम चार मुहूर्ततक विघ्नरेखा वास करती है फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा है फिर तीन मुहूर्त अमृतरेखा जानिये फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा का होता है उपरान्त इसके दो मुहूर्ततक विघ्नसंज्ञक वास करती है फिर चार मुहूर्त तक अमृतरेखा मानिये शेष शून्य-रेखा जानिये ॥ तथा रात्रि को प्रथम चार मुहूर्ततक विघ्नरेखा बसती है फिर दो मुहूर्त तक अमृतरेखा का वास जानना फिर एक मुहूर्त कालरेखा होती है फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा जानिये फिर दो मुहूर्त अमृतरेखा होती है फिर दो मुहूर्ततक विघ्न-संज्ञक जानिये फिर तीन मुहूर्त अमृतरेखा होती है शेष काल-रेखा जानना ॥ ४८ ॥

भौमेशून्ये च कृष्णो युगगगनहरिश्शौरिचापानि सि द्धिर्नक्तं युग्मं द्विशून्यं युगयुगलपदं श्रीखचापं हरिश्च । सौम्ये श्रीविघ्ननाथोऽथ हरिगणपतिः पद्मनाभश्च पादौ दोषायां सिद्धियुग्मं हरिखगजमुखाः कृष्णशून्ये च कृष्णः ४९ जीवे विष्णुश्च चापो गगनमजितखश्चाङ्घ्रि पादौ नृसिंहो रात्रौ नो खं सुरारिर्गगनयुगगजो विष्णुचा पाङ्घ्रियुग्मम् । शुक्रे युग्मं सुरारिर्गगनयुगगजो राम च्चापोऽथ पादौ तद्रात्रौ युग्मगोपीपतियुगगगनं श्रीवरः खरूपदे श्रीः ॥ ५० ॥

तथा मङ्गलके दिन प्रथम दो मुहूर्ततक शून्यरेखा जानिये फिर दो मुहूर्त अमृतरेखा होतीहै फिर दो मुहूर्ततक विघ्नसंज्ञक मानिये फिर एकमुहूर्त शून्यसंज्ञक जानिये फिर दोमुहूर्त अमृत-रेखा होतीहै फिर छः मुहूर्ततक विघ्नरेखा जानिये शेष अमृत मानिये ॥ तथा रात्रि को प्रथम चार मुहूर्ततक विघ्नरेखा वास करती है फिर एक मुहूर्ततक शून्यरेखा है फिर चार मुहूर्ततक

विघ्नरेखा जानिये फिर एकमुहूर्ततक कालरेखा होतीहै उपरान्त एकमुहूर्त तक अमृतरेखा जानिये फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा का होता है फिर दो मुहूर्ततक विघ्नरेखा जानना शेष अमृत जानिये ॥ तथा बुध के दिन प्रथम एक मुहूर्त अमृतरेखा होती है फिर चार मुहूर्ततक विघ्नरेखा जानिये फिर दोमुहूर्त अमृत-रेखा के होते हैं फिर चारमुहूर्त विघ्नरेखा वास करती है फिर चार मुहूर्त तक अमृतरेखा जानना शेष कालरेखा होती है ॥ तथा रात्रि को प्रथम अमृतरेखा वास करती है फिर दो मुहूर्त तक विघ्नरेखा वास करती है फिर दो मुहूर्ततक अमृतरेखा जानिये फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा होती है फिर चार मुहूर्ततक विघ्नरेखा जानिये फिर दो मुहूर्त तक अमृतरेखा होती है फिर दो मुहूर्ततक शून्यरेखा जानिये शेष अमृतरेखा होती हैं ४६ बृहस्पति के दिन प्रथम दो मुहूर्ततक अमृतरेखा वास करती है फिर दो मुहूर्त विघ्नरेखा बसती है फिर एक मुहूर्त शून्य होती है तीनमुहूर्त अमृतरेखा जानिये फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा होती है उपरान्त इसके चारमुहूर्ततक कालसंज्ञक जानिये शेष अमृतमानिये ॥ तथा रात्रि को प्रथम दोमुहूर्ततक शून्य-रेखा है फिर तीन मुहूर्ततक अमृतरेखा जानना फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा होतीहै फिर चार मुहूर्त तक विघ्नरेखा बसती है उपरान्त इसके दो मुहूर्त तक अमृतरेखा जानना फिर दो मुहूर्त विघ्नरेखाके होतेहैं शेष कालसंज्ञक जानिये॥ शुक्र के दिन प्रथम दो मुहूर्ततक विघ्नरेखा जानना फिर तीन मुहूर्त तक अमृतरेखा जानिये फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा का होताहै बाद इसके चार मुहूर्त तक विघ्नरेखा होतीहै फिर दो मुहूर्ततक अमृतरेखा जानना फिर दो मुहूर्ततक विघ्नरेखा होती है शेष कालसंज्ञक जानिये ॥ तथा रात्रि को प्रथम दो मुहूर्ततक विघ्न-रेखा होती है फिर चार मुहूर्त तक अमृतरेखा होतीहै फिर दो मुहूर्त तक विघ्नरेखा जानिये फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा होतीहै

फिर तीन मुहूर्ततक अमृतरेखा जानिये उपरान्त इसके एक मुहूर्ततक शून्यरेखा जानना फिर दो मुहूर्ततक कालरेखा होती है शेष अमृत जानिये ॥ ५० ॥

मन्दे श्रीयुग्मसिद्धिः खहरिहरिनभः सौरि खंसिद्धि खं वा नक्तं श्रीयुग्मसिद्धिः खखयुगलहरिव्योमगोविन्द शून्यम् ॥

इति मासव्यवस्थाज्ञातव्या ॥

शनैश्चरके दिन प्रथम मुहूर्त अमृतरेखा वास करती है फिर दो मुहूर्ततक विघ्नसंज्ञक रेखा होती है फिर दो मुहूर्ततक अमृतरेखा होती है फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा का होता है फिर चार मुहूर्त अमृतरेखा जानिये उपरान्त इसके एक मुहूर्त शून्यरेखा होती है फिर दो मुहूर्ततक अमृतरेखा जानना फिर एक मुहूर्ततक शून्यरेखा वास करती है फिर एक मुहूर्ततक अमृतरेखा होती है शेष शून्यरेखा जानिये ॥ तथा रात्रि को प्रथम एक मुहूर्ततक अमृतरेखा होती है फिर दो मुहूर्ततक विघ्नरेखा होती है फिर दो मुहूर्ततक अमृतरेखा जानिये फिर दो मुहूर्ततक शून्यरेखा होती है फिर दो मुहूर्ततक विघ्नरेखा जानिये फिर दो मुहूर्त अमृतरेखा वास करती है उपरान्त इसके एक मुहूर्त शून्यरेखा होती है फिर तीन मुहूर्ततक अमृतरेखा जानिये शेष शून्यसंज्ञक जानना ॥

इति मासव्यवस्था समाप्ता ॥

रुद्रप्रोक्तमिदं ज्ञानं शिवायै रुद्रयामले । गोपनीयं प्रयत्नेन सद्यः प्रत्ययकारकम् ॥ ५१ ॥

इति प्रकीर्णकेशिवद्विघटिकासमाप्ता ॥

इति श्रीमत्पण्डितसूर्यनारायणत्रिपाठिविरचितेज्योतिस्सार संग्रहेमुहूर्तप्रकरणं द्वितीयं समाप्तम् ॥

यह द्विघटिका मुहूर्त का ज्ञान रुद्रयामलग्रन्थ में श्रीमहादेव

जी ने श्रीपार्वतीजी से वर्णन किया है सो इसे यत्नसे गुप्तराखै शीघ्र सिद्धिकारक है ॥ ५१ ॥

इति श्रीसूर्यनारायणकृतेभाषाटीकायांद्विघटिका मुहूर्त्तसमाप्तम् ॥

अथ द्विघटिकामुहूर्त्तचक्राणांप्रारम्भः ॥

तत्रादौ षोडशमुहूर्त्तचक्रम् ॥

मु.	फ.
सावित्र	विद्यारम्भः
भार्गव	स्त्रीसेवनं
सौम्य	सभाप्रवेशः
याम्य	मारणकर्म्म
दिन	यंत्रचालनं
विभीषण	शुभकार्यं
वालव	युद्धकार्यं
रावण	वैरकार्यं
अभिजित्	ग्रामप्रवेशः
तुरग	शस्त्रसाधनं
वैरोचन	राजगद्दीशुभम्
जयदेव	सर्वकार्यसिद्धिः
चार्वद्र	स्तम्भनं
मैत्र	स्नानदानादि
श्वेत	कुंजरबंधनं
रौद्र	रौद्रकार्यं

अथ वारपरत्वेमुहूर्त्तोदयचक्रम् ॥

वार	मुहूर्त्तोदयः
शनि	याम्य
शुक्र	विभीषण
गुरु	रावण
बुध	तुरदेव
भौम	जयदेव
चन्द्र	मैत्र
रवि	रौद्र

अथ वारपरत्वेगुणोदयचक्रंफलंच ॥

र.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.	वार
तमोगुण	सतोगुण	रजोगुण	तमोगुण	सतोगुण	रजोगुण	तमोगुण	गुणोदयः
अशुभ कर्म	सिद्धिः	धन सम्पत्ती	अशुभ कर्म	सिद्धिः	धन सम्पत्ती	अशुभ कर्म	फलम्

अथ रेखाज्ञानचक्रम् ॥

अमृत	काल	विघ्न	शून्य	रेखा
सिद्धिकर	मृत्युकर	विघ्नकर	कार्यहानि	फल
श्रीविष्णुअमृत सिद्धि	मृत्युपादयम काल	विघ्नधनुःयुग्म गणाधिप	शून्यनभखअभ्र	संज्ञा

अथ राशीनां गुणाघातचक्रम् ॥

तथा गुणराशिवर्णज्ञानं घातचक्रं च ॥

सतोगुण	रजोगुण	तमोगुण	गुणाः
गौरं	श्यामं	कृष्णं	वर्णाः
धनु मीन कर्क	तुला वृष मेष वृश्चिक	कन्या सिंह मिथुन कुम्भ मकर	घातलग्नं
गौरवर्ण	श्यामवर्ण	कृष्णवर्ण	घातवर्णाः

अथ रविवारादिमुहूर्तचक्रं तत्रादौ रविदिने नाम राशिनः सोध्यानि मासभेदेन ज्ञातव्यम् ॥

रौद्र	श्वेत	मैत्र	चारभट	सावित्र	वैराज	तुरग	अभिजित	रावण	बालव	विभीषण	सुनन्दन	याम्य	सौम्य	भार्गव	सावित्री	मुहूर्त
त.	न.	स.	स.	र.	र.	त.	त.	स.	स.	र.	र.	त.	न.	स.	स.	गुण
०	ऽ	ऽ	ऽ	⌒		⌒		ऽ	ऽ	ऽ	०	⌒		⌒		माघ। फाल्गुन। चैत्र। वैशाख। श्रावण। भाद्र
ऽ	ऽ	ऽ	ψ	ψ	⌒		ऽ	ऽ	०	०	ψ	ऽ	ऽ	ऽ	ψ	आश्विन। कार्तिक। मार्गशीर्ष। पौष
०	०	ऽ	ऽ	⌒		ψ	⌒		०	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	⌒		ज्येष्ठ। आषाढ। मलमास

अथ रविराशिचक्रम् ॥

श्व.	मै.	चा.	ज.	वै.	तु.	अ.	रा.	वा.	वि.	सु.	या.	सौ.	भा.	सा.	रौ.	मु.
र.	र.	त.	त.	स.	स.	र	र.	त.	त.	स.	स.	र.	र.	त.	त.	गु.
ऽ	ऽ	ऽ	⌒		०	ψ	ऽ	ऽ	ऽ	⌒		⌒		ऽ	ऽ	माघ। फाल्गुन। चैत्र। वैशाख। श्रावण। भाद्रपद
ψ	⌒		०	ऽ	ऽ	ऽ	⌒		ψ	ψ	ऽ	ऽ	०	ऽ	ऽ	आश्विन। का.। मार्ग. पौ.
ऽ	ऽ	ऽ	⌒		⌒		ऽ	ऽ	⌒		⌒		ऽ	ऽ	०	ज्येष्ठ। आषाढ। मलमास

अथ चन्द्रदिने मुहूर्त्तम॥

मै·	चा·	ज·	वै·	तु·	अ·	रा	वा·	वि·	सु·	या·	सौ·	भा·	सा·	रौ·	प्वे·	मु·
स·	स·	र·	र·	त·	त·	स·	स·	र·	र·	त·	त·	स·	स·	र·	र·	गु·
ऽ	ऽ	⌒		⌒		ऽ	ऽ	ऽ	०	⌒		⌒		ऽ	ऽ	माघ। फा· चै·। वै·। आ·। भा·
ष	⌒		०	०	ऽ	ऽ	ऽ	०	⌒		ऽ	ऽ	०	ऽ	ऽ	आश्विन। का·। मार्ग· पौ·
⌒		⌒		०	ऽ	ऽ	ऽ	०	⌒		ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	०	ज्ये·। आ· षाढ़। मल मास

अथ चन्द्र रात्रौ मुहूर्त्तम॥

चा·	ज·	वै·	तु·	अ·	रा·	वा·	वि·	सु·	या·	सौ·	भा·	स·	रौ·	पूवे	मै·	मु·
त·	त·	स·	स·	र·	र·	त·	त·	स·	स·	र·	र·	त·	त·	स·	स·	गु·
ष	०	०	ऽ	ऽ	०	⌒		ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	⌒		⌒		माघ। फा· चै·। वै·। आ·। भा·
ष	०	⌒		ऽ	ऽ	ऽ	⌒		⌒		ऽ	ऽ	०	ऽ	ऽ	आश्विन। का·। मार्ग· पौ·
⌒		⌒		ऽ	ऽ	ष	०	ऽ	ऽ	⌒		ऽ	ऽ	ऽ	ष	ज्ये·। आ· षाढ़। मल मास

अथभौमदिनेमुहूर्त्तचक्रम् ॥

ज०	वै०	तु०	अ०	रा०	वा०	वि०	सु०	या०	सौ०	भा०	सा०	रौ०	श्वे०	मै०	चा०	मु०
र०	र०	न०	न०	स०	स०	र०	र०	न०	न०	स०	स०	र०	र०	न०	न०	गु०
ω	ω	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	⌒		⌒		ऽ	ऽ	⌒		⌒		माघ । फा० चै० । वै० । ज्या० । भा-द्रपद
⌒		⌒		०	ऽ	ऽ	०	⌒		ऽ	ऽ	ऽ	०	⌒		आश्विन । का० । मार्ग० पौ०
०	०	ऽ	ऽ	⌒		०	ऽ	ऽ	⌒		⌒		⌒		ऽ	ज्ये० । आ-षाढ़ । मल मास

अथभौमरात्रौचक्रम् ॥

वै०	तु०	अ०	रा०	वा०	वि०	सु०	या०	सौ०	भा०	सा०	रौ०	श्वे०	मै०	चा०	ज०	मु०
स०	स०	र०	र०	न०	न०	स०	स०	र०	र०	न०	न०	स०	स०	र०	र०	गु०
⌒		ω	ω	ऽ	ऽ	ऽ	ω	ω	ω	ऽ	ऽ	ऽ	०	०	ऽ	माघ । फा० चै० । वै० । आ० भाद्रपद
⌒		⌒		०	ऽ	ऽ	ऽ	⌒		०	ऽ	ऽ	ऽ	⌒		आश्विन का० । मार्ग० पौ०
⌒		⌒		०	⌒		⌒		ω	ऽ	०	⌒		ऽ	ऽ	ज्ये० । आ० षाढ़ । मल मास

अथ शुक्रादिने मुहूर्त्तचक्रम्॥

वि·	सु·	या·	सौ·	भा·	सा·	रौ·	ब्रह्मे·	मै·	चा·	ज·	वै·	तु·	अ·	रा·	वा·	मु·
र·	र·	न·	न·	स·	स·	र·	र·	न·	न·	स·	स·	र·	र·	न·	न·	गु·
ऽ	ऽ	ψ	ψ	०	ऽ	ऽ	ऽ	⌒		⌒		ऽ	ऽ	ऽ	०	माघ।फा·चै·।वै·। आ·।भा·
ऽ	⌒		ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	⌒		⌒		ऽ	ऽ	ऽ	०	ψ	आश्विन का·।मार्ग· पौ·
⌒		ऽ	ऽ	ऽ	०	⌒		⌒		ऽ	ऽ	⌒		ψ	ψ	ज्ये·।आ· षाढ़।मल मास

अथ शुक्ररात्रौ मुहूर्त्तचक्रम्॥

सु·	या·	सौ·	भा·	सा·	रौ·	ब्रह्मे·	मै·	चा·	ज·	वै·	तु·	अ·	रा·	वा·	वि·	मु·
स·	स·	र·	र·	न·	न·	स·	स·	र·	र·	न·	न·	स·	स·	र·	र·	गु·
ψ	ψ	ऽ	ऽ	ऽ	०	⌒		ψ	ψ	ऽ	ऽ	ऽ	०	ψ	ψ	माघ·।फा· चै·।वै·। आ·।भा· आश्विन
⌒		ऽ	ऽ	ऽ	०	⌒		ऽ	ऽ	ऽ	⌒		०	⌒		का·।मार्ग पौ·
⌒		ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	⌒		०	ऽ	ऽ	ऽ	०	ψ	ψ	ऽ	ज्ये·।आ· षाढ़।मल मास

अथ शनि दिन मुहूर्त्तचक्रम् ॥

घा·	सौ·	मा	सा·	रौ·	श्वे·	मै·	चा·	ज·	वै·	तु·	अ·	रा·	वा·	वि·	सु·	मु·
त·	त·	स·	स·	र·	र·	त·	त·	स·	स·	र·	र·	न·	त·	स·	स·	गु·
ঔ	δ	०	०	०	०	δ	δ	δ	δ	०	δ	δ	०	δ	δ	माघ·।फा· चै·।वै·। श्रा·।भा·
ঔ	δ	०	δ	०	δ	δ	०	δ	ঔ	δ	δ	०	δ	δ	ঔ	आश्विन का·।मार्ग पौ·
δ	⌒		δ	δ	०	δ	δ	δ	δ	०	δ	δ	०	δ	ঔ	ज्ये·।आ· षाढ़।मल मास

अथ शनि रात्रौ मुहूर्त्तचक्रम् ॥

सौ·	मा·	सा·	रौ·	श्वे·	मै·	चा·	ज·	वै·	तु·	अ·	रा·	वा	वि	सु·	या·	मु·
र·	र·	त·	त·	स·	स·	र·	र·	त·	त·	स·	स·	र·	र·	त·	त·	गु·
०	ঔ	ঔ	δ	δ	δ	०	⌒		⌒		δ	δ	δ	ঔ	ঔ	माघ·।फा· चै·।वै·। श्रा·।भा·
ঔ	०	ঔ	δ	δ	δ	δ	⌒		⌒		δ	δ	δ	०	ঔ	आश्विन· का·।मार्ग पौ·
δ	⌒		δ	δ	०	०	⌒		δ	δ	०	δ	δ	δ	०	ज्ये·।आ· षाढ़।मल मास

इति श्री सूर्य्यनारायण त्रिपाठि विरचिते ज्योतिस्सार संग्रहे भाषा टीकायां मुहूर्त्त प्रकरणं द्वितीयं समाप्तम् ॥२॥

अथ वर्ष प्रवेश ज्ञानम्।

सपादमर्द्धं साद्धं च त्रिःस्थानस्थं गताब्दकम्। वारनाडीपलैस्स्वद्ध जन्मवारादि संयुतम् ॥१०॥

गत वर्षको तीन जगह स्थापित करै प्रथम को सवाई करै वो बार जानिये दूसरे अङ्क को आधा करैवे घड़ी होती हैं तीसरे अङ्क को डयोढ़ा अङ्क करै वे पल होते हैं तिन में जन्मवारादि को जोड़ने से वर्ष के इष्ट बारादिक होते हैं १॥ तत्रोदाहरणं ॥ गत वर्ष २० बीस को सवाई किया तो पच्चीस हुए २५। बीस को आधा किया तो दश भये १०। फिर बीस को ड्योढ़ा किया तो तीस भये ३०। सो क्रम से तीनों अङ्क बार घड़ी नक्षत्र जानना २५। १०। ३०। बार सात से अधिक हैं तिस कारण से सात का भाग प्रथम अंक में दिया तो शेष रहे चार ४ अब शुद्ध ध्रुवा भया ४। १०। ३०॥ ये बीस वर्ष के गताब्द का ध्रुवा है जानना तथा पल जब साठि से अधिक होयँ तब साठि का भाग लेकर शेषांक पलों की जगह में रखना लब्धाङ्क को घड़ी के अङ्क में शामिल करना और घड़ी जो साठि से अधिक होयँ तो उसमें साठि का भाग देकर शेषाङ्क को घड़ी की जगह रखना और लब्धाङ्क को वारों के अङ्क में जोड़ देना तथा वारों का अङ्क सात से ज़ियादह होय तो सात से भाग लेकर शेषाङ्क को बार की जगह रखना और लब्धाङ्क को छोड़ देना तब शुद्ध ध्रुवा बनने गा तिस में जन्म वारादिक जोड़ देना तिस में भी यही क्रिया से अङ्क को चढ़ाय लेना तब वर्ष प्रवेश के इष्ट बारादिक शुद्ध होवेंगे अपना अङ्क चढ़ाने का बिलम न होय क्यों न

आपने प्रमाण के भीतर होय तो वही शुद्ध जानिये तथा गतवर्ष को सवाई करनेसे कुछ घड़ी आवैं तो वे घड़ी घड़ी के अङ्क में जोड़देना अर्थात् दूसरी जगह जिसको आधा कियाहै वही घड़ी का अङ्क है उसीमें वो अङ्क जोड़देना तथा घड़ी के अङ्क में जो अङ्क अधिक आवे सो वारके अङ्कमें जोड़देना अर्थात् जिसे ड्योढ़ा कियाहै वही पलका अङ्कहै और जो पलसे अधिक होय सो विपल की जगह स्थापित करना तिसका उदाहरण देखाते हैं गतवर्ष ११ सवाई करनेसे पौनेचौंदह भये १३॥। तिनके तेरह वार आये और तीन पाइनकी पैंतालीस घड़ी भई तो तेरह पैंतालीस स्थापित किये १३ । ४५ फिर वही गताब्द को आधा किया तो साढ़े पांच भये सो पैंतालीस में जोड़ें तो साढ़ेपचास भये ५०॥ इस अङ्क की पचास घड़ी भई और दो पाइन के तीस पल भये ३० तो अब ये अङ्क वारादिक स्थापित किया तो तेरह, पचास, तीस भये १३ । ५० । ३० अब उसी गताब्द को ड्योढ़ा किया तो साढ़ेसोलह भये १६॥ सोलह पल पाये और दो पाइन के तीस विपल भयेसो पल पलों में जोड़ने से छियालिस ४६ पल भये बाद उसके ऊपर तीस विपल भये ३० तो अब क्रम से अङ्क स्थापित किया तो ध्रुवाङ्क भया १३।५० । ४६ । ३० ये वारादिक भये तिसमें प्रथमवार के अङ्क में तेरह हैं तिसमें सात का भाग लिया तो शेष वचे छः तो शुद्ध ध्रुवाभया ६ । ५० । ४६ । ३० इसीमें जन्म वारादिक जोड़नेसे इष्टवारादिक होयँगे तथा जन्म के सूर्यों के समान वर्ष के सूर्य देखना उतने सूर्यों पर वर्ष प्रवेश होगा तथा इष्टवार वही सूर्यों पर मिलैगा ॥ १ ॥

अथेष्टसमयेचन्द्रंहित्वा सूर्यादिग्रहस्पष्टसाधनम् ॥

गतैष्यदिवसाद्येन गतिर्निघ्नीखषट्हृता । लब्धमंशादिकं शोध्यं योज्यं स्पष्टो भवेद्ग्रहः १ इष्टकालो यदाग्रे

स्यात्प्रस्तारं शोधयेत्तदा । अग्रे प्रस्तारकश्चेत्स्यादिष्टं संशोधयेत्तथा ॥ २ ॥

चालकके दिनादिक गत वा एष्य होयँ तिन्हैं गोमूत्रिका गणित से ग्रह की गतिसे गुणै तथा विगति से भी वारादिक गुणै तिन्हैं साठिसे चढ़ाय कर दोनोंके अङ्कमें फिर साठिका भाग देइ लब्ध अंशादिक मिलैंगे सो जिस पंक्तिसे चालक बनायाहै उसी पंक्ति के ग्रहों में घटाना जोड़ना क्रमसे अर्थात् गत-चालक होय तो घटाय देना और एष्य होय तो जोड़देना तो स्पष्ट ग्रह बनजायगा तथा वक्री ग्रह को विलोम जानिये अर्थात् जोड़ना होय तो घटाय देना और घटाना होय तो जोड़ देना १ अब चालक स्पष्ट लिखते हैं प्रस्तार से इष्टकाल आगे होय तो इष्टकाल के वारादिकों में प्रस्तार के वारादिक घटायदेना तब एष्यचालक बनेगा तथा प्रस्तार आगे होय और इष्टकाल प्रथम होय तो प्रस्तारके वारादिकों में इष्टके वारादिक घटावने से गतचालक बनेगा अथवा वार में वार न घटिसकै तो सात और जोड़कर घटाय देना वा घड़ी घड़ीमें न जाय तो एक अङ्क वारसे उतारलेना इसी प्रकार पल न घट सकै तो एक अङ्क घड़ी से उतारलेना ॥ २ ॥

अथ चन्द्रस्पष्टज्ञानम् ॥

खषट् ६० घ्नं भयातं भभोगोद्धृतं तत्खतर्कघ्न ६० धिष्ण्येषु युक्तं द्विनिघ्नम् । नवाप्तं शशीभागपूर्वस्तु भुक्तिः खखाभ्राष्टवेदा ४८००० भभोगेन भक्ताः ॥ १ ॥

इष्टसमयके भयात को साठि से गुणाकरना और भभोग का भाग लेना लब्ध जो मिलै तिसमें अश्विन्यादि गतनक्षत्र साठि से गुणाकर जोड़ देना उस अङ्क को दूना करना उसमें नव का भाग लेना लब्ध जो मिलै सो स्पष्ट चन्द्रमा के अंशादिक

जानना तथा अंश तीससे अधिक होयँ तो तीस का भाग देने से जो लब्ध मिलै सो राशि जानना अब गतिसाधन लिखते हैं अड़तालीस हजार ४८००० में भभोग का भागदेनेसे लब्धगति मिलेगी शेषाङ्क को साठिसे गुणाकरके फिर भभोग के भाग देने से विगति जानिये ॥ १ ॥

अथ भभोगभयातज्ञानम् ॥

गतर्क्षनाड्यः खरसेषु शुद्धाः सूर्योदयादिष्टघटीषु युक्ताः । भभुक्तमेतच्च निजर्क्षनाडिकाः शुद्धासुयुक्ताश्च भभोगसंज्ञकाः ॥ १ ॥

गतनक्षत्रकी घड़ी साठिमें घटाय देना उसमें जो सूर्योदय से इष्टघड़ी होय सो जोड़देना सो भयात होताहै और साठि में जो घटाभया नक्षत्र है उसमें वर्त्तमान नक्षत्र की घटी जोड़ने से भभोग होगा १ अब और भभोग का क्रम लिखते हैं जो नक्षत्र का अवम भयाहोय तो गतनक्षत्र अवमके नक्षत्र में घटानेसे भभोग बनैगा तथा नक्षत्र की वृद्धिभई होय तो वर्त्तमानमें जोड़कर उसी में वृद्धि कीभी घट्यादिक जोड़नेसे भभोग होताहै ॥ अब भयातका और क्रम लिखते हैं ॥ जिस दिनका इष्टहोय उसीदिन सूर्योदय में जो नक्षत्र होय उससे दूसरा नक्षत्र इष्टसमय में होय ऐसा स्थल परै तो प्रथम नक्षत्र के घट्यादिक इष्टकाल में घटानेसे भयात होता है ॥ १ ॥

अथायनांशज्ञानम् ॥

वेदाब्धिवेद ४४४ हीनात्तु शकात्खरस ६० भाजितात् । अयनांशा भवन्त्येते ब्रह्मपक्षाश्रिताः किल ॥ १ ॥

श्रीमन्महाराजाधिराज श्रीनृपति शालिवाहन के शाके में चारसैचवालिस ४४४ घटादेना उसमें साठि का भाग लेना जो लब्ध मिले सो अयनांश होताहै ब्रह्मसिद्धांत पक्ष के आश्रय निश्चित है ॥ १ ॥

अथ लक्ष्मणपुर्य्यांलग्नप्रमाणचक्रम् ॥

मेष	वृष	मि.	कर्क	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	ल.
३	४	५	५	५	५	५	५	५	५	४	३	घटी
३८	११	३	४३	४७	३८	३८	४७	४३	३	११	३८	पल

अथ लग्नस्पष्टज्ञानम् ॥

तत्कालार्कः सायनः स्वोदयघ्ना भोग्यांशाः खत्र्यु ३० द्धृता भोग्यकालः । एवं यातांशैर्भवेद्यातकालो भोग्यः शोध्योऽभीष्टनाडीपलेभ्यः १ तदनुविशोध्य गृहोदयांश्च शेषं गगनगुणघ्नमशुद्धहृल्लवाद्यम् । सहितमजादि गृहैरशुद्धपूर्वैर्भवति विलग्नमथोयनांशहीनम् २ भोग्य तोल्पेष्टकालात् खरामाहतात्स्वोदयाप्तांशयुग्भास्करः स्यात्तनुः । अर्कभोग्यस्तनोर्भुक्तकालान्वितो युक्तमध्यो द्ययोर्मीष्टकालो भवेत् ३ यदि तनुदिननाथावेकराशौ तदंशान्तरहतउदयः स्यात् खाग्निहृत्त्विष्टकालः। इनतउदय ऊनश्चेत्स शोध्यो द्युरात्रान्निशि तु सरसभार्कात्स्यात्तनुस्त्विष्टकाले ॥ ४ ॥

इष्टसमय के सूर्य में अयनांश जोड़ देना उसको तीस अंश में घटायदेनेसे भोग्यांश होतेहैं और सायनसूर्य जिस राशिका होय वह उदय लेना उस उदय के पलसे भोग्यांशों को गुणाकरना उसमें तीस का भागदेना जो लब्ध मिलै सो पलात्मक सूर्य का भोग्यकाल होगा अब सूर्य के भुक्तकाल लाने का क्रम लिखते हैं सायन सूर्य के अंशादिक उसी के उदय के पलों से गुणदेइ तिसमें तीसका भाग लेइ जो लब्ध मिलै सो पलात्मक सूर्य का भुक्तकाल होता है फिर भोग्यकाल

के पल इष्टघटी के पल करके उसमें घटाय देना १ अब उस अंक में सायनसूर्य जिस लग्न के होयँ उससे दूसरी लग्न के पलोंको घटायदेना फिर उसके आगेवाली लग्न के पलों को उसी अङ्क में हीन करना इसी प्रकार से जै लग्नें घटें ते घटादेना और जौन लग्न न घटसकै उसकी अशुद्ध संज्ञा है फिर जो शेषाङ्क बचाहै उसे तीससे गुणाकरना उस अङ्क में अशुद्ध लग्नके पलों से भाग लेना जो लब्ध मिलै सो अंशादिक जानना फिर मेषादिक लग्नों में जौन लग्न अशुद्ध संज्ञक है उससे जो प्रथम लग्न है सो अंशादिकों में जोड़देना अर्थात् अंशादिक उसके उपरान्त स्थापित करना तब राश्यादिक अङ्क प्राप्त होगा उसमें अयनांश हीनकरनेसे स्पष्ट लग्न बनेगी २ भोग्यकाल इष्टघटी के पलों में न हीनहोय तिसकी क्रिया लिखते हैं भोग्यके पलों से इष्टकाल के पल कम होयँ तो इष्टकाल के पलोंको तीससे गुणा करना और सायन सूर्य के पलों से भागलेना जो लब्ध अंशादिक मिलें सो स्पष्ट सूर्य में जोड़देने से लग्न स्पष्ट होती है ॥ अब लग्न से इष्टकाललाने का क्रम लिखते हैं ॥ सूर्यको सायनकरके भोग्यकाल पूर्वोक्त रीति बनायलेना तिसको अलग रखना फिर स्पष्टलग्न को सायन करना उसके अंशादिक उसी के उदय के पलों से गुणदेना उसमें तीस का भागलेना पूर्वोक्तरीतिसे जो लब्ध अंशादिक मिलैं सो लग्न का भुक्तकाल जानिये सो दोनों अङ्क एकमें जोड़ देना अर्थात् सूर्य का भोग्यकाल और लग्नका भुक्तकाल जोड़ देना उसमें मध्य की लग्नों के पल जोड़ देना अर्थात् सायन सूर्य जिस लग्न के होयँ उसकी दूसरी लग्न से सायन लग्न की पहिली लग्नतक जोड़ना यही मध्य की लग्नें हैं सो ये तीनों अङ्क जोड़नेसे इष्टकालके पल निकलैंगे पलों में साठि का भागलेने से इष्टकाल की घड़ी होयँगी और शेष पल होयँगे३ तथा सूर्य और लग्न एक राशिके होयँ तो इष्टकाल लानेका क्रम

लिखते हैं ॥ सूर्य और लग्न एक राशि के होयँ तो दोनों का अन्तर करना उसे उदय के पलों से गुणै उसमें तीस का भाग देइ लब्ध इष्टकाल पलात्मक होता है तथा सूर्य से लग्न ऊन होय अर्थात् कम होय तो लब्ध पलात्मक संज्ञक मिला है सो साठि घटी में घटाइ देइ तो इष्टकाल निकलता है घट्यादिक जानना और रात्रि की लग्न वा इष्टसाधन होय तो सूर्य की राशिमें छः मिलावै शेष क्रिया पूर्ववत् समझलेना परन्तु जब रात्रि की लग्न साधन करै तो इष्टकाल सायंकाल से लेना पूर्वोक्त प्रकार लग्न बनाय लेना ॥ ४ ॥

अथ मासप्रवेशज्ञानम् ॥

मासार्कस्य यदासन्नपंक्त्यर्केण सहान्तरम्। कलीकृत्यार्कगत्याप्तं दिनाद्येन युतोनितम् ॥ १ ॥

वर्षप्रवेश के सूर्यों के निकट जो मास सूर्य होय तिसका अन्तर करना जो अंशादिक होयँ उनकी कला करके सूर्य की गति का भाग लेना तीनदफे लब्ध वारादिक मिलैंगे सो जिस सूर्य की पंक्ति का अन्तर किया होय उसी पंक्ति के वारादिक मिश्रमान में जोड़ना वा घटाना क्रम से जो वर्षप्रवेश का सूर्यपंक्ति से अधिक होय तो जोड़देना और हीनहोय तो घटायदेना तो माससपष्ट वारादिक होयगा ॥ १ ॥

अथ त्रिपताकीचक्रम् ॥

रेखात्रयं तिर्यगधोर्ध्वसंस्थमन्योन्यविद्धाग्रकमीशकोणात्। स्मृतंबुधैस्तत्त्रिपताकिचक्रं प्राङ्मध्यरेखाग्रगवर्षलग्नात् १ न्यसेद्भचक्रं किल तत्र सैकां याताब्दसंख्यां विभजेन्नभोगैः। शेषोन्मिते जन्मगचन्द्रराशेस्तुल्ये च राशौ विलिखेच्छशाङ्कम् २ परे चतुर्भाजितशेषतुल्ये स्थाने स्वराशेःखचरास्तु लेख्याः। स्वर्भानुविद्धे हिमगौ

त्वरिष्टं तापोर्कविद्धे रुगिणोर्किविद्धे ३ महीजविद्धे तु शरीरपीडा शुभैश्च विद्धे जयसौख्यलाभः ॥

तीनरेखा सीधी तीनवेंड़ी करना और परस्पर ईशानकोण से रेखाका वेधकरना इसको पण्डितलोग त्रिपताकी चक्र कहते हैं इसके पूर्व के मध्यरेखा पर वर्षलग्न का न्यास करना १ फिर गत वर्ष में एक और जोड़देना तिसमें नव का भाग देना शेष जो अङ्क रहै सो जन्मस्थान से चन्द्रमा लिखना २ और ग्रहों में चार का भाग देकर शेष रहै सो जन्मस्थान से लिखना और राहु केतु जन्मस्थानसे पीछे लिखना त्रिपताकी चक्र में चन्द्रमा और राहु से वेध होय तो अरिष्ट जानना और सूर्य से चन्द्रमा का वेध होय तो ताप जानना और शनैश्चर का चन्द्रमा से वेध होय तो रोग जानना ३ मङ्गल से चन्द्रमा का वेध होय तो शरीर पीड़ा जानना और चन्द्रमा से शुभग्रह का वेध होय तो जय सुख लाभ जानिये ॥

अथ त्रिपताकीचक्रन्यासः ॥
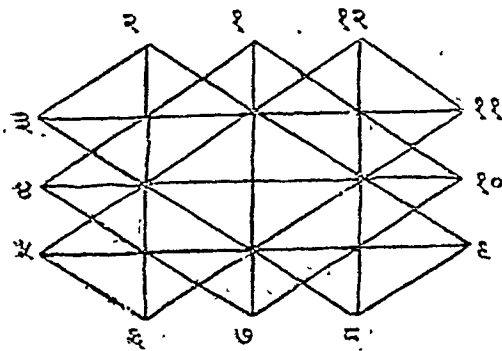
अथ पञ्चाधिकारिज्ञानम् ॥

मुन्थेशो वर्षलग्नेशस्तथा त्रैराशिनायकः । दिवार्क

राशिनाथश्च रात्रौ चन्द्रर्क्षनायकः १ जन्मलग्नेश्वरश्चेव वर्षपञ्चाधिकारिणः । पञ्चवर्गीबलाधिक्यं लग्नदर्शी च वर्षराट् ॥ २ ॥

मुन्था लग्न का स्वामी तथा वर्षलग्न का स्वामी तथा त्रि-राशिप और दिनमें वर्षप्रवेश होय तो सूर्यराशि का स्वामी तथा रात्रि में वर्षप्रवेश होय तो चन्द्रमाकी राशिका स्वामी तथा जन्मलग्न का स्वामी १ यही पञ्चाधिकारी जानना इन पांचों में पञ्चवर्गी में जो अधिक बली होय तथा वर्षलग्न को देखता होय वही वर्षेश होता है ॥ २ ॥

अथ त्रिराशिपज्ञानम् ॥

त्रिराशिपाः सूर्यसितार्किशुक्रा दिने निशीज्येन्दुबुध क्ष्माजाः । मेषाच्चतुर्णां हरिभाद्विलोमं नित्यं परेज्यार्कि कुजेज्यचन्द्राः ॥ १ ॥

इसका अर्थ स्पष्टही है इसलिये चक्र से समझ लेना चाहिये ॥ १ ॥ अथ त्रिराशिपचक्रम् ॥

मेष	वृष	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	लग्न
सू.	शु.	श.	शु.	वृ.	चं.	बु.	मं.	श.	मं.	वृ.	चं.	दिने त्रिराशिपाः
बृ.	चं.	बु.	मं.	सू.	शु.	श.	शु.	श.	मं.	वृ.	चं.	रात्रौ त्रिराशिपाः

अथ दृष्टिचक्रम् ॥

स्थान	३।५।९।११	मित्रदृष्टि
स्थान	७।१।४।१०	शत्रुदृष्टि

अथ पञ्चवर्गीसाधनार्थक्षेत्रादिबलचक्रम् ॥

स्वगृही	मित्रगृही	समगृही	शत्रुगृही	ग्रहस्थान
३० । ००	२२ । ३०	१५ । ००	०७ । ३०	बलप्रमाणम्

अथ स्वगृहसंज्ञाचक्रम् ॥

सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.	ग्रह
५	४	१ ८	३ ६	६ १२	२ ७	१० ११	लग्न

अथ मित्रसमशत्रुसंज्ञाचक्रम् ॥

स्थान	३ । ५ । ६ । ११	मित्र
स्थान	२ । ६ । ८ । १२	सम
स्थान	१ । ४ । ७ । १०	शत्रु

अथ उच्चबलज्ञानं तथा नवांशाज्ञानम् ॥

सूर्यादितुङ्गर्क्षमजोक्षनक्रकन्याकुलीरान्त्यतुलालवैः स्युः । दिग्भि १० गुणै ३ रष्टयमैः २८ शरेकै १५ र्भूते ५ र्भसंख्यै २७ र्नख २० सम्मितैश्च १ तत्सप्तम न्नीचमनेन हीनो ग्रहोधिकश्चेद्रसभाद्विशोध्यः । चक्रात्त दंशाङ्कलवोबलंस्यात् क्रियैणतौलीन्दुभतोनवांशाः॥२॥

सूर्यादिग्रहों का उच्चस्थान कहते हैं ॥ मेषराशि का सूर्य उच्च का जानना चन्द्रमा वृष का उच्च है मङ्गल मकर का उच्च होता है बुध कन्या का उच्च है बृहस्पति कर्क का उच्च है शुक्र

मीन का उच्च जानना और शनैश्चर तुला का उच्च है " अब परमोच्च कहते हैं " सूर्य मेष का जब दशअंश पूरा होयगा तब परमोच्च होयगा और चन्द्रमा वृषराशि का तीनअंश पूरा होय तब परमोच्च जानिये मङ्गल मकर का अट्ठाइस अंश होय तब परमोच्च है बुध कन्या का पन्द्रह अंश परमोच्च है बृहस्पति कर्क का पांचअंश परमोच्च है शुक्र मीन का सत्ताइस अंश परमोच्च जानिये तथा शनैश्चर तुला का बीस अंश परमोच्च जानना १ इनके सप्तम नीच जानिये सो स्पष्टग्रह में वही ग्रह का नीच घटायदेना छः राशिसे अधिक होय तो वही अङ्क बारह में घटायदेना तिस अङ्क में नव का भागलेना लब्ध जो मिलै सो उच्चबल जानना तथा परमोच्च होय तो पूरा बीसविस्वा उच्चबल जानना तथा नवांशा मेष मकर तुला कर्क से मेषादि तीन आवृत्ति चक्रसे समझलेना तीनअंश बीसकला का एकभाग होताहै इसी के समान नवभाग होते हैं ॥ २ ॥

अथोच्चनीचचक्रम् ॥

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्रहाः
०	१	६	५	३	११	६	उच्चराशि
१०	३	२८	१५	५	२७	२०	परमोच्चांश
६	७	३	११	६	५	०	नीचराशि
१०	३	२८	१५	५	२७	२०	परमनीचांश

अथ नवांशाचक्रम् ॥

मे.	वृष	मि.	कर्क	सिं.	क.	तु	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	रा.
मे.	म.	तु.	कर्क	मे.	म.	तु.	कर्क	मे.	म.	तु	कर्क	राशि गणना

अथ नवांशप्रमाणचक्रम् ॥

३	६	१०.	१३	१६	२०	२३	२६	३०	अंश
२०	४०	००	२०	४०	००	२०	४०	००	कला
प्रथम भाग	द्वितीय भाग	तृतीय भाग	चतुर्थ भाग	पञ्चम भाग	षष्ठ भाग	सप्तम भाग	अष्टम भाग	नवम भाग	भाग

अथ पञ्चवर्गीमध्ये नवांशबलचक्रम् ॥

स्वगृही	मित्रगृही	समगृही	शत्रुगृही	ग्रहस्थान
०५ । ००	०३ । ४५	०२ । ३०	०१ । १५	बलप्रमाणम्

अथ हद्दाप्रमाणचक्रम् ॥

मे.	वृष	मि.	कर्क	सिं.	कन्या	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशयः
६	८	६	७	६	७	६	७	१२	७	७	१२	अंशाः
बृ.	शु.	बु.	मं.	बृ.	बु.	श.	मं.	बृ.	बु.	बु.	शु.	हद्देशाः
६	६	६	६	५	१०	८	४	५	७	६	४	अंशाः
शु.	बु.	शु.	शु.	शु.	शु.	बु.	शु.	शु.	बृ.	शु.	बृ.	हद्देशाः
८	८	५	६	७	४	७	८	४	८	७	३	अंशाः
बु.	बृ.	बृ.	बु.	श.	बृ.	बृ.	बु.	बु.	शु.	बृ.	बु.	हद्देशाः
५	५	७	७	६	७	७	५	५	४	५	९	अंशाः
मं.	श.	मं	बृ	बु.	मं.	शु.	बृ.	मं.	श.	मं.	मं.	हद्देशाः
५	३	६	४	६	२	२	६	४	४	५	२	अंशाः
श.	मं.	श.	श.	मं.	श.	मं.	श.	श.	मं.	श.	श.	हद्देशाः

अथ हद्दाबलचक्रम् ॥

स्वगृही	मित्रगृही	समगृही	शत्रुगृही	ग्रहस्थान
१५ । ००	११ । १५	०७ । ३०	०३ । ४५	बलप्रमाणम्

अथ द्रेष्काणचक्रम् ॥

मे.	वृष	मि.	कर्क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	लग्नानि
१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	अंशाः
मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	द्रेष्काणेशाः
१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	अंशाः
सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	द्रेष्काणेशाः
१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	अंशाः
शु.	श.	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	सू.	चं.	मं.	द्रेष्काणेशाः

अथ पञ्चवर्गीमध्ये द्रकाणबलचक्रम् ॥

स्वगृही	मित्रगृही	समगृही	शत्रुगृही	ग्रहस्थान
१० । ००	०७ । ३०	०५ । ००	०२ । ३०	बलप्रमाणम्

अथ वर्षेशफलम् ॥

बलपूर्णेऽब्दपे पूर्णं शुभं मध्ये च मध्यमम् । अधमे दुःखरोगारिभयानि विविधाः शुचः ॥ १ ॥

पूर्णबल अर्थात् १३ । २० तेरह बीस के उपरान्त बल हो तो सम्पूर्ण वर्षभर शुभ फल जानिये तथा मध्यबल अर्थात् ६ । ४० छः चालिस के उपरान्त १३।२० तेरह बीसके भीतर तक होय तो मध्यम फल जानिये तथा अधमबल अर्थात् ६।४० छः चालिस के भीतर होय तो दुःख रोग शत्रुभय जानना १ तथा वर्षेश का निर्णय लिखते हैं जो पञ्चाधिकारी कोई ग्रह की दृष्टि लग्नपर न होय तो जो ग्रह पञ्चवर्गी में अधिक बली होय वही वर्षेश होता है तथा बल सब का बराबर होय तो मुन्था का स्वामी वर्षेश होता है ॥ अब बल निकालने की यत्न लिखते हैं ॥ पञ्चवर्गी में पांचों अधिकार अर्थात् क्षेत्रबल, उच्चबल, हद्दाबल, द्रकाणबल, नवमांशबल—इन पांचों अङ्कों को इकट्ठा जोड़देना तिसमें चार का भाग लेना जो लब्ध मिले वही बल जानिये ॥

अथ मुन्थाज्ञानम् ॥

जन्मलग्नगताब्दश्च युक्तं द्वादशहृत्तथा । शेषराशि प्रदातव्यं मुन्थहा वर्षमध्यगः ॥ १ ॥

जन्मलग्न में गतवर्ष युक्त करना उसमें बारह का भाग देना शेष बचै सो उसी लग्न में मुन्था जानना ॥ १ ॥

अथ मुद्दादशाज्ञानम् ॥

जन्मर्क्षसंख्यासहितागताब्दा द्यूनिता नन्दहृतावशेषात् । आर्चकुराजीशबुकेशुपूर्वा भवन्ति मुद्दादशिका क्रमोयम् ॥ १ ॥

जन्मनक्षत्र की संख्या अश्विन्यादि से गिनकर गतवर्षों को जोड़ देना उसमें दो घटादेना फिर नव का भागदेने से शेष रहै सो सूर्यादि दशा जानिये एक बचै तो सूर्य की दशा दो बचैं तो चन्द्रमा की तीन बचैं तो मङ्गल की चार बचैं तो राहु की पांच बचैं तो बृहस्पति की छः बचैं तो शनैश्चर की सात बचैं तो बुध की आठ बचैं तो केतु की नव बचैं तो शुक्र की मुद्दा दशा जानिये ॥ १ ॥

अथ दशाप्रमाणचक्रम् ॥

सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	दशा
००	०१	००	०१	०१	०१	०१	००	०२	मास
१८	००	२१	२४	१८	२७	२१	२१	००	दिन

अथ प्रत्येकभावमुन्थाफलम् ॥

शत्रुक्षयं मानसतुष्टिलाभं प्रतापवृद्धिं नृपतेः प्रसादम् । शरीरपुष्टिं विविधोद्यमांश्च ददाति वित्तं मुथहा तनुस्था १ उत्साहतीर्थागमनं यशश्च स्वबन्धुसम्मान नृपाश्रयश्च । मिष्टान्नभोगो बलपुष्टिसौख्यं स्यादर्थभावे मुथहा यदाऽब्दे २ पराक्रमाद्वित्तयशःसुखानि स्यादर्थ सौख्यं द्विजदेवपूजाः । सर्वोपकारस्तनुपुष्टिकान्ती नृपाश्रयश्चेन्मुथहा तृतीये ३ शरीरपीडा रिपुभीःस्ववर्ग्यवैरं

मनस्तापनिरुद्यमत्वे । स्यान्मुन्थहायां सुखभावगायां जनापवादामयवृद्धिदुःखम् ४ यदीन्थिहा पञ्चमगाऽदवेशे सद्बुद्धिसौख्यात्मजवित्तलाभः । प्रतापवृद्धिं विविधाविलासा देवद्विजार्चा नृपतेः प्रसादः ५ कृशत्वमङ्गेषु रिपूदयश्च भयं रुजस्तस्करतो नृपाद्वा । कार्यार्थनाशो मुथहारिगा चेद्दुर्बुद्धिवृद्धिःस्वकृतेऽनुतापः ६ कलत्रबन्धुव्यसनारिभीतिरुत्साहभङ्गो धनधर्मनाशः । द्यूनोपगाचेन्मुथहा तनौ स्याद्रुजामनोमोहविरुद्धचेष्टः ७ भयं रिपोस्तस्करतो विनाशो धर्मार्थयोर्दुर्व्यसनामयश्च । मृत्युस्थिताचेन्मुथहा नराणां बलक्षयःस्याद्गमनं सुदूरे ८ स्वामित्वमर्थापगमो नृपेभ्यो धर्मोत्सवःपुत्रकलत्रसौख्यम् । देवद्विजार्चा परमं यशश्च भाग्योदयोभाग्यगतेन्थिहायाम् ९ नृपप्रसादं स्वजनोपकारं सत्कर्मसिद्धिं द्विजदेवभक्तिम् । यशोभिवृद्धिं विविधार्थलाभं भाग्योदयो भाग्यगतेन्थिहायाम् १० यदीन्थिहालाभगता विलाससौभाग्यनैरुज्यमनःप्रसादाः । भवन्ति राजाश्रयतो धनानि सन्मित्रपुत्राभिमतोदयश्च ११ व्य[illegible]
सङ्गो रुजातनौ विक्रमतोप्यसिद्धि [illegible] हा
व्ययस्था यदा तदा सज्जनतोऽपि [illegible]

वर्षलग्न में जो मुन्था होय तो शत्रु [illegible] ो स-
न्तोष लाभ करै प्रतापवृद्धि होय राजा व [illegible] र पुष्ट
होय अनेक प्रकार के उद्यम से धन दे [illegible] सुन्था
होय तो उत्साह करावै वा तीर्थयात्रा को [illegible] वा अपने
बन्धुओं में सम्मान होय राजा का आ [illegible] मिष्टान्न भो[illegible] ।
होय तथा बल पुष्टि सुख करै २ तीसरे स्थान में मुन्था व्यसन

तो पराक्रम से धन यश सुख प्राप्त होय वा भ्रातृसुख होय ब्राह्मणदेवता का पूजन करै तो सर्वोपकार से तनु पुष्ट होय कान्तिहो नृपाश्रय होय ३ चौथे स्थान में मुन्था होय तो शरीर पीड़ा शत्रुभय करै तथा स्ववर्ग से वैर मनसन्ताप उद्यमरहित जनापवाद करावै तथा रोगवृद्धि दुःख यह फल होता है ४ मुन्था पञ्चमस्थानमें होय तो उत्तमबुद्धि होय सुख पुत्र धन का लाभ होय प्रताप वृद्धि होय नाना प्रकार के विलास होयँ देवता ब्राह्मण की पूजाकरै राजा की प्रसन्नता होय ५ मुन्था षष्ठस्थान में होय तो शरीर विषे कृशता होय शत्रुका उदय होय रोग वा चोर तथा राजा से भय होय कर्म अर्थ को नाशकरै दुर्बुद्धि की वृद्धि करै स्वकीयकृत सन्ताप होय ६ सप्तमस्थान में मुन्था होय तो स्त्री से बन्धु से वा व्यसन से भय होय वा शत्रु से भय होय और उत्साहभङ्ग धन और धर्म का नाश होता है मोह विपरीत चेष्टा होती है ७ अष्टमस्थान में मुन्था होय तो शत्रुभय चोरभय करै धर्म अर्थ नाश होय दुष्ट व्यसन होय रोग होय बलक्षय होय दूरदेश में गमन होय ८ मुन्था नवमस्थान में होय तो राजा से धन का आगमन होय धर्मोत्सव होय पुत्र स्त्री का सुख होय देव ब्राह्मण का पूजन करावै परमयशकरै तथा भाग्योदय करै ९ दशमस्थान में मुन्था होय तो राजा प्रसन्न होय स्वजन से उपकार होय उत्तमकर्म की सिद्धि होय ब्राह्मण तथा देवता की भक्ति होय यश की वृद्धि होय नानाप्रकार की द्रव्य का लाभ होय श्रेष्ठपद का लाभ होय १० लाभस्थान में मुन्था होय तो विलास सौभाग्य नीरोगता मन को प्रसन्न करै और राजा के आश्रय से धन मिलै उत्तममित्र और पुत्र की इच्छा प्राप्त होय ११ बारहें स्थान में मुन्थाहोय तो खर्च बहुत करावै और दुष्ट जनों से संग होय तथा शरीर में रोग पराक्रम से भी कार्य सिद्ध न होय धर्म अर्थकी हानि होय से वैर होय ॥ १२ ॥

अ अश्चेन्मु

अथारिष्टयोगः ॥

अब्दलग्नं जन्मलग्नराशिस्थाष्टमं यदा । कष्टं महाव्याधिभयं मृत्युः पापयुते क्षणात् ॥ १ ॥

जन्मलग्न वा जन्मराशि से वर्षलग्न आठईं हो तो कष्ट वा महाव्याधि भय होय तथा पापग्रह युक्त होय वा देखता होय तो मृत्यु होय ॥ १ ॥

अथारिष्टभङ्गयोगः ॥

लग्नाधिपो बलयुतः शुभेक्षितयुतस्तदा । त्रिकोण केन्द्रगोरिष्टं नाशयेत्सुखवित्तदः ॥ १ ॥

लग्नेश बल से युक्त होय शुभग्रहों की दृष्टि होय तथा शुभग्रह युक्त होयँ तथा लग्नेश त्रिकोण वा केन्द्र ६ । ५ । १ । ४ । ७ । १० में पड़ा होय तो अरिष्टनाश होय तथा सुख वा धन को देइ ॥ १ ॥

अथ ग्रहाणां भावफलम् ॥

सूर्यारमन्दास्तनुगा ज्वरार्तिं धनक्षयं पापयुगिन्दुरित्थम् । शुभान्वितः पुष्टतनुश्च सौख्यं जीवज्ञशुक्रा धनराज्यलाभम् १ चन्द्रज्ञजीवास्फुजितो धनस्था धनागमं राजसुखं च दद्युः । पापाधनस्थाधनहानिदाः स्युर्नृपाद्भयं कार्यविनाशमार्किः २ दुश्चिक्यगाः खल खगा धनधर्मराज्यलाभप्रदा बलयुताः क्षितिलाभदाः स्युः । सौम्याः सुखार्थसुतलाभयशोविलासलाभाय हर्षमतुलं किल तत्र चन्द्रः ३ चन्द्रः सुखे खलयुतो व्यसनं रुजं च पुष्टः शुभेन सहितः सुखमातनोति । सौम्याः सुखं विविधमत्र खलाः सुखार्थनाशं रुजं व्यसन

स्प्यतुलं भयञ्च ४ पुत्रवित्तसुखसंचयं शुभाः पुत्रगा भृगुसुतोऽतिहर्षदः। पुत्रवित्तधनहारकारकास्तस्करभय कलिप्रदाः खलाः ५ षष्ठे पापा वित्तलाभं सुखाप्तिं भौमो ऽत्यन्तं हर्षदः शत्रुनाशम् । सौम्या भीतिं वित्तनाशं कलिं च चन्द्रो रोगं पापयुक्तः करोति ६ सपापः शशी सप्तमं व्याधिभीतिं खलाः स्त्री विनाशो कलिं मृत्युभीतिम् । शुभाः कुर्वते वित्तलाभं सुखाप्तिं यशोमानराज्योदयं बन्धुसौख्यम् ७ चन्द्रोऽष्टमे निधनदः खलखेट युक्तः पापाश्च तत्र मृतितुल्यफला विचिन्त्याः । सौम्याः स्वधातुवशतोरुजमर्थहानिं मानक्षयं मुथशिले शुभजे शुभं च ८ तपसि सोदरभीः पशुपीडनं खलखगेऽतिसुदोरविरत्रचेत् । शुभखगाधनधर्मविवृद्धिदाः खलखगोऽपिशुभान्यपरे जगुः ९ गगनगो रविजः पशुवित्तहारवि कुजोऽव्यवसायपराक्रमैः । धनसुखानि परे च धनात्मजा वनिजसङ्गसुखानि विचिन्वते १० लाभो धनोपचयसौख्य यशोभिवृद्धिं सन्मित्रसङ्गबलपुष्टिकरास्तुसर्वे। क्रूराबलेनरहिताः सुतवित्तबुद्धिनाशं शुभास्तु तनुतां स्वफलस्य कुर्युः ११ पापा व्ययेनेत्ररुजं विवादं हानिर्धनानां नृपतस्करादेः । सौम्या व्ययेसद्व्यवहारमार्गे कुर्युः शनिर्हर्ष विवृद्धिमत्र ॥ १२ ॥

इति श्रीपण्डितसूर्यनारायणविरचितेज्योतिस्सारसंग्रहे ताजिकप्रकरणंतृतीयंसमाप्तम् ॥ ३ ॥

अथ भावफलचक्रम् ॥

स्थान	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श. रा. के.	फलं
१	ज्वरागमं धनक्षयः	पुष्टतनुस्सुखः	ज्वरागमं धनक्षयः	धनराज्य लाभः	धनराज्य लाभः	धनराज्य लाभः	ज्वरागमं धनक्षयः	फलं
२	धनहानिदः	धनागमं राजसुखं	धन हानिः	धनागमं राजसुखं	धनागमं राजसुखं	धनागमं राजसुखं	धनहानिः कार्यहानिः राजभयं	फलं
३	धन धर्मं राज्यप्रदः	अतुल हर्षदः	धनधर्मं राज्य लाभः	सुखार्थःसुतलाभःयशोमानविलासदः	सुखार्थःसुतलाभःयशोमानविलासदः	सुखार्थःसुतलाभःयशोमानविलासदः	धनधर्मं राज्य लाभः	फलं
४	सुखार्थनाशः रोगभयदः	सुख प्राप्तिः	सुखार्थनाशः रोगभयदः	सुख प्राप्तिः	सुख प्राप्तिः	सुख प्राप्तिः	सुखार्थनाशःरोगभयदः	फलं
५	पुत्रधननाशःकलिप्रदःचौरभयं	पुत्रधन सुखप्रदः	पुत्रधन नाशःकलिप्रदः चौरभयम्	पुत्रधन सुखप्रदः	पुत्रधन सुखप्रदः	अतिहर्षदः	पुत्र धन नाशःकलिप्रदः चौरभयम्	फलं
६	धनलाभः सुखप्राप्तिः	भयंधननाशःकलिप्रदः	अत्यन्त हर्षदःशत्रुनाशः	भयंधन नाशः कलिप्रदः	भयंधन नाशः कलिप्रदः	भयंधन नाशःकलिप्रदः	धनलाभः सुखाप्तिः	फलं
७	स्त्रीनाशः कलिप्रदः मृत्युभयं	वित्तलाभं सुखाप्तिंयशोमानराज्योदयं बंधुसौख्यं	स्त्रीनाशः कलिप्रदः मृत्युभयम्	वित्तलाभं सुखाप्तिंयशोमानराज्योदयं बंधुसौख्यं	वित्तलाभं सुखाप्तिंयशोमानराज्योदयं बंधुसौख्यं	धनलाभंसुखाप्तिंयशोमानराज्योदयंबन्धुसौख्यं	स्त्रीनाशः कलिप्रदः मृत्युभयम्	फलं
८	मृत्यु तुल्यः	रोगप्रदः अर्थहानिः मानक्षयः	मृत्यु तुल्यः	रोगप्रदः अर्थहानिः मानक्षयः	रोगप्रदः अर्थहानिः मानक्षयः	रोगप्रदः अर्थहानिः मानक्षयः	मृत्यु तुल्यः	फलं
९	अतिआनन्ददः	धनधर्म वृद्धिः	भ्रातृभयं पशुपीडनं	धनधर्म वृद्धिः	धनधर्म वृद्धिः	धनधर्म वृद्धिः	भ्रातृभयं पशुपीडनं	फलं
१०	घातः	धनसुख प्राप्तिः	घातः	धनसुख प्राप्तिः	धनसुख प्राप्तिः	धनसुख प्राप्तिः	पशुधन हानिः	फलं
११	धनदःअत्यन्तसुखःयशवृद्धिदः	धनदःअत्यन्तसुखःयशवृद्धिदः	धनदःअत्यन्तसुखःयशवृद्धिदः	धनदःअत्यन्तसुखःयशवृद्धिदः	धनदःअत्यन्तसुखःयशवृद्धिदः	धनदःअत्यन्तसुखःयशवृद्धिदः	धनदःअत्यन्त सुखःयशवृद्धिदः	फलं
१२	नेत्ररुजंविवादंराजचौराद्धन हानिः	शुभव्ययहारकृत्यः	नेत्ररुजं विवादंराजचौराद्धनहानिः	शुभव्ययहारकार्यः	शुभव्ययहारकार्यः	शुभव्ययहारकार्यः	हर्षवृद्धिदः	फलं

इसका टीका चक्र से समझना ॥ तथा पापग्रह पापग्रहों के सङ्ग होकर चन्द्रमा से इत्थशाल करते होयँ तो उनको क्षय जानिये तथा शुभग्रहों के संग होकर पापग्रह लग्न में पड़े होयँ तो पुष्ट तनुकरें और सुखकरें तथा आठयें स्थान चन्द्रमा पापग्रह के सङ्ग परा होय तो मृत्युहोती है तथा शुभग्रह आठयें होकर अन्य शुभग्रहों से इत्थशाल करते होयँ तो शुभजानिये अर्थात् जिस ग्रह की वड़ीगतिहोय सो अंशों में कम होय तथा थोड़ीगति वाले ग्रहों के बहुत अंश होवँ तो इत्थशाल योग होताहै तथा पापग्रहसे युक्त चन्द्रमा सातयें होय तो व्याधि भय होय ॥ ११२ ॥

इति श्रीपण्डितसूर्यनारायणत्रिपाठीविरचितज्योतिस्सार संग्रहटीकायांताजिकप्रकरणंतृतीयंसमाप्तम् ॥ ३ ॥

अथ दिनेष्टज्ञानम् ॥

चैत्रेमाधवचाश्विनेकृतमनु १४४ मार्गे यमः सप्तभू १७२ स्त्वूर्जेफाल्गुनचाष्टबाणक्षितयः १५८ पौषेखनन्दत्विन्दवः १६० ॥ ज्येष्ठेश्रावणभाद्रयोः स्वरत्रिभू १३७ राषाढबाणार्कयो १२५ र्माघेनेत्ररसेन्दु १६२मासध्रुवकाः शंकुश्च सप्तांगुलः ॥ १ ॥

दिनके इष्टकाल जानने के हेतु सात अंगुलका शंकु खड़ाकरे और शंकु सूधाहोय और पृथ्वी बरावर होय उसमें सूधी तरह से खड़ाकरै जै अंगुल छाया होय तिसमें सात जोड़े उस अंकको महीना के ध्रुवा में भागलेय जो लब्ध मिलैं सो इष्टघटी जानिये और जो शेषांक बचे उसे साठगुणाकरके फिर उसी अंक का भाग दीजिये जो लब्धमिलै सो इष्टपल जानिये परन्तु दुपहरके भीतर जब नापना तब जो अंक आवै वही इष्टकाल जानना तथा दोपहरके उपरांत जो नापने से लब्ध मिलै वे घड़ी पल दिनप्रमाण में घटाय देना जो शेषरहै वही इष्ट जानिये तथा मास का ध्रुवा चक्रसे जानना ॥ १ ॥

अथेष्टकालज्ञानार्थे मासध्रुवाचक्रम् ॥

चैत्र	वै.	ज्येष्ठ	आ.	श्रा.	भा.	आ.	का.	मा.	पौष	माघ	फा.	मास
१४४	१४४	१३७	१२५	१३७	१३७	१४४	१५८	१७२	१६०	१६२	१५८	ध्रुवांक

अथ रात्रेष्टज्ञानम् ॥

सूर्यभान्मौलिभं गण्यं सप्तहीनं च शेषकम् । द्विगुणं च द्विहीनं च गतारात्रिस्फुटाभवेत् ॥ १ ॥

रात्रि को खड़ा होकर अपने शिरके ऊपर आकाश की तरफ देखै जौन नक्षत्र शिर के ऊपर होय उसे स्थापित करै फिर जिस नक्षत्र के सूर्य होयँ उस नक्षत्र से शिर के नक्षत्र तक गिनै जै अङ्क होयँ उसमें सात घटादेइ शेषको दूना करे तिस में दो और घटाय देइ जो शेषरहै वही इष्ट मानै घट्यादिक परन्तु अर्द्धरात्रि के भीतर होय वह अङ्क दिनमान में जोड़ देय तो सूर्योदय से इष्टकाल होता है तथा अर्द्धरात्रि के उपरान्त होय तो वही अङ्क साठिमें घटाय देइ तो सूर्योदय से इष्टकाल होता है ॥ १ ॥

अथ नक्षत्रप्रचारज्ञानम् ॥

पुनर्वसुर्मृगश्चार्द्रा ज्येष्ठामैत्रं करस्तथा ॥ पूर्वाषाढोत्तराषाढो मूलं दक्षिणचारिणः १ कृत्तिकारोहिणीपुष्यश्चित्राश्लेषा च रेवती । शतंधनिष्ठाश्रवणो नवमध्यमचारिणः २ अश्विनीभरणीस्वातिर्विशाखाफाल्गुनीद्वयम् । मघाभाद्रपदायुग्मं नवचोत्तरचारिणः ॥ ३ ॥

पुनर्वसु, मृगशिरा, आर्द्रा, ज्येष्ठा, अनुराधा, हस्त, पूर्वाषाढ़, उत्तराषाढ़ और मूल ये नक्षत्र दक्षिणचारी हैं १ कृत्तिका, रोहिणी, पुष्य, चित्रा, श्लेषा, रेवती, शतभिष, धनिष्ठा और श्रवण ये नवनक्षत्र मध्यमचारी हैं २ अश्विनी, भरणी, स्वाती, विशाखा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, मघा, पूर्वा-

भाद्रपद, उत्तराभाद्रपद ये नव नक्षत्र उत्तरचारी हैं ॥ ३ ॥

अथ नक्षत्रप्रचारचक्रम् ॥

पुन.	मृ.	आ.	ज्येष्ठा	अनु.	हस्त	पू.षा.	उ.षा.	मूल	दक्षिणचारी
कृ.	रो.	पुष्य	चित्रा	श्लेषा	रेवती	श.	ध.	श्रवण	मध्यमचारी
अ.	भ.	स्वा.	वि.	पू.फा.	उ.फा.	म.	पू.भा.	उ.भा.	उत्तरचारी

अथ नक्षत्रोदयज्ञानम् ॥

त्रयं यमेश्वे चाग्नौषड्विधौ पञ्चमृगे त्रयम् । एकमा र्द्रासु नक्षत्रं चत्वारि च पुनर्वसौ १ पुष्ये त्रयं रसस्सार्पे मघायांभानि पञ्चकम् । द्वयं द्वयं च फाल्गुन्योर्ज्ञेयं हस्ते तु पञ्चमम् २ चित्रास्वात्योरेकमेकं चतुष्कं च द्विदैवते । त्रयं स्यादनुराधायां ज्येष्ठायां च त्रयं स्मृतम् ३ मूले रुद्राश्चतुष्कं च पूर्वाषाढे तथोत्तरे । त्रयं चाभिजिति प्रोक्ता श्रवणे च त्रयं तथा ४ धनिष्ठायां च चत्वारि शतं शतभिषासु च । द्वयं द्वयं भाद्रयोश्च द्वात्रिंशदपि चान्तिभे ॥ ५ ॥

तीन नक्षत्र से अश्विनी वा भरणी उदय होताहै कृत्तिका छः नक्षत्र से उदय होता है तथा रोहिणी पांच से उदय जानना और मृगशिरा तीन नक्षत्र से आर्द्रा एकसे पुनर्वसु चारि नक्षत्र से उदय जानना १ पुष्य तीन नक्षत्र से श्लेषा छः नक्षत्र से मघा पांचनक्षत्र से उदय होताहै पूर्वाफाल्गुनी वा उत्तराफाल्गुनी दो २ नक्षत्र से उदय होते हैं तथा हस्त पांच से उदय होता है चित्रा वा स्वाती एक २ नक्षत्र से उदय जानिये वा विशाखा चारि नक्षत्र से उदय होता है २ अनुराधा तीन नक्षत्र से उदय होता है और ज्येष्ठा भी तीन नक्षत्र से उदय जानिये ३ मूल ग्यारह नक्षत्र से उदय

होता है पूर्वाषाढ़ तथा उत्तराषाढ़ चार नक्षत्र से उदय होताहै तीन नक्षत्र से अभिजित् उदय होताहै श्रवण तीन नक्षत्र से उदय होता है ४ धनिष्ठा चार नक्षत्र से उदय होता है शतभिष सौनक्षत्र से उदय जानिये पूर्वाभाद्रपद वा उत्तराभाद्रपद दो २ नक्षत्र से उदय जानना तथा रेवती बत्तिस नक्षत्र से उदय जानिये ॥ ५ ॥

अथ नक्षत्रोदयचक्रम् ॥

नक्षत्र	तारोदयः	नक्षत्र	तारोदयः
अ.	३	स्वा.	१
भ.	३	वि.	४
कृ.	६	अनु.	३
रो.	५	ज्येष्ठा	३
मृ.	३	मू.	११
आ.	१	पू.षा.	४
पुन.	४	उ.षा.	४
पुष्य	३	अभि.	३
श्ले.	६	श्र.	३
म.	५	ध.	४
पू.फा.	२	श.	१००
उ.फा.	२	पू.भा.	२
ह.	५	उ.भा.	२
चि.	१	रे.	३२

अथ नक्षत्रस्वरूपचक्रम् ॥

नक्षत्र	स्वरूप	नक्षत्र	स्वरूप
अ.	अश्वमुखसदृश	स्वा.	मूंगासम
भ.	योनिसदृश	वि.	तोरणसम
कृ.	क्षुरासदृश	अनु.	बलिनिभसम
रो.	शकटसदृश	ज्ये.	कुण्डलसम
मृ.	हिरणसदृश	मू.	सिंहपुच्छसम
आ.	मणिसदृश	पू. षा.	गजदन्तसम
पुन.	गृहसदृश	उ. षा.	मञ्चकासम
पुष्य	वाणसदृश	अभि.	त्रिकोणाकार
श्ले.	चक्रसदृश	श्र.	त्रिचरणसदृश
म.	भवनसदृश	ध.	मृदङ्गसम
पू.फा.	मञ्चकासदृश	श.	वर्तुलाकार
उ.फा.	शय्यासदृश	पू. भा.	मञ्चकासम
ह.	हस्तसम	उ. भा.	यमलासदृश
चि.	मोतीसम	रे.	मृदङ्गाकार

अथ राशिस्वामिचक्रम् ॥

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.	स्वामी
५	४	१ ८	३ ६	९ १२	२ ७	१० ११	६	१२	राशि

अथोच्चनीचग्रहविचारः ॥

मेषेरविर्वृषेचन्द्रो मकरे च महीसुतः । कन्यायां रोहिणी पुत्रो गुरुः कर्के झषे भृगुः १ शनिस्तुलायामुच्चस्थो मिथुनेसिंहिकासुतः । उच्चात्सप्तमगो नीचः कथितो गणकोत्तमैः ॥ २ ॥

मेषराशि का सूर्य उच्च का होताहै वृषराशि का चन्द्रमा उच्च का होताहै मकर का मङ्गल उच्च का होता है कन्या का बुध उच्च का होता है बृहस्पति कर्क का उच्च होताहै मीन का शुक्र उच्च का होताहै १ शनैश्चर तुला का उच्च का होताहै तथा मिथुन का राहु उच्च का होताहै ये उच्चस्थान के सप्तमस्थान नीच का होताहै चक्र से जानना २ तथा केतु धन का उच्च अनुमान से जानना योग्यहै ॥

अथोच्चनीचग्रहचक्रम् ॥

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.	ग्रह
मे.	वृष	म.	क.	कर्क	मीन	तु.	मि.	धन	उच्चराशि
तु.	वृ.	कर्क	मी.	म.	कर्क	मेष	धन	मि.	नीचराशि

अथ योगिनीदशाप्रकारः ॥

स्वकीयं च भंरुद्रनेत्रैर्युतं तद्विधायाष्टभिर्भागमाहार्यशेषात् । क्रमान्मङ्गलादिर्दशा शून्यशेषं तदा सङ्कटा प्राणसन्देहकर्त्री ॥ १ ॥

अश्विन्यादि जन्मनक्षत्र में तीन जोड़कर आठका भागदेय जो शेष होय सो मङ्गलादि दशा जानलेय शून्य बचै तो संकटा जानना सो प्राण की संदेह करनेवाली है ॥ १ ॥

अथ दशाक्रमज्ञानम् ॥

अभून्मङ्गलापिङ्गलाधान्यका च तथा भ्रामरी भद्रिका चोल्किका च । तथा सिद्धिका सङ्कटाख्या शिवस्तु शिवायै पुरोयोगिनीत्युक्तवांश्च ॥ १ ॥

मङ्गला १ पिङ्गला २ धान्या ३ भ्रामरी ४ भद्रिका ५ उल्का ६ सिद्धा ७ संकटा ८ ये आठ योगिनीदशा पूर्वही पार्वती के लिये श्रीमहादेवजीने कही हैं ॥ १ ॥

अथ दशास्वामिज्ञानम् ॥

अथासामधीशाःक्रमान्मङ्गलातो भवेच्चन्द्रभानूगुरुर्भूमिसूनुः । तथा सौम्यमन्दौ भृगुः सिंहिकायाः सुतः सङ्कटायास्तदन्ते च केतुः ॥ १ ॥

मङ्गलादि दशाओं के स्वामी लिखते हैं क्रम से मङ्गला का स्वामी चन्द्रमा है पिङ्गला का स्वामी सूर्य है धान्या का स्वामी बृहस्पति है भ्रामरी का स्वामी मङ्गल है भद्रिका का स्वामी बुध है उल्का का स्वामी शनैश्चर है सिद्धा का स्वामी शुक्र है संकटा का स्वामी राहु केतु है ॥ १ ॥

अथ दशाचक्रम् ॥

मं.	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.	दशा
चं.	सू.	बृ.	मं.	बु.	श.	शु.	रा. के.	स्वामी
१	२	३	४	५	६	७	८	वर्ष प्रमाण
००	००	००	अ.	भ.	कृ.	रो.	मृ.	नक्षत्र
आ.	पुन.	पुष्य	श्ले.	म.	पू.फा.	उ.फा.	ह.	नक्षत्र
चि.	स्वा.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू. षा.	उ. षा.	नक्षत्र
श्र.	ध.	श.	पू. भा.	उ.भा.	रे.	००	००	नक्षत्र

अथ दशाभुक्तभोग्यप्रकारः ॥

अथोभस्य भुक्ताघटीस्वेदशाब्दैर्निहन्यात्तथा सर्व ताराविभक्ता । भवेद्वर्षपूर्वं हि भुक्ता दशायां स्ववर्षे च पात्याभवेद्भोगसंज्ञा १ शेषादर्कगुणामासाः शेषात्त्रिंशद् गुणादिवा । शेषात्षष्टिगुणानाड्यः शेषात्षष्टिगुणाः पलाः ॥ २ ॥

जन्मदशा की वर्ष से भयात की घट्यादिक गुणै तिसमें भभोग का भागलेइ जो लब्धमिलै सो दशा की भुक्तवर्ष जानै शेषाङ्कको बारह से गुणाकरके भभोग का भागदेइ लब्धदशा के भुक्तमहीने जाने फिर शेषाङ्कको तीससे गुणाकरे भभोगका भागदेइ लब्धदशा के भुक्तदिन जानै फिर शेषाङ्कको साठि- गुणाकरे भभोग का भागदेइ लब्धदशा की भुक्तघटी जानिये फिर शेषाङ्कको साठि गुणाकरके भभोग का भागदेइ शेषाङ्क दशा के भुक्तपल जानिये फिर यही भुक्त वर्षादिक दशा की वर्षप्रमाणमें घटाय देनेसे भोग्य वर्षादिक होतीहैं ॥ १ । २ ॥

अब उदाहरण लिखते हैं ॥ श्रीसंवत् १६०१ शाके १७६६ फाल्गुनकृष्णाद्वितीयायां चन्द्रेष्टम् ५३ । ५२ हस्तनक्षत्रे भभोग म् ५८।१६ भयातम् ३३ । २६ विंशोत्तरीम० चन्द्रदशायां जन्म तत्प्रमाणं वर्ष १० । गणितागतभुक्तं वर्षादिः ॥ ०५ । ०८ । २६ । ५६ । २६ भोग्यंवर्षादिः ॥ ०४ । ०३ । ०३ । ०० । ३४ ॥

अथान्तर्दशाप्रकारः ॥

दशादशाहताकार्या दशामानेन भाजिता । यल्लब्धा न्तर्दशा ज्ञेया फलं वर्षादिकं भवेत् ॥ १ ॥

दशा को दशासे गुणै उससे दशा का जो मान अर्थात् सब दशा प्रमाण वर्षों का जो अङ्कहोय तिसका भागदेइ जो लब्धमिलै वह अन्तर्दशा की वर्ष जानिये फिर शेषाङ्क को बारहगुणा करके वही सर्वदशा प्रमाण का भागलेने से लब्ध अन्तर्दशा के महीने जानै फिर शेषांकको तीसगुणा करके फिर वही दशामान का भागदेने से लब्ध अन्तर्दशा के दिन जानिये ॥ १ ॥

अब गणितागत उदाहरण लिखते हैं ॥

अथ मङ्गलान्तर्दशाचक्रम् ॥

मं०	पिं०	धा०	भ्रा०	भ०	उ०	सि०	सं०	दशा
००	००	००	००	००	००	००	००	वर्ष
००	००	०१	०१	०१	०२	०२	०२	मास
१०	२०	००	१०	२०	००	१०	२०	दिन

अथ पिङ्गलान्तर्दशाचक्रम् ॥

पिं०	धा०	भ्रा०	भ०	उ०	सि०	सं०	मं०	दशा
००	००	००	००	००	००	००	००	वर्ष
०१	०२	०२	०३	०४	०४	०५	००	मास
१०	००	२०	१०	००	२०	१०	२०	दिन

अथ धान्यान्तर्दशाचक्रम् ॥

धा०	भ्रा०	भ०	उ०	सि०	सं०	मं०	पिं०	दशा
००	००	००	००	००	००	००	००	वर्ष
०३	०४	०५	०६	०७	०८	०१	०२	मास
००	००	००	००	००	००	००	००	दिन

अथ भ्रामर्यन्तर्दशाचक्रम् ॥

भ्रा०	भ०	उ०	सि०	सं०	मं०	पिं०	धा०	दशा
००	००	००	००	००	००	००	००	वर्ष
०५	०६	०८	०९	१०	०१	०२	०४	मास
००	२०	००	१०	२०	१०	२०	००	दिन

अथ भद्रिकान्तर्दशाचक्रम् ॥

भ०	उ०	सि०	सं०	मं०	पिं०	धा०	भ्रा०	दशा
००	००	००	०१	००	००	००	००	वर्ष
०८	१०	११	०१	०१	०३	०५	०६	मास
१०	००	२०	१०	२०	१०	००	२०	दिन

अथोल्कान्तर्दशाचक्रम् ॥

उ०	सि०	सं०	मं०	पिं०	धा०	भ्रा०	भ०	दशा
०१	०१	०१	००	००	००	००	००	वर्ष
००	०२	०४	०२	०४	०६	०८	१०	मास
००	००	००	००	००	००	००	००	दिन

अथ सिद्धान्तर्दशाचक्रम् ॥

सि.	सं.	मं.	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	दशा
०१	०१	००	००	००	००	००	०१	वर्ष
०४	०६	०२	०४	०७	०९	११	०२	मास
१०	२०	१०	२०	००	१०	२०	००	दिन

अथ सङ्कटान्तर्दशाचक्रम् ॥

सं०	मं०	पिं०	धा०	भ्रा०	भ०	उ०	सि०	दशा
०१	००	००	००	००	०१	०१	०१	वर्ष
०९	०२	०५	०८	१०	०१	०४	०६	मास
१०	२०	१०	००	२०	१०	००	२०	दिन

अथ योगिनीदशाफलं तत्रादौ मङ्गलाफलम् ॥

वैरिणां च विवादं विनाशनं वाहनादिबहुरत्नलाभ दा । कामिनीसुतगृहाद्विलासदा मङ्गला सकलमङ्गलो दया ॥ १ ॥

शत्रुसे विवाद होय वाहनादि विनाश होय बहुत रत्नलाभ होय स्त्री पुत्र गृह करके विलास होय वा सकल मङ्गलोदय होय यह मङ्गलादशा का फल जानिये ॥ १ ॥

अथ पिङ्गलादशाफलम् ॥

दुःखशोककुलरोगवृद्धिता व्यग्रता च कलहः स्वजनै श्च । अन्त्यभागफलदा कथितासौ पिङ्गला च विदुषां सुखदादौ ॥ २ ॥

दुःख शोक कुलरोग की वृद्धि होय व्यग्रता होय स्वजन से कलह होय परन्तु अन्त्यभाग में फल जानिये और आदि में सुख होता है यह फल पिङ्गला का पण्डित कहते हैं ॥ २ ॥

अथ धान्यादशाफलम् ॥

धनं धान्यवृद्धिं धरानाथमान्यं सदा युद्धभूमौ जयं धैर्यवन्तम् । कलत्राङ्गनानां सुखं चित्रवस्त्रैर्युतं धान्यका धातुवृद्धिं करोति ॥ ३ ॥

धनधान्य की वृद्धिकरै राजों में मानकरै और युद्ध में जयकरै धीर्यकरै स्त्री को सुखकरै चित्रविचित्र वस्त्रों से युक्त करै धातु की वृद्धिकरै यह फल धान्यादशा का जानिये ॥ ३ ॥

अथ भ्रामरीदशाफलम् ॥

विदेशेभ्रमंहानिमुद्वेगता च कलत्राङ्गपीडासुखैर्वर्जितं च । ऋणं व्याधिवृद्धिं तथा भूपकोपं दशा भ्रामरी भोगभङ्गं करोति ॥ ४ ॥

विदेश में भ्रमै हानि होय उद्वेगहोय स्त्री को पीड़ाहोय सुखवर्जित होय ऋण व्याधि की वृद्धिहोय राजा कोपकरै यह फल भ्रामरी दशा का जानिये ॥ ४ ॥

अथ भद्रिकादशाफलम् ॥

धनानां विवृद्धिं गुणानां प्रकाशं समीचीनवस्त्रागमं राजमानम् । अलङ्कारदिव्याङ्गनाभोगसौख्यं दशा भद्रिका भद्रकार्यं करोति ॥ ५ ॥

धन की वृद्धि होय गुण का प्रकाशकरै समीचीन वस्त्रों का आगम होय राजमानहोय अलङ्कार अर्थात् भूषण तथा दिव्य स्त्रियों का भोग सुख होय भद्रिका सदा कल्याणकरै यह फल भद्रिका दशा का जानना ॥ ५ ॥

अथोल्कादशाफलम् ॥

जनानां विवादं ज्वराणां प्रकोपं धनादिष्टदारादिकानांवियोगम् । स्वगोत्रे विवादं सुहृद्बन्धुवैरं दशाचोल्किकानर्थकर्त्री सदैव ॥ ६ ॥

जनों से विवादकरै ज्वरों का कोप होय धन वा इष्ट तथा दारादिकन से वियोगकरै अपने गोत्र में विवादकरै मित्र से वैरकरै बन्धुसे वैरकरै सदा अनर्थकरै यह फल उल्का का जानिये ॥ ६ ॥

अथ सिद्धादशाफलम् ॥

राज्ञोऽधिकारं स्वजनादिसौख्यं धनादिलाभं गुणकीर्त्तिसिद्धिम् । वामादिलाभं सुतवृद्धिसौख्यं विद्यां च सिद्धा प्रकरोति पुंसाम् ॥ ७ ॥

राज्य का अधिकार होय स्वजनादिकों से सुख होय धनादि लाभ होय गुण कीर्त्ति सिद्धि होय वा वामादि लाभहोय अर्थात् स्त्री लाभहोय सुत वृद्धि का सुख होय विद्यासिद्धि होय यह फल सिद्धा दशा में पुरुष को होता है ॥ ७ ॥

अथ सङ्कटादशाफलम् ॥

जनानां विवादं ज्वराणां प्रकोपं कलत्रादिकष्टं पशूनां विनाशम् । गृहे स्वल्पवासं प्रवासाभिलाषं दशासङ्कटा सङ्कटं राजपक्षात् ॥ ८ ॥

जनों से विवाद होय ज्वरों का कोप होय कलत्रादिकों को कष्ट होय गृहमें थोड़ा वासहोय विदेश की बहुत इच्छाकरै राजाके पक्षसे संकट होय यह संकटादशा का फल होताहै ॥ ८ ॥

अथाष्टोत्तरीदशाचक्रम् ॥

आर्द्राचतुष्केसूर्यस्यदशाषड्वर्षसंमिते । मघात्रये तु चन्द्रस्य दशपञ्च च वत्सरा १ हस्ताच्चतुष्के भौमस्य दशा स्यादष्टवत्सरा । अनुराधात्रये ज्ञस्य दशसप्त च वत्सरा २ पूर्वाषाढाच्चतुष्के च शनेःस्युर्दशवत्सरा । वसुत्रये गुरौ प्रोक्ता ऊनविंशतिवत्सरा ३ राहोर्द्वादश वर्षैस्तु उत्तराभाद्रपाच्चतुः । एकविंशतिवर्षाणिशुक्रस्य कृत्तिकात्रये ॥ ४ ॥

आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य और श्लेषा इन नक्षत्रों का जन्म होय तो सूर्य की दशामें जन्म जानना तिसका प्रमाण छःवर्ष का जानना तथा मघा पूर्वाफाल्गुनी उत्तराफाल्गुनी का जन्म होय तो चन्द्रमा की दशा पन्द्रहवर्ष की होती है १ हस्त, चित्रा, स्वाती और विशाखा का जन्म होय तो मङ्गल की दशा आठवर्ष की जानिये तथा अनुराधा ज्येष्ठा और मूल का जन्म होइ तो बुध की दशा सत्रहवर्ष की जानिये २ तथा पूर्वाषाढ़, उत्तराषाढ़, अभिजित् और श्रवण का जन्म होय तो शनैश्चर की दशा का जन्म जानिये तिसका प्रमाण दशवर्ष का जानना तथा धनिष्ठा, शतभिष और पूर्वाभाद्रपदका जन्म होय तो बृहस्पति की दशा उन्नीसवर्ष की होती है ३ उत्तराभाद्रपद, रेवती, अश्विनी भरणी का जन्म होय तो राहु की दशा बारहवर्ष की जानना तथा कृत्तिका, रोहिणी और मृगशिरा का जन्म होय तो शुक्र की दशा इक्कीस वर्ष की जानना इस प्रकार से अष्टोत्तरीदशा का क्रम जानिये भुक्त भोग्य जन्म की दशा में पूर्वोक्तरीति से जानना परन्तु जिस दशा में जै नक्षत्र होयँ तिनका भाग जन्मनक्षत्रपर घटित करिकै भोग्य भुक्त निकालना चाहिये तथा पूर्वोक्त रीतिसे अन्तर्दशा भी जानना तथा फल भावोक्त जानना ॥ ४ ॥

अथाष्टोत्तरीदशाचक्रन्यासः ॥

सू०	चं०	मं०	बु०	श०	बृ०	रा०	शु०	दशा
६	१५	८	१७	१०	१६	१२	२१	वर्ष
आ० पुन० पुष्य श्ले०	म० पू० फा० उ० फा०	ह० चि० स्वा० विशा०	अनु० ज्ये० मू०	पू० षा० उ०षा० अभि० श्रवण	ध० श० पू०भा०	उ०भा० रे० अ० भ०	कृ० रो० मृ०	नक्षत्र

अथ विंशोत्तरीदशाप्रकारः ॥

नवर्क्षेष्वग्निभाद्येषु त्रिरावृत्तेष्वधःस्थिताः । रवीन्दुभौमराह्वीज्यशनिज्ञशिखिभार्गवाः १ रसादिशोऽद्र्योऽष्टेन्दुमिता भूपानवेन्दवः । सप्तेन्दवोऽद्र्योविंशद्दशावर्षाण्यनुक्रमात् ॥ २ ॥

कृत्तिकादि नव नक्षत्र तीन आवृत्ति करके स्थापित कीजिये सो क्रमसे दशा जानिये पहिलीदशा सूर्य की होती है दूसरी चन्द्रमा की होती है तीसरी मङ्गल की होती है चौथी राहु की होती है पँचई बृहस्पति की छठी शनैश्चर की सातई बुध की आठई केतु की नवई शुक्र की जानना १ सूर्य की दशा का प्रमाण छः वर्ष का है चन्द्रमा का दश वर्ष का है मङ्गल का सात वर्ष का है राहु का प्रमाण अठारह वर्ष का जानना तथा बृहस्पति का प्रमाण सोलह वर्ष का है वा शनैश्चर की उन्नीसवर्ष की जानिये वा बुध की सत्तरहवर्ष का प्रमाण है और केतु की सातवर्ष की होती है तथा शुक्र की बीस वर्ष का प्रमाण जानना तथा भुक्त भोग्य जन्म की दशा में पूर्वोक्त जानलेना तथा दशा का फल भावफल के तदाकार जानलेना भावफल आगे लिखैंगे तथा अन्तर्दशा पूर्वोक्त प्रकार से जानना ॥ २ ॥

अथ विंशोत्तरीमहादशाचक्रम् ॥

सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	दशा
६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२०	वर्ष
कृ.	रो.	मृ.	आ.	पुन.	पुष्य	श्ले.	म.	पू.फा.	नक्षत्र
उ.फा.	ह.	चि.	स्वा.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	नक्षत्र
उ.षा.	श्र.	ध.	श.	पू.भा.	उ.भा.	रे.	अ.	भ.	नक्षत्र

अथ सूर्य्यान्तर्दशाचक्रम् ॥

सू०	चं०	मं०	रा०	बृ०	श०	बु०	के०	शु०	दशा
००	००	००	००	००	००	००	००	०१	वर्ष
०३	०६	०४	१०	०९	११	१०	०४	००	मास
१८	००	०६	२४	१८	१२	०६	०६	००	दिन

अथ चन्द्रान्तर्दशाचक्रम् ॥

चं०	मं०	रा०	बृ०	श०	बु०	के०	शु०	सू०	दशा
००	००	०१	०१	०१	०१	००	०१	००	वर्ष
१०	०७	०६	०४	०७	०५	०७	०८	०६	मास
००	००	००	००	००	००	००	००	००	दिन

अथ भौमान्तर्दशाचक्रम् ॥

मं०	रा०	बृ०	श०	बु०	के०	शु०	सू०	चं०	दशा
००	०१	००	०१	००	००	०१	००	००	वर्ष
०४	००	११	०१	११	०४	०२	०४	०७	मास
२७	१८	०६	०९	२७	२७	००	०६	००	दिन

अथ राह्वन्तर्दशाचक्रम् ॥

रा०	बृ०	श०	बु०	के०	शु०	सू०	चं०	मं०	दशा
०२	०२	०२	०२	०१	०३	००	०१	०१	वर्ष
०८	०४	१०	०६	००	००	१०	०६	००	मास
१२	२४	०६	१८	१८	००	२४	००	१८	दिन

अथ गुरोरन्तर्दशाचक्रम् ॥

बृ०	श०	बु०	के०	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	दशा
०२	०२	०२	००	०२	००	०१	००	०२	वर्ष
०१	०६	०३	११	०८	०९	०४	११	२४	मास
१८	१२	०६	०६	००	१८	००	०६	०४	दिन

अथ शनैश्चरान्तर्दशाचक्रम् ॥

श०	बु०	के०	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	बृ०	दशा
०३	०२	०१	०३	००	०१	०१	०२	०२	वर्ष
००	०८	०१	०२	११	०७	०१	१०	०६	मास
०३	०९	०९	००	१२	००	०९	०६	१२	दिन

अथ बुधान्तर्दशाचक्रम् ॥

बु०	के०	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	बृ०	श०	दशा
०२	००	०२	००	०१	००	०२	०२	०२	वर्ष
०४	११	१०	१०	०५	११	०६	०३	०८	मास
२७	२७	००	०६	००	२७	१८	०६	०९	दिन

अथ केत्वन्तर्दशाचक्रम् ॥

के०	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	बृ०	श०	बु०	दशा
००	०१	००	००	००	०१	००	०१	००	वर्ष
०४	०२	०४	०७	०४	००	११	०१	११	मास
२७	००	०६	००	२७	१८	०६	०९	२७	दिन

अथ शुक्रान्तर्दशाचक्रम् ॥

शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	बृ०	श०	बु०	के०	दशा
०३	०१	०१	०१	०३	०२	०३	०२	०१	वर्ष
०४	००	०८	०२	००	०८	०२	१०	०२	मास
००	००	००	००	००	००	००	००	००	दिन

अथ दृष्टिज्ञानम् ॥

चतुर्थेचाष्टमेभौमस्तृतीयेदशमेशनिः । नवपञ्चगुरो दृष्टे संपूर्णो पूर्णसप्तमे ॥ १ ॥

चौथे आठयें स्थानपर मङ्गल पूर्णदृष्टि देखता है तथा तीसरे छठे शनैश्चर की पूर्णदृष्टि होती है और नवयें पांचयें बृहस्पति की पूर्णदृष्टि होती है और सातयें स्थानपर सब ग्रह पूर्णदृष्टि से देखते हैं ॥ १ ॥

अथ दृष्टिचक्रम् ॥

सू०	चं०	मं०	बु०	बृ०	शु०	श०	रा०	के०	ग्रहाः
७	७	४ ७ ८	७	५ ७ ९	७	३ ७ १०	७	७	दृष्टि स्थानानि

अथ ग्रहभावफलम् ॥

लग्ने स्थितो दिनकरः कुरुतेऽङ्गपीडां पृथ्वीसुतो वितनुतेरुधिरप्रकोपम् । छायासुतः प्रकुरुते बहुदुःखभाजं जीवेन्दुभार्गवबुधाः सुखकान्तिदाः स्युः १ दुःखावहा धन विनाशकरप्रतिष्ठा वित्तेस्थिता रविशनैश्चरभूमिपुत्राः । चन्द्रो बुधः सुरगुरुर्भृगुनन्दनो वा नानाविधं धनचयं कुरुते धनस्थः २ भानुः करोति विरुजं रजनीकरोऽपि कीर्त्यासुतं क्षितिसुतः प्रचुरप्रकोपम् । ऋद्धिं बुधः सुधिषणां सुविनीतवेषं स्त्रीणां प्रियं गुरुकवीरविजस्तृतीये ३ आ

दित्यभौमशनयः सुखवर्जिताङ्गं कुर्वन्ति जन्मनि नरं सु
चिरं चतुर्थे । सोमो बुधः सुरगुरुर्भृगुनन्दनो वा सौख्या
न्वितं च नृपकर्मरतः प्रधानम् ४ पुत्रे रविः प्रचुर
कोपयुतं बुधश्च स्वल्पात्मजं शनिधरातनुजावपुत्रम् ।
शुक्रेन्दुदेवगुरवः सुतधामसंस्थाः कुर्वन्ति पुत्रबहुलं
सुखिनं स्वरूपम् ५ मार्तण्डभूमितनयौ हतशत्रुपक्षं
पंगुर्नरं रिपुगृहेष्वतिपूजनीयम् । काव्येन्दुजौ मतिविहीन
मनल्परोगं जीवः करोति विकलं मरणं शशाङ्कः६ति
ग्मांशुभौमरविजाः किल सप्तमस्था जायां कुकर्मनिरतां
तनुसन्ततिं च । जीवेन्दुभार्गवबुधा बहुपुत्रयुक्तां रूपा
न्वितां जनमनोहररूपशीलाम् ७ सर्वे ग्रहा दिनकरप्र
मुखा नितान्तं मृत्युस्थितानि तनुते किल दुष्टबुद्धिम् ।
शस्त्राभिघातपरिपीडितगात्रयष्टिं सौख्यैर्विहीनमतिरोग
गुणैरुपेतम् ८ धर्मस्थिता रविशनैश्चरभूमिपुत्राः कुर्व
न्ति धर्मरहितं विमतिं कुशीलम् । चन्द्रो बुधो भृगुसुतः
सुरराजमन्त्री धर्मक्रियासु निरतं कुरुते मनुष्यम् ९
आदित्यभौमशनयः किल कर्मसंस्थाः कुर्युर्नरं बहुकुकर्म
रतं कुपुत्रम् । चन्द्रः सुकीर्तिमुशना बहुवित्तयुक्तं रूपान्वि
तं बुधगुरुः शुभकर्मभाजम् १० लाभस्थितो दिनकरो नृप
लाभयुक्तं तारापतिर्बहुधनं क्षितिजः क्षितीशम् । सौम्यो
विवेकशुभगं च धनायुषीज्यः शुक्रः करोति सगुणं रविजः
सुकीर्तिम् ११ सूर्यः करोति पुरुषं व्ययगो विशीलं कामी
शशिक्षितिसुतौ बहुपापभाजम् । चन्द्राङ्गजो गतधनं धि
षणः कृशाङ्गं शुक्रो बहुव्ययकरं रविजः सुतीव्रम् ॥ १२ ॥

इसका टीका चक्र से जान लेना ॥ १ । १२ ॥

अथ भावफलचक्रम् ॥

स्थान	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श. रा. के.	ग्रहाः
१	अङ्गपीढाकारकः	सुखकान्तिदः	रक्तविकारः	सुखकान्तिदः	सुखकान्तिदः	सुखकान्तिदः	बहुदुःखदः	फलं
२	अतिदुःखदःधननाशः	नानाप्रकारधनप्राप्तिः	अतिदुःखदःधननाशः	नानाप्रकारधनप्राप्तिः	नानाप्रकारधनप्राप्तिः	नानाप्रकारधनप्राप्तिः	अतिदुःखदःधननाशः	फलं
३	नीरोगः	कीर्तियुतम्	कोपयुक्तम्	ऋद्धियुतम्	सुबुद्धियुतम्	नानाप्रकारवेषधारणं	स्त्रीणांप्रियम्	फलं
४	सुखवर्जिताङ्गः	सुखयुतंनृपकर्मरतः	सुखवर्जिताङ्गः	सुखयुतं नृपकर्मरतः	सुखयुतं नृपकर्मरतः	सुखयुतंनृपकर्मरतः	सुखवर्जिताङ्गः	फलं
५	पुत्ररोगचिन्ता	बहुपुत्रं	पुत्ररहितम्	स्वल्पपुत्रं	बहुपुत्रं	बहुपुत्रं	पुत्ररहितम्	फलं
६	शत्रुनाशः	दुःखसरणप्रदः	शत्रुनाशः	बुद्धिहीनः	शरीरविकलः	बुद्धिहीनः	शत्रुगृहपूज्यः	फलं
७	स्त्रीदुष्टकर्मरताल्पसंततिः	स्त्रीरूपवतीपुत्राधिकंशीलयुतंमनोहरः	स्त्रीदुष्टकर्मरताल्पसंततिः	स्त्रीरूपवतीशीलयुतं तथा बहुपुत्रयुतंमनोहरः	स्त्रीरूपवतीशीलयुतंतथा बहुपुत्रयुतंमनोहरः	स्त्रीरूपवतीशीलयुतंतथा बहुपुत्रयुतंमनोहरः	स्त्रीदुष्टकर्मरतासूक्ष्मसंततिः	फलं
८	नेष्टफलप्रदःविकलःदुष्टबुद्धिःशस्त्रवातःसुखमतिहीनःरोगयुतः	नेष्टफलप्रदःविकलःदुष्टबुद्धिःशस्त्रघातःसुखमतिहीनःरोगयुतः	नेष्टफलप्रदःविकलतादुष्टबुद्धिःशस्त्रघातःसुखमतिहीनःरोगयुक्तम्	नेष्टफलप्रदःविकलतादुष्टबुद्धिःशस्त्रघातःसुखमतिहीनःरोगयुक्तम्	नेष्टफलप्रदःविकलतादुष्टबुद्धिः शस्त्रघातःसुखमतिहीनः रोगयुक्तम्	नेष्टफलप्रदःविकलतादुष्टबुद्धिःशस्त्रघातःसुखमतिहीनःरोगयुक्तं	नेष्टफलप्रदःविकलतादुष्टबुद्धिः शस्त्रघातः	फलं
९	अधर्मीदुष्टशीलः	धर्मनिरतः	अधर्मी दुष्टशीलः	धर्मनिरतः	धर्मनिरतः	धर्मनिरतः	अधर्मीदुष्टशीलः	फलं
१०	कुकर्मी	कीर्तिमान्	बहुकुकर्मरतम्	रूपान्वितंशुभकर्मभाजं	रूपान्वितंशुभकर्मभाजं	बहुधनयुतं	कुपुत्रं	फलं
११	नृपलाभयुक्तं	बहुधनलाभः	राज्ञोलाभः	विवेकयुक्तः	धनायुर्दः	गुणवान्	कीर्तिमान्	फलं
१२	दुष्टस्वभावः	कामी	पापी	धनहीनः	कृशता	बहुव्ययकरः	तीव्रः	फलं

अथ द्वादशभावज्ञानम् ॥

तनुर्धनश्च भ्राता च सुहृत्पुत्रो रिपुः स्त्रियः । मृत्युश्च धर्मकर्मायव्ययभावाः प्रकीर्तिताः ॥ १ ॥

तनु १ धन २ भ्रातृ ३ मित्र ४ पुत्र ५ शत्रु ६ स्त्री ७ मृत्यु ८ धर्म ९ कर्म १० लाभ ११ व्यय १२ ये लग्न से बारह घर के नाम हैं ॥ १ ॥

अथ शुभयोगः ॥

मूर्तौ शुक्रो बुधो यस्य केन्द्रेचैव बृहस्पतिः । दशमोऽङ्गारको यस्य सजातः कुलदीपकः ॥ १ ॥

लग्न में शुक्र वा बुध होय केन्द्र में बृहस्पति होय १ । ४ । ७ । १० दशयें मङ्गल होय तो बालक कुलदीपक होय ॥ १ ॥

अथाशुभयोगः ॥

नैव शुक्रो बुधो नैव नास्ति केन्द्रे बृहस्पतिः । दशमेऽङ्गारको नैव सजातः किं करिष्यति ॥ १ ॥

शुक्र बुध लग्न में न होयँ और केन्द्र में बृहस्पति न होय दशयें मङ्गल न होय तो बालक क्या करसक्ता है अर्थात् शुभ नहीं है ॥ १ ॥

अथ मातापिताभयप्रदयोगः ॥

षष्ठे च द्वादशस्थाने यदा पापग्रहो भवेत् । तदा मातृभयं विद्याच्चतुर्थेदशमे पितुः ॥ १ ॥

छठे बारहें स्थान में पापग्रह होयँ तो माता को अशुभ जानना तथा चौथे दशयें पापग्रह होयँ तो पिता को अरिष्ट जानिये ॥ १ ॥

अथ पितानाशयोगः ॥

लग्नस्थाने यदा शौरिः षष्ठे भवति चन्द्रमाः । कुजस्तु सप्तमस्थाने पिता तस्य न जीवति ॥ १ ॥

लग्नस्थान में शनैश्चर होय छठे चन्द्रमा होय मङ्गल सातयें स्थान में होय तो बालक का पिता न जीवै ॥ १ ॥

अथ द्वादशवर्षे मृत्युयोगः ॥

जन्मलग्ने यदा भौमश्चाष्टमे च बृहस्पतिः । वर्षे च द्वादशे मृत्युर्यदि रक्षति शङ्करः १ शनिक्षेत्रे यदा सूर्यो भानुक्षेत्रे यदा शनिः । वर्षे च द्वादशे मृत्युर्देवो वै रक्षिता यदि ॥ २ ॥

जन्मलग्न में मङ्गलहोय अठयें बृहस्पति होय तो शङ्कर रक्षित बालक की बारह वर्ष में मृत्यु होय १ शनैश्चर के घर में सूर्य होयँ तथा सूर्य के घर में शनैश्चर होयँ तो देवरक्षित बालक की भी बारह वर्ष में मृत्यु होय ॥ २ ॥

अथ चतुर्थवर्षे मृत्युयोगः ॥

षष्ठाष्टमस्तथा मूर्तौ जन्मकाले यदा बुधः । चतुर्थ वर्षे मृत्युश्च यदि रक्षति शङ्करः ॥ १ ॥

छठे अठयें तथा जन्मलग्न में बुध होय तो शङ्कररक्षित बालक की भी मृत्यु चारवर्ष में होय ॥ १ ॥

अथाष्टमवर्षे मृत्युयोगः ॥

भौमक्षेत्रे यदा जीवः षष्ठाष्टासु च चन्द्रमाः । वर्षेऽष्टमेऽपि मृत्युर्वै ईश्वरो रक्षिता यदि ॥ १ ॥

मङ्गलके घरमें बृहस्पतिहोय छठे अठयें चन्द्रमाहोय तो आठयें वर्ष ईश्वर रक्षित बालककी भी मृत्युहोय ॥ १ ॥

अथ षोडशवर्षे मृत्युयोगः ॥

दशमेपि यदा राहुर्जन्मकाले यदा भवेत् । वर्षे तु षोडशे ज्ञेयो बुधैर्मृत्युर्नरस्य च ॥ १ ॥

दशयें राहुहोय वा जन्मलग्नमें होय तो सोरहीं वर्ष मृत्युयोग जानना अथवा मृत्युतुल्य कष्ट होय ॥ १ ॥

अथ दरिद्रयोगः ॥

क्रूराश्चतुर्षु केन्द्रेषु तथा क्रूरो धनेऽपि च । दारिद्र योगं जानीयात्स्वपक्षस्य क्षयंकरः ॥ १ ॥

क्रूरग्रह चारों केन्द्रस्थानों में होयँ १। ४। ७। १० और धनस्थानमें क्रूर बैठा होय तो दारिद्रयोग जानिये अपने पक्ष की क्षयकरै ॥ १ ॥

अथ मृत्युयोगः ॥

चतुर्थे च यदा राहुः षष्ठे चन्द्रेऽष्टमेऽपि वा । सद्य एवभवेन्मृत्युः शङ्करो यदि रक्षति ॥ १ ॥

चौथे स्थान में राहु होय छठे आठयें चन्द्रमा होय तो बालक शङ्कर से रक्षित भी मृत्यु तत्काल पावै ॥ १ ॥

अथ द्वितीयप्रकारेण मृत्युयोगः ॥

क्षीणचन्द्रो व्ययस्थाने पापलग्ने स्मरेऽष्टमे । शुभैश्च रहिते केन्द्रे शीघ्रं नश्यति बालकः १ सप्तमे भवने भौमश्चाष्टमे भार्गवो यदि । नवमे भवने सूर्यः स्वल्पायुष्यः प्रजायते ॥ २ ॥

क्षीणचन्द्रमा बारहें स्थान में होय अथवा पापग्रह के स्थान में होय अथवा सातयें आठयें होय और शुभग्रह केन्द्र से रहित होय तो तत्काल मृत्यु जानना १ सातयें स्थान में मङ्गल होय आठयें शुक्र होय नवयें घरमें सूर्य होय तो अल्पायु जानना ॥२॥

अथ तृतीयप्रकारेण मृत्युयोगः ॥

क्षीणचन्द्रो यदा लग्ने पापाश्चाष्टमगेहगाः । स्मरे लग्नपतिः पापैर्युक्तो नश्येत्तदा शिशुः ॥ १ ॥

क्षीण चन्द्रमा लग्न में होय पापग्रह आठयें तथा केन्द्र में होय लग्नस्वामी सातयें पापग्रह के संग होय तो बालक की मृत्यु जानिये ॥ १ ॥

अथ वशिष्ठोक्तः क्षीणपूर्णचन्द्रनिर्णयः ॥

सम्पूर्णेन्दुरष्टम्योर्मध्येन्दुः पूर्णसंज्ञकः । विनष्टेन्दुरष्टम्योर्मध्येऽसौ क्षीणसंज्ञकः ॥ १ ॥

शुक्लपक्ष की अष्टमी से कृष्णपक्ष की सप्तमीतक पूर्णचन्द्र होता है तथा कृष्णपक्ष की अष्टमी से शुक्लपक्ष की सप्तमीतक क्षीणचन्द्र होताहै यह क्षीण पूर्णचन्द्र का निर्णय जानना जो पहिले लिख आयेहैं उससे यह विशेपहै वशिष्ठजी कहतेहैं ॥ १ ॥

अथ ग्रहबलानिर्बलचक्रम् ॥

उदितः	उच्चस्थः	स्वगृहस्थः	मित्रगेहस्थितः	बलवान्
अस्तः	नीचस्थः	शत्रुगेहस्थितः	० ०	निर्बलः

अथ जातिभ्रंशकारकयोगः ॥

धनस्थाने यदा सौरिः सैंहिकेयो धरात्मजः । गुरुशुक्रौ सप्तमे च त्वष्टमे चन्द्रभास्करौ १ ब्राह्मणस्य पदे वापि वेश्यासु च सदा रतिः । प्राप्ते विंशतिमे वर्षे म्लेच्छो भवति अन्यथा ॥ २ ॥

दूसरे घरमें जो शनैश्चर, राहु और मङ्गलहों और सातवें घर में बृहस्पति और शुक्र हों आठयें घरमें चन्द्रमा और सूर्य हों १ तो वीसवें वर्ष में ब्राह्मणों के चरणों वा वेश्याओं में प्रीति हो और प्रकार से म्लेच्छहो ॥ २ ॥

अथान्यमतेन मृत्युयोगः ॥

अष्टमस्थो यदा राहुः केन्द्रे च नीचचन्द्रमाः । सद्यश्च भवेन्मृत्युर्बालकस्य न संशयः ॥ १ ॥

आठयें घरमें राहु होय और केन्द्रमें नीच अर्थात् वृश्चिक राशि का चन्द्रमा होय तो बालक की शीघ्रही मृत्यु होय ॥ १ ॥

अथैकमासे मृत्युयोगः ॥

द्वादशस्था यदा चन्द्रः पापाश्चाष्टमगेहगाः । मासे नैकेन मृत्युः स्याद्बालकस्य भवेद्ध्रुवम् ॥ १ ॥

बारहें स्थान में चन्द्रमा होय और पापग्रह आठयें हो तो एक महीना में बालक की मृत्यु निश्चय होय ॥ १ ॥

अथ विषदोषे मृत्युयोगः ॥

षष्ठाष्टमे यदा चन्द्रो बुधयुक्तश्च तिष्ठति । विषदोषेण बालस्य तदा मृत्युश्च जायते ॥ १ ॥

छठे आठयें चन्द्रमा बुध के संग होकर पड़े तो विषदोष से बालक की मृत्यु होय ॥ १ ॥

अथैकवर्षे मृत्युयोगः ॥

अष्टमे च निशानाथः केन्द्रे क्रूरो यदा भवेत् । चतुर्थे च यदा राहुर्वर्षमेकं स जीवति ॥ १ ॥

आठयें स्थान में चन्द्रमा होय और केन्द्र में क्रूरग्रह होय और चौथे घरमें राहु होय तो एक वर्ष बालक जिये ॥ १ ॥

अथ दशाहे मृत्युयोगः ॥

लग्नेऽष्टमे यदा राहुश्चन्द्रोऽपि यदि दृश्यते । दशाहे जायते तस्य बालस्य मरणं ध्रुवम् ॥ १ ॥

अष्टमस्थान में राहु होय और चन्द्रमा उसे देखता होय तो दश दिन में बालक की मृत्यु होय ॥ १ ॥

अथ द्वितीयवर्षे मृत्युयोगः ॥

वक्री शनिर्भौमगृहे केन्द्रे षष्ठाष्टमेऽपि वा । कुजेन बलिना दृष्टो हन्ति वर्षद्वये शिशुम् ॥ १ ॥

वक्री शनैश्चर मङ्गल के घर में होकर केन्द्रस्थान में होय ॥ १ ॥

७ । १० अथवा छठे आठयें होय और मङ्गल बली होकर देखता होय तो दो वर्षपर्यन्त बालक की मृत्यु जानना ॥ १ ॥

अथ सप्तमदिने सप्तममासे मृत्युयोगः ॥

शनिराहुकुजैर्युक्तः सप्तमे नवमे शशी । सप्तमे दिवसे हन्ति मासे वा सप्तमे शिशुम् ॥ १ ॥

शनि राहु मङ्गलसे युक्त चन्द्रमा सातयें वा नवयें स्थान में होय तो सातयें दिन वा सातयें मास बालक की मृत्यु होय ॥ १ ॥

अथान्यमतेन द्वादशवर्षे मृत्युयोगः ॥

भौमक्षेत्रे यदा जीवो जीवक्षेत्रे च भूसुतः । द्वादशे वत्सरे मृत्युर्बालकस्य न संशयः ॥ १ ॥

मङ्गल के घर में बृहस्पति होय और बृहस्पतिके घरमें मङ्गल होय तो वारहीं वर्ष मृत्यु जानिये ॥ १ ॥

अथ मात्ररिष्टयोगः ॥

उच्चे वा यदि वा नीचे सप्तमस्थो दिवाकरः । तदा जातो निहन्त्याशु मातरं नात्र संशयः ॥ १ ॥

उच्च का अथवा नीच का सूर्य सातयें होय तो बालक की माता को अरिष्ट जानिये ॥ १ ॥

अथ भ्रातृनाशकयोगः ॥

धनस्थाने यदा भौमः शनैश्चरसमन्वितः । सहजे च भवेद्राहुर्भ्राता तस्य न जीवति ॥ १ ॥

धनस्थान में मङ्गल शनैश्चर से युक्त होय और तीसरे स्थान में राहु होय तो भाई न जिये ॥ १ ॥

अथ परमायुर्योगः ॥

पञ्चमे च निशानाथस्त्रिकोणे यदि वाक्पतिः । दशमे च महीसूनुः परमायुः स जीवति ॥ १ ॥

लग्न से पांचयें स्थान में चन्द्रमा होय और त्रिकोण में बृहस्पति होय दशयें मङ्गल होय तो एकसे बीस १२० वर्ष की आयु दीर्घ जानिये ॥ १ ॥

अथ परजातलक्षणम् ॥

लग्नं शशाङ्कं सुरराजमन्त्री न वीक्षितो नैकगृहस्थितो वा । न जीववर्गेण युतं तदानीं जातं वदेदन्यसमागमेन ॥ १ ॥

लग्न वा चन्द्रमा को बृहस्पति न देखता हो और इनके संग भी न होय और बृहस्पति के वर्ग अर्थात् षट्वर्ग में भी चन्द्रमा वा लग्न न होय तो दूसरे पुरुष से उत्पन्न जानना॥१॥

अथ द्वितीयप्रकारेण परजातलक्षणम् ॥

स्वातीद्वितीयारविवारयुक्ता ससप्तमीसोमजरेवतीच। सद्वादशी भानुसुते धनिष्ठा चैतेषु जातः परतो वदन्ति १॥

जन्मसमय में द्वितीया स्वाति रविवार युक्त होय तो अन्य से जन्म जानना तथा दूसरा योग सप्तमी बुधवार रेवती युक्त होय तो दूसरे से जन्म कहना तीसरा योग द्वादशी तिथि शनिवार धनिष्ठा नक्षत्र होय तो अन्यसे जन्म जानिये ॥ १ ॥

अथ चरणवृद्धिदृष्टिज्ञानम् ॥

पादैकदृष्टिर्दशमे तृतीये द्विपाददृष्टिर्नवपञ्चमे च । त्रिपाददृष्टिश्चतुरष्टके च सम्पूर्णदृष्टिः समसप्तमे च॥१॥

सब ग्रहोंकी तीसरे छठे घरपर एकचरण से दृष्टि होती है और नवयें पँचयें दो चरण से होती है चौथे अठयें तीन चरण से होती है और सातयें पूर्णदृष्टि होती है ॥ १ ॥

अथ भार्यामरणयोगः ॥

षष्ठे च भवने भौमः सप्तमे सिंहिकासुतः । अष्टमे च यदा सौरिः भार्या तस्य न जीवति ॥ १ ॥

छठें घर में मङ्गलहोय सातयें राहु होय आठयें शनैश्चर होय तो स्त्री न जिये ॥ १ ॥

अथ राजयोगः ॥

धर्मकर्माधिनेतारावन्योन्याश्रयसंस्थितौ । राजयोगाविति प्रोक्तो विख्यातो विजयी भवेत् ॥ १ ॥

नवयें का स्वामी दशयें होय और दशयें का स्वामी नवयें होय तो राजयोग होताहै और विवाद में जीत होती है ॥ १ ॥

अथान्यमतः ॥

त्रिभिःस्वस्थैर्भवेन्मन्त्री त्रिभिरुच्चैर्नराधिपः । त्रिभिर्नीचैर्भवेद्दासस्त्रिभिरस्तंगतैर्जडः ॥ १ ॥

तीन ग्रह अपने घर के होयँ तो मन्त्री होय और तीन ग्रह उच्च के होयँ तो राजा होय और तीन ग्रह नीच के होयँ तो दास होय और तीन ग्रह अस्तंगत होयँ तो जड़ होय ॥ १ ॥

अथ मारकेशज्ञानम् ॥

जन्मलग्नाष्टमस्थानमष्टमादष्टमञ्च यत् । तयोरपि व्ययस्थानं मारकस्थानमुच्यते ॥ १ ॥

जन्मलग्न से आठवां स्थान तिससे आठवां स्थान अर्थात् जन्मलग्न से तीसरा स्थान भया इनदोनों के वारहें घरको अर्थात् आठयें से वारहवां घर लग्न से सातवां भया और तीसरे से वारहवां अर्थात् जन्मलग्नसे दूसरा घर भया इन दोनों घरों को मारकस्थान जानना इनकी दशा वा अन्तर्दशा विंशोत्तरीमें मृत्यु वा मृत्युभय जानना तथा अष्टमेश की दशा में मृत्युसम्भव जानना ॥ १ ॥

अथ पाराशरोक्तायुर्निर्णयः ॥

अल्पायुर्दिननाथस्य शत्रौ लग्नाधिपे यदि । समत्वे मध्यमायुः स्यान्मित्रे पूर्णायुरादिशेत् ॥ १ ॥

लग्नेश सूर्य का मित्र होय तो पूर्णायु जानना तथा जन्म में सिंह लग्न होय तौभी पूर्णायु जानना तथा लग्नाधिपसूर्य का समक्षेत्री होय तो मध्यायु जानना और लग्नेश सूर्य का शत्रु होय तो अल्पायु जानिये ये योग ग्रहमैत्री चक्र से विचारना प्रथम विवाह के विचारमें मुहूर्तप्रकरण में लिखिचुके हैं तथा अल्पायु की प्रमाण बत्तिस वर्ष कीहै और मध्यायु की चौंसठ वर्ष तक जानना और पूर्णायु की छानवे की प्रमाण है ॥ १ ॥

अथ सूर्यदशाफलम् ॥

देशान्तरं च निजबन्धुवियोगदुःखमुद्वेगरोगभयचौर भवा च पीडा । पूर्वस्थितस्य निखिलस्य धनस्य नाशो भानोर्दशाजननकालदशा भवन्ति ॥ १ ॥

देशान्तर करावै वा भाई का वियोग होय तथा दुःख होय मन को उद्वेग अर्थात् चिन्तारोग भय चोर पीड़ा और सञ्चित धन का नाश करै यह सूर्यदशा का फल जानना ॥ १ ॥

अथ चन्द्रदशाफलम् ॥

हेमादिभृत्यवरवाहनयानलाभः शत्रुप्रतापबलवृद्धि परम्परा च । इष्टान्नदानशयनासनभोजनानि नूनं सदा शशिदशागमने भवन्ति ॥ २ ॥

सुवर्णादि ऐश्वर्य का लाभ श्रेष्ठवाहन घोड़ा हाथी पालकी इत्यादि का लाभ होय शत्रु पराजय बल की वृद्धि होय और नाना प्रकार के उत्तम रस अन्न शयन स्थान आसन उत्तम वस्तु का लाभ भोजन प्राप्ति यह फल चन्द्रमा की दशामें जानिये ॥ २ ॥

अथ भौमदशाफलम् ॥

भूपालचौरभयवह्निकृता च पीडा सर्वाङ्गरोगभय

दुःखसदुःखिता च । चिन्ताज्वरश्च बहुकष्टदरिद्रयुक्तः स्यात्सर्वदा कुजदशाजनने भवन्ति ॥ ३ ॥

राजा से भय चोर से भय अग्नि से पीड़ा सर्व शरीर में रोग भय बहुत दुःखी चिन्तायुक्त ज्वर कष्ट बहुत दरिद्रयुक्त यह फल मङ्गल की दशा में जानना ॥ ३ ॥

अथ राहुदशाफलम् ॥

दीनो नरो भवति बुद्धिविहीनचिन्ता सर्वाङ्गरोगभय दुःखसदुःखिता च ॥ पापानिबन्धबहुकष्टदरिद्रयुक्तं राहोर्दशा जननकालदशा भवन्ति ॥ ४ ॥

मनुष्य दीन होय बुद्धिहीन चिन्तायुक्त सर्वाङ्गरोगी भय बहुत दुःखी पापकर्म से बन्धन बहुत कष्ट दरिद्रयुक्त यह राहु-दशा में फल जानना ॥ ४ ॥

अथ गुरुदशाफलम् ॥

राज्याधिकारपरिवर्द्धितचित्तवृत्तिधर्माधिकारपरिपालनासिद्धिबुद्धिम् । सद्विग्रहोऽपि धनधान्यसमृद्धिता च स्याद्देवता गुरुदशागमने भवन्ति ॥ ५ ॥

राज्य अधिकार और चित्त स्वस्थ धर्म में उत्तम प्रकार की बुद्धि शरीर आरोग्य सत् विचारवान् धनधान्य की समृद्धि यह फल बृहस्पति की दशा का जानिये ॥ ५ ॥

अथ शनिदशाफलम् ॥

मिथ्यापवादवधबन्धसमर्थहानिर्मित्रे च बन्धुवचनेषु च युद्धबुद्धिः । सिद्धं च कार्यमपि यत्र सदा विनष्टं स्यात्सर्वदा शनिदशागमने भवन्ति ॥ ६ ॥

मिथ्यापवाद वध बन्धन द्रव्य का नाश मित्र तथा बान्धवों

से कलहकी वृद्धि और सिद्धकार्य नष्ट होजाय यह शनिदशा का फल जानिये ॥ ६ ॥

अथ बुधदशाफलम् ॥

दिव्याङ्गनामदनसङ्गमकेलिसौख्यं नानाविधैःसम भिरागमनोभिरामैः । हेमादिरत्नविभवागमकोशधान्यं स्यात्सर्वदा बुधदशागमने भवन्ति ॥ ७ ॥

उत्तम स्त्रीप्राप्ति रति सौख्य और नानाप्रकार के सौख्य विलास सुवर्ण रत्न इत्यादि विभवयुक्त खज़ाना व धान्य यह फल बुधदशा का जानिये ॥ ७ ॥

अथ केतुदशाफलम् ॥

भार्यावियोगजनितं च शरीरदुःखं द्रव्यस्य हानिर तिकष्टपरंपरा च । रोगश्च बन्धुकलहश्च विदेशता च केतोर्दशा जननकालदशा भवन्ति ॥ ८ ॥

स्त्रीवियोग शरीर को दुःख द्रव्य का नाश बहुत कष्ट रोग-प्राप्ति बन्धुन में कलह विदेशवास यह केतुदशा का फल जानिये ॥ ८ ॥ अथ शुक्रदशाफलम् ॥

आरामवृद्धिपरिसर्वशरीरवृद्धिं श्वेतातपत्रधनधान्य समाकुलञ्च । आयुःशरीरसुतपौत्रसुखञ्चराणां द्रव्यञ्च भार्गवदशागमने भवन्ति ॥ ९ ॥

बागीचा इत्यादि स्थान की वृद्धि शरीरपुष्टि श्वेतच्छत्रकी प्राप्ति धनधान्ययुक्त आयुवृद्धि पुत्रपौत्रन का सुख द्रव्यप्राप्ति यह फल शुक्र की दशा का जानना ॥ ९ ॥

अथ डिम्भाख्यचक्रम् ॥

नराकारं लिखेच्चक्रं सूर्यो यत्र व्यवस्थितः । तन्नक्षत्रा दिकं कृत्वा त्रयं दद्याच्च मस्तके १ वदने च त्रयं दद्यादेकैकं स्कन्धयोर्द्वयोः । बाहुयुग्मे तथैकैकं पाण्योरेकैकमेव च २

ऋक्षाणि हृदये पञ्च नाभौ स्यादेकमेवहि । ऋक्षं गुह्ये वदेदेकमेकैकं जानुगोद्वये ३ नक्षत्राणि षडन्यानि दद्या दंघ्रिद्वयं बुधः । पादस्थिते च नक्षत्रे निर्धनोऽल्पायुरेवच ४ विदेशगमनं जानौ गुह्येस्यात्परदारकः । अल्पतोषी भवेन्नाभौ हृदयेऽतीश्वरस्तथा ५ तस्करः पाणियुग्मे च बाहुस्थानेऽच्युतोभवेत् । स्कन्धे गजस्कन्धगामी मुखे मिष्टान्नभोजनम् ६ मस्तकस्थे च नक्षत्रे पटबन्धी भवे न्नरः । सूर्यनक्षत्रतो जन्मनक्षत्रावधिगण्यते ॥ ७ ॥

नराकार चक्र लिखै सूर्य के नक्षत्र से जन्मनक्षत्र पर्यन्त तीन नक्षत्र मस्तक में देय १ तीन नक्षत्र मुखमें देय और एक नक्षत्र स्कन्ध में देय और एक २ नक्षत्र बाहुपर देय और एक २ नक्षत्र हाथोंपर देय २ पांच नक्षत्र हृदय में देय और एक नक्षत्र नाभि में देय तथा एक नक्षत्र गुदा में देय और एक २ नक्षत्र जंघों में देय ३ और छः नक्षत्र दोनों चरणों में देय ॥ फलम् ॥ जन्म का नक्षत्र चरणों में परै तो निर्धनी होय वा अल्पायु होय ४ और जो जङ्घोंमें परै तो विदेशगमन करावै गुदा में परै तो पराई स्त्री से भोगकरै नाभिमें परै तो अल्पतोषी अर्थात् थोड़े में सन्तोष करै हृदयमें परै तो बड़ा ऐश्वर्य होय ५ हाथ में परै तो चोर होय बाहुमें परै तो स्थान छूटै स्कन्ध में परै तो हाथी की सवारी मिलै मुख में परै तो मिष्टान्न भोजन होय ६ मस्तक में परै तो पटबन्धी होय अर्थात् उन्नति होय सूर्य के नक्षत्र से जन्मनक्षत्रतक गिनै ॥ ७ ॥

अथ डिम्भाख्यचक्रन्यासः ॥

मस्तक	मुख	स्कन्ध	बाहु	हाथ	हृदय	नाभि	गुदा	जानु	चरण	अंग
३	३	२	२	२	५	१	१	२	६	नक्षत्र
पटबंधी	मिष्टान्न भोजनं	गज गामी	स्थान च्युतः	चौरः	अतिऐ श्वर्यः	अल्प तोषी	परदार रतः	विदेश गमनम्	अल्पायु निर्धनः	फलम्

अथ मूलवृक्षचक्रम् ॥

मूलेऽष्टौ मूलवृक्षस्य घटिकाः परिकीर्तिताः । स्तम्भेषु षड्घटिकास्त्वचिचैकादश स्मृताः १ शाखायां च नव प्रोक्ताःपत्रे प्रोक्ताश्चतुर्दश । पुष्पे पञ्चफले वेदाः शिखायां च त्रयः स्मृताः २ (अथ फलम्) मूले नाशो हि मूलस्य स्तंभे हानिर्धनक्षयः । त्वचि भ्रातुर्विनाशाय शाखायां मातृपीडनम् ३ परिवारक्षयं पत्रे पुष्पे मन्त्री च भूपतेः। फले राज्यं शिखायां चेदल्पजीवी च बालकः॥४॥

मूलवृक्ष की जड़ में आठ घड़ी देय स्तम्भ में छःघड़ी देय त्वचा में ग्यारह घड़ी देइ १ शाखामें नव घड़ी देइ पत्र में चौदह घड़ी देइ मूल में पांचघड़ी देइ फल में चारघड़ी देइ शिखामें तीनघड़ी देइ २ ॥ अथ फलम् ॥ मूलमें जन्मका इष्टकाल पड़े तो मूलको नाशकरै स्तम्भ में परै तो हानि होय तथा धन को क्षय होय त्वचा में परै तो भाई को नाशकरै शाखा में परै तो माता को पीड़ाकरै ३ पत्र में परै तो परिवारक्षयकरै फूलमें परै तो राजा का मन्त्रीहोय फल में परै तो राजा होय शिखा में परै तो बालक अल्पजीवी होय ॥ ४ ॥

अथ मूलवृक्षचक्रन्यासः ॥

मूल	८	मूलनाशः
स्तम्भ	६	हानिर्धनक्षयः
त्वचा	११	भ्रातृनाशः
शाखा	६	मातृपीडा
पत्र	१४	परिवारक्षयः
पुष्प	१५	राजमन्त्री
फल	४	राजा
शिखा	३	अल्पायुः
वृक्षाङ्ग	घटी	फलम्

अथ स्त्रीजातकविचारः ॥

लग्ने च सप्तमे पापे सप्तमे वत्सरे मृतिः । म्रियते चाष्टमे वर्षे चन्द्रः षष्ठाष्टमे यदा १ शुक्रे गुरौ मृतापत्या मृतगर्भा च मङ्गले । अष्टमस्थो ग्रहो नूनं न स्त्रियाः शोभनो मतः २ एकोनार्याभवेत्पुत्रः पञ्चमस्थो यदा रविः । मङ्गले च त्रयः पुत्रा गुरौ पञ्च प्रकीर्तिताः ३ पञ्चमस्थे निशानाथे स्त्रियाः कन्याद्वयं भवेत् । बुधे कन्याश्चतस्रश्च शुक्रे सप्त च कन्यकाः ४ षडेव कन्या जायन्ते धर्मस्थाने यदा सितः । सप्तमे च यदा राहुर्मेयुः पुत्रकास्त्रयः ५ पापयोरन्तरे लग्ने चन्द्रे वा यदि कन्यका । जायते च तदा हन्ति पतिश्वशुरयोः कुलम् ६ द्वादशे चाष्टमे भौमे क्रूरे तत्रैव संस्थिते । लग्ने च सिंहिकापुत्रे रण्डा भवति कन्यका ७ सप्तमे भार्गवे जाता कुलदोषकरी भवेत् । कर्कराशिस्थिते भौमे स्वैरं भ्रमति वेश्मसु ८ लग्नात्सप्तमगः पापश्चन्द्रात्सप्तमगोऽपि वा । सद्यो निहन्ति दम्पत्योरेको नास्त्यत्र संशयः ९ लग्ने वा मेषगः सूर्यश्चन्द्रात्सप्तमगोऽपि वा । सद्यो निहन्ति दम्पत्योः कन्यास्तत्र न संशयः ॥ १० ॥

लग्न से सातयें पापग्रह होय तो सातयें वर्षमरै और चन्द्रमा छठे आठयें होय तो आठईवर्ष मरै १ बृहस्पति शुक्र छठे आठयें होयँ तो वालक न जिये और मङ्गल छठे आठयें होयँ तो मृतगर्भा होय अर्थात् गर्भगिरै आठयें कोई ग्रह स्त्री के शुभ नहीं है २ लग्न से पांचयें सूर्यहोय तो स्त्री के एक वालक होय और मङ्गल पांचयें होय तो तीन पुत्र होयँ और बृहस्पति पांचयें होय तो पांच पुत्र होयँ ३ पाचयें चन्द्रमा होय तो स्त्री के दो

कन्या होयँ बुध पांचयें होय तो चारकन्या होयँ शुक्र पांचयें होय तो सात कन्या होयँ ४ शुक्र नवयें स्थान में होय तो छः कन्या होयँ सातयें राहु होय तो तीन पुत्र होयँ ५ कन्या की जन्मलग्न पापग्रहों के अन्तर में होय तो पति वा श्वशुरकुल को हने वा चन्द्रमा पापग्रहों के अन्तर में होय तौ भी पति श्वशुरकुल को हनै ६ बारहें वा आठयें स्थानमें मङ्गल होय और क्रूरग्रह सङ्गहोय लग्न में राहु होय तो कन्या विधवा होय ७ सातयें शुक्र होय तो कुलदोष करनेवाली होय तथा कर्क-राशि में मङ्गल होय तो इच्छापूर्वक घर घर में घूमै ८ लग्न से सातयें पापग्रह होय तथा चन्द्रमा से सातयें पापग्रह होय तो एकही योग स्त्रीपुरुष दोनों को नाशकरै ९ लग्न में सूर्य होय वा मेष का सूर्य होय अथवा चन्द्रमा से सातयें होय तो निस्स-न्देह स्त्रीपुरुष दोनों की कन्याओं का नाश करै ॥ १० ॥

अथ स्त्रीराजयोगः ॥

कर्कोदये सप्तमगे पतङ्गे जीवेन दृष्टे परिपूर्णदेहे । विद्याधरी चात्र भवेत्प्रधाना राज्ञी गतारिर्बहुपुत्रपौत्रा ॥ १ ॥

कर्कलग्न में जन्म होय सातयें सूर्य होय और तनुविषे बृहस्पति की दृष्टि होय तो स्त्री विद्यावती होय तथा रानी होय तथा कोई शत्रु न होय और पुत्र पौत्र बहुत होयँ ॥ १ ॥

अथ स्त्रीडिम्भाख्यचक्रम् ॥

मौलौ त्रयं मुखे सप्त स्तनयोरष्टभानि च । हृदि त्रयं त्रयं नाभौ त्रयं गुह्ये च विन्यसेत् १ मौलौ संतापकः सूर्यो मुखे मिष्टान्नदो भवेत् । स्तनयोः कामदः प्रोक्तो हृदये सुखदः स्त्रियाः २ नाभौ पतिसुखं दत्ते गुह्ये कामप्रदः सदा । सूर्यडिम्भाख्यचक्रं तु स्त्रीणां प्रोक्तं विशेषतः ३

सूर्य के नक्षत्र से तीन नक्षत्र मस्तक में देय और सात

नक्षत्र मुख में देय और आठ नक्षत्र स्तनों में देय तथा हृदय नाभि गुह्य में तीनि तीनि देय १ मस्तक में जन्मर्क्ष परै तो संताप करै मुखमें परै तो मिष्टान्न देनेवाला होय स्तनों में काम का देनेवाला होय और हृदय में स्त्री को सुखदेवै २ नाभि में परै तो पति को सुख होय और गुदा में परै तो कामना सदाही पूर्णकरै यह सूर्य डिम्भाख्यचक्र स्त्रियों के लिये कहाहै ॥ ३ ॥

अथ डिम्भाख्यचक्रन्यासः २७ ॥

३	७	८	३	३	३	नक्षत्र
मस्तक	मुख	स्तन	हृदय	नाभि	गुह्य	अङ्ग
संतापः	मिष्टान्नदः	कामदः	सुखदः	पतिसुखम्	कामप्रदः	फलम्

अथ स्त्रीभावस्थग्रहफलम् ॥

मूर्तौ करोति विधवां दिनकृत्कुजश्च राहुर्विनष्टतनयां रविजो दरिद्राम्।शुक्रःशशाङ्कतनयस्तु गुरुश्च साध्वी मायुःक्षयं च कुरुतेऽत्र च शर्वरीशः १ कुर्वन्ति राहुरविजश्च रविश्च भौमो दारिद्रदुःखमतुलं नियतं द्वितीये। वित्तेश्वरीमविधवां गुरुशुक्रसौम्या नारीं प्रभूततनयां कुरुते शशाङ्कः २ सूर्येन्दुभौमगुरुशुक्रबुधास्तृतीये कुर्युः स्त्रियं वहुसुतां धनभागिनीं च । सत्यं दिवाकरसुतः कुरुते धनाढ्यां लक्ष्मीं ददाति नियतं किल सैंहिकेयः ३ स्वल्पं पयोभवति सूर्यसुते चतुर्थे दौर्भाग्यमुष्णकिरणः कुरुते शशी च। राहुर्विनष्टतनयां क्षितिजोऽल्पवीजां सौख्यान्वितां भृगुगुरू च बुधश्च कुर्युः ४ नष्टात्मजां रविकुजौ खलु पञ्चमस्थौ चन्द्रात्मजो बहुसुतां गुरु भार्गवौ च। राहुर्ददाति मरणं रविजस्तु रोगं कन्याप्रसूति

नितरां कुरुते शशाङ्कः ५ षष्ठस्थिताश्शनिदिवाकर राहुभौमा जीवस्तथा बहुसुतां धनभागिनीं च । चन्द्रः करोति विधवामुशनादरिद्रां वेश्यां शशाङ्कतनयः कलहप्रियाञ्च ६ सौरारजीवबुधराहुरवीन्दुशुक्रा दद्युःप्रसत्यमरणं खलु सप्तमस्थाः । वैधव्यबन्धनभयं क्षयवित्तनाशं व्याधिं प्रवासमरणं नियतं क्रमेण ७ स्थानेऽष्टमे गुरुबुधौ नियतं वियोगं मृत्युं शशी भृगुसुतश्च तथैव राहुः । सूर्यः करोति विधवां धनिनीं कुजश्च सूर्यात्मजो बहुसुतां पतिवल्लभाञ्च ८ धर्मस्थिता भृगुदिवाकरभूमिपुत्रजीवाः सुधर्मनिरतां शशिजः सुभोगाम् । राहुश्च सूर्यतनयश्च करोति बन्ध्यां नारीं प्रसूततनयां कुरुते शशाङ्कः ९ राहुर्नभःस्थलगतो विधवां करोति पापपरां दिनकरश्च शनैश्चरश्च। मृत्युं कुजोऽर्थरहितां कुटिलाञ्च बन्ध्यां शेषाग्रहा धनवतीं बहुवल्लभाञ्च १० आये रविर्बहुसुतां धनिनीं शशाङ्कः पुत्रान्वितां क्षितिसुतो रविजो धनाढ्याम् । आयुष्मतीं सुरगुरुर्भृगुजः सपुत्रीं राहुः करोति शुभगां सुखिनीं बुधश्च ११ अन्त्येधनव्ययवतीं दिनकृद्दरिद्रां बन्ध्यां कुजः पररतां कुटिलां च राहुः । साध्वीं सितेज्यशशिजाबहुपुत्रपौत्रयुक्तां विधुः प्रकुरुते व्ययगोदिनान्धाम् ॥ १२ ॥

इति श्रीसूर्यनारायणत्रिपाठिविरचितेज्योतिस्सारसंग्रहे जातकप्रकरणं चतुर्थं समाप्तम् ॥ ४ ॥

अथ भावफलचक्रम् ॥

स्थान	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.के	ग्रहाः
१	विधवा	अल्पायु	विधवा	पतिव्रता	पतिव्रता	पतिव्रता	पुत्र नाशः	पुत्र नाशः	फलम्
२	दरिद्र दुःखम्	बहुपुत्रम्	दरिद्र दुःखम्	सौभाग्यम्	सौभाग्यम्	सौभाग्यम्	दुःख युक्तम्	दरिद्र दुःखम्	फलम्
३	धनपुत्र युक्तम्	धनपुत्र युक्तम्	धनपुत्र युक्तम्	धनपुत्र युक्तम्	धनपुत्र युक्तम्	धनपुत्र युक्तम्	बहुधनम्	धन लाभः	फलम्
४	दुष्ट भाग्यम्	दुष्ट भाग्यम्	अल्पवीर्यम्	बहुसौख्यम्	बहुसौख्यम्	बहुसौख्यम्	अल्प दुग्धम्	पुत्र नाशः	फलम्
५	पुत्रनाशः	बहुकन्यायुक्तं	पुत्रनाशः	बहुपुत्रम्	बहुपुत्रम्	बहुपुत्रम्	रोग युक्तः	मृत्युः	फलम्
६	धन युक्तम्	विधवा	धनयुक्तम्	कलह कारिणी	धनयुक्तम्	दरिद्रा वेश्या	धन युक्तम्	धन युक्तम्	फलम्
७	रोगयुक्तं मृत्युः	प्रवासी मृत्युः	बन्धनम् मृत्युः	क्षयम् मृत्युः	भयम् मृत्युः	मृत्युः	वैधव्यं मृत्युः	धन नाशः मृत्युः	फलम्
८	विधवा	मरणम्	धनयुक्तम्	स्वजन वियोगम्	स्वजन वियोगम्	मरणम्	पतिवल्लभा बहुपुत्रा	मरणम्	फलम्
९	धर्मवृद्धिः	पुत्रयुक्तं	धर्मकर्मा	उत्तम भोगः	धर्मवृद्धिः	धर्मवृद्धिः	बन्ध्या	बन्ध्या	फलम्
१०	पापकर्मा	पापकर्मा	मृत्युःअर्थनाशः कुटिला बन्ध्या	धनयुक्त पतिव्रता	धनयुक्त पतिव्रता	धनयुक्त पतिव्रता	पाप कर्मा	वैधव्यम्	फलम्
११	बहुपुत्रम्	धनयुक्तं	पुत्रयुक्तम्	सुखी	दीर्घायुः	पुत्रयुक्तम्	धन युक्तम्	सौभाग्यम्	फलम्
१२	दरिद्रा धनव्ययवती	दिनांधा	बन्ध्या पररताच	बहुपुत्र पौत्रयुक्तं पतिव्रता	पतिव्रता बहुपुत्र पौत्रयुक्ता	पतिव्रता बहुपुत्रपौत्र युक्ता	दरिद्रा	कुटिला	फलम्

इति टीकायां जातकप्रकरणं चतुर्थं समाप्तम् ॥ ४ ॥

अथ गोचरफलम् ॥

गतिर्भयं श्रीर्व्यसनं च दैन्यं शत्रुक्षयो यानमतीव पीडा। कान्तिक्षयोऽभीष्टविशिष्टसिद्धिर्लब्धिर्व्ययोऽर्कस्य फलं क्रमेण १ (इति रविफलम्) सदन्नमर्थक्षयमर्थ लाभं कुक्षिव्यथां कार्यविघातमर्थम्। भवेद्भुजं राजभयं सुखं च लाभं च शोकं कुरुते मृगाङ्कः २ (इति चन्द्र फलम्) भीतिं क्षतिं वित्तमरिप्रवृद्धिमर्थस्य नाशं धन मर्थनाशम्। शस्त्रोपघातं च रुजं च शोकं लाभं व्ययं भूतनयस्तनोति ३ (इति भौमफलम्) वधं धनं वैरिभयं धनाप्तिं पीडां स्थितिं पीडनमर्थलाभम्। पीडां सुखं लाभमथार्थनाशं क्रमात्फलं यच्छति सोमसूनुः ४ (इति बुधफलम्) भीतिं वित्तं पीडनं वैरिवृद्धिं सौख्यं शोकं राजमानं रुजं च। सौख्यं दैन्यं मानविज्ञानपीडां दत्ते जीवो जन्मराशेः सकाशात् ५ (इति गुरुफलम्) रिपु क्षयं वित्तमतीवसौख्यं वित्तं सुतप्रीतिमरीतिवृद्धिम्। शोकं धनाप्तिं वरवस्त्रलाभं पीडां स्वमर्थञ्च ददाति शुक्रः६ (इति शुक्रफलम्) भ्रंशक्लेशं सौख्यशत्रुप्रवृद्धिं पुत्रा त्सौख्यं सौख्यवृद्धिं च दोषम्। पीडां नैस्स्वं दौर्मनस्यं धनाप्तिं नाना चार्थं भानुसूनुस्तनोति ७ (इति शनिफ लम्) हानिं नैस्स्वं द्रव्यवैरं च शोकं वित्तं वादं पीडनं चापि पापम्। वैरं सौख्यं द्रव्यहानिं च कुर्याद्राहुः पुंसां गोचरे केतुरेवम् ८ ॥ इति राहुकेतुफलम् ॥

इसका टीका चक्र से जानना १।२।३।४।५।६।७।८॥

अथ गोचरचक्रम् ॥

स्थान	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा. के.	ग्रहाः
१	स्थान हानिः	धनप्रदः	भयप्रदः	वधकृत्	भयकृत्	शत्रुक्षयः	नाशकरः	हानि करः	फलम्
२	भयप्रदः	वित्तक्षयः	क्षतिप्रदः	द्रव्यप्रदः	द्रव्यप्रदः	द्रव्यप्रदः	क्लेश कर्ता	नैःस्वम्	फलम्
३	धनप्रदः	द्रव्यप्रदः	धनप्रदः	शत्रुभयदः	क्लेशकृत्	सुखकरः	सुखकरः	धनम्	फलम्
४	कष्टप्रदः	कुक्षि रोगदः	शत्रुप्रदः	धनप्रदः	शत्रुवृद्धि कृत्	द्रव्य लाभः	शत्रु वृद्धिः	वैरकृत्	फलम्
५	दैन्यप्रदः	कार्यभङ्ग करः	द्रव्यनाशः	पीडाकरः	सौख्य करः	सुतप्रीति करः	पुत्र सुखम्	शोककृत्	फलम्
६	शत्रुक्षयः	द्रव्यलाभः	धनप्रदः	स्थिति करः	शोककरः	शत्रुवृद्धि करः	सुखम्	वित्तम्	फलम्
७	मार्गप्रदः	धनप्रदः	अर्थनाशः	पीडाकरः	राजमानः	शोक प्रदः	दोषम्	वादम्	फलम्
८	पीडाप्रदः	रोगप्रदः	शस्त्रभयं	द्रव्यप्रदः	रोगप्रदः	द्रव्य प्राप्तिः	पीडा करः	पीडनम्	फलम्
९	कान्ति क्षयः	राजभयदः	रोगप्रदः	पीडाकरः	सौख्य करः	वस्त्रप्रदः	अर्थ व्ययः	पापकृत्	फलम्
१०	कार्य सिद्धिः	सौख्यप्रदः	शोकप्रदः	सुखप्रदः	दैन्यम्	पीडा करः	दौर्मन स्यम्	वैरकृत्	फलम्
११	द्रव्यप्रदः	लाभप्रदः	लाभप्रदः	लाभप्रदः	मानकृत्	द्रव्यप्रदः	धनाप्ति करः	सौख्य करः	फलम्
१२	व्ययकृत्	शोकप्रदः	व्ययकृत्	द्रव्यक्षय करः	विज्ञानं तथा पीडा करः	द्रव्यप्रदः	नानाप्र कार अन र्थकः	द्रव्य हानिः	फलम्

अथ ग्रहाणां दानानि ॥

माणिक्यगोधूमसवत्सधेनुः कौसुंभवस्त्रं गुडहेमताम्रम् । आरक्तकं चन्दनमम्बुजं च वदन्ति दानं रविमोचनार्थम् १ (इति सूर्यदानम्) सद्वंशपात्रं स्थिततण्डुलांश्च कर्पूरमुक्तादधिशुभ्रवस्त्रम् । युगोपयुक्तं वृषभं च रौप्यं चन्द्राय दद्याद्घृतपूर्णकुम्भम् २ (इति चन्द्रदानम्) प्रवालगोधूममसूरिकाश्च वृषोरुणश्चापि गुडं सुवर्णम् । आरक्तवस्त्रं करवीरपुष्पं ताम्रं च भौमाय वदन्ति दानम् ३ (इति भौमदानम्) वृषं च नीलं किल धौतकांस्यं मुद्गाज्यगारुत्मकसर्वपुष्पम् । दासी च दन्तीद्विरदस्य नूनं वदन्ति दानं विधुनन्दनाय ४ (इति बुधदानम्) शर्करा च रजनी तुरङ्गमः पीतधान्यमपि पीतमम्बरम् । पुष्परागलवणं च काञ्चनं प्रीतये सुरगुरोः प्रदीयताम् ५ (इति गुरुदानम्) चित्राम्बरः शुभ्रतरस्तुरंगो धेनुश्च वज्रं रजतः सुवर्णम् । सतण्डुलानुत्तमगन्धयुक्तं वदन्ति दानं भृगुनन्दनाय ६ (इति शुक्रदानम्) माषाश्च तैलं विमलेन्द्रनीलं तिलाः कुलत्था महिषी च लोहम् । कृष्णा च धेनुः खलु दुःखशान्त्यै वदन्ति दानं रविनन्दनाय ७ (इति शनिदानम्) गोमेदरत्नं च तुरंगमश्च सुनीलचैलामलकम्बलाश्च । तिलाश्च तैलं खलु लोहमिश्रं स्वर्भानवे दानमिदं वदन्ति ८ (इति राहुदानम्) वैडूर्यरत्नं सतिलं च तैलं सुकम्बलश्चापि मदो मृगस्य । शस्त्रं च केतोःपरितोषहेतोश्छागस्य दानं कथितं मुनीन्द्रैः ॥ ९ ॥

इसका टीका चक्र से जानना १।२।३।४।५। ६।७।८।९॥

अथ नवग्रहदानचक्रम् ॥

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.	ग्रहाः
माणिक	कांस्य पात्र	मूंगा	स्याह बैल	शक्कर	चित्र वस्त्र	उदद	गोमेद	वैदूर्य मणि	दानम्
गेहूं	चावल	गेहूं	कांसा	हरदी	सफ़ेद घोड़ा	तेल	घोड़ा	तिल	दानम्
गौ बछरा	कर्पूर	मसूर	मूँग	घोड़ा	गौ	नीलम	स्याह वस्त्र	तेल	दानम्
लाल वस्त्र	मोती	लाल बैल	घृत	पीत अन्न	हीरा	तिल	कम्बल	कम्बल	दानम्
गुड	दही	गुड़	पन्ना	पीत वस्त्र	चाँदी	कुरथी	तिल	कस्तूरी	दानम्
सोना	सफ़ेद वस्त्र	सोना	सर्व फल	पुख राज	सोना	भैंस	तेल	शस्त्र	दानम्
तांबा	सफ़ेद गौ बछरा	लाल वस्त्र	दासी	लोन	चावल	लोह	लोह	छाग	दानम्
लाल चन्दन	चँदी	लालकनेरके फूल	हाथीके दांत	सोना	चन्दन	श्यामा गौ	दक्षिणा	दक्षिणा	दानम्
कमल	घृतपूर्ण कुम्भ	तांबा	वस्त्र हरा	दक्षिणा	दक्षिणा	दक्षिणा	००	००	दानम्
दक्षिणा	दक्षिणा	दक्षिणा	दक्षिणा	००	००	००	००	००	दानम्

अथ ग्रहाणां जपसंख्याज्ञानम् ॥

रवेस्सप्तसहस्राणि चन्द्रस्यैकादशस्मृताः । भौमे दशसहस्रं च बुधे वेदसहस्रकम् १ एकोनविंशतिर्जीवे भृगोर्नृप सहस्रकम् । त्रयोविंशतिसौरेश्च राहोरष्टादश

स्मृताः २ केतोरत्यष्टसाहस्रं जपसंख्याः प्रकीर्तिताः ॥
इसका टीका चक्रसे जानना १।२।०॥

अथ जपसंख्याचक्रम् ॥

सू०	चं०	मं०	बु०	बृ०	शु०	श०	रा०	के०	ग्रहाः
७०००	११०००	१००००	९०००	१९०००	१६०००	२३०००	१८०००	१७०००	जपसंख्या

अथ ग्रहराशिप्रमाणम् ॥

मासं शुक्रबुधादित्याश्चन्द्रःपाददिनद्वयम् । भौमस्त्रिपक्षं जीवोऽब्दं सार्द्धवर्षद्वयं शनिः ॥ राहुःकेतुः सदा भुङ्क्ते सार्द्धमेकन्तु वत्सरम् ॥ १ ॥

एक महीने भर एकराशि पर सूर्य, बुध, शुक्र भोग करते हैं चन्द्रमा एकराशिपर सवादोदिन भोग करताहै मङ्गल एकराशि पर डेढ़ महीना वास करताहै बृहस्पति एकराशि पर एक वर्ष रहताहै शनैश्चर एकराशि पर ढाईवर्ष रहताहै राहु व केतु एक राशि पर डेढ़वर्ष तक भोगता है ॥ १।०॥

अथ दिनदशाज्ञानम् ॥

रविदिननख २० संख्या चन्द्रमा व्योमबाणैः ५० क्षितितनयगजाश्वैः २८ चन्द्रजः बट्शराणि ५६ ॥ शनिरसगुण ३६ संख्या वाक्पतिर्नागबाणै ५८ नयनयुग च ४२ राहोः सप्ततिः शुक्रसंख्या ॥ १ ॥

सूर्य की दशा २० दिन की होतीहै चन्द्रमा की पचास दिन की है मङ्गल की अट्ठाईस दिन की जानिये और बुध की छप्पन दिन की होतीहै शनैश्चर की छत्तिस दिन की जानिये और

बृहस्पति की अट्ठावन दिन की होतीहै और राहु की बयालिस दिन की होती है तथा शुक्र की सत्तरदिनकी जानिये १इसका फल गोचर के अनुसार ग्रहों से जानिये और सूर्य से विचारना और अपनी राशि से जिस घर में सूर्य होय उसी घर में दशा देखिलेना एक २ घरमें तीस २ दिन की दशा होती है चक्रसे समझलेना ॥

अथ दिनदशाचक्रम् ॥

अथ समयफलदा ग्रहाः कथ्यन्ते ॥

शश्यादिगौ रविकुजौ फलदौ सितेज्यौ मध्ये सदा शशिसुतश्चरमेऽब्जमन्दौ ॥ १ ॥

सूर्य. मङ्गल राशि के आदि में फल देते हैं तथा शुक्र. बृहस्पति राशि के मध्य में फलदायक हैं और बुध सदा फलको देताहै चन्द्रमा और शनैश्चर अन्त में फलको देते हैं ॥ १ ॥

अथ ग्रहाणां राशिमध्ये पूर्वफलप्रमाणम् ॥

सूर्यारसौम्यास्फुजितोक्ष ५ नाग ८ सप्त ७ द्विघस्त्रान्विधुरग्नि ३ नाडीः । तमोयमेज्याब्धि ३ रसा ६ शिवम्मासान् गन्तव्यराशेः फलदाः पुरस्तात् ॥ १ ॥

सूर्य जिस राशि को जानेवाले होते हैं उसके पांचरोज़ के प्रथम फल करतेहैं और मङ्गल आठ दिन प्रथम फलदायक है बुध सात दिन प्रथम फल को देता है और शुक्र सात दिन प्रथम फलदायक है और चन्द्रमा तीन घड़ी पेश्तर फल देताहै राहु तीन महीना पेश्तर फल को देता है शनैश्चर छः महीना प्रथम फल को देताहै बृहस्पति दो मास प्रथम फल को देताहै इसतरह से जिस राशि में ग्रह जानेवाला होताहै उसके पेश्तर इस प्रकार से फल को देता है ॥ १ ॥

अथ स्वराशेः ग्रहणफलम् ॥

जन्मर्क्षे निधनं ग्रहे जनिभतो घातः क्षतिः श्रीर्व्यथा चिन्तासौख्यकलत्रदौस्स्थ्यमृतयःस्युर्माननाशः सुखम् । लाभोपायइतिक्रमात्तदशुभध्वस्त्यै जपः स्वर्णगोदानं शान्तिरथोग्रहं त्वशुभदं नोवीक्ष्यमाहुः परे ॥ १ ॥

जन्म के नक्षत्रपर ग्रहण परे तो मृत्यु होय और जन्म की राशि पर परे तो घात होय और दूसरे धननाश होय तीसरे द्रव्य मिले चौथे व्यथा होय पांचयें चिन्ता होय छठे सुख होय सातयें स्त्री को पीड़ा होय आठयें मृत्यु होय नवयें माननाश होय दशयें सुख होय ग्यारहें लाभ होय बारहें मृत्यु होय अशुभ ग्रहण के शान्ति के हेतु सोना तथा गोदान देवे और किसी आचार्य का मत है कि जिसकी राशि से ग्रहण अशुभ होय सो देखै नहीं ॥ १ ॥

अथ स्वशरीरे शनिवासफलम् ॥

राशौ द्वादशजन्मशीर्षहृदये पादे द्वितीये शनिः । नाना क्लेशकरोतिदुर्जनजनात्पुत्रान् पशुं पीडयेत् ॥ १ ॥

जिसकी जन्मराशि से बारहें शनैश्चर होय उसके शिर में वास करता है और जन्म का होय तो हृदय में वास करता है

दूसरे होय तो चरणों में वास करता है सो नानाप्रकार का क्लेशकारक है और शत्रुपीड़ित है तथा पुत्र वा पशु को पीड़ा करता है १ तथा चौथे आठयें होय तो अढ़ाई वर्षतक सर्व शरीर में वास करता है इसको अढ़ैया कहते हैं पुराण के मतसे जानना ॥

अथ शनिवाहनविचारः ॥

येषां जन्मनि तारकादि गणयेत्सूर्यात्मजो भावधिं चन्द्राङ्कं १ सहितं पुनस्त्रि ३ गुणितं पश्चाद्युगे ४ र्भाजितम् । शेषे कुञ्जर १ वाजिनो २ त्तमरथः ३ स्या द्वाहनं शैबिका ४ श्वेतं पीतमरक्तश्यामशुभदं सौख्यं च शोकक्षयम् ॥ १ ॥

जन्मनक्षत्र से शनैश्चर के नक्षत्रतक गिन तिस अङ्क में एक और जोड़ देइ फिर उस अंक को तीन से गुणै उसमें चार का भाग देइ शेषाङ्क एक वचै तो हाथी का वाहन जानिये दो वचैं तो घोड़े का जानिये तीन वचैं तो रथवाहन होताहै चार वचैं तो पालकी जानना इसी क्रम से वस्त्रजान लेना अर्थात् एक बचै तो श्वेतवस्त्र दुइ वचैं तो पीतवस्त्र तीन वचैं तो लाल वस्त्र शून्य रहै तो श्यामवस्त्र जानना अब फल कहते हैं हाथी का वाहन शुभहै घोड़ेका वाहन सुखदायक है रथ का वाहन शोक-कारक है और पालकी का वाहन क्षयकारक जानना ॥ १ ॥

अथ द्वितीयप्रकारेण शनिवाहनविचारः ॥

मन्दर्क्षाच्छशि १ वेद ४ तर्क ६ विशिखा ५ ब्ध्य ४ ग्नि ३ द्वि २ पक्ष २ क्रमाच्छागो १ श्वो २ भषणो ३ गजो ४ हयरिपु ५ र्हंसो ६ वृषो ७ वायसः ८ । हानि १ र्वैरिजयो २ भ्रमो ३ धनचयो ४ मानाल्पता ५ भूप

ता ६ सौख्यं ७ रोगचयो ८ नरर्क्षवशतो मन्दस्य वाहाश्मी ॥ १ ॥

शनैश्चर के नक्षत्र से एक, चार, छः, पांच, चार, तीन, दो फिर दो इन नक्षत्रों को स्थापित करै उपरान्त इसके अपने जन्म का नक्षत्र देखना उसी क्रम से वाहन जानलेना चक्र के क्रम से विचार लेना छाग १ घोड़ा २ सियार ३ हाथी ४ भैंसा ५ हंस ६ बैल ७ कौवा ८ ये आठ वाहन जानिये १ (फलम्) छाग में हानि होय घोड़ा में शत्रु से जीत होय सियार में भ्रम होय हाथी में धन की वृद्धि होय भैंसा में मान कम होजाय हंस में राज्यपदवी की प्राप्ति होय बैल में सुख प्राप्तिहोय कौवा में रोग की वृद्धि होय ॥ १ ॥

अथ शनिभाद्वाहनचक्रम् ॥ २७ ॥

१	४	६	५	४	३	२	२	नक्षत्र
छाग	घोड़ा	सियार	हाथी	भैंसा	हंस	वैल	कौवा	वाहन
हानिः	शत्रुंजयः	भ्रमः	धनवृद्धिः	मानाल्पता	भूपता	सौख्यं	रोगवृद्धिः	फलम्

अथ तृतीयप्रकारेण शनिवाहनविचारः ॥

ऋक्षे शनिर्यत्र नरस्य ऋक्षः माघादिमासैर्मुनिभिर्विभक्तः । एके च शुण्डी द्वौ जम्बुकश्च त्रयेऽपि चाश्वश्च चतुर्थश्वानः १ सिंहश्शरःषष्ठचगर्दभश्च मृगो परः सप्त शनेर्हि वाहनाः (अथ फलम्) गजश्च लभते लक्ष्मीं जम्बुके बुद्धिनाशनम् । अश्वश्च कनकप्राप्तिः श्वानश्चौरगृहे गृहे २ सिंहे च जायते सिद्धिर्गर्दभे हानिरेव च । मृगे च प्राणसंदेहो वाहनानां फलं दिशेत् ॥ ३ ॥

शनैश्चर जिस नक्षत्र में स्थित होय वह नक्षत्र वा जन्म नक्षत्र जोड़लेना उस में माघ से लेकर जौन महीना होय शनि नक्षत्र पर्यन्त उसेभी उसी नक्षत्रों के अङ्कमें जोड़ना उस अङ्क में सात का भाग देना क्रमसे वाहन जानलेना अर्थात् एक बचै तो हाथी का वाहन जानना दो बचैं तो सियार तीन बचैं तो घोड़ा चार बचैं तो कुत्ता पांच बचैं तो सिंह छः बचैं तो गदहा सात बचैं तो मृग वाहन जानना १ (अथ फलम्) हाथी वाहन में लक्ष्मीलाभ होय सियार में बुद्धिनाश होय घोड़े में सोना मिलै कुत्तामें गृह गृह विषे चोरी करावै २ सिंहमें सिद्धि होय गदहा में हानि होय मृगा में प्राणसंदेह जानना ॥ ३ ॥

अथ शनिपादविचारफलम् ॥

जन्माङ्गरुद्रेन्दुसुवर्णपादं द्विपञ्चनन्देरजतस्यपादम् । त्रिसप्तदिक्ताम्रपदं वदन्ति वेदाष्टमार्केषु हि लोहपादम् १ (अथ फलम्) लोहे मृत्युविनाशाय सर्वसौख्यं च काञ्चने । ताम्रे तु समता ज्ञेया शुभं राजतके तथा॥२॥

जन्म का चन्द्रमा होय वा छठे तथा ग्यारहें होय तो शनैश्चर का चरण सोने का जानना तथा दूसरे पांचयें नवयें होय तो चांदी का चरण जानना तथा तीसरे सातयें दशयें चन्द्रमा होय तो ताम्र का पाद जानिये और चौथे आठयें बारहें चन्द्रमा होय तो लोह का पाद जानना १ (अथ फलम्) लोह का पाद मृत्यु वा विनाश करै और सोने का सर्व सुख को करै और ताम्र का सम जानना तथा चांदी का शुभ फल जानिये ॥ २ ॥

अथैकपक्षे त्रयोदशतिथिफलम् ॥

एकपक्षे यदा यान्ति तिथयश्च त्रयोदश । त्रयस्तत्र क्षयं यान्ति वाजिनो मनुजागजाः ॥ १ ॥

एक पक्ष में तेरह तिथि परैं तो घोड़ा वा मनुष्य वा हाथिन को नाश करै ॥ १ ॥

अथ केतूदयफलम् ॥

ग्रहयुद्धं राजयुद्धं केतौ दृष्टे तथैव च । धूम्राकारः सपुच्छश्च केतुर्विश्वस्य पीडकः ॥ १ ॥

ग्रहयुद्ध होय अर्थात् जब एकराशि में दो ग्रह आवैं तब ग्रहयुद्ध होता है तथा केतु उदय होय धूम्राकार सहित पुच्छ के तो राजयुद्ध होय और संसार को पीड़ा होय ॥ १ ॥

अथेन्द्रधनुषादिफलम् ॥

धूम्रकेतुःशक्रचापो ग्रहणे बहुधा तथा । तदाऽसौसर्ववस्तूनां जायते च महर्घता ॥ १ ॥

धूम्राकार केतु उदय होय तथा इन्द्रधनुष निकसै तथा ग्रहण बहुधा परै तो सर्ववस्तु महँगी होय ॥ १ ॥

अथ केतूदयनक्षत्रफलम् ॥

अश्विन्यामुदिते केतौ सहन्याङ्कपालकम् । भरण्यां च किरातेशं कृत्तिकायां कलिङ्गकम् १ रोहिण्यां शूरसेनेशं मृगे काशीनराधिपम् । आर्द्रायां जलदाधीशं भस्मकेशं पुनर्वसौ २ पुष्ये च मगधाधीशं श्लेषायां काशिकाधिपम् । मघायां वङ्गनाथञ्च पूर्वायां पाण्डुनायकम् ३ उज्जयिन्यां नृपं हन्ति उत्तराफाल्गुनीगतः । दण्डकाधिपतिं हस्ते चित्रायां कुरुभूभुजाम् ४ स्वात्यां काश्मीरकाम्बोजभूपतीनां विनाशकः । इक्ष्वाकुकुरुदेशानां विशाखायां विनाशकः ५ मैत्रे चोग्रस्य नाथञ्च सार्व

भौमं तथैन्द्रकम् । अन्ध्रमद्रकनाथञ्च मूलस्थो हन्ति निश्चितम् ६ पूर्वाषाढे काशिराजमुत्तराषाढके तथा । पौण्ड्रेयशैलवैदेहाः श्रवणे कैकयेश्वरम् ७ वसौ पञ्चनदाधीशं वारुणे सिंहलेश्वरम् । पूर्वभाद्रपदे वङ्गं नैमिषेशं तथोत्तरे ८ रेवत्यामुदिते केतौ किराताधिपतेर्वधः । धूम्राकारः सपुच्छश्च केतुर्विश्वस्य पीडकः ॥ ९ ॥

अश्विनी आदि सत्ताइसों नक्षत्र का फल केतूदय के चक्र से समझलेना और धूम्राकार सहित पुच्छ के उदय होय तो संसार को पीड़ा करै ॥ १ । ९ ॥

अथ केतूदयनक्षत्रफलम् ॥

नक्षत्र	फलम्	००	००
चि०	कुरुक्षेत्र के राजा को हनै	नक्षत्र	फलम्
ह०	दण्डकदेश के राजा को हनै	रे०	किरातदेश के राजा को हनै
उ०फा०	उज्जयिनी के राजा को हनै	उ० भा०	नैमिषदेश के राजा को हनै
पू०फा०	पाण्डुदेश के राजा को हनै	पू० भा०	बङ्गदेश के राजा को हनै
म०	बङ्गदेश के राजा को हनै	श०	सिंहलदेश के राजा को हनै
श्ले०	काशिराजा को हनै	ध०	पञ्चनदीतट अर्थात् पंजाब के राजा को हनै
पुष्य	मगधदेश के राजा को हनै	श्र०	कैकयदेश के राजा को हनै
पु०	अश्मकदेश के राजा को हनै	उ० षा०	पाण्डुदेश व शैलदेश व मैथिलदेश के राजा को हनै
आ०	जलददेश के राजा को हनै	पू० षा०	काशिराज को हनै
मृ०	काशी के राजा को हनै	मू०	अन्ध्रदेश व मद्रकदेश के राजा को हनै
रो०	शूरसेनदेश के राजा को हनै	ज्ये०	सब राजों को हनै
कृ०	कलिङ्गदेश के राजा को हनै	अनु०	उग्रदेश के राजा को हनै
भ०	किरातदेश के राजा को हनै	वि०	इक्ष्वाकु व कुरुदेश के राजा को हनै
अ०	लङ्कापति को हनै	स्वा०	काश्मीर व कांबोज के राजा को हनै

अथ लग्नवर्णचक्रम् ॥

मे०	वृष	मि०	क०	सिं०	क०	तु०	वृ०	ध०	म०	कुं०	मी०	ल०
रक्त	श्वेत	हरित	श्वेत	धूम्र	पाण्डुर	चित्र वर्ण	असित वर्ण	स्वर्ण सदृश	कृष्ण	कृष्ण	पीत	वर्ण

अथ ग्रहाणांसंज्ञाचक्रम् ॥

सू०	चं०	मं०	बु०	बृ०	शु०	श०	ग्रह
पुरुष	स्त्री	पुरुष	नपुंसक	पुरुष	स्त्री	नपुंसक	स्त्रीपुरुषादिसंज्ञा
वृद्ध	मध्य	युवा	बाल	वृद्ध	मध्य	वृद्ध	अवस्थासंज्ञा
क्षत्री	वैश्य	क्षत्री	शूद्र	ब्राह्मण	ब्राह्मण	अंत्यज	वर्ण

अथ बालकजन्मसमये लग्ननिर्णयः ॥

शब्दं मेषे वृषे सिंहे मिथुने च धने तुले। शुद्धशब्दं घटे कन्या शेषे शब्दं विवर्जयेत् १ शशिलग्नान्तरेणैव ग्रहाश्चापि दिगन्तरम् । तस्यैवमन्दिरे नार्योवृद्धायुवा कुमारिका २ पापैश्च विधवा नार्यःसौम्यैःसौभाग्यसंज्ञकाः। क्रूरेकुमारिका ज्ञेया एवं लग्नस्य लक्षणम् ३ पापा राहुः शनिर्भौमः क्रूराःकेतूरविर्गुरुः। सौम्याश्चन्द्रोबुधः शुक्रो ग्रहाणां लक्षणं स्मृतम् ४ यत्र राहुःशिरस्तत्र शय्या भौमः प्रकीर्तितः। यत्र सूर्यस्तत्र दीपो मन्दे लोहं निगद्यते ५ चन्द्रस्थाने जलं विद्यात्सुरगुरोः कांसपात्रकम् । भृगोः सुते शुक्लवस्त्रं लग्नचिह्नमुदाहृतम् ६ अजझषद्विमिता वृषकुम्भयोः श्रुतिमिताहयकर्कटके शराः । मकरयुग्मतुलाधरकन्यकास्त्वलिहरौ त्रिमिता ह्युपसूतिकाः ॥ ७ ॥

मेष, वृष, सिंह, मिथुन, धन और तुला इन लग्नों में जन्म

होय तो बालक उसी समय में ज़ोरसे रोवै और कन्या लग्न होय तो धीरे रोवै और शेष लग्नों में कुछ देर पीछे रोवै १ चन्द्रमा के वा लग्न के अन्तरमें जै ग्रह परैं उतनी स्त्री बालक के जन्म समीप जानना वृद्ध वा युवा वा कुमारिका क्रम से ग्रहों के जानना २ पापग्रह होयँ तो विधवा स्त्री जानिये सौम्य-ग्रहों में सौभाग्य जानिये क्रूरग्रहों में कुमारिका जानिये ३ राहु शनैश्चर मङ्गल ये पापग्रह हैं केतु सूर्य बृहस्पति की क्रूर संज्ञा है चन्द्रमा बुध शुक्र की सौम्यसंज्ञा है ४ और प्रसूता के भोजन वस्त्र पूर्वोक्त लग्न के वर्णचक्र से जानना ॥ जिस दिशा में राहु होय उस दिशा में जन्मसमय बालक का शिर जानना अर्थात् जन्मलग्न से लगाय बारहों घरकी पूर्वादि दिशा जानिये चक्र आगे लिखैंगे उसी क्रम से जानना तथा जिस दिशा में मङ्गल होय उस दिशामें शय्या जानिये और जिस दिशामें सूर्य होय उस दिशा में दीपक जानना तथा जिस दिशा में शनि होय उस दिशामें लोह जानिये ५ जिस दिशामें चन्द्रमा होय उस दिशा में जलवास जानिये और जिस दिशा में बृहस्पति होय उस दिशा में कांसपात्र जानिये तथा जिस दिशा में शुक्र होय उस दिशा में श्वेत वस्त्र का वास जानना ६ अब अन्यमत से लग्न के आधीन प्रसूता के पास स्त्रियों का प्रमाण लिखते हैं मेष मीन लग्न में जन्म होय तो दो स्त्री प्रसूताके समीप जानना तथा वृष कुम्भ में चार स्त्री जानलेना और धन कर्क में पांच जानना मकर मिथुन तुला कन्या वृश्चिक सिंह में तीन स्त्री जानलेना ॥ ७ ॥

अथ ग्रहाणां द्वादशभावस्थितदिशाचक्रम् ॥

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	भाव
पूर्व	द०	प०	उ०	पू०	द०	प०	उ०	पू०	द०	प०	उ०	दिशा

अथ संक्रान्तिविचारः ॥

घोरार्कसंक्रमणमुग्ररवौ हि शूद्रान् ध्वांक्षी विशो

लघुविधौ च चरर्क्षभौमे । चौरान्महोदरयुता नृपतीन्
ज्ञमैत्रे मन्दाकिनीस्थिरगुरौ सुखयेच्च मन्दा १ विप्रांश्च
मिश्रभभृगौ तु पशूंश्च मिश्रा तीक्ष्णार्कजेऽन्त्यजसुखा
खलुराक्षसी च । त्र्यंशे दिनस्य नृपतीन्प्रथमे निहन्ति
मध्ये द्विजानपि विशो परके च शूद्रान् २ अस्ते निशा
प्रहरकेषु पिशाचकादीन् नक्तंचरानपि नटान् पशुपा
लकांश्च । सूर्योदये सकललिङ्गिजनं च सौम्ययाम्याय
नं मकरकर्कटयोर्निरुक्तम् ॥ ३ ॥

एतवारके दिन उग्रसंज्ञक नक्षत्र में संक्रान्ति लगै तो घोरा नाम संक्रान्ति होती है सो शूद्रों को सुखदाता है सोमवार के दिन लघुसंज्ञक नक्षत्र में संक्रान्तिलगै तो ध्वांक्षीसंज्ञक जानना सो वैश्यों को सुख देती है और मङ्गल के दिन चरसंज्ञक नक्षत्र में लगै तो महोदरी नाम है सो चोरों को सुख देती है बुधवार के दिन मैत्रसंज्ञक नक्षत्रमें लगै तो मन्दाकिनी नाम है सो राजों को सुख देतीहै बृहस्पति के दिन स्थिरसंज्ञक नक्षत्र में लगै तो मन्दा नाम है सो ब्राह्मणों को सुख देती है शुक्र के दिन मिश्रसंज्ञक नक्षत्र में लगै तो मिश्रानाम संक्रान्ति होती है सो पशुन को सुख देनेवाली है शनैश्चरवार को तीक्ष्ण-संज्ञक नक्षत्रमें लगै तो राक्षसी नाम है चाण्डालों को सुख देनेवाली है दिनमान के तीनभाग करै प्रथम भाग में संक्रान्ति लगै तो राजों को हनै दूसरे भाग में ब्राह्मणों को हनै तीसरे भागमें वैश्यों को हनै सूर्यास्त काल में लगै तो शूद्रों को हनै और रात्रि के प्रथम पहर में लगै तो पिशाचों को हनै और दूसरे पहर में राक्षसों को हनै तीसरे पहर में नटों को हनै चौथे पहर में पशुपालनेवाले को हनै सूर्योदय में लगै तो लिङ्गि-जनों को हनै अर्थात् पाखण्डी संन्यासियों को नाशकरै मकर की संक्रान्ति उत्तरायण है कर्क की संक्रान्ति दक्षिणायन है

अनुमान से छः छः महीना उत्तरायण दक्षिणायन जानना॥११३॥

अथ संक्रान्तिचक्रम् ॥

सू०	चं०	मं०	बु०	बृ०	शु०	श०	वार
उग्र	लघु	चर	मैत्र	स्थिर	मिश्र	तीक्ष्ण	नक्षत्र
घोरा	ध्वांक्षी	महोदरी	मन्दाकिनी	मन्दा	मिश्रा	राक्षसी	नाम
शूद्र सुखं	वैश्य सुखं	चौर सुखं	राज सुखं	ब्राह्मण सुखं	पशु सुखम्	चाण्डाल सुखम्	फल

पुनः संक्रान्तिचक्रम् ॥

समय	फलम्
सूर्योदये	लिङ्गिजनान् हन्ति
रात्रिचतुर्थयामे	पशुपालकान् हन्ति
रात्रितृतीययामे	नटान् हन्ति
रात्रिद्वितीययामे	राक्षसान् हन्ति
रात्रिप्रथमेयामे	पिशाचकान् हन्ति
सूर्यास्तकाले	शूद्रान् हन्ति
दिनस्य तृतीयभागे	वैश्यान् हन्ति
दिनस्य मध्यभागे	द्विजान् हन्ति
दिनस्य प्रथमभागे	नृपान् हन्ति

अथ संक्रान्तिनिर्णयः ॥

षडशीत्याननं चाप ९ नृयुक् ३ कन्या ६ झषो १२ भवेत् । तुला ७ जौ १ विषुवद्विष्णुपदं सिंहा ५ लि ८ गो २ घटे ११ । १ संक्रान्तिकालादुभयत्र नाडिकाः

पुण्याश्रताःषोडशषोडशोष्णागोः । निशीथतोऽर्वागपरत्र संक्रमे पूर्वापराहान्तिमपूर्वभागयोः ॥ २ ॥

धन, मिथुन, कन्या, मीन की संक्रान्ति की षडशीत्यानन संज्ञा है तुलामेष की विषुवत्संज्ञा है सिंह वृश्चिक वृष कुम्भ की विष्णुपदी संज्ञा है १ संक्रान्ति के इष्टकाल से दोनों तरफ सोलह सोलह घड़ी पुण्यकाल होताहै तथा अर्द्धरात्रि के पूर्व वा पश्चिम अर्थात् प्रथम उपरान्त संक्रान्ति लगै तो क्रमसे पूर्व वा पर दिन पुण्यकाल होताहै सो दिन के अन्तभाग वा पूर्वभाग में क्रम से जानना चक्रसे समझलेना ॥ २ ॥

अथ चक्रम् ॥

अर्द्धरात्रात्पूर्वं संक्रान्तिः	अर्द्धरात्रात्परं संक्रान्तिः	समय
पूर्वदिने पुण्य कालः	परदिने पुण्य कालः	पुण्यदिनम्
अन्तभागे पुण्य कालः	पूर्वभागपुण्य कालः	पुण्यभागदिनम्

अथ द्वितीयप्रकारेण संक्रान्तिनिर्णयः ॥

पूर्णे निशीथे यदि संक्रमः स्याद्दिनद्वयं पुण्यमथोदयास्तात् । पूर्वपरस्ताद्यदियाम्यसौम्यायने दिने पूर्वपरे तु पुण्ये ॥ १ ॥

पूरी आधीरात को संक्रान्ति लगै तो दोनों दिन पूर्व पर पुण्यकाल जानिये और सूर्योदयके पूर्व वा सूर्यास्तके पर याम्यायन उत्तरायण क्रम से संक्रान्ति लगै तो पूर्व पर दिन पुण्यकाल क्रमसे जानिये ॥ १ ॥

अथ चक्रम् ॥

पूर्णार्द्धरात्रेसंक्रान्तिः	सूर्योदयात्पूर्वं याम्या यनम्	सूर्यास्तात्परं सौम्यायनम्
दिनद्वयपुण्यं पूर्वपरदिन मित्यर्थः	पूर्वदिनेपुण्यकालः	परदिने पुण्यकालः

अथ तृतीयप्रकारेण संक्रान्तिनिर्णयः ॥

सन्ध्या त्रिनाडी प्रमितार्कबिम्बादर्द्धोदितास्तादध ऊर्ध्वमत्र। चेद्याम्यसौम्ये अयने क्रमास्तः पुण्यौ तदानीं परपूर्वघस्रौ ॥ १ ॥

सूर्य के अर्द्धबिम्ब के उदित वा अस्त से अध ऊर्ध्व संक्रान्तिलगै याम्यायन सौम्यायन क्रम से तीन घड़ी तक अर्थात् सूर्योदय अर्द्धबिम्बके प्रथम तीन घड़ी तक याम्या-यन संज्ञक अर्थात् कर्क की संक्रान्ति लगै और सूर्यास्त अर्द्ध-बिम्ब के उपरान्त तीन घड़ीतक सौम्यायन अर्थात् मकर की संक्रान्ति लगै तो पर पूर्व दिन पुण्यकाल क्रम से जानिये अर्थात् याम्यायन में परदिन और सौम्यायन में पूर्व दिन जानिये ॥ १ ॥

अथ चतुर्थप्रकारेण संक्रान्तिनिर्णयः ॥

याम्यायने विष्णुपदे चाद्या मध्या तुलाजयोः। षड शीत्यानने सौम्ये परानाड्योऽतिपुण्यदाः १ गोकुम्भालि मृगाधिपेषु घटिकाः पूर्वानृपैः १६ संमिता द्वन्द्वस्त्रीधनु रण्डजेषुचपरास्तावन्त्यएवानघाः। मेषेतौलिनिदिग्मि ता१०उभयतस्त्रिंशत्सुपूर्वाःस्मृताःकर्केन्त्यास्तुनखा२० मृगेद्विगुणिताः ४० कैश्चित्स्मृताः सूरिभिः ॥ २ ॥

सौम्यायन और विष्णुपदीसंज्ञक संक्रान्ति के आदि में

पुण्यकाल होता है और तुला वा मेषकी संक्रान्ति के बीच में पुण्यकाल होता है और षडशीत्यानसंज्ञक वा सौम्यायन के अन्त में पुण्यकाल होताहै १ वृष कुम्भ सिंह की संक्रान्ति के पूर्वही सोलह घड़ी पुण्यकाल होताहै मिथुन कन्या धन मीन की संक्रान्ति में पर सोलह घड़ी पुण्यकाल होता है मेष वा तुला की संक्रान्ति के दोनों तरफ़ दश २ घड़ी पुण्यकाल होता है और कर्क की संक्रान्ति में पूर्वही तीस घड़ी पुण्यकाल होता है और वृश्चिक की संक्रान्ति में बीस घड़ी पुण्यकाल होताहै तथा मकर की संक्रान्ति में चालीस घड़ी पर पूर्वदिन पुण्यकाल होताहै किसी आचार्य का ये भी मत जानना ॥ २ ॥

अथार्घज्ञानम् ॥

समंमृदुक्षिप्रवसुश्रवोग्निमघात्रिपूर्वाश्रपभंबृहत्स्यात् । ध्रुवं द्विदैवादितिभं जघन्यं सर्पाम्बुपार्द्रानिलशाक्रयाम्यम् १ जघन्यभे संक्रमणे मुहूर्ताः शरेन्दवो १५ बाणकृता ४५ बृहत्सु । खराम ३० संख्याःसमभे महर्घसमर्घसाम्यं विधुदर्शनेऽपि ॥ २ ॥

मृदुसंज्ञक नक्षत्र, क्षिप्रसंज्ञक, धनिष्ठा, श्रवण, कृत्तिका, मघा, तीनों पूर्वा और मूल इन नक्षत्रों की समसंज्ञा है ध्रुवसंज्ञक, विशाखा, पुनर्वसु इनकी बृहत्संज्ञाहै आश्लेषा, शतभिष, आर्द्रा, स्वाती, ज्येष्ठा, भरणी इनकी जघन्यसंज्ञाहै १ जघन्यसंज्ञक नक्षत्रों में संक्रान्ति लगै तो पन्द्रह मुहूर्त की होतीहै और बृहत्संज्ञक में लगै तो पैंतालिस मुहूर्त होती है और समसंज्ञक में लगै तो तीस मुहूर्त होती है (अथ फलम्) पन्द्रह मुहूर्त में भाव महँगा होता है और पैंतालिस मुहूर्त में मंदा होता है तीस मुहूर्त में सामान्य जानना इसी क्रमसे द्वीजका चन्द्रमा भी विचारना ॥ २ ॥

अथार्घज्ञानं मतान्तरम् ॥

संक्रान्तिऋक्षंतिथिवारयुक्तं धान्याक्षरामिश्रितराम ३ भाजितम् । एकेन १ वृद्धिःसमताद्वितीये २ शून्येन० हानिःस्फुटमर्घकाण्डम् ॥ १ ॥

संक्रान्तिका नक्षत्र और तिथि वार जोड़देना और धान्य के जे अक्षरहोयँ ते अङ्क उसी में जोड़देना उसमें तीन का भागदेना एक शेष बचे तो मद्दा जानिये दो बचैं तो सामान्य तीन बचैं तो महँगा जानना ये अर्घकाण्डका स्पष्ट विचारहै॥१॥

अथार्घवर्षणविचारो ग्रन्थान्तरे ॥

स्यात्तैतिले नागचतुष्पदे रविः सुप्तो निविष्टस्तु गरादिपञ्चके । किंस्तुघ्न ऊर्ध्वःशकुनौ सकौलवेऽनिष्टः समःश्रेष्ठइहार्घवर्षणे ॥ १ ॥

तैतिलकरण वा नागकरण वा चतुष्पदकरण में संक्रान्ति लगै तो सूर्य सुप्त जानिये और गरकरण वा वणिज वा विष्टि वा बालव में लगै तो निविष्ट जानिये अर्थात् बैठे हैं और किंस्तुघ्न वा शकुनि वा कौलव इनमें संक्रान्ति लगै तो सूर्य ऊर्ध्व जानिये सो क्रम से नेष्ट सम श्रेष्ठ भाव में वा वर्षा में विचारना अर्थात् सुप्त में नेष्ट निविष्ट में सम ऊर्ध्व में श्रेष्ठ जानना ॥ १ ॥

अथ शुभकृत्ये संक्रान्तिवर्ज्यः ॥

विषुवायनेषु परपूर्वमध्यमान् दिवसांस्त्यजेदितरसंक्रमेषुहि । घटिकास्तुषोडशशुभक्रियाविधौ परतोऽपि पूर्वमपि संत्यजेद्बुधः ॥ १ ॥

तुला मेष कर्क मकर की संक्रान्ति में पर पूर्व मध्य ये तीनों दिन शुभकार्य में वर्जित हैं और जो संक्रान्ति बाकी रहीं उनमें पर पूर्व सोलह सोलह घड़ी वर्जित हैं ॥ १ ॥

अथ स्वराशेः संक्रान्तिबलाबलविचारः ॥

संक्रान्तिधिष्ण्याधरधिष्ण्यतस्त्रिभे ३ स्वभे निरुक्तं गमनं ततोङ्गभे ६ । सुखं त्रिभे ३ पीडनमङ्गभे ६ शुक्रं त्रिभे ३ र्थहानी रसभे ६ धनागमः ॥ १ ॥

संक्रान्ति जिस नक्षत्र में लगै उसके पहले नक्षत्र से अपने जन्मनक्षत्र तक लिखे प्रथम तीन नक्षत्र में अपना नक्षत्र परै तो यात्राकरावे फिर छः नक्षत्र में सुख होता है फिर तीन नक्षत्र में पीड़ा होती है फिर छः नक्षत्र में वस्त्रप्राप्ति होय फिर तीन नक्षत्र में अर्थ हानि होय फिर छः नक्षत्र में धन मिलै ॥ १ ॥

अथ संक्रान्तिनक्षत्रचक्रम् ॥

३	६	३	६	३	६	नक्षत्र
गमनम्	सुखम्	पीड़ा	वस्त्रम्	अर्थहानिः	धनागमः	फलम्

अथ संक्रान्तिवाहनादिविचारः ॥

सिंहव्याघ्रवराहरासभगजावाहद्विषड्घोटकाः श्वाजोगौश्चरणायुधश्चबवतो वाहा रवेःसंक्रमे । वस्त्रंश्वेतसुपीतहारितकपाण्डवारक्तकालासितं चित्रंकम्बलादिग्घनाभमथशस्त्रंस्याद्भुशुण्डीगदा १ खड्गोदण्डशरासतोमरमथोकुन्तश्चपाशोंकुशोऽस्त्रंबाणस्त्वथभक्ष्यमन्नपरमान्नं भैक्ष्यपक्वान्नकम् । दुग्धंदध्यविचित्रतान्नगुडमध्वाज्यं तथा शर्कराऽथोलेपोमृगनाभिकुंकुममथोपाटीरमृद्रोचनम् २ यावश्चोतुमदोनिशाञ्जनमथो कालागुरुश्चन्द्रको जातिर्दैवतभूतसर्पविहगाः पश्वेणविप्रास्ततः । क्षत्रावैश्यकशूद्रसंकरभवाः पुष्पं च पुन्नागकं जातीवा

कुलकेतकानि च तथाबिल्वार्कदूर्वाम्बुजम् ३ स्यान्म ल्लिकापाटलिकाजपा च संक्रान्तिवस्त्राशनवाहनादेः । नाशश्च तद्वृत्युपजीविनां च स्थितोपविष्टः स्वपतां च नाशः ॥ ४ ॥

बवादि ग्यारह करणों में संक्रान्ति लगै तो क्रमसे वाहनादि लिखते हैं सो चक्रसे समझलेना जिस वस्तु की जीविका जिस की होय उसे नाशकारक जानना तिंसी प्रकार से स्थित, उपविष्ट सुप्त का भी जानिये ॥ १ । ४ ॥

अथ संक्रान्तिवाहनादिचक्रम् ॥

बव	बालव	कौलव	तैतिल	गर	वणिज	विष्टि	शकुनि	चतुष्पद	नाग	किंस्तुघ्न	करण
सिंह	व्याघ्र	शूकर	खर	हाथी	महिष	घोड़ा	श्वान	मेष	गौ	मुरगा	वाहन
श्वेत	पीत	हरित	पाण्डु	रक्त	श्याम	असित	चित्र	कम्बल	दिशा	मेघ सदृश	वस्त्र
भुशुंडी	गदा	खड्ग	दण्ड	धनुष	तोमर	भाला	पाश	अंकुश	अस्त्र	बाण	शस्त्र
अन्न	परमान्न	भिक्षा	पक्वान्न	दुग्ध	दही	विचित्रान्न	गुड	सहत	घृत	शक्कर	भोजन
कस्तूरी	केसर	चन्दन	माटी	गोरोचन	महावर	बिलारमद	हरिद्रा	सुरमा	अगर	कपूर	लेप
देवता	भूत	सर्प	पक्षी	पशु	मृग	विप्र	क्षत्री	वैश्य	शूद्र	सङ्कर वर्ण	जाति
नागकेसर	चमेली	बकुल	केतकी	बेल	मदार	दूब	कमल	बेल	पाढ़र	दुपहरिया	पुष्प

अथ भौमवतीअमावास्यापर्वयोगः ॥

अमावास्यां भवेद्वारो यदाभूमिसुतस्य वै । जाह्नवी स्नानमात्रेण गोसहस्रफलं लभेत् ॥ १ ॥

मङ्गलवार को अमावस परै तो भौमवती नाम है गङ्गास्नान-मात्र एकहज़ार गोदान का फलहै १ तथा सोमवार युक्त सोमवती अमावस होती है उसमें इससे भी अधिक फल जानना ॥

अथ कपिलाषष्ठीपर्वयोगः ॥

आश्विनेकृष्णपक्षे च षष्ठ्यां भौमेऽष्टरोहिणी । व्यतीपातस्तदा षष्ठी कपिलानन्तपुण्यदा ॥ १ ॥

कुवारबदी छठि को मङ्गलवार वा रोहणी नक्षत्र तथा व्यतीपातयोग युक्त होय तो असंख्यपुण्य को देनेवाली है तीर्थस्नान में बड़ा पुण्य है ॥ १ ॥

अथ पुष्करपर्वयोगः ॥

विशाखस्थो यदा भानुः कृत्तिकासु च चन्द्रमाः । स योगः पुष्करोनाम पुष्करेष्वातिदुर्लभः ॥ १ ॥

विशाखा नक्षत्र के जब सूर्य होयँ और दिन नक्षत्र कृत्तिका होय तो पुष्करसंज्ञक योग होताहै सो स्नान पुष्कर में दुर्लभ है अर्थात् बड़ा फलहै ॥ १ ॥

अथ वारुणीपर्वयोगः ॥

वारुणेन समायुक्ता मधौ कृष्णात्रयोदशी । गङ्गायां यदि लभ्येत कोटिसूर्यग्रहैः समा १ शनिवारसमायुक्ता सा महावारुणीस्मृता । शुभयोगसमायुक्ता शनौ शतभिषा यदि । महामहेति विख्याता त्रिकोटि कुलमुद्धरेत् ॥ २ ॥

चैत्रकृष्ण त्रयोदशी को शतभिष नक्षत्र सूर्योदय में मिलै तो वारुणीपर्व होती है तिसमें गङ्गास्नान करने से कोटि सूर्य-ग्रहण समान फल होता है १ और शनिवार के युक्त त्रयोदशी

और शतभिष नक्षत्र होय तो महावारुणीसंज्ञक पर्व होतीहै और शुभयोग शनैश्चर शतभिष से युक्त त्रयोदशी होय तो महामहावारुणी पर्व होती है तिसमें गङ्गास्नान करने से तीन कोटि कुल को उद्धार करने को समर्थ है ॥ २ ॥

अथ गोविन्दद्वादशीपर्वयोगः ॥

यदा चापे जीवे भवति घटराशौ दिनमणिस्तथा तारानाथः स्वभवनगतः फाल्गुनसिते । यदार्कौ द्वादश्यां भवति गुरुभं शोभनयुतं तदा गोविन्दाख्यं हरिदिव समस्मिन्भुवितले ॥ १ ॥

धनकी बृहस्पति होय कुम्भ के सूर्य होयँ कर्क का चन्द्रमा होय फागुनमास होय शुक्लपक्ष होय द्वादशी तिथि होय एतवार दिन होय तथा पुष्य नक्षत्र और शोभनयोग होय तो गोविन्दद्वादशी पर्व होती है तिथि सूर्योदय की होय तब सब योग परने से पूर्ण पर्व जानिये अयोध्या के स्नान में बड़ा माहात्म्य है ॥ १ ॥

अथार्द्धोदयमहोदयपर्वयोगाः ॥

श्रुतिव्यतीपातदिने सदर्शे युतिर्यदाकृष्णदले तु माघे । पौषे तथार्द्धोदयसंज्ञकोऽयं किञ्चिद्विहीने तु महोदयः स्यात् १ अर्द्धोदये तु संप्राप्ते सर्वगङ्गासमं जलम् । शुद्धात्मानो द्विजाः सर्वे भवेयुर्ब्रह्मसन्निभाः २ यत्किञ्चिद्दीयते दानं तद्दानं मेरुसन्निभम् । एवमेव फलं ज्ञेयं योगेऽपि च महोदये ॥ ३ ॥

माघवापूसकी अमावसको श्रवणनक्षत्र वा व्यतीपातयोग होय तो अर्द्धोदय पर्व होताहै और इन योगों में से कोई हीन होय तो महोदयसंज्ञक योग जानना १ अर्द्धोदय योग में सर्व

जल गङ्गा के समान होताहै और ब्राह्मण सर्वशुद्धात्मा ब्रह्मा के समान होते हैं २ जो कुछ किञ्चिन्मात्र दान देइ सो दान सुमेरु के बराबर होताहै यही फल महोदय का जानना ॥ ३ ॥

अथ वृष्टिविचारः ॥

दशार्द्राद्याःस्त्रियस्तारा विशाखाद्या नपुंसकाः। तिस्रस्ततश्चमूलाद्याः पुरुषाश्च चतुर्दश १ स्त्रीपुंसयोर्महावृष्टिःस्त्रीनपुंसकयोः क्वचित्। स्त्रीस्त्रियोःशीतलच्छायायोगःपुरुषयोर्नच ॥ २ ॥

आर्द्रा से दश नक्षत्र स्त्रीसंज्ञक हैं विशाखा से तीन नक्षत्र नपुंसकसंज्ञक हैं और मूल से चौदह नक्षत्र पुरुषसंज्ञक हैं १ (अथ फलम्) जो सूर्य चन्द्रमा स्त्रीपुरुषसंज्ञक होयँ तो महावृष्टि होय और स्त्री नपुंसक होयँ तो कहीं कहीं वृष्टि होय और स्त्री स्त्री होय तो शीतलछाया होय और पुरुष पुरुष होयँ ते वर्षा न होय ॥ २ ॥

अथ द्वितीयप्रकारेण वृष्टिविचारः ॥

दस्रादितस्त्रीणिशिवादिपञ्च तोयादिवेदोत्तररेवती च। एतानिधिष्ण्यानिनिशाकरस्य शेषानि भानोर्भप्रकीर्तितानि १ चन्द्रेस्तिचन्द्रःकुरुते न वृष्टिः सूर्येऽपिसूर्यः कुरुते च वातम्। चन्द्रेऽपिसूर्ये कुरुते सुवृष्टिःसूर्येऽपि चन्द्रःकुरुते तथैव ॥ २ ॥

अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्वाषाढ़, श्रवण, धनिष्ठा और रेवती ये नक्षत्र चन्द्रमा के हैं और बाक़ीरहे सो सूर्य के जानिये १ (अथ फलम्) सूर्य चन्द्रमा का नक्षत्र विचारना जो दोनों नक्षत्र चन्द्रमा के होयँ तो वृष्टि होय और सूर्य सूर्य होयँ तो हवा चलै और चन्द्र सूर्य होयँ तो सुन्दर वृष्टि होय तथा सूर्य चन्द्र में यही फल जानना ॥ २ ॥

अथ वृष्टिवाहनविचारः ॥

सूर्यभाच्चन्द्रभं गण्यं सप्तभिर्भागमाहरेत् । शेषाङ्कं वाहनं ज्ञेयमश्वादीनां क्रमाद्भवेत् १ अश्वः १ शशो २ वराहश्च ३ श्वानो ४ वृषभस्तथा ५। दर्दुरो ६ महिष श्चैव ७ सप्तैते वृष्टिवाहनाः ॥ २ ॥

सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिने उससें सात का भाग देइ शेष वाहन अश्वादिक जानै १ अश्व १ शशा २ वराह ३ श्वान ४ वृषभ ५ दर्दुर ६ महिष ७ ये सात वाहन वर्षा के होते हैं फल अनुमान से जानना ॥ २ ॥

अथ ग्रहपरत्वेन वृष्टिविचारः ॥

उदयास्तंगतः शुक्रो बुधश्च वृष्टिकारकः । जल राशिस्थिते चन्द्रे पक्षान्ते संक्रमे तथा १ बुधशुक्रसमीप स्थः करोत्येकार्णवां महीम् । तयोरन्तर्गते भानुः समुद्र मपि शोषयेत् २ चलत्यङ्गारके वृष्टिस्त्रिधा वृष्टिः शनै श्चरे । वारिपूर्णां महीं कृत्वा पश्चात्संचरते गुरुः ३ भानोरग्रे महीपुत्रो जलशोषः प्रजायते । भानोः पश्चा द्धरासूनुर्वृष्टिर्भवति भूयसी ॥ ४ ॥

शुक्र बुधके उदय अस्त के समय वर्षा होय और जलराशि का चन्द्रमा अर्थात् कुंभ मीनका होय तो वृष्टि होय और पक्ष के अन्त में वा संक्रान्ति में वर्षाहोय १ और बुध शुक्र समीप होयँ तो वर्षा बहुतहोय और इन दोनों के बीचमें सूर्य होयँ तो समुद्रपर्यन्त सूख जाय २ मंगल जब राशिसे चलै तो वर्षाहोय और शनैश्चर के चलने में त्रिधावृष्टिहोय और जो बृहस्पति पीछे को चलै तो पृथ्वी वर्षा से पूरित होय ३ सूर्य के आगे मङ्गल होय तो जलसूखै और सूर्यके पीछे मङ्गल होय तो पृथ्वी पर वर्षाहोय ॥ ४ ॥

अथावर्षणयोगः ॥

पौषे मूलभरण्यन्ते चन्द्रऋक्षे न गर्जति । आर्द्रादितो विशाखायां सूर्यर्क्षे चेन्न वर्षति ॥ १ ॥

पूसमहीने में मूल से भरणी नक्षत्र पर्यन्त चन्द्र नक्षत्र में बादर न होय तो आर्द्रा से विशाखा पर्यन्त सूर्य नक्षत्र न वर्षै ॥ १ ॥

अथ अङ्गस्फुरणविचारः ॥

नेत्रे नेत्रप्रियाः प्राप्ताः कर्णे कर्णसुखं भवेत् । नासिकायां सुगन्धाप्तिः कपोले तु वराङ्गनाः १ ओष्ठे वा कलहो ज्ञेयो जिह्वामिष्टान्नभोजनम् । भुजेषु भवनक्रीडा जानुदेशे महद्भयम् २ कण्ठस्थं भूषणं कण्ठे ग्रीवायां जागरा भवेत् । पृष्ठे परोक्षवार्त्ता च स्कन्धयोश्च धनागमम् ३ हृदये वाञ्छिता सिद्धिर्जठरे भाग्यसंपदः । वाहनाप्तिः कटेर्देशे गुह्ये परवधूरतः । ऊरूयुग्मेतिवस्त्राप्तिः पादयोर्गमनं भवेत् ॥ ४ ॥

नेत्र फरकै तो नेत्रप्रिय प्राप्ति होय कान फरकै तो कर्णसुख होय अर्थात् कोई अच्छी बात सुनाई देइ नाक फरकै तो सुगन्ध मिलै गाल फरकै तो वराङ्गना स्त्री मिलै १ ओठ फरकै तो कलह होय जीभ फरकै तो मिष्टान्न भोजन होय भुजा फरकै तो भवन में विहार होय और जो जङ्घा फरकै तो महाभय होय २ कण्ठ फरकै तो कण्ठभूषण मिलै और ग्रीवा फरकै तो जागरा होय अर्थात् जागै पीठि फरकै तो परोक्ष वार्ता होय स्कन्ध फरकै तो धनागम होय ३ हृदय फरकै तो वाञ्छितसिद्धि होय जठरफरकै तो भाग्यसम्पदा होय कमर फरकै तो सवारी मिलै गुदा फरकै तो परस्त्री से भोग होय दोनों घुटनें फरकैं तो वस्त्र मिलै चरण फरकै तो यात्रा मिलै ॥ ४ ॥

अथ खञ्जनदर्शनफलम् ॥

अपां समीपे गजमस्तके वा देवालये ब्राह्मणसन्निधौ वा । आकाशमार्गे गहने वने वा धन्यो नरः पश्यति खञ्जरीटम् १ वित्तं ब्रह्मणि कार्यसिद्धिरतुला शक्रे हुताशे भयं याम्ये रोगभयं सुरारिकलहं लक्ष्मीः समुद्रालये । वायव्ये वरवस्त्रलाभमखिलं दिव्याङ्गना चोत्तरे ईशान्ये मरणं ध्रुवं निगदितं दिग्लभ्यते खञ्जरीम् ॥२॥

जल के पास खञ्जन देखै वा हाथी के मस्तक पै देखै वा देवस्थान में देखै वा ब्राह्मण के समीप देखै वा आकाश में देखै वा भारी वनमें देखै तो इन स्थानों में शुभ जानना १ पूर्व-दिशा में देखै तो धन मिलै सिद्धिहोय आग्नेयमें देखै तो अग्नि-भय होय दक्षिण में देखै तो रोग होय नैर्ऋत्य में कलह होय पश्चिम में लक्ष्मी प्राप्ति होय वायव्य में देखै तो वस्त्रलाभ होय उत्तर में देखै तो दिव्याङ्गना मिलै ईशान्य में देखै तो मरण होय इस प्रकार से दिशों में खड़रैचा विचारै ॥ २ ॥

अथ राजभङ्गादियोगः ॥

यदि भवति कदाचित्कार्त्तिके नष्टचन्द्रा शनिरविकुजवारे स्वातिआयुष्ययोगे । गगनचरपशूनां स्थावरं जङ्गमानां भवति नृपविनाशो वाजिनां कुञ्जराणाम् ॥१॥

कार्त्तिकमास की अमावस्या शनि, रवि, मङ्गलवार को पड़ै तथा स्वाति नक्षत्र होय वा आयुष्मान् योग पड़ै तो आकाश के जीवपक्षी इत्यादि वा पशु वा स्थावर जङ्गम वा राजा तथा घोड़े हाथिन का नाश होय ॥ १ ॥

अथ प्रश्नास्तत्रादौ रामादिप्रश्नमाह ॥

स्थाननाशश्च रामे स्यात्सीतायां दुःखमेव च । ल

क्ष्मणे कार्यसिद्धिः स्यात्सर्वलाभो विभीषणे १ मरणं कुम्भकर्णे च रावणे च धनक्षयः । अङ्गदे च ध्रुवं राज्यं सुग्रीवे बन्धुदर्शनम् २ कैकेय्यां कार्यहानिश्च भरते त्वभिषेचनम् । कल्याणमिन्द्रतनये कार्यनाशश्च शूलिने ३ हनुमान्सर्वकार्यञ्च दीर्घमायुश्च जाम्बवान् । नारदः कलहश्चैव गुहश्च प्रियदर्शनम् ४ रामचक्रमिदं शस्तं देवर्षिकथितं पुरा । प्रश्नार्थं सर्वलोकानां शुभं सर्वार्थदायकम् ॥ ५ ॥

प्रश्नकर्त्ता के हाथ से प्रश्नचक्रपर अंगुली रखावै तैसा शुभाशुभ फल जानना राम के कोठे में परै तो स्थानहानि होय सीतामें परै तो दुःख होय लक्ष्मणमें कार्यसिद्धि होय विभीषण में परै तो सर्वलाभ होय १ कुम्भकर्णमें परै तो मरण होय रावण पै परै तो धनक्षय होय अङ्गद में शीघ्र राज्य मिलै सुग्रीव में बन्धुदर्शन होय २ कैकेयी में परै तो हानि होय भरत में राजगद्दी होय अर्जुन में कल्याण होय महादेव में कार्य नाश होय ३ हनुमान् पै परै तो सर्वकार्यसिद्धि होय और जाम्बवान् में दीर्घायु होय नारद में कलह होय स्वामिकार्त्तिक में प्रियदर्शन होय ४ यह रामचक्र शस्त है देवऋषियों ने पूर्वही वर्णन किया है सर्व लोक के प्रश्नके हेतु कहा है शुभ है सर्वार्थदायक है ॥ ५ ॥

अथ रामादिप्रश्नचक्रम् ॥

राम	सीता	लक्ष्मण	विभीषण
कुम्भकर्ण	रावण	अङ्गद	सुग्रीव
कैकेयी	भरत	अर्जुन	महादेव
हनुमान्	जाम्बवान्	नारद	स्वामिकार्त्तिक

अथ पञ्चदशीयन्त्रप्रश्नः ॥

नवैकपञ्चत्वरितं वदन्ति अष्टौद्वितीये न च कार्यसिद्धिः ।

रसशरवेदौ घटिकात्रयं च सप्तत्रयं वै कथितं च वार्त्ता ॥ १ ॥

नव एक पांच इनसें प्रश्नकर्त्ता स्पर्शकरे तो कार्य शीघ्र सिद्ध होताहै आठ वा दो में नहीं सिद्ध होताहै छः वा चारमें परै तो शीघ्र तीन घड़ी में सिद्ध होय सात वा तीन में कार्य की वार्त्ता होय परन्तु कार्य न होय ॥ १ ॥

अथ पञ्चदशीयन्त्रचक्रम् ॥

८	१	६
३	५	७
४	६	२

अथ पल्लीपतनविचारः ॥

यदि पतति च पल्ली दक्षिणाङ्गे नराणां स्वजनजन विरोधो वामभागे च लाभम् । उदरशिरसि कण्ठे पृष्ठ भागे च मृत्युं करचरणहृदिस्थे सर्वसौख्यं मनुष्यः ॥१॥

दहिने अङ्गपर पल्लीपतनहोय तो स्वजन से विरोधकरै वाम अङ्ग में परै तो लाभहोय पेट शिर कण्ठ व पीठमें परै तो मृत्यु होय हाथ पावँ छाती में परै तो सर्वसुख मनुष्य को होय ॥ १ ॥

अथ छिक्कापल्लीजम्बुकप्रश्नम् ॥

तिथिप्रहरसंयुक्तं तारकावारमिश्रितम् । नवभिस्तु हरेद्भागं शेषं ज्ञेयं फलाफलम् १ घातं १ नाशं २ तथा लाभं ३ कल्याणं ४ जय ५ मङ्गलम् ६ । उत्साह ७ हानि ८ मृत्युश्च ९ छिक्कापल्ली च जाम्बुकः २ आसने शयने चैव दाने च भोजने तथा । वामभागे पृष्ठभागे षट्सु छिक्काः शुभावहाः ॥ ३ ॥

तिथि, पहर, नक्षत्र जोड़ देइ नवका भाग देइ शेष फल

जानिये १ एक बचै तो घात दो बचैं तो नाश तीन बचैं तो लाभ चार बचैं तो कल्याण पांच बचैं तो जय छः बचैं तो मङ्गल सात बचैं तो उत्साह आठ बचैं तो हानि नव बचैं तो मृत्यु होय छींक पल्ली सियार शब्द विचारै २ आसन बैठने के समय वा शयन वा दान समय वा भोजनसमय वा वामभाग वा पृष्ठभाग इतने समय में छींक शुभ है ॥ २ ॥

अथान्यमतश्छिक्काकाकश्रृगालविचारः ॥

छिक्कायां वचनं श्रुत्वा गृहीत्वा तृणमुत्तमम् । सप्तांगुलकशेषेण ज्ञातव्यं प्रश्नलक्षणम् १ लाभो १ हानि २ स्तथा सौख्य ३ मानन्दं ४ प्रियदर्शनम् ५ । भोजनं ६ कलहश्चैव ७ छिक्काकाकश्रृगालकम् ॥ २ ॥

छींक को सुनकर व कौवा सियार का शब्द सुनकर एक तृण उठाय लेना उसे सात अंगुल से शेषकरना १ एक बचै तो लाभ दो बचैं तो हानि तीन बचैं तो सुख चार बचैं तो आनन्द पांच बचैं तो प्रियदर्शन होय छः बचैं तो भोजन मिलै सात बचैं तो कलह होय ॥ २ ॥

अथ गर्भिणीप्रश्नम् ॥

सूर्यभौमगुरुस्पर्शे पुत्रो भवति निश्चितम् । चन्द्रशुक्रबुधस्पर्शे कन्या तत्र प्रजायते १ शनिस्पर्शे गर्भपातो राहुस्पर्शे सुतासुतौ । केतुस्पर्शे भवेत्क्लीबो विचार्य्येत्थं वदेत्सुधीः ॥ २ ॥

प्रश्नकर्त्ता से गर्भचक्र पर अंगुली धरावै सूर्य, मङ्गल, बृहस्पति पर परै तो पुत्र निश्चय होय तथा चन्द्र, बुध, शुक्र पर स्पर्श करै तो कन्या होय १ और शनैश्चर पै परै तो गर्भपात होय और राहुपै परै तो कन्या पुत्र दोनों होयँ और केतु स्पर्श होय तो नपुंसक होय ॥ २ ॥

अथ गर्भप्रश्नचक्रम् ॥

बु०	गु०	चं०
शु०	सू०	मं०
रा०	श०	के०

अथ चौरप्रश्नज्ञानम् ॥

अन्धाक्षं वसुपुष्यधातृजलभद्वीशार्यमान्त्याभिधं म
न्दाक्षं रविविश्वमैत्रजलपाश्लेषाश्विचान्द्रम्भवेत् । मध्या
क्षं शिवपितृजैकचरणात्वाष्ट्रेन्द्रविध्यन्तकं स्वक्षं स्वात्यदि
तिश्रवोदहनभाहिर्बुध्न्यरक्षोभगम् १ विनष्टार्थस्य लाभो
ऽन्धे शीघ्रं मन्दे प्रयत्नतः । स्याद्दूरे श्रवणं मध्ये श्रुत्या
सी न सुलोचने २ अन्धके पूर्वतो याति मन्दके याति
दक्षिणे । मध्ये च पश्चिमे याति सुनेत्रे याति चोत्तरे ॥३॥

धनिष्ठा, पुष्य, रोहिणी, पूर्वाषाढ़, विशाखा, उत्तराफाल्गुनी, रेवती ये नक्षत्र अन्धाक्ष हैं हस्त, उत्तराषाढ़, अनुराधा, शत-भिष, श्लेषा, अश्विनी, मृगशिरा ये नक्षत्र मन्दाक्ष हैं आर्द्रा, मघा, पूर्वाभाद्रपद, चित्रा, ज्येष्ठा, अभिजित्, भरणी इनकी मध्याक्षसंज्ञा है स्वाति, पुनर्वसु, श्रवण, कृत्तिका, उत्तराभाद्र-पद, मूल, पूर्वाफाल्गुनी इनकी सुलोचनसंज्ञा है १ अन्धनक्षत्र में धन चोरी जाय तो जल्द लाभ होय मन्दाक्ष में जाय तो यत्न से मिलै मध्याक्ष में जाय तो दूरसे सुनि परै मिलै नहीं २ अन्धसंज्ञक नक्षत्र में धन जाय तो पूर्वदिशा में गत जानिये मन्दसंज्ञक में दक्षिण जानिये मध्यसंज्ञक में पश्चिम दिशा जानिये सुनेत्र में उत्तर दिशा जानना ॥ ३ ॥

अथान्धादिनक्षत्रचक्रम् ॥

अन्धाक्ष	मन्दाक्ष	मध्याक्ष	सुलोचन
रो०	मृ०	आ०	पुन०
पुष्य	श्ले०	म०	पू० फा०
उ० फा०	ह०	चि०	स्वा०
वि०	अनु०	ज्ये०	मू०
पू० षा०	उ० षा०	अभिजित्	श्र०
ध०	श०	पू० भा०	उ० भा०
रे०	अ०	भ०	कृ०

अथ नष्टलाभज्ञानम् ॥

पूर्णः शशी लग्नगतः शुभो वा शीर्षोदये सौम्यनिरीक्षितश्च । नष्टस्य लाभं कुरुते तथाशु लाभोपयातो बलवाञ्छुभश्च ॥ १ ॥

जो कोई पूछै गतवस्तु प्राप्त होगी वा नहीं तहां प्रश्नलग्न में शीर्षोदय लग्न होयँ अर्थात् मिथुन, कन्या, तुला, कुम्भ, वृश्चिक ये शीर्षोदय लग्न होती हैं और पूर्णचन्द्रमा वा और कोई शुभग्रह लग्न में बैठा होय और शुभग्रहकी दृष्टिहोय तो नष्टवस्तु का शीघ्रही लाभहोय अथवा शुभग्रह बलवान् होकर ग्यारहें बैठा होय तौभी नष्टवस्तु का लाभ जानिये ॥ १ ॥

अथ लाभालाभप्रश्नज्ञानम् ॥

त्रिपञ्चलाभास्तभयेषु सौम्या लाभप्रदा नेष्टफलाश्च पापाः । तुलोऽथकन्यामिथुनं घटश्च नृराशयस्तेषु शुभं वदन्ति ॥ १ ॥

प्रश्नकर्त्ता पूछे अमुकस्थान में लाभ होगा वा नहीं तहां प्रश्न समय लग्न से तीसरे पांचवें ग्यारहें स्थान में शुभग्रह होयँ तो लाभ कहिये अथवा इन्हीं स्थानों में पापग्रह होयँ तो अनिष्टफल और अर्थहानि कहिये वा तात्कालिकलग्न में तुला, कन्या, मिथुन, कुंभ ये लग्नें होयँ और शुभग्रह की दृष्टियुक्त होय तो प्रश्नकर्त्ता को शुभफल लाभ होय ॥ १ ॥

अथ प्रश्नकाले लाभालाभशुभाशुभज्ञानम् ॥

सौम्या विलग्ने यदिवा स्ववर्गे शीर्षोदये सिद्धिमुपैति कार्यम्। अतोविपर्यस्तमसिद्धिहेतुः कृच्छ्रेण संसिद्धिकरं विमिश्रम् ॥ १ ॥

प्रश्नसमय की लग्न में शुभग्रह बैठे होयँ अथवा शुभग्रह का घरहोय वा स्ववर्गी होय अर्थात् अपने षड्वर्ग में होय नवांशादिक में वा शीर्षोदय लग्न होय अर्थात् मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, कुम्भ इनकी शीर्षोदयसंज्ञाहै ऐसी लग्न में प्रश्नकर्त्ता का सब कार्य सिद्ध होय इनसे विपरीत लग्न में पापग्रह बैठा होय वा उस की दृष्टिहोय वा क्रूरग्रह का घरहोय और पृष्ठोदयी मेष, वृष, कर्क, धन, मकर ये लग्नें होयँ यही पृष्ठोदयी हैं ये होयँ तो कार्य सिद्ध न होय अथवा शुभग्रह पापग्रह मिलकर सौम्यलग्न में पृष्ठोदयी होयँ तो कष्ट करिकै विलम्ब में कार्यसिद्धि होय अथवा शुभग्रह की आधिक्यता देखकर फल कहना ॥ १ ॥

अथ विदेशीप्रश्नज्ञानम् ॥

प्रश्नाक्षरंद्विगुणितंत्रयोदशसमन्वितम् । अष्टभिस्तु हरेद्भागं शेषं प्रश्नस्य लक्षणम् १ एकेन गमनं कुर्याद् द्वितीये मार्गमेव च । तृतीये चार्द्धमार्गे च चतुर्थेद्वार

मागतः २ पञ्चमेपुनरावृत्तिःषष्ठे व्याधिसमन्वितः । सप्त मे शून्यतावृत्तिरष्टमे मरणं ध्रुवम् ॥ ३ ॥

प्रश्न के अक्षर दूनेकरना तेरह उस में जोड़देना तिसमें आठ का भागदेना शेषाङ्क फल जानिये १ एक बचै तो विदेशी अपने स्थानसे चलाहै दो बचैं तो रास्ते में जानिये तीन बचैं तो आधे मार्ग में जानिये चार बचैं तो द्वारपर्यन्त जानिये पांच बचैं तो जानिये कि एकबेर चलिके लौटिगया है अब फिरके आवेगा छः बचैं तो रोगयुक्त जानना सात बचैं तो शून्यता जानिये आठ बचैं तो मरण जानना ॥ २ । ३ ॥

अथ तिथ्यादियुक्तप्रश्नज्ञानम् ॥

तिथिप्रहरसंयुक्तं तारकावारमिश्रितम् । अग्निभि स्तुहरेद्भागं शेषं सत्त्वंरजस्तमः १ सिद्धिस्तात्कालिके सत्त्वे रजसा तु विलम्बतः । तमसा निष्फलं कार्यं ज्ञात व्यं प्रश्नकोविदैः ॥ २ ॥

प्रश्नलग्न के समय जो तिथि वार नक्षत्र प्रहरहोय सो एकत्र करना उसमें तीन का भागदेना शेषरहै सो क्रमसे सत्त्व १ रज २ तम ३ ऐसा फल जानिये सत्त्व में तत्कालसिद्धि होय रज में बिलम्बसे कार्य होय तमसे कार्य निष्फल जानना ॥ १ । २ ॥

अथ कार्याकार्यप्रश्नज्ञानम् ॥

दिशाप्रहरसंयुक्तं तारकावारमिश्रितम् । अष्टभिस्तु हरेद्भागं शेषे प्रश्नस्य लक्षणम् १ पञ्चैके त्वरिता सिद्धिः षट्तूर्ये च दिनत्रये । त्रिसप्तके विलम्बश्च द्वौचाष्टौ न च सिद्धिदौ ॥ २ ॥

प्रश्न करनेवाले का मुख जिस दिशामें होय वह दिशा और

पहर वा नक्षत्र वार एकत्र करना तिस में आठका भागदेना शेष शुभाशुभ फल जानना १ पांच एक बचैं तो शीघ्रही कार्य सिद्धि होय छः चार बचैं तो तीन दिन में कार्य सिद्ध जानना तीन वा सात बचैं तो विलम्ब में कार्य होय दुइ वा आठ बचैं तो कार्य न सिद्धि होय ॥ २ ॥

अथ वारनक्षत्रयुक्तपंथाप्रश्नः ॥

बुधे चन्द्रे तथा मार्गे समीपे गुरुशुक्रयोः । रवौ भौमे तथा दूरे शनौ च परिपीड्यते १ निर्जीवः सप्तऋक्षाणि सजीवो द्वादशे भवेत् । व्याधितंनवऋक्षाणि सूर्यधिष्ण्यात्तु चान्द्रभम् ॥ २ ॥

बुध तथा चन्द्रवार को प्रश्नकरै तो विदेशी मार्ग में जानिये गुरु वा शुक्र होय तो समीप जानिये सूर्य तथा मङ्गलहोय तो दूर जानिये और शनैश्चर होय तो पीड़ायुक्त जानिये १ सूर्य नक्षत्र से दिननक्षत्र तक गिनना प्रथम सात नक्षत्र में परै तो निर्जीव जानना फिर बारह नक्षत्र में जीवयुक्त जानना फिर नव नक्षत्र में रोगयुक्त जानना इसप्रकार पन्थाप्रश्न जानिये॥२॥

अथ लग्नान्मनश्चिन्तितप्रश्नज्ञानम् ॥

मेषे च द्विपदाचिन्ता वृषे चिन्ताचतुष्पदा । मिथुने गर्भचिन्ता च व्यवसायस्य कर्कटे १ सिंहे च जीवचिन्ता स्यात्कन्यायाञ्च स्त्रियास्तथा । तुलेचधनचिन्ता च व्याधिचिन्ता च वृश्चिके २ चापे च धनचिन्ता स्यान्मकरे शत्रुचिन्तनम् । कुम्भे स्थानस्य चिन्तास्यान्मीने चिन्ता च दैविके ॥ ३ ॥

मेष लग्न में प्रश्न करै तो द्विपद अर्थात् मनुष्य की चिन्ता कहना वृषमें प्रश्नकरै तो चतुष्पदकी चिन्ता जानना मिथुनमें गर्भचिन्ता जानना कर्क में उद्योग की चिन्ता अर्थात् जीविका

की चिन्ता जानना सिंह में जीवकी चिन्ता जानिये कन्या में स्त्री की चिन्ता जानना तुला में धन की चिन्ता जानिये वृश्चिक में व्याधिचिन्ता जानना धनमें धनकी चिन्ता जानना मकर में शत्रुचिन्ता जानिये कुम्भ में स्थान की चिन्ता जानिये मीन में दैविक चिन्ता जानना ॥ १ । २ । ३ ॥

अथ धातुमूलजीवप्रश्नः ॥

धातुर्मूलञ्चजीवश्चरस्थिरद्विस्वभावगाः । मेषादयः क्रमेणैव ज्ञातव्याः प्रश्नकोविदैः ॥ १ ॥

धातु मूल जीव ये तीन क्रमसे जानना मेषादि लग्न से चर, स्थिर, द्विस्वभावसंज्ञा समझ लेना चक्रसे ॥ १ ॥

अथ धातुमूलजीवप्रश्नचक्रम् ॥

धातुप्रश्न	मे.	क.	तु.	म.	चर
मूलप्रश्न	वृष	सिं.	वृ.	कुं.	स्थिर
जीवप्रश्न	मि.	कन्या	ध.	मी.	द्विस्वभाव

अथ पशुनष्टप्रश्नः ॥

द्युमणिभान्नवभेषु वने स्थितं तदनु षट्सुचकर्णपथे स्थितम् । अचलभेषु गतं गृहमागतं द्वयगते गतमेव मृतेत्रिषु ॥ १ ॥

सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्रतक गिनै गये पशु का प्रश्न विचारे प्रथम नव नक्षत्र में वनमें जानिये फिरि छः नक्षत्र में नगीच मार्ग में जानिये फिर सात नक्षत्र में अपने गृह में चला आवै फिर दुइ नक्षत्र में न मिलै फिर तीन नक्षत्र में पशुकी मृत्यु जानना ॥ १ ॥

अथ संक्रांतिवारफलम् ॥

संक्रान्तिर्यातितेतत्र भास्करे भूसुते शनौ । तस्मिन्मासे भयं घोरं दुर्भिक्षं वृष्टिचोरजम् ॥ १ ॥

सूर्य संक्रान्ति एतवार, मङ्गल, शनैश्चर में पड़े तो उस मास में भय दुर्भिक्ष अवृष्टि चोर भय जानना ॥ १ ॥

अथ रविचन्द्रमण्डलविचारः ॥

रविशशिपरिवेषेपूर्वयामे च पीडा रविशशिपरिवेषे मध्ययामे च वृष्टिः। रविशशिपरिवेषे धान्यनाशं तृतीये रविशशिपरिवेषे राज्यभङ्गश्चतुर्थे ॥ १ ॥

सूर्य चन्द्रमा प्रथम पहर में मण्डल धरैं तो पीड़ा होय दूसरे पहर में वर्षा होय तीसरे पहर में धान्यनाश होय चौथे पहर में राजभङ्ग होय ॥ १ ॥

अथ इन्द्रधनुषादियोगः ॥

रात्रौधनुर्दिने उल्कातारा चैव दिने तथा । रात्रौ तु धूम्रकेतुश्च भूकम्पश्च तथैवहि । एतानि दुष्टचिह्नानि देशक्षयकराणि च ॥ १ ॥

रात्रि को इन्द्रधनुष निकलै दिनको उल्कापात होय तारा टूटै और रात्रि को धूम्रकेतु उदय होय वा भूकम्प अर्थात् पृथ्वी काँपै ये दुष्ट चिह्न होयँ तो देशक्षय होय ॥ १ ॥

अथ कार्यभेदेन सूर्यादिबलज्ञानम् ॥

नृपेक्षणं सर्वकृतिश्च सङ्गरः शास्त्रं विवाहोगमदीक्षणेरवेः।वीर्येऽथताराबलतःशुभोविधुर्विधोर्बलेऽर्कोऽर्कबलेकुजादयः ॥ १ ॥

सूर्य के बल से राजदर्शन करना और चन्द्रमा के बल से सर्वकृत्य करना मङ्गल के बल से युद्ध करना बुध के बलसे शास्त्र

पढ़ना बृहस्पति के बल से विवाह करना शुक्र के बल से यात्रा करना शनैश्चर के बल से दीक्षा लेना और तारा के बली होनेसे शुभ चन्द्रमा बली जानना और चन्द्रमा के बल से सूर्य बली जानना और सूर्य के बलसे मङ्गलादि ग्रह बली जानिये१॥

अथ स्वप्नविचारः ॥

स्वप्नस्तु प्रथमे यामे संवत्सरविपाकदः । द्वितीये चा ष्टभिर्मासैस्त्रिभिर्मासैस्त्रियामके १ चतुर्यामे तु यः स्वप्नो मासेन फलदः स्मृतः । अरुणोदयवेलायां दशाहेन फलं लभेत् २ वातिकं पैत्तिकं चैव श्लेष्मजं चिन्तयान्वित म् । पुरुषैर्दृश्यते स्वप्नः शुभाशुभफलं नच ३ पत्रं पुष्पं फलं तोयं स्वप्नान्ते यो लभेन्नरः । सर्वसिद्धिमवाप्नोति जीवेद्वर्षशतं नरः ४ प्रसादस्थस्तु यो भुंक्ते समुद्रं तरते नरः । अपिदासकुले यातः सोपि राजा भविष्यति ५ य स्तु पश्यति स्वप्नान्ते गङ्गावाक् चैव यामुना । अरुन्धतीं तथासीनस्तस्य सौख्यं निरन्तरम् ६ ताम्बूलंदधि वस्त्रञ्च शङ्खदुन्दुभिमौक्तिकम् । जातीबकुलकुन्दञ्च नीलो त्पलधनागमम् ७ दीपमन्नं घृतं पद्मं कन्याच्छत्रं तथा ध्वजम् । स्वप्नान्ते यो लभेन्मंत्रं चिन्तितं च भवेद्ध्रु वम् ८ नावमारोहयेद्यस्तु नदीं वा विमलान्तरेत् । प्र वासं च दिने तस्य शीघ्रं च पुनरागमः ९ अमून्पश्यति यः स्वप्ने शृङ्गिणोदंष्ट्रिणोऽपिवा । वानरो वा वराहो वा भवेद्राजकुलाद्भयम् १० करालो विकटो मुण्डी पुरुषः कृष्णपिङ्गलः । स्वप्नान्ते सम्मुखं दृष्ट्वा तं च कालं वि निर्दिशेत् ११ नगरग्रामदहनं देशदाहं तथैवच । चत्वारि तस्य नश्यन्ति आयुःप्रज्ञा यशो बलम् १२ क्षुधा

पिपासा निद्रा च आलस्यं चापि निष्ठुरम्। यदि प श्यति स्वप्नान्ते दुर्भिक्षं दारुणं भवेत् १३ यस्तु पश्यति स्वप्नान्ते विवाहं मुण्डनं तथा। प्रियमृत्युर्ध्रुवं तस्य द्रव्यपुत्रविनाशनम् १४ कुक्कुरं सच मार्जारो गोधा नकुलमेव च। यदि पश्यति स्वप्नान्ते विघ्नस्तस्य भ विष्यति १५ गर्जिवृष्टिस्समुत्पन्ना अग्निदाहं च विग्र हम्। यदि पश्यति स्वप्नान्ते भवेद्राजकुलाद्भयम् १६ आदित्यमण्डलं स्वप्ने चन्द्रं वा यदि पश्यति। व्याधि तो मुच्यते रोगी श्रीयशस्त्वमवाप्नुयात् १७ यस्य श्वे तेन सर्पेण दृश्यते दक्षिणे भुजे। शस्त्रलाभो भवेत्तस्य संपूर्णे दशमे दिने १८ उरगो वृश्चिको वापि जलौका दृश्यते यदि। विजयं चार्थलाभं च क्षिप्रमेव भविष्यति १९ दधि दृष्ट्वा भवेदायुर्गोधूमैश्च धनागमः। यवैर्यज्ञागमं विद्यासिद्धार्थं च प्रदर्शयेत् २० देवता यस्य पश्यन्ति गणा गन्धर्वकिन्नराः। सिद्धा वा यदि पश्यन्ति तस्य सिद्धिर्नि रन्तरम् २१ वापीकूपतडागानि ग्रामं नगरमेव च। यदि पश्यति स्वप्नान्ते मङ्गलानि महोत्सवः २२ कन्यासमूहा स्थितमण्डलानां वेदाः समूहाद्द्विजशोभनानाम्। शास्त्रा समूहास्थितमुत्तमानामेतानि पश्येच्छुभमङ्गलानि २३ व्याधितेन सशोकेन चिन्ताग्रस्तेन चैव हि। कामकामार्त्त कश्चैव दृष्टास्वप्नो न विद्यते २४ यश्चैव स्वप्नं दृष्ट्वा तु पुनः सुप्तो हि मानवः। दुःस्वप्नं वा सुस्वप्नं वा निष्फलं जायते ध्रुवम् २५ दुःस्वप्नो दृश्यते येन तेषां निद्रा च कारयेत्। ततो नाशाशुभन्तत्र शुभमेव भविष्यति २६ रक्तचन्दन काष्ठानि घृतयुक्तानि होमयेत्। गायत्र्यष्टसहस्राणि यस्य

निद्रा न तिष्ठति २७ कश्यपात्रिवशिष्ठेन शाण्डिल्यो भृगुगौतमैः । देवलेन भरद्वाजमाण्डव्येन सनातनैः २८ पराशरेण मुनिना विश्वामित्रेण भार्गवैः । ऋषिप्रणीत शास्त्राणि बृहस्पतिसमीरितास् २९ बृहस्पतिमतं पुण्यं पवित्रम्पापनाशनम् । यः पठेत्परया भक्त्या दुःस्वप्नं न श्यति ध्रुवम् ॥ ३० ॥

पहले पहरमें दिन रात्रि के जो स्वप्न देखै तो एकवर्ष में शुभाशुभ फल होय दूसरे पहर में आठ महीने में होय तीसरे पहर में तीन महीने में होय १ चौथे पहर में एकमास में फल होय और सूर्योदय में देखै तो दशदिन में फल होय २ जो मनुष्य वात पित्त कफ के विकार से युक्त होय वा चिन्तायुक्त होय तो उसके स्वप्न का शुभाशुभ फल नहीं होताहै ३ पत्र, फल, जल स्वप्न के अन्त में लाभ देख पड़े तो सर्वसिद्धि प्राप्ति होय और सौ वर्षतक मनुष्य जिये ४ प्रसाद भोजनकरै और समुद्र तरै तो दासकुल में भी जन्मै तो भी स्वप्न के योगसे राजाहोय ५ स्वप्न के अन्तमें गङ्गा यमुना सरस्वती नदी देखपड़ै तथा अरुन्धती तथाऽसीनः देखै तो सुख प्राप्ति होय ६ पान, दही, वस्त्र, शंख, नगाड़ा वा मोती वा चमेलीपुष्प वा वृक्ष वा बकुल कुन्द वा कमल देखै तो धन प्राप्तहोय ७ दीप, अन्न, घी, कमल वा कन्या वा छत्र वा पताका देखपड़ै वा स्वप्नके अन्त में मन्त्रलाभ होय तो चिन्तित मनोरथ सिद्ध होय ८ नावपर सवार होकर नदी उतरै ऐसा देखै तो यात्रा होय फिर उसी दिन जल्दी आयजाय ९ सींग वा दांतवाला जीव स्वप्नमें देखै वानर वा सूकर देखै तो राजकुल से भय होय १० कराल विकटरूप मूंड़मुड़ाये श्याम पिंगलरूप ऐसा पुरुष स्वप्नान्त में सन्मुख देखपड़ै तो उस मनुष्य का काल जानिये ११ नगर गाउँ जरा देखै और देश जरा देखै तो आयु प्रज्ञा यश बल इनकी नाशकरै १२